कक्षा 12

साहित्य सुजस

(राजस्थानी गद्य पद्य संग्रै)

कक्षा 12

साहित्य सुजस

भाग-2

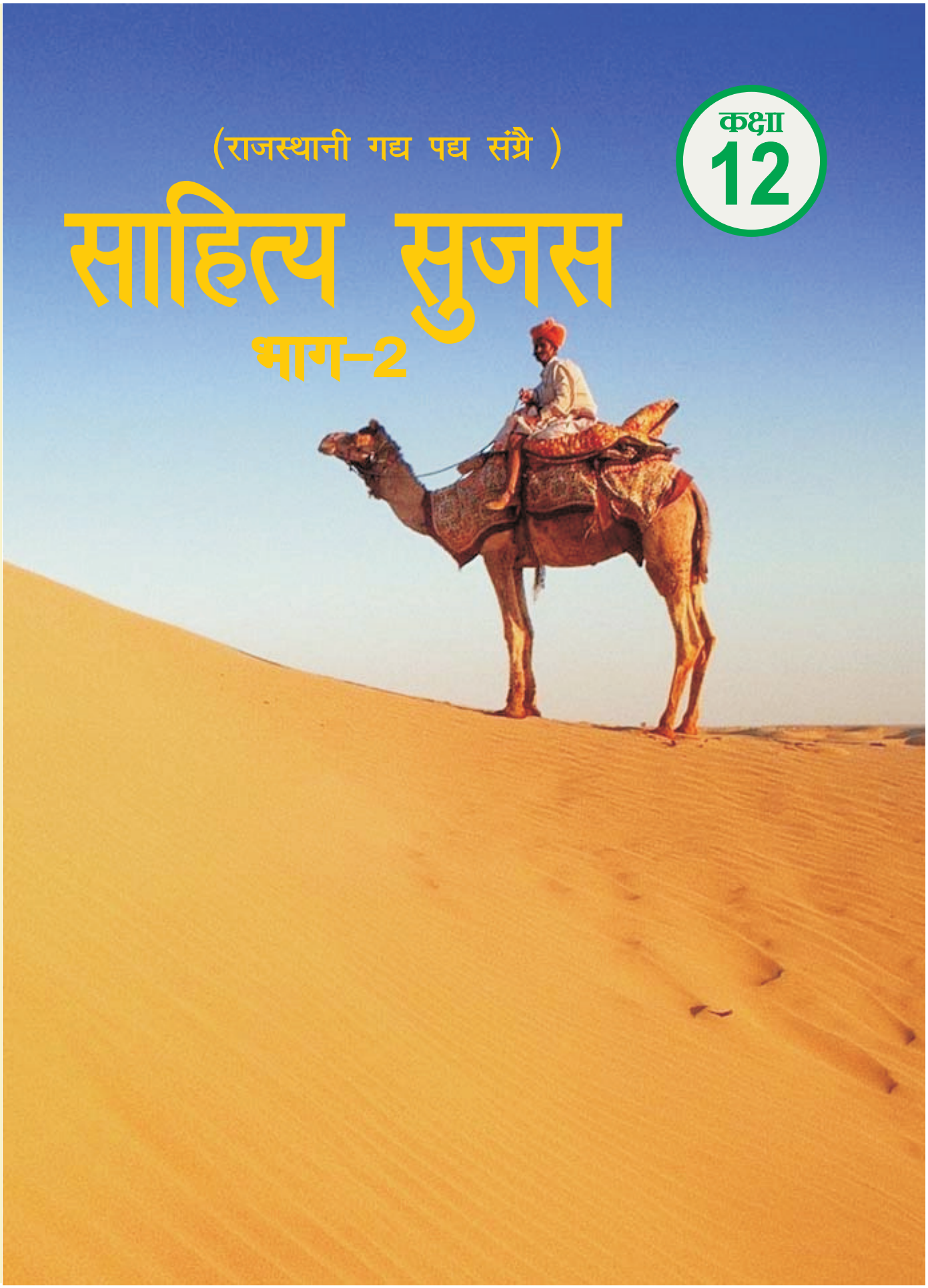

साहित्य-सुजस

भाग-2

(राजस्थानी गद्य-पद्य संग्रै)

कक्षा 12 रै राजस्थानी साहित्य विसय सारू
स्वीकृत पाठ्यपोथी

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक : साहित्य सुजस भाग–II (राजस्थानी गद्य पद्य संग्रै)

कक्षा – 12

संयोजक :–

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत, अध्यक्ष राजस्थानी विभाग
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर

लेखकगण :–

1. **डॉ. मदन सैनी,** वरिष्ठ व्याख्याता, हिंदी विभाग
मांगीलाल बागड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
नोखा, बीकानेर

2. **डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित,** सहायक आचार्य, राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

3. **विक्रमसिंह चौहान,** व्याख्याता राजस्थानी
राजकीय मोहता मूलचंद उ. मा. विद्यालय, बीकानेर

पाठयक्रम समिति

पुस्तक : साहित्य सुजस भाग–II (राजस्थानी गद्य पद्य संग्रै)

कक्षा – 12

संयोजक :–

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत, अध्यक्ष राजस्थानी विभाग
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर

सदस्य :–

1. **डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास, व्याख्याता**
   सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

2. **विजय कुमार पारीक, प्रधानाध्यापक**
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय काम्बा, आहोर, जिला–जालोर

3. **डॉ. शिवराज भारतीय, प्राध्यापक**
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिरकाली, नोहर जिला–हनुमानगढ़

4. **नरसिंह सोढ़ा,** वरिष्ठ अध्यापक
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बज्जू, कोलायत जिला–बीकानेर

संयोजकीय

राजस्थानी साहित्य सूरां, सतवादियां, सामधरमियां रौ साहित्य। मरण-तिंवार मनावण वाळै इण प्रदेस री भासा राजस्थानी में वीरता, भक्ति अर सिणगार री रस-त्रिवेणी कदैई खळखळाट करती घणै वेग सूं, तौ कदैई मधरी-मधरी बैंवती निजर आवै।

आद-जुगाद जूना इण साहित्य में जीवण रा सगळा पखां रौ वरणाव होयौ है। जुग री थितियां मुजब अठै रौ साहित्यकार घणी सावचेती सूं कलम री कोरणी मांडी अर समाज नैं हरेक जुग में चेतावतौ रैयौ है। देस अर समाज री राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक आद सगळी थितियां साहित्य-सिरजक सूं अदीठ नीं रैयी। राजस्थानी साहित्य रा अखूट भंडार रा कीं मूंघा माणक-मोती इण पोथी में जड़ीज्या है। इण पाठ्यपोथी में गद्य अर पद्य री दोनूं विधावां सूं जूना अर नूंवा साहित्य रा दाखला सरूप टाळवीं रचनावां लिरीजी है।

बदळता बगत में राजस्थानी साहित्य लेखन री दीठ ई चौनिजरां होयी है। आं रचनावां सूं इण बात रौ ग्यान होवै कै राजस्थानी लेखन आपरा नूंवा सिल्पगत, विसयगत, बिम्ब विधान अर प्रतीक विधान अंगेजतां आगै बध्यौ है। जैन सैली, संत सैली, चारण सैली अर लौकिक सैली री रचनावां रौ लेखन हरेक जुग में होयौ है। इण सिमरथ परंपरा री इधकाई री बात करां जित्ती ई थोड़ी।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर रै निरदेसन अर रीति-नीति मुजब आ पोथी त्यार करीजी है। राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति री अंवेर सारू माध्यमिक शिक्षा बोर्ड सूं जिकी अपणायत मिळी, उणसूं पोथी संपादन में हूंस अर हुलास बध्यौ। इण पोथी रै पाठां रौ संकलन करणिया, सहयोगी लेखकां अर संपादक-मंडल रै साथै बोर्ड कानी सूं मिळ्या सहयोग सारू आभार। पूरौ पतियारौ है कै राजस्थानी साहित्य री आ पोथी 12वीं कक्षा वास्तै घणी उपयोगी होवैला। इणनैं पढनै पढेसरी आपरी संस्कृति अर परंपरावां सूं जुड़नै भावी जीवण में संस्कारां अर नूंवी ऊरमा रै साथै आगै बधैला। इणी मंगळ कामनावां साथै—

सारद माता सीस नमावूं ओ वर दीजै।
सबदां में जीवूं, मर जावूं, सबदां रौ आगोतर दीजै।।

-डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

विषय– साहित्य सुजस भाग–2 (राजस्थानी गद्य पद्य संग्रै)

समयः 3.15 घंटा **पूर्णांक : 80**

1.	राजस्थानी पाठ्य पुस्तक (गद्य– 28, पद्य – 28)	56
2.	राजस्थानी साहित्य रो इतिहास	6
3.	निबंध रचना	6
4.	काव्य शास्त्र– छंद– अलंकार	12
		कुल 80

क्र.सं.	पाठ्य वस्तु	कालांश	अंकभार
1.	गद्य भाग		
1.	गद्यरी सप्रसंग व्याख्या अर आलोचनात्मक सवाल सप्रसंग व्याख्या (3) आलोचनात्मक सवाल (4)	100	28
2.	राजस्थानी साहित्य रो इतिहास – प्राचीन काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल	20	6
3.	निबन्ध लेखन (साहित्यिक, भावनात्मक, देशभक्ति सामाजिक) राजस्थानी भासा मायं	10	6
2.	पद्य भाग		
1.	पद्य री सप्रंसग व्याख्या अर आलोचनात्मक सवाल सप्रंसग	100	28
2.	सप्रसंग व्याख्या – 3, आलोचनात्मक सवाल– 4		
2.	काव्य शास्त्र		
(i)	काव्य री परिभाषा, भेद, तत्व अर प्रयोजन	10	4
(ii)	छंद– कुण्डलियों, छप्पय, वेलिया, त्रिबंकड़ो	15	4
(iii)	**अलंकार – अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक**	15	4
		कुल 270	

विगत

मंडाण	पोथीमाळ रा पुहुप	*डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत*	7

गद्य-खंड

इकाई : अेक

वात	राणी चौबोली री वात		11
वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	*शिवदास गाडण*	17
विगत	मारवाड़ रा परगनां री विगत	*मुहणोत नैणसी*	22

इकाई : दो

कथा	वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा	*देईदान नाइता*	28
लोकगाथा	हर्ष-जीण री लोकगाथा		32
उपन्यास-अंस	कनक-सुंदर	*शिवचन्द्र भरतिया*	39

इकाई : तीन

कहाणी	अलेखूं हिटलर	*विजयदान देथा*	45
	बंटवारौ	*हनुमान दीक्षित*	55
	गाय कठै बांधूं	*रामस्वरूप किसान*	60

इकाई : चार

लघुकथा	आज रौ सरवण	*डॉ. लीला मोदी*	66
	माटी री मनस्या / बांझ	*भंवरलाल 'भ्रमर'*	68
निबंध	सुख-दुख	*प्रो. कल्याणसिंह शेखावत*	71
रेखाचित्राम	चामळ का घाट पे	*अतुल कनक*	78

इकाई : पांच

व्यंग्य	सवाल शुद्धता रौ	*डॉ. भगवतीलाल व्यास*	82
	म्रित्युरासौ	*शंकरसिंह राजपुरोहित*	88
गद्य-काव्य	नुकती-दाणा	*गोविंद अग्रवाल*	94
	गळगचिया	*कन्हैयालाल सेठिया*	95
उल्थौ	साहित्य रौ मकसद (प्रेमचंद)	*उल्थाकार : नन्द भारद्वाज*	98

पद्य-खंड

इकाई : अेक

जूनौ काव्य	रणमल्ल छंद	*श्रीधर व्यास*	106
लोक-काव्य	ढोला-मारू रा दूहा		110
रास	वीसलदेव रास	*नरपति नाल्ह*	114

इकाई : दो

सबद-वाणी	सबद	*सिद्धाचार्य जसनाथ*	121
भक्ति-काव्य	देवियांण	*ईसरदास बारठ*	126
रासौ-काव्य	राम रासौ	*माधवदास दधवाड़िया*	132

इकाई : तीन

डिंगळ-गीत	आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर	*बांकीदास आसिया*	140
अध्यात्म-पद	आतम-संबोध	*श्रीमद् जयाचार्य*	143
पद	भक्ति रा पद	*भक्त कवयित्री समान बाई*	147
डिंगळ-छंद	तमाखू री ताड़ना	*ऊमरदान लाळस*	155

इकाई : चार

कविता	सपनौ आयौ	*हीरालाल शास्त्री*	160
	मरण-पंथ रा पंथी	*सुमनेश जोशी*	164
	लिछमी	*रेवतदान चारण*	168
	कतनी बार मरूं / काजळी तीज	*रघुराजसिंह हाड़ा*	172
	भासा सूं अरदास / ओळबौ	*चंद्रप्रकाश देवल*	177
	टूटी ओदणिये / अेक वाटली आटा नु हगु	*डॉ. ज्योतिपुंज*	183

इकाई : पांच

परिशिष्ट

साहित्य-इतिहास	राजस्थानी साहित्य रौ इतिहास	190
काव्य-सास्त्र	काव्य री परिभासा, तत्त्व, भेद, प्रयोजन अर राजस्थानी छंद अर अलंकार	208
निबंध-लेखण	राजस्थानी निबंध लेखण	224

मंडाण

पोथीमाळ रा पुहुप

मायड़ रै हेज जैड़ी हेजळी, काळजै हिंवळास देवण वाळी मायड़ भासा राजस्थानी री बात करतां कंठां रै मारग अंतस तांई मीठास पूगै।

राजस्थानी भासा जुगां जूनी अर घणी सिमरथ है। राजस्थानी री अखूट साहित्य-संपदा, भासा री व्याकरण, उणरी न्यारी-न्यारी विसेसतावां, सबद भंडार जिणमें दो लाख नैड़ा सबदां रा अरथ है। अरथ ई नीं, अेक सबद रा अनेक अरथ अर अेक अरथ वाळा घणा ई सबद इणरी अखूट थाती है। सात करोड़ सूं बेसी तौ राजस्थान री जनसंख्या है, इणरै बारै ई पूरा भारत में जठै-तठै राजस्थानी बोलण वाळा रैवै, राजस्थान अर आसै-पासै जठै आ भासा बोलीजै, उण रा भूखेत्रां नैं मिळावां तौ राजस्थानी विसाल भूखेत्र में बोलीजण वाळी भासा है। जूनी मुडिया लिपि रै पछै देवनागरी लिपि इणरै कनै है। सब सूं मोटी बात जिकी इण भासा नैं सांवठी करै वा है इणरी बोलियां अर उपबोलियां। मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ोती, ढूंढाड़ी, मेवाती, वागड़ी, सेखावाटी, तोरावाटी, गोडवाड़ी आद इणरी बोलियां अर उपबोलियां है। राजस्थानी में आ कैवत ई चावी है कै 'बारा कोसां बोली बदळै', पण आं बोलियां में बरतीजण वाळा आंचळिक सबद राजस्थानी री सबद-संपदा नैं बधावै। भासाविदां रौ अैड़ौ मानणौ है कै जिण भासा में जित्ती ज्यादा बोलियां होवै वा भासा बित्ती ई सिमरथ अर सिमरध बणै। राजस्थानी अेक स्वतंत्र अर संपन्न भासा है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड रा पाठ्यक्रम में राजस्थानी पढाई जावै, इणरौ म्हांनै अंजस है। बारवीं कक्षा वास्तै 'साहित्य-सुजस' (भाग-2) में राजस्थानी भासा री टाळवीं रचनावां लिरीजी है। आं रचनावां सूं राजस्थानी साहित्य री कूंत तौ करीजै ई है, साथै ई आंनैं पढण वाळा टाबरां रै चरित्र नैं ऊजळौ बणावण अर संवारण रौ काम ई अै रचनावां करैला।

टाबरपणै में नानी-दादी सूं जिकी बातां सुणता हा उणां री ओळूं अंतस रै किणी खूणै में अजेस ई लुक्योड़ी बैठी है। 'वैताल पचीसी' री बातां हितोपदेस अर पंचतंत्र री कथावां जैड़ी है। विक्रम-वैताल री कथावां सूं कुण अणजाण है। आं कथावां सूं विद्यार्थियां रौ चिंतन खिमतावान बणै। इणी दीठ सूं जूनौ गद्य अर पद्य इण पोथी में राखीज्यौ है। राजस्थानी रै सांवठै साहित्य भंडार सूं कीं टाळवीं रचनावां इण पाठ्यपोथी में लिरीजी है। राजस्थानी साहित्य रै आदि, मध्य अर आधुनिक काळ सूं विद्यार्थी रूबरू व्है सकै, इण वास्तै पंचतंत्र, हितोपदेस जैड़ी कथावां में 'वैताल पचीसी' री कथावां आपरी न्यारी ठौड़ राखै। 'भणिया पण गुणिया कोनी' कहावत नैं चरितार्थ करण वाळी 'वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा' जीवण रौ गुर सिखावै। 'चौबोली री बात' अर 'मारवाड़ रा परगना री विगत' राजस्थानी रै प्राचीन गद्य री ओळखाण करावै।

आज रै बगत में मिटता मानवी मूल्य, जीवन-आदर्श, टूटता परिवार अर अेकलपै मिनख नैं हेत अर अपणायत री दरकार है। भाई-बैन रा संबंधां री लूंठी बानगी है— 'हर्ष-जीण री लोकगाथा'। आ गाथा मानवी संवेदनावां नैं जंझेड़ देवै। राजस्थानी-साहित्य में त्याग, समरपण, बळिदान री कथावां चावी है, जकी अठै री संस्कृति री ओळखाण है। वीर सांस्कृतिक परंपरा अर स्वातंत्र्य भावना री निकेवळी रचनावां में 'अचलदास खीची री वचनिका' जूनै गद्य रौ नामी दाखलौ है।

विकसाव रै मारग माथै केई पड़ाव पार करती राजस्थानी रै आधुनिक गद्य री सगळी विधावां में सिरजण री साख भरती रचनावां में 'कनक-सुंदर' राजस्थानी रौ पैलौ उपन्यास है। इणरौ कीं अंस पोथी में राखीज्यौ है। पाठ्यपोथी में कहाणियां, लघुकथावां, निबंध, रेखाचित्राम, व्यंग्य, गद्यकाव्य आद सगळी विधावां लेवण रा जतन करीज्या है।

आज रै भोगवादी जुग में मिनख खुद मिनख सूं आंतरै जीवण लागौ है। वौ आज री भागदौड़ वाळी जीवाजूण में गम्योड़ौ, खुद चमगूंगौ होयोड़ौ रात-दिन आफळीजतौ रैवै, जाणै किणी गम्योड़ी चीज नैं सोधतौ व्है। खुद रै माथै गाडां-गाडां भार ऊंचायोड़ौ बेवूलौ होयोड़ौ फिरै। वौ आपरा गाढा संबंधां री साख नैं ई बचायनै नीं राख सक्यौ। आज ठौड़-ठौड़ बण्योड़ा वृद्धाश्रम, अनाथालय इण बात री पिछाण करावै कै आधुनिक दीठ सूं तौ आपां आगै बधता जावां हां, पण मूळ सूं कटता जा रैया हां। जड़ सूखगी तौ रूंख जावैला, पछै डाळियां अर पानड़ां रौ लेखौ करणौ मूरखता है। आपां री जड़ां है आपणा माईत, आपणा बडेरा अर पान-फूल है आपणा टाबर। परिवार री इकाई सूं इज समाज बणै अर समाज तद ई रातौ-मातौ बण सकै जद आपां में संस्कार जीवता रैवैला।

आज रै आपा-धापी रै जुग में मिनख खुद नैं मोटौ समझै। आपारा अहम नैं राखण वास्तै वौ दूजां नैं कीड़ा-मकोड़ा समझण लाग जावै। अहम रौ राकस इत्तौ बळवान बण जावै कै समाज में विणास रौ कारण बणै। जबरां री रोज दिवाळी व्है। समाज री विसंगतियां, विडरूपतावां सूं अरू-बरू करावण वाळी रचनावां इण पोथी में राखीजी है। मानखो सहज-सरल भासा में समझ जावै तौ आछौ, नीं तौ व्यंग्य-बाण सूं उणनैं सावचेत करणौ साहित्यकार रौ फरज बणै। बात नैं मांडनै कैवणी अेक कला है, तौ थोड़ै में घणौ कैवण री हटोटी ई साहित्य में है। 'छोटी तुक रौ दोहलौ, सब कवितन को भूप' ज्यूं 'गळगचिया' अर 'नुकती-दाणा' ई पढण में सौरा, मनोरंजक होवण रै साथै जीवण-दरसण री पिछाण करावण वाळा है। 'गागर में सागर' री खिमता आं मांय है। प्रेमचंद रै आलेख 'साहित्य का उद्देश्य' रौ उल्थौ 'साहित्य रौ मकसद' राजस्थानी में अनुसिरजण री साख नैं सवाई करै।

राजस्थानी रै प्राचीन पद्य साहित्य में वीर रस री रचनावां री आपरी परंपरा रैयी है। इण परंपरा में 'रणमल्ल छंद' वीर रसात्मक अैतिहासिक खंडकाव्य है। औ अेक चरित-काव्य ई है। रणमल्ल री वीरता अर दरप राजस्थानी वीर संस्कृति री ओळखाण करावै।

राजस्थानी संस्कृति में वीरता, सिणगार, भक्ति रा सुर अेकण सागै गूंजिया। वीर भोग्या वसुंधरा में जठै मरण-तिंवार मनाईज्या— 'मरणा नूं मंगळ गिणै, समर चढै मुख नूर' अर 'चूंडावत मांगी सेनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी'। अेक दूजै रूप में यूं कहीजै—

सत री सहनाणी चही, समर सलूंबर धीस।
चूड़ामण मेली सिया, उण धण मेल्यौ सीस।।

वीरता में त्याग अर बळिदान रा भाव है। पण जठै प्रेम होवै बठै समरपण-भाव रौ होवणौ ई घणौ जरूरी है। जुद्धां रा रीझाळू प्रीत निभावण में ई पाछ नीं राखता। जे कर्तव्य रै आडी प्रीत आयगी तौ पाबूजी राठौड़ रै ज्यूं ब्याव रा तोरण सूं सदैव रण-तौरण वाल्हौ हौ वीरां नैं—

परणी छोडी बिलखती, माथै जस रौ मोड़।
बणियौ गायां बाहरू, रंग पाबू राठौड़।।

प्रेम सिणगार अर उणमें ई विरह सिणगार में मानवी संवेदनावां उफणन लागै। जूना काव्य जिका प्रेमाख्यान ई है। इणां में लोक-सैली री घण महताऊ कृतियां है— 'ढोला-मारू रा दूहा' अर 'वीसलदेव रास'। नायिका रौ विरह वरणन, मानसिक दसावां, आपरी संवेदनावां नैं पंखेरुवां साथै बांटणी अर पंखेरुवां री पीड़ नैं

आत्मसात करणी, बारहमासा वरणन सूं नायिका रै विरह सूं उपजी वेदना रौ मरमपरसी वरणन आं दोनूं काव्यां में होयौ है।

मिनख रै हिरदै में प्रेम-तत्त्व रौ होवणौ घणौ जरूरी है। प्रेम रै ओळै-दोळै इज सगळा भाव फिरै। देसप्रेम है तौ वीरता रौ भाव अपणै आप आय जावैला। प्रेम तत्त्व है तौ भगवान रै प्रति प्रेम होवण सूं ई भक्ति री भावना जागै। भक्ति में विस्वास अर आस्था जुड़्योड़ी है। सक्ति री भक्ति रै रूप में 'देवियांण' जठै सक्ति री सरब व्यापकता नैं बतावै, बठै ई जीवण-आदरसां रा रुखाळा श्रीराम रै चरित्र नैं उजागर करण वाळौ महाकाव्य 'राम रासौ' है। समाज में जीवण-आदरसां नैं जींवता राखण सारू राम जैड़ा चरित्रां री दरकार है। कृष्ण भक्ति काव्य में समान बाई रौ काव्य महिला-सिरजण री साख भरै। जुग बदळै ज्यूं जुग रा मानदंड ई बदळै, थितियां ई बदळै अर हरेक जुग में कवि या साहित्यकार आपरौ फरज निभावण सारू समाज नैं चेतावतौ दीखै। साहित्यकार जुगद्रस्टा अर स्रस्टा दोनूं है। जैड़ौ देखै वैड़ौ ई लिखै। अैड़ा ई जुगबोध करावण वाळा कवियां में संधिकाळ रा कवि बांकीदास आसिया रौ नांव आवै। आप अंग्रेजी सत्ता रौ विरोध करतां उणरै खिलाफ डिंगळ गीत 'आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर' रचनै जनमानस नैं सावचेत कर्‌यौ। जातीय अेकता ई इण गीत में निजर आवै। जिकौ वीर रजपूती निभावै वौ राजपूत है। वरण व्यवस्था में क्षत्रियां नैं देस री रिछ्या रौ भार सूंपीज्यौ, पण बांकीदासजी हर मिनख नैं देस-रिछ्या रौ भार सूंपणी चावै।

देस आजाद होयां पछै ई मानखै रै साथै न्याय होवतां नीं देखनै कवियां रा मन घणा कळपता। वै साची बात कैवण में पाछ नीं राखी। ऊमरदान लाळस खंडन परंपरा री सरुआत करतां सामाजिक बुरायां रौ जिकौ खुलासौ करै, वौ राजस्थानी काव्य पेटै उण बगत में साव नूंवौ दीसै। नसा-मुगती रै वास्तै कवि रा जतन अैळा नीं जावै, इण वास्तै वौ भांत-भांत सूं मानखै नैं उबारण खातर थुड़ै। समाज रौ पतन होवतां कवि कीकर देख सकै। आज रा मोट्यारां वास्तै औ पाठ महताऊ है। जनता नैं उणरा अधिकार मिळै, न्याय मिळै, भासा रै साथै अन्याय अर उणरै आघमान में जिकी पीड़ कवि रै हियै में है वा हरेक भासा-भासी रै हिरदै री पीड़ होवणी चाईजै। आपरी भासा नैं मान मिळै, पिछाण मिळै, इण वास्तै 'मरण-पंथ रा पंथी' बण त्याग, समरपण करण री जरूरत है।

रेवतदान चारण री कविता 'लिछमी' करसै अर मजूर री हिमायत करै अर अंत में उणां री सावचेती अर जागरण री बात ई कवि कर देवै। अधिकार कोई देवै कोनी, उणनैं खोसनै लेवणौ पड़ै। इणीज भाव री आ रचना सोसित-वरग अर सोसक-वरग रै बिचाळै ऊभी लिछमीरूपी अधिकार संपदा जनमानस नैं सूंपण री कविता है।

समाज में आपरी जीवाजूण नैं जींवता, जीवन रूपी मांचै री वदाण नैं ताणण वाळां री संख्या घणी है। जीवण रा अभाव, समाज री विसंगतियां बदळती वैचारिक मान्यतावां नैं साम्हीं राखै— ज्योतिपुंज री रचनावां। आधुनिक कविता में रूपगत, सिल्पगत नूंवा प्रयोग आप कर्‌या है। बोलण अर लिखण सारू भासा अेक ठोस माध्यम है। जद भासा ई नीं होवैला तौ सोचौ कै आपां रौ कांई आपौ रैवैला। आज तौ गूंगा-बोळां रै कनै ई भासा है, जिणसूं वै आपरा विचार राख सकै। आपां साजा-ताजा होवता थकां ई बिना भासा नैं अंगेजियां गूंगा हां अर उणरी (भासा री) पीड़ नैं बिना सुण्यां बोळा हां। अैड़ी बातां कवि अर साहित्यकार ई समझ सकै। चंद्रप्रकाश देवल री कवितावां 'भासा सूं अरदास' अर 'ओळबौ' भासा री इणीज पीड़ नैं प्रगटावै।

साहित्यकारां रै लेखन-कला री बात करतां बार लागै, राजस्थान री इण माटी अर माटी रा जायोड़ा रचनाकारां री खिमता नैं घणा रंग।

-डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

राणी चौबोली री वात

पाठ परिचै

राजस्थानी लोककथावां (बातां) मांय 'राणी चौबोली री वात' घणी गीरबैजोग है। इणमें लोकतत्त्वां री भरमार है। कथानक रूढ़ियां— जीव-जंतुवां री बोली समझणौ, मोसा बोलणौ, रूप बदळणौ, जादू री लकड़ी, राजकंवरी रौ फूलां सूं तुलणौ इत्याद रौ सांतरौ संयोजन इण वात में होयौ है। आ 'वात' साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं मनोहर शर्मा अर श्रीलाल नथमल जोशी रै संपादन में छपी पोथी 'राजस्थानी वात-संग्रह' सूं लिरीजी है।

कथासार

उज्जैण नगरी रौ राजा भोज जीव-जंतुवां री बोली समझै, पण उणनैं किणी नैं बतायां उणरी मौत होय सकै। अेक दिन जीमती वेळा उणरी थाळी सूं अेक कीड़ी चावळ रौ दाणौ लेयनै चालै। मारग में दूजी कीड़ी उणसूं कैवै कै म्हारै पांवणा आयोड़ा है, सो औ चावळ रौ दाणौ म्हनैं देय दै। कीड़ियां री बंतळ सुणनै राजा भोज नैं हंसी आवै, तद उणरी राणी भानुमती हंसी रौ कारण जाणण सारू हठ पकड़ै। राजा उणनैं लेयनै गंगा रै कांठै सिंहकर स्हैर में डेरौ देवै, जठै अेक बकरी-बकरै री बंतळ सुणनै उणरौ मत बदळ जावै। राणी रौ मोसौ सुणनै वौ चौबोली सूं ब्यांव करण री तेवड़ै, जिणरौ हठ होवै कै उणनैं जकौ च्यार बार बोलासी उणरै सागै ई वा ब्यांव करसी। राजा भोज औ बीड़ौ उठावै पण मारग में अेक राखसणी रै चंगुल में फंस जावै। वौ आपरा करामाती भायलां—आगीयौ बैताल, कवडीयौ जुवारी, खापरौ चोर अर माणकदे मदवांण नैं याद करै। अै च्यारूं भोज नैं राखसणी री कैद सूं छुडावै अर सगळा माखी बणनै राणी चौबोली रै ढोलीयै माथै कवडीयौ जुवारी, झारी माथै माणकदे मदवांण, दीवै माथै आगीयौ बैताल अर राणी रै हार माथै खापरौ चोर जाय बैठै। पछै राजा भोज पैलै पौर में ढोलीयै नैं, दूजै पौर में झारी नैं, तीजै पौर में दीवै नैं अर चौथै पौर में हार नैं हुंकारौ भरावतां थकां कथावां कैवै अर वांसूं जुड़्या सवाल पूछै, पण उणरा भायला गलत पड़ूत्तर देवै, जिणसूं रीसां बळनै चौबोली सही जबाब देवती थकी च्यार बार बोल जावै। राजा रा भायला बराती बणै अर राजा भोज चौबोली नैं परणीज जावै। महल में पूग्यां पछै भानुमती वांरौ आरतौ उतारै।

राणी चौबोली री वात

उजेण नगरी, राजा भोज राज्य करै। नव वारी नगरी। चौरासी चौहटा, छतीस पोळी। च्यार धरण रहै। छतीस पवन जाति लोक बसै। कोड़ीधज व्यापारी रहै। षटदरसणी रहै। तिण नगरी रै विषै राजा भोज राज्य करै। छतीस राजकुळी राजा री सेवा करै। तिण राजा रै च्यारि मित्र। आगीयौ वेताल। कवडियौ जुवारी। माणिकदे मदवांण। खापरौ चोर। सु राजा भोज रै घरे आया। घणा कायदा किया। अनेक भांति री भक्ति हुई। घणा सनमान दे नै कह्यौ—पनरहवीं विद्या मोनुं जिण भांत आवै, तिम करौ। ताहरां च्यारां ही कह्यौ—जु बाराही देवी रै जाइ नै पूजा आहवांन करि देवी आराहिस्यां। पिण हेक थोक माहाराज करणो छै। पण राणीजी अर थां गाढो सुख छै। कोई बात पूछै तो नटो मतां। अर नटो तो कहो मतां। अरु बात नटि ने कहीसौ तो थांरो मरण हुसी।

राजा कह्यौ—म्हे क्यां ही नुं कहिस्यां? एक दिन राजा आरोगतो हुतो और राणी जी माख्यां उड़ावता हुता। गछगरी रौ आंगणौ थौ, तितरै एक कीड़ी चावळ ले हाली हुती, तितरै बीजी आइ खोसण नुं झूंबी। ताहरां कीड़ी

बोली—मो आगा कासूं खोसै ? ऐ चावळ राजा भोज री थाळी माहे घणा ही पड़िया छै। तूं ओर ले जाह। ताहरां कीड़ी कह्यौ—म्हारे पाहूणा आया छै, ले जावण दे मोनुं। इसी बात सांभळि नै राजा भोज हंसीयौ। राजा जीवभाषा सरब जाणतौ। ताहरां राणी पूछीयौ—जु महाराज, कुण वासते हंसीया। राजा नटीयौ। राणी बहुत गाढ करि पूछण लागा, जु महाराज, मोनुं हंसीया रौ विरतंत कहीजै। राजा मन में विचारीयो—नटीयो तो कहण रौ मैं नहीं। कहीजै तो मरण हुवै। राणी दांतण फाड़ै नहीं। ताहरां राजा कह्यौ—बात गंगा जी रै तट कहीजसी। राजा चालीयो।

गंगाजी रै कांठे सिंहकर सहर हुतौ। बाहिर जाइ उतरीया। उवां सूं कोस पांचै एकै नदी रै कांठै जंगळ मांहे डेरा हुया। नदी री हवा देख अर जंगळ पधारीया। एकांत पधारीया, आगै एक कूवौ छै। कूवै मांहे काचरां री बेल बहुत फळी छै। कूवै कांठै एवड़ चरै छै। एक छाळी बाकरै नुं कहै छै—कूवै मांहि काचर ले दै तो तोनुं वरूं। ताहरां बाकरो बोलीयौ—म्हारी अकल राजा भोज भिळी नहीं छै। बायर रै कहीयै मरण नुं जाइ छै। सिर साबत तौ ब्याह घणां। तिका बात सांभळि नै राजा-विचारीयौ, जु हूं चौदह विद्या रौ निधान, सु म्हारी मति बाकरै कही। राजा पाछौ डेरै आयौ। राणी आय हजूर बैठी छै। राणी कहै—रावळै गंगा री जाति काइ करणी छै नहीं। रावळै विमाह करणौ छै। राजा कहै—''राणीजी, म्हारै विमाह कोई करणौ छै नहीं।'' ''महाराज विमाह अवस्य करिस्यौ। वीमाह करौ तो चौबोली परणीजिस्यो। ज्यूं हुं ई जाणै सोक आई।'' राजा जाणीयौ, रांणी म्हारै कयै नहीं। ताहरां घोड़ो मंगाई, तोसदान मुहरां भरि, सूतै कटक एकलौ चढि खड़ीयौ। जावतां-जावतां देखे तो कासूं, एक पाहाड़ मांहे राखस राखसणी रै गोडै माथौ दे सूतौ छै।

तेल रौ कडाहो उकळै छै। अगर रा लाकड़ हेठै धुखै छै, राजा अगर री वास सुं मन में विचारीयौ—जे एथ कोई हस्तबंध राजा छै, कै पवनबंध योगी छै। तेरे अगर बळै छै। राजा भोज अगर री वास सुं उथ आयौ। राखसणी राजा नुं देखि नै साड़ी रौ पल्लो फेरियौ। समस्या कीवी, तूं एथ क्यूं आयौ। तोनुं राखस खासी। राखसणी सोवनमाखी राजा नुं करि नै जटा माहे राखीयौ। राजा च्यारे ही धरम भाई समरीया—आगीयौ, कवडीयौ, खापरौ, माणिकदे। धरम-भाई च्यारे ही कह्यौ हुतो, राजा तोनुं काई दोहरी वरीयां हुवै, तेथ म्हानुं समरे। आइ हाजिर हुस्यां। राजा राखसणी री जटा माहे विमासै छै। म्हारी अकल चूक, जु गंगाजी रै कंठ मरण हुवै हंत तौ मुगति जावंत। तेथि न गयौ। हिवै म्हारा धरम-भाई हुता, तांहनुं समरीस ज्युं मखी हुवौ नीसरीस। सु उवै च्यारै ही वीर काई पातिसाह री चोरी गया हंता।

सु घणौ ही माल ल्याया हुता, सु वाराही देवी री पूजा करै छै। ताहरां उवां जांणीयौ—राजा सांकड़े पड़ीयौ। म्हानुं समरै छै। ताहरां घोड़ै चढि अर खड़ीया। राखस हुतौ, तेथ आया छै। ताहरां आपस मांहे विचार मांडीयौ—आपां कासूं करिस्यां ? ताहरां खापरौ बोलीयौ, मो कन्हे उपाव भलो छै। वेश्या री कोपरी में काजळ पाड़ीयौ छै, तिकौ काजळ इण में घातिस्यां। नाख्यौ। घाततां ही मूरछा गति हूवौ। ताहरां राखसणी रै माथै में सोवनमाखी रै रूप राजा हुतौ, सु काढि उरहौ लीयौ। ताहरां राजा नुं पूछीयौ—जु थां कासूं विचार कियौ ? म्हां तो थानुं कह्यौ हूतौ। ताहरां राजा कहै—आ बात परमेश्वर री चाही हुई। रांणी म्हानुं बोलीया—जु चौबोली परणीया। सु परणी चाहीजै। ताहरां उवै कहै, राजा चौबोली री बात महा कठिन छै। पिण थारौ भाग बडौ छै, सु उपाय सखरौ करिस्यां। ताहरां भेळा हुइ नै पैंडै चालीया छै। धरती लोपि अर चौबोली रै सहर पधारीया छै।

माळी रै घरै सखरी जाइगा बागीचा माहे डेरौ लीयौ। मालिण नुं मोहर दीधी। जीमण करायौ। डेरै सर्व जाबतो कीधो। तद मालण नुं पूछै छै—चौबोली नुं बोलावण आवै छै सु किसी भांत बोलावै छै। जे राति चौबोली न बोले तो परभात हुवै आगां पाणी ढोवावै छै। तै सारु थेह विचारि जाइ बैसिया। तै ऊपर राजा भोज, आगीयौ बैताल, कवडीयौ जुवारी, खापरौ चोर, माणिकदे मदवांण पांचे ही बैसि विचार कीयौ—आपां किस्यां भांति बोलाविस्यां ? सु कूड़ सूहाइसी नहीं। ताहरां च्यारे ही बोलीया—तूं तो राजा जाइसी तारै बैसीस, ताहरां म्हारौ जोर कोई चालिसी नहीं। पिण म्हे छां वीर, काया भांज करि विहू ठिकाणौ जाइ बैसिस्यां। ताहरां थे बाति कहि नै म्हानुं पूछीया। म्हे कूड़

बोलिस्यां। ताहरां राणी बोलसी। ताहरां खापरौ चोर हार में आइ बैठो। कवडीयौ जुवारी ढोलीयै में जाइ बैठो। माणिकदे मदवांण झारी ऊपर जाइ बैठौ। आगीयौ बैताल दीवै जाइ बैठौ। ए च्यारे वीर माखी रौ रूप करि चिहुं ठिकाणै जाइ बैठा।

राजा भोज जाइ दरबार उभौ रह्यौ। ताहरां आगै दरबार माहें ठाकुर उमराव ऊभा हुता, सु राजा नूं पूछण लागा—राजा, चौबोली नु बोलाविस्यौ? राजा बोल्यौ, मनछा छै, बोलाविस्यां। ताहरां उवे ठाकुर बोलीया, अगला राजा बारह बरस हुवा पाणी भरतां। जे राति न बोली तौ परभाति थे ई उवां भेळा हुस्यौ। पिण एकर सों इयांनुं बोलाविस्यां। ताहरां मांहि गिलमां बिछायां। ऊपर चादरा बिछाया। ताहरां राजा नुं ले गया। आडी पीछतांणी हुती नै बाहिर राजा नुं बैसारीयौ। भीतर राणी चौबोली बैठी छै। बीजो लोक दासी खवास सरब बहुड़ाया। राजा अरु राणी बीच प्रीछ दियां महलां मांहे बैठा छै। च्यारे वीर चहुं ठिकाणै माखी रूप बैठा छै।

इम करतां राजा भोज बोलीयौ, जु महल री धणियाणी बोलै नहीं, च्यार पहर राति किसी भांति वितीत हुसी। तै ऊपर कबडीयौ जुवारी ढोलीयै ऊपर माखी रूप बैठो हुतौ, सु बोलीयौ—हे राजा, सुणि। पहिलौ तौ पहाड़ में काठ हुतौ, सु सकाइ नै सुथार ढोलीयौ घड़ीयौ। आठै ठोडे बांधीयो। नवार सु वणीयो। ऊपरि साढा तीन मण री देही चौबोली तपस्या करै। बात तौ कहि सगुं नहीं। जे तुं बात कहै तौ हुंकारौ द्युं। राजा कहे, साबास रे ढोलीया, साबास। हुंकारो देवे तौ तो सारीखौ कासूं छै? ताहरां राजा भोज बात कहै छै।

अेक हुतौ ब्राह्मण रौ बेटो। एक हुतौ सिलावटै रौ बेटो। अेक हुतौ सूजी रौ बेटो। एक हुतौ सुनार रौ बेटो। यां चारे ही मित्राचारौ थौ। सु भेळा हुइ देसावर नुं हालीया। जावतां-जावतां एकै उद्यान वन विषै आथुण हुवौ। ताहरां चारे बोलीया—रोही रौ समीयौ छै। पुहरै-पूळी सावचेत रहणौ। पहले पहर सिलावटै रौ बेटो बैठौ। ताहरां सिलावटै मन में विचारीयो, निकमां नुं राति कटै नहीं। कोई आवध कीजै। तद एक पथर दीठो।

ताहरां पूतळी निकूंती। तितरै पहर वितीत हुवौ। ताहरां सूजी नुं जगायौ। ताहरां सूजी पूतळी देखि विचारीयौ—साथी घड़ी। ताहरां सूजी कपड़ा सीवि पहिराया। इतरै दोइ पहर वितीत हुवा। ताहरां सोनी नुं जगायौ। सोनी पूतळी देखि अर गहणां घड़ि पहिराया। तितरै तीजौ पैहर वितीत हुवौ। ताहरां ब्राह्मण नुं जगायौ। ब्राह्मण पूतळी देखि नै मन में विचारीयौ, आगलै साथीये पूतळी तैयार कीवी। हिवै श्री परमेश्वर रौ भजन करूं, ज्युं जीव पड़ै। ताहरां पूतळी फिरण लागी। तद उवै च्यारे ही विरड़ीया। ऊ कहै, म्हारी बाइर, ऊ कहै, म्हारी बाइर। ढोलीया, उवा कैरी बाइर? ताहरां ढोलीयौ बोलीयौ—कपड़ा पहिराया तैरी बाइर। ताहरां राणी चौबोली ढोलीयै नुं लात बाही। ढोलीयौ चूर-चूर हुवौ। ताहरां कहै—क्युं रे कुकाठ कपूत? कपड़ा तउ बेटी नुं बाप पहिरावै। गहणां पहिराया तैरी बाइर। ताहरां बडा नीसाण पड़ीया। तां उपरि राजा भोज एक डंकौ दीयौ। ताहरां चौबोली रा मावीत सहर लोक सर्व खुसी हुवा।

आज कोई राजा बैठौ थौ, सु हेक बरीयां बोलाई। इतरै एक पहर वितीत हुवौ। हिवै बीजै पहर रै अमल माहे राजा भोज बोलीयौ—तीन पहर रात महल री धणीयाणी बोलै नहीं, राति किसी भांति वितीत हुसी? ताहरां माणिकदै मदवांण झारी में बैठो हंतो, सु बोलीयौ—राजा सुणि, हूं झारी घड़ी अर पाणी सुं भरी हुं। किसी भांति बोलूं। बात कहीस तो हुंकारौ द्युं। हुंकारौ देवै तौ तो सारीखौ बीजौ कोई नहीं। ताहरां झारी हुंकारौ दै छै। राजा बात कहै छै।

एक हुतौ ब्राह्मण। तैंरै बेटी बडकुमार हुती। भलावण च्यार ठोड़ घाती हुती। च्यारै ही ठोड़ै सगाई करि एक साहौ थापि दीयौ। च्यारै ही जानां आइ उतरीयां। ब्राह्मण नुं विचार उपनौ। बेटी एक, नै जानां च्यारि आयां। हिवै कासूं कीजसी? ताहरां बेटी बोली—बाप चिंता मति करौ। हूं म्हारी आपै निवेड़ीस। ताहरां ब्राह्मण चिहुं नुं सीधा पाणी दीया। कह्यौ—केसरीया बागा करि नै तोरण आवौ। गाडा च्यारि चंदण मंगाइ अरु आरोगी बणाई नै मांहै ब्राह्मण री बेटी जाइ बैठी।

अै च्यारै बींद तोरण आय ऊभा रह्या। ताहरां ब्राह्मणी बोली—मौ सुं हथळेवौ जोड़ै सु आवौ। ताहरां एक बींद घोड़ै हुं उतरि हथळेवो जोड़ि बैठौ। बीजा ऊभा हीज रह्या। ताहरां उवां नुं अगनि लगाय दीवी। ताहरां बींद उतरि नै

चाल्या अर फकीर हुवा। जानां आपरे घरे गयां। ताहरां एक तौ श्री गंगाजी फूल ले गयौ। बीजौ देसावर चलतौ रह्यौ। तीजौ मसाण सेवण बैठौ। जिकौ देसावर नुं उतरीयौ, सु एकै गरढै अतीत रै चेलौ हुवौ। ताहरां खंथा मेखळी घालि अरु भिख्या मांगि लावै। मेखळी मांहै एक लाकड़ी, सु मंगरा लागै। ताहरां गुरु नुं कह्यौ—मेखळी बीच लकड़ी है, सु डाल देवां। ताहरां गुरु बोलीयौ, लकड़ी बहुत गुणां री है, डालण री नहीं। ताहरां कह्यौ—बाबाजी, लाकड़ी मांहे गुण जो कहौ तौ रखां, नहीं तौ डाल देवां। कह्यौ, तौ इस लकड़ी को गुण है जो जू आदमी की हाडी कूं लगाइ तौ आदमी मूवौ जीवै। ताहरां एक समइयै लाकड़ी ले चलतौ हुवौ! मासे ३-४ समसाण आयौ। गंगा फूल परवाहण गयौ हुतौ, सु ई आयौ। उवै लकड़ी आंणि मसाण सुं लगाई।

सू बेउ उठि बैठा हुवा। ताहरां चिहुं आप बीच झगड़ौ हुवौ। ऊ कहै—म्हारी बाइर। ऊ कहै म्हारी बाइर। ताहरां झारी बोली—मसाण सेवीयौ, तैरी बाइर। ताहरां चौबोली रीस करि अर चमकि झारी फोड़ी अर कहण लागी—तैरी बाइर, जो साथ बळीयौ। ताहरां राजा नीसांण घाव दीयौ। दोइ वेळा चौबोली बोली। राति पहर दोइ वितीत हुई! हिवै तीजी बात कहै छै। हिवै तीजै पहर रै अमल राजा बोलीयौ। दोइ पहर रात रहै छै। महल री धणीयांणी बोलै नहीं। राति किसी भांति वितीत हुवै? ताहरां दीवै ऊपरां आगीयौ बैताल बोलीयौ—पहिलै लोह रौ घड़ीयौ दीवौ। माहि घातीयौ तेल। रूई री बाती जगाई। बोल सकूं नहीं। वात कहै तौ हूंकारौ द्यूं। साबास रै साबास दीवा! हुंकारौ दै तौ साबास छै। ताहरां राजा भोज कहै छै।

एक हुंती राजा री कुंवरी, एक हुतो मुहतै रौ बेटो। एक हुतौ ब्राह्मण रौ बेटो। मुहतै रौ बेटो पढि विद्वान हूवौ। ब्राह्मण रौ बेटो मूरख रह्यो। ताहरां सर्ब लेसालीया ब्राह्मण नुं मूरिखो बोलावै। ताहरां राजा री बेटी नै मुंहतै रै बेटै मतौ कीयौ—तुं मोनै ले नीसरै तौ हूं थारै साथै हालूं।

ताहरां मुहतै रै बेटै कह्यौ—हुं घरे जाइ तैयार हुइ आऊं छूं। कुंवरी नै कह्यौ—थे राजा रै पाइगह रा घोड़ा २ जय-विजय नाम छै, सु ले मरदानौ बागौ पहर खरची लेनै बाग में आयो। मूरिखै नूं मेल्हि समस्या कराविज्यौ। जिम म्हे पिण खरच लै आवां। ताहरां राजा री कुंवरी महल में गई। जाइ आगला कपड़ा उतारि, मरदांनगी कपड़ा पहिर, मुंहरां सुं तोसदान भर, छोकरी १ ले नै पाइगह गई। पाइगह जाइ राति रै समइयै जय-विजय घोड़ा छोडाया। घोड़ै चढि बाग में आया। ताहरां कुंवरी मुरखै नुं मेल्हीयौ— 'जु मुहतै रे बेटै नुं कहै, ज्युं वेगो आवै। ताहरां मुरखो दौड़तौ आवतौ, देवी सारदा साम्हीं आई। ताहरां पूछीयौ—तूं कुण छै? ताहरां कह्यौ—हूं देवी सारदा छूं। ताहरां मूरखो भाठो ले सिर फोड़ण लाग्यौ। हूं बामण रौ बेटौ अर मूरख! का विद्या दे, का लोही बांटीस। ताहरां सारदा बोली—मुंह मांडि। ताहरां मुंहडै मांहि राख मेली। ताहरां मूरिखै नुं तीन लोक सूझण लागा।

मूरखौ पाधरौ मुंहतै कन्है गयौ। मुंहतै नुं कह्यौ सारो ज कीयो। मूरखै नुं कपड़ा पहराय, हथीयार बंधाय, तोसदान मुंहरा दे मुंहतै कह्यौ—तूं ले जाह। मूरखौ राजा री कुंवरी कन्है आयौ। कुंवरी जांणीयो—मुंहतै रौ बेटौ आयौ। हेकै घोड़ै मूरिखौ चढियौ। हेकै घोड़ै कुंवरी चढी। चढि खड़ीया। जावतां-जावतां प्रभाति हुवौ। ताहरां कुंवरी बोली—मुंहता रा बेटा, राति च्यार पहर मारिग चालीया, पिण बोलीया काहे नहीं, सु किसी सचिंताई? ताहरां मूरिखौ बोलीयौ—हूं मूरिख छूं। मुंहतै रौ बेटौ मुंहतै राखीयौ। ताहरां राजा री कुंवरी सचींत हुई। जो पाछा जाईजै तौ ठौड़ नहीं। हिवै मूरखै गति। ताहरां मूरखौ बोलीयौ—जो देवी सारदा मोनुं वर दीयौ, हिवै हूं मूरिख नहीं। सचींत मतां हूवौ। इम करतां एकै सहर जाइ ठिकाणौ ले नै जाइ उतरीया। मास २-३ तिहां रह्या। तितरै सहर विखै एक तळाव खणीजतौ थौ, तिण में कीरतथम नीसरियौ। तिण ऊपर एक नामौं, सु किण ही बचै नहीं। एकै दिन मूरिखौ जाइ निसरीयौ, सु मूरिखै नामो बांचीयौ। तै नीचे सवा कोड़ वित बतायौ। ताहरां राजा खुणाय वित कढायौ।

ताहरां मूरिखै रौ नाम रतन-पारखू दीयौ। रतन परखावण लोक आवै। खोटै-खरै री खबरि करि दै। ताहरां कुंवरी कही सिद्ध आगा इसी राखड़ी कराई, जे बांधीजै तौ आदमी सूवो हुवै। एक समै सूवटौ करि बैसारीयौ हुतौ, सु ख्याल करतां उडीयौ। जाइ सहर रै राजा री कुंवरी पंचकळी नै मिल्यौ। चंपे री कळी सुं तुलती। तेरौ नाम पंचकळी कहावती। तैरै मौहल जाइ बैठो। पंचकळी पकड़ि लीयौ। अर ख्याल करतां देखै तौ राखड़ी छै। छोडै तो मनिख

हूवौ। राति मनिख करै। दिनै सूवटौ करै। इम करतां उवै सुं चूकी। सू मालण फूल ल्याई झुसै—सु जुखै नहीं। मालण जाय राजा सुं वीनती की। कुंवरी फूलां सुं बंधी सु कुं...। ताहरां राजा नगर-नाइका तेड़ी। तूं कुंवरी रै महल में निगह कर। ताहरां नगर-नाइका 'चोर-चोर' कर पुकारी। ताहरां राजलोक सही दौड़ीया। ताहरां मूरिखौ राजा री कुंवरी रै मेहल हेठै साह रौ घर हुतौ, तै मांहे कूद पड़ीयौ। साह नुं कह्यौ—हूं राजा रौ चोर हूं, उबारौ। साहूकार रै बडकुमार बेटी सूती छी। तै भेळौ सुवाणीयौ। राजा रा आदमी आइ फिरि गया।

चोर नास गयौ। प्रभाति साह री बेटी कहै—च्यारि पहर इण भेळी सूयी। मोनुं औ हीज परणाइ। ताहरां साह औ हीज परणायौ। एक दिन मूरखौ बाजार गयौ हुतौ। ताहरां पहिल की कुंवरी री छोकरी उळखीयौ। ताहरां उवा कुंवरी पिण उथ आई। पंचकळी पिण आइ भेळी हुई। ताहरां तीने कहै—उवा कहै म्हारौ भरतार। उवा कहै, म्हारौ भरतार। काहे दीवा! वो कैरो भरतार? ताहरां दीवौ कहै—जिका ले नीसरी, तीयै रौ भरतार। ताहरां चौबोली रीस करि दीवो फोड़ि दीयौ। अर कहै, मांटी जीयै रौ जीयै मारीजतौ राखीयौ। साह री बेटी रौ भरतार। ताहरां वळे राजा भोज निसाण घाव दीयौ। तीन फेरा चौबोली बोली। तीन पहर वितीत हुवा।

चौथे पहर रै अमल राजा बोलीयौ, पाछिली राति अर महल री धणियांणी बोलै नहीं। राति किण भांति वितीत हुवै? ताहरां खापरौ चोर हार में बैठौ हुतो, सु बोलीयौ। सुणि ही राजा भोज, चौबोली रा भरतार। हार इसौ कह्यौ, ताहरां चौबोली रीस करि सवा कोड़ रौ हार हुतौ, सु तोड़ियौ। तोड़ि नै बोली—क्युं रे बेसरम! राजा भोज चौबोली कद परणी हुती? ताहरां राजा भोज नीसाणौ घाव दीयौ।

ताहरां धाय वडारण खवासां सहेल्यां चौबोली आगै आइ उभ्यां रह्यां। थारौ बडो भाग, जु थारो नेम ही रह्यो अर राजा भोज भरतार पायो। ताहरां चौबोली कहै—मोनुं रीस सूं बोलाई। ताहरां बडारण समझाइ अर कह्यौ—थारै भाग में हुतो सु वर आयौ।

ताहरां राजा रै विवाह री साजत हुई। ताहरां च्यारे वीर जानी हुवा। राजा भोज आइ तोरण ढूकौ। आला-नीला कळस करि राजा भोज चौबोली परणीयौ। सवांरै राजा जितरा पाणी भरता, सरब छोडीया। जावौ, आपरै देस बसावौ। हाथी घोड़ा सिजवाळा छोकर्‍यां घणौ दाइजौ दे अर हलाया। राजा भोज राणी चौबोली नुं ले अर घरै आयौ। घणौ उछाह कर राणी भानमती बधाया। बोल बोलीया हुता, सु राणी भानमती पासै राणी चौबोली आंणी बैसाणी।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

नीसरी=निकळी। उळखीयौ=पिछाण्यौ। कैरो=किणरौ। मांटी=मोट्यार, भरतार। जीयै रौ=उणरौ। फेरा=बार, दफै। परणी=ब्याही। विमाह=ब्यांव। तिम=बियां, जियां। एवड़=रेवड़। छाळी=बकरी। गरढै=बूढै। बडारण=प्रमुख दासी, बांदी। मसाण=समसाण, भोमका। आरोगी=चिता। बीजौ=दूजौ। मूवौ जीवै=मर्‍योड़ौ जी जावै। राखड़ी=डोरौ, ताबीज। रोही=जंगळ। सिलावट=सिल्पी, मूरतीकार, भाठां रौ कारीगर। सूजी=दरजी। खवास=नाई, नेवगी। खंथा मेखळी=चोळौ झोळी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. उजेण नगरी में कित्ती पवन जाति रा लोग बसै?

(अ) छत्तीस (ब) बत्तीस

(स) तीस (द) चौतीस

( )

2. राजा भोज किण नगरी रौ राजा हो ?

(अ) द्वारका (ब) धारा

(स) अमरावती (द) उजेण

( )

3. राखसणी राजा भोज नैं कांई बणायनै आपरी जटा में लुकोय लेवै ?

(अ) लीख (ब) माखी

(स) जूं (द) माछर

( )

4. राणी चौबोली टाळ भोज री दूजी राणी रौ कांई नांव हो ?

(अ) कलावती (ब) मधुमती

(स) तारामती (द) भानुमती

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजा भोज रा करामाती भायलां रा नांव बतावौ।
2. राणी चौबोली री बात में अेक कीड़ी दूजी सूं कांई कैवै ?
3. पैली कथा पूरी हुयां राणी चौबोली पूतळी रौ भरतार किणनैं बतावै ?
4. मूरख नैं बुद्धि देवण सारू मारग में कुण मिळै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजा भोज रा करामाती भायला किण-किण कला में पारंगत हा ?
2. चौथी कथा सरू करयां पैली ई राणी चौबोली क्यूं बोली ?
3. दूजी कथा में ब्राह्मण री बेटी परणीजण नै कित्ती बरातां आई अर बेटी आपरै बाप नैं कांई कैयौ ?
4. राणी चौबोली रै म्हैल में राजा भोज रा च्यारूं भायला किण रूप में कठै-कठै बैठ्या ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'राणी चौबोली री वात' रौ कथासार आपरै सबदां में लिखौ।
2. 'राणी चौबोली री वात' में आयोड़ी कथानक रूढियां रौ खुलासौ करौ।
3. राजस्थानी गद्य-साहित्य रै विगसाव में 'राणी चौबोली री वात' री भासा-सैली री दीठ सूं कूंत करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंग समेत व्याख्या करौ।

1. तिण नगरी रै विषै राजा भोज राज्य करै। छतीस राजकुळी राजा री सेवा करै। तिण राजा रै च्यारि मित्र। आगीयौ वेताल। कवडियौ जुवारी। माणिकदे मदवांण। खापरौ चोर। सु राजा भोज रै घरे आया। घणा कायदा किया। अनेक भांति री भक्ति हुई। घणा सनमान दे नै कह्यौ—पनरहवीं विद्या मोनुं जिण भांत आवै, तिम करौ।

2. ताहरां खापरौ चोर हार में बैठौ हुतो, सु बोलीयौ। सुणि ही राजा भोज, चौबोली रा भरतार। हार इसौ कह्यौ, ताहरां चौबोली रीस करि सवा कोड़ रौ हार हुतौ, सु तोड़ियौ। तोड़ि नै बोली—क्युं रे बेसरम ! राजा भोज चौबोली कद परणी हुती ? ताहरां राजा भोज नीसाणौ घाव दीयौ।

❑वचनिका

अचलदास खीची री वचनिका

शिवदास गाडण

वचनिकाकार परिचै

शिवदास गाडण रौ जलम 14वीं सदी रै उतराद में होयौ। सिवदास गाडण साखा रा चारण हा। गागरोन गढ (झालावाड़) रा राजा अचलदास खीची रा आप राजकवि हा। लेखक री दूजी रचनावां अर जीवण परिचै शोध रौ विसय है। शिवदास गाडण आदिकाळ अर मध्यकाळ रै संधिकाळ रौ रचनाकार है। चारणी साहित्य मुजब वीर रस रौ घणौ उम्दा वरणन इण वचनिका में करयौ है। रचनाकार उण जुग री सांस्कृतिक, सामाजिक अर राजनीतिक परिस्थितियां रौ आछौ जाणकार हौ। वचनिका रौ इण पाठ में लिरीज्यौ अंस इण बात री साख भरै। शिवदास अचलदास सागै बरोबर जुद्ध में मौजूद रैयौ पण घणौ विनय करण रै बाद पाल्हणसी सागै भावी नीति सारू जुद्ध सूं बहीर होयौ। आ रचना आंख्यां देखी विगत है। अचळदास खीची नैं अमर करण सारू शिवदास गाडण इण वचनिका री रचना करी। चंपू काव्य-सैली नै अंगेजता थकां मौलिकता सागै इण वचनिका में तुकांत गद्य सागै पद्य रौ निभाव इण रचना में है। वचनिका सैली री रचनावां में अचलदास खीची री वचनिका भाव, भासा, अभिव्यंजना अर मौलिकता रै पाण राजस्थानी साहित्य में 'मील रौ पत्थर' मानीजै।

पाठ परिचै

अचलदास खीची री वचनिका राजस्थानी री मध्यकालीन गद्य विधावां में हरावळ री रचना मानीजै, जिणमें अचलदास खीची रै अचल, अनमी, स्वतंत्रताप्रेम, आन-बान अर राजपूती शान लारै मरण नैं मंगळ गिणण रै सुभाव रौ वरणन है। स्वाभिमान, स्वतंत्रता अर धरम नैं राखण सारू आपरा प्राण न्यौछावर करण री 'शाका रीत' रौ सांगोपांग वरणन इणमें होयौ है। गागरोन गढ (झालावाड़) रा धणी अचलदास खींची अर मांडू (माळवै) रा मांडूपति सुल्तान आलमशाह गौरी (होसंगशाह) रै बिचाळै वि. सं. 1485 में होयोड़ै जुद्ध रौ ओजस्वी वरणन है। होसंगशाह री गुलामी री सरत स्वीकार नीं करण रै कारण अलचदास माथै चढाई करै। दोनां रै बिचाळै घमासाण जुद्ध होवै। धरती, धरम अर स्वतंत्रता सारू अचलदास खीची अदम्य साहस सागै लड़ै। गुलामी नैं धिक्कारता वीरता सागै रणखेत होय जावै। औ जुद्ध फगत अचलदास ही नीं लडै, बल्कै उणरै सागै सगळी कौम री प्रजा भी आहूति देवै। पाठ में आयोड़ा वचनिकां रै अंसां में होसंगशाह री विसाल सेना री जाणकारी मिळै। राजस्थान अर आसै-पासै रै रजवाड़ां रै अनमी राजावां रै वरणन सागै नरसिंहदास जैड़ा वीरां रौ भी कीर्ति वरणन है। शेर अर हाथी रै ताण स्वतंत्रता रौ मोल दरसाईज्यौ है। गद्य रै सागै पद्य रौ प्रयोग ई वचनिका सैली री खास विसेसता है। होसंगशाह री मोटी अर विडराळ सेना देखनै ई अनमी अर अचल अलचदास खीची उण सूं खांडौ लेवण सूं लारै नीं हटै। अचळदास रै सुभाव अर कीरत रौ बखाण करता थकां कवि उणरै अचल सुभाव नैं घणै मान सरावै। अैड़ा मायड़ रा सपूतां सूं धरती धिन-धिन होयगी।

अचलदास खीची री वचनिका

(1)

इसी परित्या खउदाळ्म गोरी राजा बारह लख मालवा-रउ चकरवरती। तइ-रइ तेवाणूं लाख मालवा-रा कटक-बंध रउ आरंभ-पारंभ गरवातन गडावरउ।

तइ कटक-बंधि मांहि तउ कहइ दिखाळउं, महाधर तउ कवण-कवण?

उसमाखान फतेखान गजनीखान उमरखान हइबतिखान। खान तउ मुगीस सारिखा।

हिन्दू राजा कवण-कवण? सकळ ही सक-बंधी, सगळ कळा-संपूरण, राजा नरसिंघ सारीखा। तइ नरसिंघदास-का कटक-बंध चालितां सातरि आगलइ दळि पाणी, पाछिलई दळि कादम। तइ कादम-कइ ठाहि खेह उडती जाइ। दूसरउ विकमाईत।

दूहो

अेकइ वन्नि वसंतड़ा, अेवड अंतर काइ?।
सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ।।

कुंडळियो

गइवर-गळइ गळत्थियउ, जहं खंचइ तंह जाइ।
सीह गळत्थण जइ सहइ, तउ दइ लक्खि विकाइ।।
तद दइ लक्खि विकाइ, मोल जाणणि मुंहगेरा।
कड़वा कारणि कथिन कोपि खउंदाळिम केरा।।
वेढ़ कीध पड़ियार, निहसि कट्टारउ दुहुं करि।
राइ न ग्रहउ नरसिंघ गळइ गळहथ जउं गइवरि।।

ते राजा नरसिंघदास सारीखा। बतीस सहस साहण रिण-खेति मेल्हि चाल्यउ। मदोनमत्त हस्ती मेल्हि चाल्मउ। आपण जाइ समंदइ घाल्यउ। समंद जाइ खांडउ पखाळ्यउ। अनेक राइ मद-गलित कर मेहल्या।

ते राजा नरसिंघदास सारीखा। ते राजा नरसिंघदास का कुंवर तउ चांदजी खेमजी सारिखा। मानंगपुरी-का चकरवरती लखमराव सारिखा। देवीसाह सारिखा। बूंदी-का चकरवरती अवर देवड़ा हिंदू-राइ। बंदि-छोड, दूसरा मालदे-समरसीह सारिखा।

देस तउ कउण-कउण? सतियासी, नमियाड़, जुग मानधाता, आसेरि, दूगउर, सिलारपुर लगई-का-कटिबंध। मझ-देस तउ मांडव, धार, उजीण, सीहउर, खंड-खंड का, नगर-नगर का, खान-मीर-अमराव चतुरंग दळ चाल्या, पातसाह आपुणपउ घाल्या।

××

इसउ हिंदू राजा उपकंढि कउण छइ, जिकइ मनि पातिसाह-की रीस वसी? कवण का माथा-तईं खिसी कवण हइ दई रूठव। कउण-की माई विवाणी, जू सामउ रहइ अणी-पाणी? आज तउ सोम-सातळ कान्हड़दे नहीं सीहउरि रउळू नहीं। तिलकछपरि गहिल-उत नहीं, सीहउरि रउळु नहीं, हठ-कउ राउ हमीर आथम्यउ।

अउर पातिसाह हुवा वाभा आभा आलिगेरा, अर भला-भलेरा; त्यां तउ-चउ-रासी द्रुग लिया था, अेकइ दिहाड़इ।

तेणि पातिसाहि आयां सांतरि कुण सहइ? कुणइ सहिजइ? कुण-की जुक्ती! कुण-की प्राप्ती? कुण-की माइ वियाणी, जू सामउ रहइ अणी-पाणी?

यउ तउ पातिसाह उतर-दक्खिण-पूरब-पच्छिम कउ जइतवार, इ-का पुरूखारथ-प्रवाड़ां नाहि पार। धन-धन हो राजा अचळेसर! थारउ जियउ, जिणि पातिसाह-सउं खांडउ लियउ।

तेणि पातिसाह आयां सांतरि सत छांडइ नहीं, खत्र खांडइ नहीं, दीण न भाखइ, पागार-लंघित न होयइ। ते राजा अजळेसर सारिखा अचळ नइ अचळेस-ही होयइ।

अचळेसर तउ किसउऊ उत्तर-दक्खिण-पूरब-पच्छिम-कउ भड़-किंवाड़, आइन्यां अजरपाळ, अहंकारि रावण, दूसरउ धारू, तीसरउ सिंघण; छइ दरसण छयावइ पाखंड-कउ अधार। बाळउ चकरवरती। धन-धन हो राजा अचळेसर। थारउ जिसउ जिणि हइ पातिसाह सउ खांडउ लियउ।

पाठ रौ भाव-अरथ

इण भांत वौ लोक रौ भार उठावणियौ गौरी वंसीय राजा। बारह लाख आय वाळौ मालवा खंड रौ चक्रवर्ती राजा है। उणरै तेराणवैं लाख मालवा री सेना रौ दळ है। उण सेना दळ रौ आरंभ-प्रारंभ बडप्पन है।

उण सेना-दळ में जका जोधा है, वांरौ कैयनै वरणन करूं हूं। मोटा थंभ, वा में कुण-कुण— उसमाखान, फतेखान, गजनीखान, उमरखान, हैवतखान। खान भी मुगसीखान जैड़ा।

हिंदू राजा कुण-कुण? सगळा ही साका-बंध (साकौ करणिया) सगळी कळावां सूं परिपूरण राजा नरसिंहदास जैड़ा। उण नरसिंहदास री सेना-दळ नैं चालतां हरावळ नैं पाणी मिळै तौ लारलै दळां नैं कीचड़ अर सैन्य-दळां रै चालण सूं धूड़ उडण लागै। इसी विसाल सेना रौ दळ है। औ दूजौ विक्रमादित्य है।

दोनूं अेक इज वन में बसै पण फेरूं भी इत्तौ अंतर क्यूं है? शेर नैं तौ कोई भी कोडी में भी नीं लेवै, जदकै हाथी लाखां में बिकै।

हाथी रै गळै में गळबंधण होवै। उणनैं जठै खेंचा, बठै जावै। जे सिंघ इण गळबंधण नैं स्वीकार कर लेवै तौ वौ दस लाख में बिकै। उणरौ मोल ऊंचौ है। बादशाह रै आकरै बोल रै कारण रीस करनै पड़िहार (नरसिंहदास) जुद्ध करयौ। दोनूं हाथां कटार थामी। पण हाथी रै दांई गळै में सांकळ घालनै राजा नरसिंहदास नैं नीं पकड़्यौ।

उण राजा नरसिंहदास जैड़ा बत्तीस हजार घोड़ा रणखेत में राखनै चाल्या। मदगैला हाथी राखनै चाल्यौ। खुद जायनै (कटन नैं) समदर तांई पुगा दियौ अर समदर में जायनै खाग नैं धोयी। अनेकूं राजावां रौ मान-मरदन करयौ।

वै राजा नरसिंहदास जैड़ा। वै राजा नरसिंहदास रा बेटा चांदजी-खेमजी जैड़ा। मातंगपुरी रा चक्रवर्ती लखमराव जैड़ा। देवीशाह जैड़ा। बूंदी रा चक्रपति अर देवड़ा जैड़ा। हिंदू राजावां नैं बंदीखानै सूं छुडावण वाळा। दूजै मालदेव अर समरसिंह जैड़ा।

××

अैड़ौ हिन्दू राजा आसै-पासै कुण है, जिणरै मन में बादशाह रै बराबरी री रीस बसै? किणरै माथै सूं बुद्धि निसरी? किण सूं भाग अपूठौ होयौ। किसी मां अैड़ौ पूत जण्यौ जकौ साम्हीं छाती मुकाबलै सारू टिकै। आज तौ सातळ, सोम अर कान्हड़दे भी धरती माथै कोनी। तिलकछापर में गुहिलोत भी नीं है। सिहोर में रावळ भी नीं है। हठी राजा हमीर भी आथमग्या।

अर बादशाह हुया आला अलिगेरा (पैलै दरजै रा) भल-भलेरा होया। वां तौ चौरासी दुरग लिया हा अर औ सुल्तान तौ दूजौ अलाउद्दीन है, जिकौ अेक ई दिन में चौरासी दुरग लिया हा।

उण बादशाह रै आयां या आवण माथै कुण भार झेलै? अर किणसूं सह्यौ जावै? किणरी युक्ति, किणरी पावती? किणरी मां अैड़ौ पूत जण्यौ जिकौ साम्हीं जमै। औ बादशाह उतरादी, दिखणादी, आथूणी अर अगूणी—च्यारूं दिसावां नैं जीतण वाळौ है। इणरै पौरुस रौ, गाढ रौ, वीरत्व रा कामां रौ पार नीं है। धिन-धिन है राजा अचलेस्वर थांनै जिकौ बादशाह सूं लोहौ लियौ। साम्हीं तलवार दिखाई।

जकौ बादशाह रै आयां उपरांत ई आपरौ सत नीं छोडै। रजपूतपणै नैं खंडित नीं करै। दीन बोल बोलै नीं। दुरग अर परकोटै नैं छोडनै नीं जावै। राजा अचलेस्वर जैड़ा अचल मिनख ही अचलसिंह ई होय सकै है।

अचलेस्वर भी किसौ जकौ उतरादै, दिखणादै, अगूणै अर आथूणै रौ भड़-किंवाड़। अजयपाल जिसौ। अहंकार में रावण जैड़ौ। दूजौ धारू (चौहान वीर), तीसरौ सिंघण (चौहान वीर)। षट् दरसण, साधू (जंगम सेवड़ा संन्यासी) अर छियांणवैं पाखंड रौ आधार धिन-धिन है। अचलेस्वर, थारौ काळजौ मोटौ, कै थूं बादशाह सूं खांडौ लियौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

इसी परि=इण भांत। कटक-सेना। बंधि=दळ। महाधर=मोटौ थंभ। कवण-कवण=कुण-कुण। सकळ=सगळा। सकबंधी=केसरिया बागा पैरनै आर-पार रौ जुद्ध करणिया, मरणवाळा। सारीखा=जैड़ा, जिसा। खेह=धूड़। वन्नि=वन। अेवड़=इत्तौ। काइ=क्यूं। सीह=शेर। गइवर=हाथी। विकाइ=बिकै। वेढ=जुद्ध, राड़, रणरौळ। करि=हाथ। उपकंठि=नैड़ौ। छह=है। दई=देवता। रूठउ=रूसग्यौ। विवाणी=जाण्यौ है। आथम्यउ=आथमग्यौ, बिसूंजग्यौ, अस्त होयग्यौ। अउर=दूजा। आलिगेरा=पैलै दरजै रा। दिहाड़इ=दिन में। खाउंड लियउ=जुद्ध करणौ। खत्र=क्षत्रीयपणौ, रजपूती। खांडइ=खांडौ, तोड़ै। भड़-किंवाड़=वीर री उपाधि है, जकौ बैरी नैं किंवाड़ दांई बारै इज रोक्यां राखै। सूर=सूरज। खेह=खंख, रंजी, धूड़ी, गरद। सिरि=ऊपर माथै। भागा=टूटग्या।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'अचलदास खीची री वचनिका' किण सैली री रचना है—

   (अ) ख्यात (ब) दवावैत

   (स) वचनिका (द) वार्ता

   ( )

2. 'अचलदास खीची री वचनिका' रै रचयिता रौ नांव कांई है—

   (अ) ईसरदास बारठ (ब) पृथ्वीराज राठौड़

   (स) नरपति नाल्ह (द) शिवदास गाडण

   ( )

3. किणरौ मोल लाख रुपिया आंकीजै—

   (अ) गाय रौ (ब) हिरण रौ

   (स) हाथी रौ (द) सिंघ रौ

   ( )

4. अचलदास खीची किणरै सागै जुद्ध कर्‌यौ—

   (अ) औरंगजेब (ब) अलाउद्दीन

   (स) अकबर (द) आलमशाह गौरी

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. बादशाह रै साम्हीं कुण आपरौ सत नीं छोडै ?
2. हाथी अर सिंघ रौ मोल कांई है ?
3. हिंदू राजा में सबसूं मोटौ राजा कुण हौ ?
4. अचल कुण रैवै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'साकौ' कांई होवै ?
2. बादशाह रै साम्हीं कुण आपरौ खांडौ उठावै अर क्यूं ?
3. अचलदास खीची सेना रा चार सेनानायकां रा नांव बतावौ।
4. अचलदास खीची रै वीर चरित्र रा चार गुण लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. अचलदास खीची रौ चरित्र-चित्रण करौ।
2. वचनिका रै मूळ संदेस नैं विस्तार सूं बतावौ।
3. वचनिका में हाथी अर सिंघ में कांई अंतर बतायौ है ? साथै ई इण संदर्भ में अचलदास खीची रै सुभाव नैं दरसावौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. ते राजा नरसिंघदास सारीखा। ते राजा नरसिंघदास का कुंवर तउ चांदजी खेमजी सारिखा। मानंगपुरी-का चकरवरती लखमराव सारिखा। देवीसाह सारिखा। बूंदी-का चकरवरती अवर देवड़ा हिंदू-राइ। बंदि-छोड, दूसरा मालदे-समरसीह सारिखा।

2. सउ हिंदू राजा उपकंढि कउण छइ, जिकइ मनि पातिसाह-की रीस वसी ? कउण-का माई विवाणी, जू सामउ रहइ अणी-पाणी ? आज तउ सोम-सातळ, कान्हड़दे, नहीं तिलकछपरि गहिल-उत सोम-सातळ कान्हड़दे, नहीं तिलकछपरि गहिल-उत नहीं, सीहउरि रउळु नहीं, हठ-कउ राउ हमीर आथम्यउ।

3. अचळेसर तउ किसउऊ उत्तर-दक्खिण-पूरब-पच्छिम-कउ भड़-किंवाड़, आइन्यां अजरपाळ, अहंकारि रावण, दूसरउ धारू, तीसरउ सिंघण; छइ दरसण छयावइ पाखंड-कउ अधार। बाळउ चकरवरती। धन-धन हो राजा अचळेसर। थारउ जिसउ जिणि हइ पातिसाह सउ खांडउ लियउ।

❑विगत

मारवाड़ रा परगनां री विगत

मुहणोत नैणसी

लेखक परिचै

मुहणोत नैणसी जोधपुर रा महाराजा गजसिंह प्रथम अर जसवंत सिंह प्रथम रै राज (1638-1678 ई.) में हाकिम अर देस-दीवाण रै ओहदै माथै काम कर्‌यौ। इण वजै सूं नैणसी नैं राजकाज अर शासन चलाणै रा तौर-तरीकां रै सागै-सागै वित्तीय मामलात री ई सांगोपांग जाणकारी ही। नैणसी जुद्धां में भी सेना सागै जाया करता हा। औ इज कारण हौ कै नैणसी आपरा ग्रंथ 'ख्यात' अर 'विगत' (इतिहासू विवरण) मांय मारवाड़ रै इतिहास अर भूगोल रा जींवता-जागता चित्राम मांड्या है। नैणसी रा अै दोनूं ई ग्रंथ राजस्थान रै मध्यकाळ रै इतिहास रा महताऊ स्रोत है। किणी घटना रौ पुख्ता प्रमाण नीं मिळण माथै नैणसी आपरा ग्रंथां मांय 'एक बात यूं सूनी छै' लिखनै उण बात रौ विवरण दियौ है। मारवाड़ रै लूंठै इतिहास लेखक रै रूप में नैणसी रौ जस जुगां-जुगां अमिट रैवैला।

नैणसी रा पिता जयमल कुशल प्रशासक अर वीर जोद्धा हा, जिका जोधपुर महाराजा सूरसिंह अर महाराजा गजसिंह प्रथम री सेवा में रैया अर उणां नैं 'देस-दीवाण' रौ ओहदौ दिरीज्यौ हौ। नैणसी री शिक्षा-दीक्षा अर बाळपणै रै बारै में कठैई कोई जाणकारी नीं मिळै। पण इणां री साहित्य-रचना अर प्रशासन-दक्षता सूं औ सैज ई अनुमान लगायौ जाय सकै कै वांरी शिक्षा-दीक्षा रौ इणां रा पिता समुचित प्रबंध कर्‌यौ होवैला। नैणसी असाधारण व्यक्तित्व रा धणी हा। वां मारवाड़ रा घणकरा जुद्धां अर आक्रमणां रौ बौत ई दक्षता अर सफळता रै साथै संचालन कर्‌यौ। पण राजनीतिक कै सैनिक जीवण री तुलना में इणां रौ साहित्यिक जीवण घणौ महताऊ रैयौ। 'नैणसी री ख्यात' अर 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' आं रा दो काळजयी ग्रंथ है, जिका इतिहास रा प्रामाणिक स्रोत मानीजै। इणी कारण नैणसी मारवाड़ रा 'अबुल फजल' बाजै। नैणसी अर इणां रा भाई झूठै आरोपां में कैद करीजग्या, जिण सूं दुखी होयनै दोनूं भाई सन् 1670 में प्राण त्याग दिया।

पाठ परिचै

'मारवाड़ रा परगनां री विगत' 17वैं सईकै रै मारवाड़ राज्य रै इतिहास रौ महताऊ ग्रंथ है। तीन भागां में छप्योड़ै इण ग्रंथ रौ संपादन डॉ. नारायणसिंह भाटी कर्‌यौ। इणरै पैलै भाग (1967) में जोधपुर, सोजत अर जैतारण रौ विवरण है। दूजै भाग (1968) में फलोदी, मेड़ता, सिवाना अर पोकरण रौ विवरण है। तीजै भाग (1974) में सात परगनां रौ (हिंदी मांय) सार रूप में विवरण है। इणमें केई खांप-सरदारां माथै टिप्पणियां, तकनीकी सबदां री व्याख्या, इतिहासपुरुसां री जलमपत्रियां अर परिशिष्ट है।

महाराजा गजसिंह रै देवलोक होयां पछै जसवंत सिंह नैं साहजहां मारवाड़ रौ टीकौ दियौ (सं. 1695), उण समै जोधपुर, सोजत, फलोदी, मेड़ता अर सिवाणै रा परगनां इज दिया हा। पछै जैतारण रौ परगनौ अर फेर बादसाह री मंजूरी सूं सं. 1707 में पोकरण रौ परगनौ ई महाराजा आपरै अधिकार में कर लीन्यौ। आं इज सात परगनां रौ विवरण इण ग्रंथ में नैणसी दियौ है। इण पाठ में मारवाड़ रा परगनां री विगत रै दूजै भाग सूं 'वात परगने मेड़ते री' रा सरुआती अंस बानगी सरूप दिरीज्या है।

मारवाड़ रा परगनां री विगत

(५) वात परगने मेड़ते री

१. परगनौ मेड़तो आद सहर छै, राजा मानधाता रौ बसायौ, यूं सको कहै छै। केहीक दिन युं पण सुणीयौ छै। राव कान्हड़दे रै घणी धरती हुती तद कै छै एक बार कान्हड़दे रौ अमल हुवौ छै। तठा पछै घणा दिन आ ठौड़ षाली सूनी रही छै। सु अठै झाड़-झंगी घणी हुय रही थी।

२. पछै राव जोधौ मारवाड़ लीवी, संमत १५१५ जेठ सुदी ११ जोधपुर बासीयौ, तरै भायां बेटां नुं धरती दैण रौ विचार कीयौ, तरै सोनगरी चांपा षींवावत री बेटी तिण रै पेट रा राव जोधा रा बेटा २ बरसिंघ दूदो सगा भाई था। तिणां नुं राव कह्यौ—म्है थांनु मेड़तो दां छां, थे जाये बसौ। तरै इण कबूल कीयौ। इणनुं घोड़ौ सिर पाव दे सीष दीवी। अै आपरा गाडा लेनै चोकड़ी आण डेरौ कीयौ। चोकड़ी रौ भाषर देषण गया था, तिण समै रा. उदौ कान्हड़देओत जैतमाल नागौर था छोड गगड़ाणै आंण गाडा छोडीया छै। रा. उदैसिंघ सिकार चारूं तरफ रमण पिण जायै नै धरती नै पिण सारी देषतौ फिरै। सु उदो कान्हड़देओत फिरतौ-फिरतौ आ ठौड़ मेड़ता री दीठी थी सु उदा नुं किणीहीक षबर कही—राव जोधै रा बेटा २ आण धरती बसण आया छै सु चौकड़ी रै पहाड़ गढ़ करावण रौ मतौ छै। तळहटी सेहर बसावण रौ मन धरै छै।

३. तरै रा. उदौ कान्हड़देओत आप चढ़ नै रा. बरसिंघ दूदा कन्है गयौ, दिन २ तथा ४ मुजरौ कीयौ। सैंधौ हुवौ। तरै रा. बरसिंघ जोधावत नुं कह्यौ—म्हें सुणां छां राज आ धरती बासण मतौ छै। कठै ही ठौड़ बीचार छै? तरै बरसिंघ कहौ— मन तौ धरां छां। तरै उदै कहीयौ—राज कांई ठौड़ बिचारी छै। तरै बरसिंघ दूदौ आय चढीया रा. उदा नुं चोकड़ी रौ भाषर दीषाळीयौ। तरै उदै नुं पूछीयौ—आ ठौड़ किसड़ी छै? तरै उदै कहीयौ— ठौड़ भली चंगी छै। ठौड़ १ म्हें सषरी दीठी छै राज एक वेळा उठै पधारौ। रा. उदौ रा. बरसिंघ दूदै जोधावत नुं मेड़तौ सैहर बसै छै तठै ले आयौ कुंडल बेजपो तळाव आद थौ सु दीठा। पछै जठै हिमार मेड़तै कोटड़ी छै आ ठौड़ दीठी। रा. बरसिंघ दुदा राजी हुवा। गाडा अठै आंण नै कोट री रांग दीवी।

४. रहण नुं इण ठौड़ आया तरै कोटड़ी री ठौड़ दुय नाहर ऊभा छै, तिण माहै वडो नाहर छै, एक उण था छोटौ नाहर छै। सु वडो नाहर उठै गाजीयौ, ताड़ीयौ पछै उठा थी परौ गयौ। नै छोटौ नाहर छै सु उठै गुफा थी तिण माहै बैठौ। तरै सांवणी साथे हुतौ सु विण माथौ धूणीयौ। तरै इण वेळा बरसिंघ दीठौ। कहीयौ थें केण आटे माथौ धूणीयौ। तरै ई वेळा दोय चार उजर कीयौ, पिण बरसिंघ हठ कर पूछीयौ। तरै सांवणी कहौ—सीवण एकण भांतरौ हुवौ छै। तरै बरसिंघ कहौ—इण सांवण रौ कासुं विचर छै? तरै सांवणी कहौ—राज जीवसौ तठा सुधी आ ठौड़ राज भोगवसो तठा पछै आ ठौड़ दुदा रौ पेट रहसी, रावळा बेटा पोतां नुं आ ठौड़ नहीं रहै। तद दुदो बरसिंघ एक था, माहे जीव जुदा न था तरै बरसिंघ कहौ—म्है दुदौ एक हीज छां। पछै इण कोटड़ी ठौड़ रांग कोटड़ी री भराई। राव बरसिंघ दुदै आ ठौड़ संमत १५१८ चैत्र सुदी ६ नुं हसत नषतर कहै छै बासी।

५. रा. उदो कान्हड़देओत नुं पराधांन कीयौ। सारी मदार उदा रै माथै छै। तिण समै धरती सारी मेड़ता री उजड़ छै। सु रजपूत आवै छै सु बसता जाय छै। तिण समै नागौर सवाळष दिसा डीगा था राज देला रौ कठोती जायेल री रहौ थो उठै वैर पड़ीयौ। तरै घर राज डंगो राव बरसिंघ दुदा कनै आयौ। कहौ—मोनुं आंणौ तौ म्हे सारा षेड़ा बसावां। तरै थीर राज कहौ, तिण भांत दिलासा कीया छै। मेड़तै हीज पुराणा डांगावास री ठौड़ थीर राज नुं देस मुष चौधरी सारा देस रौ कर बासीयौ। थीर राज सबळौ आदमी थौ। पछै सवाळष रा जाट दिलासा कर करनै आंण-आंण मेड़ता रा गांवां बसता गया। पछै मेड़ता रा सारा गांव बसीया, धरती आवा-दांन हुई।

६. श्री फळोधी पारसनाथजी रौ देहूरौ संमत ११९१ जारौड़ै साह श्रीमल करायौ तठा पछै संमत १५५५ सु राणे हेमराज देवराज रै बैटै उधुर करायौ। 'जात सुराणै धरम धोष सुरप्रतबोधीया जात पुंवार।'

७. रा. बरसिंघ उदौ केहीक सांषला मार नै चौकड़ी बसीया। कोसांणो मादळीयो पिण सांषला के मारीया।

८. इण गांव ईण ठौड़ां रा जाट आण इण गांवां बसायौ। डागा कठौती रा—

डांगावास, लोहड़ोयाह, रायसल बास, इतीवे। थीरोदा थीरो नागौर रा—सातलवास।

वडीवारा रताऊरा
फालो बडगांव
चांदेलीयां चुवो
महेवडो
दुगसता दुसताऊ रा
भोवाली
डीडेल रावणा बुगरड़ा रा
लांबीयां
कमेडीया भादु
कलरो
रेयां कासणीया कसणा रा
रेयां
रडु ग्वालरां तगो नागोर रा
राहण
तेतरवाल तीतरी नागोर री
झड़ाऊ
गोदारो पांडो रौ बीकानेर रौ
झीथीया वडाली
सोमडवाल सोमड़ी नागोर री
रोहीयो
बोहड़ीया कठोती था डागा साथ आया
मोकालै अणीयाळौ सहेसड़ो
गोरा
पादुबड़ी तांबड़ौली
लटीयाळ थीरोदा नागोर
लापोळाई काकड़षी
चोहीलां संवो नागोर रौ
मोडरी
वात गोहीलोत अजमेर रा
नीलीया

९. इतरा गांव सारा आजणा जाट छै—

डांगा आद चहुवांण राजपूत था। पछै इण रौ वडैरो जगसी छाजु रौ जाट हुऔ।

१ माहारीष २ संम ३ फोकट ४ वीलायो ५ छाजु ६ देलू ७ जगसी ८ दुलोहराव ९ थीरराज १० डुंगर ११वीको १२ छीतर १३ हेमो १४ जालप १५ षींवराज।

१०. श्री फळोधीजी री माताजी रौ देहरौ आद तौ राजा मानधाता रौ करायौ तठा पछै संमत १०८३ थंभ संवत छै। एक संमत १०७६ पीण थंभे एक छै। तठा पछै सुरांणो हेमराज देवराज रै रा. बरसिंघ दुदा रै हुकम सुं संमत १५५५ उधोर करायौ।

११. धरती सारी बसी रजपूत पण घणा साष-साष रा बसीया। मुदौ जैतमाल माथै मंडीयौ। उदावदु सारा राज रौ कांम छै। पछै कितराहक दिन रा. बरसिंघ नै रा. दुदै अणवत हुई। रा. दुदौ छांड नै बीकानेर गयौ। बांसै दुकाळ पड़ीयौ। षांण नु घणौसो कुं जुड़ै नहीं। तरै जोधपुर सूं बरसिंघ साथे चाकर बाबर हीड़ागर परज लोग आया था सु सारा परा जाण लागा। तरै रा. बरसिंघ दीठौ, यु कुंही मरां, तरै रा. बरसिंघ साथै भेळो कर नै सैंभर नवलषी मारी। घणा माल लूटीया। सोवन मोर उडीया। तिण दिन अजमेर मांडव रै बादशाह रै दाषल थी, मलूषान अठै अजमेर रै सोबे ऊपर थौ। सु बुरौ घणौ ही मांनीयौ। पिण बैस रहौ। सैंभर मारी तिण साष रौ कवित्त—

तांण चीर तळहुटी घणौ कीयौ घाटौ।
माटौ फोड़ कोट घाघरौ फाड़ कंचुओ।
चौहटो कर मदा गाळिया अहर भड़ां अमरीस।
कूट लूटिया कनक हीरा मोती।
विपरीत चिरत तह रंग रमी, भार भरत जोबन भरो।
बरसिंघ कान्ह गुवाळियो गोपी संभर ज्यरी।।

१२. तौ ही अजमेर रौ सुबायत बैस रहौ। तिण समै राव सातल नै कंवर बरसिंघ अणवत हुई। बरसिंघ सातल नुं कहै—कुंही जोधपुर बाप की मांहे म्हे ही पावां, तरै बेऊ यांरा परधांन अजमेर गया। मलुषांन कहौ—दोनूं अठै आवौ, म्है समझाई देस्यां। एक तो बात युं सुणी छै—राव सातल नै रा. बरसिंघ अजमेर गया। रा. बरसिंघ मलुषांन सुं काहाव कीयौ—मोनुं जोधपुर दौ, हुं रु. ५०००० पेसकसी रा दूं। पछै बीच राठोड़े फिर नै राव सातल नै राव बरसिंघ नुं एक कीया। उठी थी मलुषांन सुं बिगर मिळीयां उठै आया।

१३. के कहै छै आप न आया। परधांन आया, आ वात परधांन की थी पण मलुषांन बरसिंघ सुं लागतो थौ हीज कहै—एक तौ मांहरी सैंभर मारी, तिण रौ मांहारौ म्है बित मांगां। दूजौ मांहानुं पेसकसी कबूली थी, म्है ऊपर कीयौ। तरै केहीक गांवां राव सातल केलावा सुं बरसिंघ नुं जोधपुर रा दीया तिकै सुणीया, कहौ—आपरौ मकसद कीयौ, मांहारी पेसकसी आही राषी सु कुंण वासतै। म्हांनु कबूलीयो थौ, सुदो मलुषांन मागीयो। इण उजर कियौ। मलुषांन कटक भेळो कीयौ। मेड़ता री गाडा संध आया। तरै इणै जोधपुर राव सातल नुं खबर मेली। राव कहौ—थेई उठै लड़ाई मत करौ। मांणस लेनै जोधपुर आवौ बेगा। तरै बरसिंघ तौ जोधपुर आयौ। बांसै हुऔ मुलषांन आयौ। मेड़ते री धरती बिगाड़ नै जोधपुर री धरती पिण बिगाड़ी। पींपाड़ डेरौ कर नै सथलांणै सुधी धरती सारी मार नै बंध की।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

यूं सको कहै छै=सगळा लोग कैवै। मतौ छै=विचार है। सैंधो हुऔ=जाण-पिछाण काढी, ओळखाण करी। कठै ही ठौड़ बीचार छै=कठै बसण रौ विचार है। दीषाळीयौ=देखायौ। सषरी=आछी, चोखी। आद थौ=पुराणौ बण्योड़ौ हौ। कोट री रांग=गढ री नींव। सांवणी=सुगन जाणणियौ, सुगनी। उजर कीयौ=टाळमटोळ करी। सीवण=सुगन। राज जीवसौ=आप जींवता रैसौ। दुदा रौ पेट रहसी=राव दूदा रा वंसज अठै रैवैला। माहे जीव जुदा न था=मन में कोई भेदभाव नीं। हसत नषतर कहै छै बासी=हस्त नक्षत्रमें नींव लगायनै बसायी। सवाळष=नागोर पट्टी रौ जूनौ नांव। वैर पड़ीयौ=बैर-भाव होयग्यौ। मोनूं आंणौ=म्हनैं आवण रौ मौकौ देवौ, बुलावौ। देस मुष चौधरी=देस रौ प्रमुख चौधरी। सबळौ=बळवान, सबल। देहूरौ=देवरौ, मिंदर। उधुर करायौ=जीर्णोद्धार करवायौ। अवणत=अनबन, अदावत। दुकाळ=भयंकर काळ, दोवड़ौ काळ। हीड़ागर=सेवा-चाकरी करणिया। परज=प्रजा, रैय्यत। सोवन मोर उडीया=मोकळौ धन-माल हाथ लागणौ। बैस रहौ=बैठ्यौ रैयौ। बित=धन, माल। कटक=सेना, फौज। बांसै हुऔ=लारौ करतौ, पीछौ करतौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' रा लेखक कुण हा?

   (अ) नैणसी (ब) जयमल

   (स) दयालदास सिंढायच (द) अबुल फजल

   ( )

2. नैणसी सूं पैलां वांरा पिता जयमल मारवाड़ राज में किण ओहदै माथै काम करयौ?

   (अ) कामदार (ब) कोठारी

   (स) देस-दीवाण (द) भंडारी

   ( )

3. नागौर पट्टी रौ जूनौ नांव कांई हौ?

   (अ) नागौरण (ब) सवाळष

   (स) नागरवाळ (द) नागधरा

   ( )

4. मेड़ता परगनौ किण रियासत में हौ?

   (अ) मेवाड़ (ब) मारवाड़

   (स) शेखावाटी (द) बीकानेर

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. नैणसी किण महाराजा रै शासनकाल में मारवाड़ रा देस-दीवाण हा?
2. इण पाठ में मारवाड़ रै किण परगनै री विगत दिरीजी है?
3. 'सोवन मोर उडीया' इण मुहावरै रौ कांई अरथ है?
4. नैणसी री तुलना देस रै किण इतिहासकार सूं करी जावै?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. नैणसी रै पिता जयमल रै व्यक्तित्व री विसेसतावां लिखौ।
2. नैणसी रा चार चारित्रिक गुण बतावौ।
3. नैणसी रै रच्योड़ा महताऊ ग्रंथ कुण-कुणसा है।
4. मारवाड़ में कित्ता परगना हा, वांरा नांव लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''राजनीतिक कै सैनिक जीवण री तुलना में नैणसी रौ साहित्यिक जीवण घणौ महताऊ रैयौ।'' इण कथन नैं दाखला देयनै सिद्ध करौ।
2. 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' सूं सामल 'वात परगने मेड़ते री' नैं आपरै सबदां में लिखौ।

3. ''नैणसी राजस्थानी में गद्य लेखन रौ सांतरौ काम करयौ है।'' नैणसी री भासा-सैली रै आधार माथै इण कथन नैं पुख्ता करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. परगनौ मेड़तो आद सहर छै, राजा मानधाता रौ बसायौ, यूं सको कहै छै। केहीक दिन युं पण सुणीयौ छै। राव कान्हड़दे रै घणी धरती हुती तद कै छै एक बार कान्हड़दे रौ अमल हुवौ छै। तठा पछै घणा दिन आ ठौड़ षाली सूनी रही छै। सु अठै झाड़-झंगी घणी हुय रही थी।
2. रहण नुं इण ठौड़ आया तरै कोटड़ी री ठौड़ दुय नाहर ऊभा छै, तिण माहै वडो नाहर छै, एक उण था छोटौ नाहर छै। सु वडो नाहर उठै गाजीयौ, ताड़ीयौ पछै उठा थी परौ गयौ। नै छोटौ नाहर छै सु उठै गुफा थी तिण माहै बैठौ। तरै सांवणी साथे हुतौ सु विण माथौ धूणीयौ। तरै इण वेळा बरसिंघ दीठौ। कहीयौ थें केण आटे माथौ धूणीयौ।
3. रा. उदो कान्हड़देओत नुं पराधांन कीयौ। सारी मदार उदा रै माथै छै। तिण समै धरती सारी मेड़ता री उजड़ छै। सु रजपूत आवै छै सु बसता जाय छै। तिण समै नागौर सवाळष दिसा डीगा था राज देला रौ कठोती जायेल री रहौ थो उठै वैर पड़ीयौ। तरै घर राज डंगो राव बरसिंघ दुदा कनै आयौ। कहौ—मोनुं आंणौ तौ म्हे सारा षेड़ा बसावां।

❑कथा

वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा

उल्थाकार : देईदान नाइता

उल्थाकार परिचै

'वैताल पचीसी' चावै संस्कृत कथा-ग्रंथ 'वेताल पंचविंशतिका' रौ राजस्थानी उल्थौ है। इणरौ उल्थौ बीकानेर महाराजा करणसिंह रै राज्यकाळ मांय होयौ अर युवराज अनूपसिंह रै कैवण सूं होयौ। युवराज अनूपसिंह देईदान नाइता नैं बुलायनै इण काम सारू हुकम दियौ हौ, जिणरौ जिकर इण भासा-टीका रै सरू में ई करीज्यौ है। बियां अेक पद्य सूं आ बात ई साम्हीं आवै कै अनूपसिंह री आग्या सूं देईदान अेक दूजै संस्कृत कथा-ग्रंथ 'सिंहासन-द्वात्रिंशिका' रौ उल्थौ ई कर्‌यौ हौ।

देईदान नाइता रै जलम अर जीवण बाबत कीं खास जाणकारी कोनी मिळै। पण युवराज अनूपसिंह, जिका बाद में बीकानेर रा महाराजा बण्या, वांरौ रौ जलम 11 मार्च 1638, राजतिलक 1669 में अर सुरगवास 7 मार्च, 1671 नैं होयौ, सो उल्थाकार देईदान नाइता रौ जलम अर रचनाकाळ ईस्वी 17वीं सदी मान्यौ जाय सकै। उल्था सूं आ बात साफ है कै देईदान कवि ई हा, क्यूंकै औ उल्थौ कविता-मिश्रित गद्य में है। साथै ई वै भासा रा कुसळ अधिकारी अर पारखी ई हा। इण उल्था री भासा में संस्कृत रा तत्सम, तद्‌भव अर देसज सबदां रै साथै ई चालू अरबी-फारसी रा सबदां रौ अेकदम सुभाविक प्रयोग होयौ है। उल्थाकार सबद-रूप विभक्ति अर क्रिया आद में भासा रै सरूप री रिछ्या करता थकां उणनैं सरल, सरस, आदर्श अर आकर्षक रूप देवण रा जतन कर्‌या है।

पाठ परिचै

'वैताल पचीसी' री इण इक्कीसवीं कथा मांय विस्णु स्वामी नांव रै अेक बामण रै चार बेटां री कहाणी है, जिका गळत रस्तै पड़्योड़ा हा अर बाप रै सीख दियां पछै वाराणसी विद्या प्राप्त करण नै गया। वै च्यारूं वाराणसी मांय रैयनै विद्या हासल करी अर पछै आपरै घरै बावड़ण लाग्या। मारग मांय वै आपरी विद्यावां रौ उपयोग करता थकां अेक सिंघ नैं जीवाय देवै। सिंघ जींवतौ होवतां ई वां च्यारूं नैं आपरौ भख बणाय लेवै। सो विद्या सीख लेवण सूं ई कोई बुद्धिमान नीं होय जावै। विद्यावां सीखनै वै मूरख हा, जिका औ ई नीं सोच सक्या कै सिंघ जीवतौ होवतां ई उणां नैं गटकाय जावैला। कैवण रौ मतळब औ कै विद्या नैं समै माथै उपयोग लेवण सारू बुद्धि होवणी ई जरूरी है।

वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा

फिर मडै नुं ले आवतां वैताल कहै छै। राजा सांभळि।

पवनस्थान नगर। तीयै रो धणी बीरबल राजा। तीयै रइ विष्णुस्वांमि ब्राह्मण। तीयै रइ च्यारि पुत्र। एक द्युतकारी। बीजो वेश्यारत। तीजो सुरापांन। चोथो परस्त्रीरत। तीयां नुं विष्णुस्वांमि सीख दयै छै।

जुवारी नुं कहै छै—

दूहा

अति अनर्थ जुवौ करइ, शील धर्म न रहाइ।
जइसइ मांनवलोक कौ, विष पीयै जीव जाइ।।1।।
जुवारी लिषमी तजै, ज्युं वैश्या धन हीन।
कूड़ कपट कर्कस चवै, हास्यो दीसै दीन।।2।।
जूवै दोष घणा कह्या, वेचै त्रीय घर बार।
उत्तम होइ न षेल ही, अधम एह आचार।।3।।

अथ वेश्यारत नुं सीष दीयै छइ—

दूहा

साच सील संयम नियम, सुचि सोभाग गरब्ब।
नर पैसै वेस्या सदन, बाहिर रहइ सरब्ब।।1।।
मात पिता बंधव सुतन, बैर बहिन अन्न धन्न।
तिण नुं ए वल्लभ नही, जिहि वाल्हो वेस्या तन्न।।2।।
न सुंहावइ तीयनूं बडा, सुणै न हित के बोल।
जो वेस्या सुं प्यालो पीयै, तिणरो केहो तोल।।3।।

सुरापांनी नूं सीष दयइ छै—

दूहा

सुरापांन जो जो करै, सो सब भक्ष करेइ।
दुष पावइ गहिलो हुवइ, पिण फिर पात्र भरेइ।।1।।
काम काज हूंती रहइ, करइ अगमिय गोण।
ज्ञान नष्ट हुइ जाइ सो, नरक पातियो होण।।2।।
जूवइ षेलि दारू पीयै, फिर वेस्या घरि जाइ।
भी परदारा सूं रमइ, च्यारे विनासइ आइ।।3।।

पर स्त्रीरत नूं सीष दयइ छै—

दूहा

जीवा मारै पर त्रीया, पाडै नरकि अघोर।
गमइ वडाई जन हसइ, दुष पावइ घरि अउर।।1।।
बिलीषाइ सुत आंपणउ, सा किम छोडै मांस।
मारै अपणइ षसम कुं, तो नारी कौंण वैसास।।1।।
परत्रीत इ गहि बंधीयइ, अरु धन जांतो जोइ।
ठोड़-ठोड़ संकत रहइ, कलह मृत्यु पिण होइ।।3।।
अप्रिय मैथुन सोचियै, अरु विड केरो साथ।
वुरइ कहत मन सोचियै, सोचिय रहत अनाथ।।4।।
बालापण पढीया नही, योवन व्यर्थ गमाइ।
वृद्ध भयइ कछु होइ नहि, मन पछतावो थाइ।।5।।

वार्ता

ताहरां विष्णुस्वांमि रा च्यार बेटा छा। एरा वचन अवधारि विद्या पढण नुं वणारसी गया।

तेथ केतै एक कालि विद्या पढि आवतां विचारीयउ जो वा विद्या फुरइ कि नही। इसो जांणि जंगळ माहे एक करंक पडीयो दीठउ सीह रौ। तिण नुं प्रथम विद्या कर हाड जोड़िया। बीजै विद्या रइ बलि मांस-पंड कियो। तीजै रोम सहित तुचा कीधी। ताहरा बोलीयो। ईयई नुं जीवाडीयइ मारसी कुण।

तरै चौथऊ बोलीयो। न जीवाडूं तो म्हारी विद्या री षबरि क्युं पडइ। तरै विद्या करि सिंघ जीवाडीयौ।

ताहरां सिंघ भूषो ऊठियो। मुह आगै ऊभो तो तिण नुं मारियो। बीजा नाठा। तरै सिंघ सगळा मिरग भेळा करि षांण लागो।

वेताल पूछीयौ। महाराज इयां पढीयां मांहि महामूरख कुंण।

राजा कहीयउ। पहिली पूछै तिको मूरख, जो इतरो ही न जांणइ। पाछइ पढीया तो च्यारै मूरख। पीण जीयै सिंघ नुं जीवाडियो सो महामूरख।

दूहो

बुद्धि वडी विद्या हुंतइ, धूतावे विण बुद्धि।
बुद्धि विहीना पंडितां, षाधा सिंहइ क्रुद्धि।।1।।

वार्ता

एती राजा रा मुष थी सांभळि मडो डाल जाइ विलगउ। राजा जाइ मडै नुं ले आवतउ हूवउ।

इति श्री वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

उल्थौ=अनुवाद, अनुसिरजण। उल्थाकार=अनुवादक, अनुसिरजक। मडै=मुड़दौ, लोथ, शव। सांभळि=सुण्यौ। तीयै=उण। द्युतकारी=जुआरी, द्यूतक्रीड़ा करण वाळौ। तीयां नुं=वांनैं, उणां नैं। जुवारी=जुआरी। शील=चरित्र। लिषमी=लक्ष्मी। वेश्या=छिनाळ। अधम=अधरम। सुभाग=सौभाग्य। विनासइ=विणास। त्रीया=स्त्री, लुगाई। सुत=बेटा। षसम=धणी, पति। बालापण=टाबरपणै, बाळपणै। अवधारी=आतमसात करनै। तेथ=बठै। केत=कित्ता ई, केई। कालि=काळ। विचारीयउ=विचार कर्‌यौ। करंक=कंकाळ। दीठउ=दीख्यौ। सीह=सिंघ, शेर। तुचा=चामड़ी, त्वचा। ताहरां=तद, जणै। बीजा=दूजा, दूसरा। नाठा=भाजग्या, दौड़ग्या। कहीयउ=कैयौ। तिकौ=वौ। क्रुद्धि=रीस में आयोड़ौ, किरोध कर्‌योड़ौ। विलगउ=विलूंबग्यौ। अकवीसमी=इक्कीसवीं।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'वैताल पचीसी' रा राजस्थानी उल्थाकार है—

(अ) खेमदान (ब) करणीदान

(स) देईदान (द) सैणीदान

( )

2. 'वैताल-पचीसी' रौ राजस्थानी उल्थौ होयौ तद बीकानेर रा महाराजा कुण हा ?

(अ) अनूपसिंह (ब) करणसिंह

(स) सादूलसिंह (द) गंगासिंह

( )

3. विष्णु स्वामी रै कित्ता बेटा हा ?

(अ) दो (ब) चार

(स) तीन (द) पांच

( )

4. विष्णु स्वामी रा बेटा आपरी विद्या सूं किणनैं जींवतौ करयौ ?

(अ) मिरगै नैं (ब) घोड़ै नैं

(स) सिंघ नैं (द) हाथी नैं

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'वैताल पचीसी' री कित्तवीं कथा रौ राजस्थानी उल्थौ पाठ में सामल है ?
2. विष्णु स्वामी रा बेटा विद्या हासल करण सारू कठै गिया हा ?
3. 'वैताल पचीसी' री इण कथा सूं कांई सीख मिळै ?
4. विद्या हासल करण सूं पैलां विष्णु स्वामी रै बेटां में कांई दुर्गुण हा ?

छोटा सवालां रा पडूत्तर

1. विष्णु स्वामी रा बेटा आपरी विद्या री पारख किण भांत करी ?
2. विद्या रौ उपयोग करयां पछै च्यारूं भाई कांई फळ पायौ ?
3. विद्या हासल करयां पछै आपनैं सबसूं बत्तौ मूरख किसौ भाई लाग्यौ अर क्यूं ?
4. देईदान नाइता 'वैताल पचीसी' रौ राजस्थानी उल्थौ कठै, कद अर किणरै शासनकाळ में करयौ ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. विष्णु स्वामी रै च्यारूं बेटां सिंघ नैं किण भांत जीवाड़ै ? विस्तार सूं लिखौ।
2. देईदान नाइता रौ परिचै देवता थकां 'वैताल पचीसी' री इण कथा रै राजस्थानी उल्थै बाबत आपरा विचार लिखौ।
3. 'वैताल पचीसी' री इण कथा रौ सार लिखौ।
4. ''वैताल पचीसी री कथा सीख देवै कै खाली विद्या हासल करण सूं कीं नीं होवै, उणरौ उपयोग सावळ अर बगतसर करणौ चाईजै।'' इण कथन रै पख में आपरा विचार प्रगट करौ।

❑लोकगाथा

हर्ष-जीण री लोकगाथा (अंस)

पाठ परिचै

राजस्थान रै सीकर जिलै रै मांय लूंठा पहाड़ां माथै हर्ष अर जीण माता रा जगचावा मिंदर है। जीण रौ मूळ नांव जीवणी हौ, जिकी घंघराय री बेटी ही। घंघराय चूरू जिलै रै घांघू गांव रा राजपूत सरदार हा। आं रै अेक बेटौ अर अेक बेटी जलम्या। बेटै रौ नांव हर्ष हौ अर बेटी रौ जीण। जीण रौ बाळपणै रौ नांव जीवणी हौ। दोनूं भाई-बैन में अणूतौ हेत हौ। हर्ष अर जीण रा मां-बाप आं रै बाळपणै में ई सुरग सिधारग्या, पण सुरगधाम जावण सूं पैलां हर्ष नैं भोळावण देयनै गया कै जीण नैं किणी भांत रौ दुख नीं होवणौ चाईजै। पर-घर सूं आवण वाळी भावज (भोजाई) उणनैं किणी भांत रा फोड़ा नीं भुगतावै। म्हां दोन्यां रा जीव इणी भोळी चिड़कली री चिंत्या में अटक्योड़ा है। तद हर्ष आपरै मां-बाप नैं पतियारौ दिरावै कै थे नचींता रैवौ, म्हैं म्हारी बैन नैं फूल री दांई राखूंला, इणमें किणी भांत रा फोड़ा नीं पड़ण देवूंला।

मां-बाप रै सुरगवास पछै हर्ष रौ ब्यांव होवै। केई दिनां तांई तौ नणद-भावज में हेत-हिंवळास बण्यौ रैवै, पण फेर भावज रै मन मांय खोट बापरै अर वा नणद नैं आडा-टेढा बोल बोलती रैवै। जीण घुटती-अमूझती रैवै, पण भाई नैं कीं नीं बतावै। अेक दिन तळाब सूं पाणी रा मटका लावती वेळा भावज आपरी नणद जीण सूं कैयौ कै थूं म्हनैं मटकौ ऊंचादै, थनैं दासी ऊंचा देसी। जीण बोली, ''थांनैं घणौ गुमान है म्हारै भाई माथै, जद इज अैड़ा बोल बोल्या हौ, म्हैं तौ दासी रै हाथां मटकौ आज ऊंचूं न काल!'' भावज बोली, ''म्हारा इज काळा चाब्योड़ा हा, जिकौ अैड़ी आफत सूं भेंटा होया, ठाह नीं, कद आगलै घरै जासी, कै भाई इज रैयसी ?'' भावज रा अैड़ा बोल सुणनै जीण उणी खिण खण ले लीन्यौ कै नीं तौ म्हैं कदैई ब्यांव करूंली अर नीं पाछी घरां बावडूंली। जीण नैं बठै इज छोडनै भावज दासी सागै पाछी घरां आयगी। जीण नैं नीं देखनै हर्ष नैं चिंत्या होयी तौ जीण री भावज कैयौ कै जीण तौ रूसणौ करनै सरवर रै कांठै ई रैयगी है। हर्ष इत्तौ सुणतां ई भाजतौ-न्हासतौ सरवर पूग्यौ तौ बठै जीण नीं ही। उण रा पग दिखणादी दिस कानी मंड्योड़ा दीठा तौ वौ उणरै पगां-पगां सरपट्यौ। थोड़ी दूर गयां पछै उणनैं जीण निगै आई। वौ उणनैं मनावतौ थकौ पाछी घरां चालण री मनवारां करी, पण जीण कैयौ कै चायै परकत आपरा नेम-कायदा बदळ देवै, पण म्हैं म्हारै कौल-बचन सूं पाछी नीं टळूं। इणी सरवर रै कांठै भावज साम्हीं सूरज भगवान री साखी में म्हैं जकौ खण लियौ है, उणनैं निभावूंली। हर्ष उणनैं घणी ई समझायी अर कैयौ कै मां-बाप नैं मरती वेळा म्हैं बचन दियौ हौ कै जीण नैं कदैई कोई दुख नीं होवण देवूंला। थारै वास्तै ऊजळा चावळ, हरिया मूंगां री दाळ अर भूरी भैंस रै घी रौ जीमण परोसूंला। रतनां सूं जड़्योड़ी चौकी माथै सोनै रौ थाळ अर पालर पाणी सूं भरवायनै झारी रख देवूंला। पछै आपां बैन-भाई सागै जीमांला अर बीच-बीच में गासिया ई बदळांला।

जीण कैयौ कै अबै तौ जे आगलै जलम में अेक ई मां रै पेट सूं जलम लेवांला, तौ भलां ई सागै जीमांला, इण जलम में तौ अैड़ौ कीं ई नीं होवैलौ। अैड़ौ सरंजाम तौ अबै भावज सारू ई करौ। चायै सिखर चढ्योड़ौ सूरज पाछौ मुड़ जावै, पण म्हैं तौ अबै पाछी नीं चालूं। जीण रौ पक्कौ निस्चै जाणनै हर्ष अेकर फेरूं मनावणौ चायौ, तौ जीण कैयौ कै भाई हर्ष, थूं म्हनैं कांई मनावै, म्हनैं तौ आखी दुनिया मनावैली, राजा-बादसाह मनावैला। थूं पाछौ घरां बावड़जा। भोजाई थारी बाट देख रैयी होसी। हर्ष ई मन में धार लीनी कै जे जीण नीं मुड़ै तौ म्हैं ई पाछौ नीं मूडूं। जीण रै सागै हर्ष ई दिखणादी दिस आगै बधतौ रैयौ अर सीकर कनै दो लूंठा भाखरां माथै जायनै तप करण लाग्या। जीण कैयौ कै बैन-भाई आम्हीं-साम्हीं नीं बैठ्या करै, तद हर्ष जीण नैं पीठ देयनै तप में लीन होयग्यौ। दोनूं भाखर

हर्ष-जीण रै नांव सूं ओळखीजण लाग्या। बठै हर्ष अर जीण रा मिंदर बणग्या। जीण माता रौ जस दिल्ली रै बादसाह तांई पूग्यौ तौ वौ मिंदर माथै चढाई कर दीनी। जीण माता आपरै भौंरां री सेना बादसाह रा तंबुआं में भेज दी। बादसाह रा सिपायां रा डील सूजग्या। वै डरता पाछा बावड़ग्या। दिल्ली रौ बादसाह जीण माता नैं धोकण लागग्यौ। हर्षनाथ रै मिंदर कनै वि. सं. 1030 (बुधवार, 18 जनवरी, 973 ई.) रौ अेक सिलालेख मिल्यौ, जिकौ सीकर रै संग्रहालय मांय है। इणमें केई चौहान राजावां रा नांवां रौ जिकर है। जीण माता रै मिंदर रा पुजारी पारासर गौत रा बिरामण अर सांभरिया खांप रा राजपूत है। अठै आयै बरस चैत अर आसोज रै च्यानण-पख में मेळौ भरीजै अर जात-झडूलै सारू सैंग जात रा लोग आवता ई रैवै। कैबत है कै 'जिण न देखी जीण, वौ जग में के कीण?' मतलब कै जकौ जीण माता रा दरसण नीं करयौ, वौ जग में आयनै कांई करयौ?

हर्ष-जीण री लोकगाथा (अंस)

(सरवर कांठै सूं दर-कूचां— दर-मजलां दिखणद कानी जावती जीण आपरै भाई नैं झूरै ही—)

हरसा बीर मेरा रे, मा बाबल खोस्या मेरा राम।
जामण का रे जाया, जलमी को जायो भावज खोसियो।।
हरसा बीर मेरा रे, मेरा कुळ में कोई साथी नांय।
जामण का रे जाया, अंबर तो पटकी रे धरती सांभळी।।
हरसा बीर मेरा रे, जे मेरी होती जुग में माय।
जामण का रे जाया, अखन कंवारी नै नांय बिडारती।।
हरसा बीर मेरा रे जे मेरो जीतो होतो बाप।
जामण का रे जाया, अखन कंवारी नै कदियेन काढतो।
हरसा बीर मेरा रे, राव गढां रे करतो ब्याव।
मेरी मा का रे जाया, घुड़ला तो हसती रे देतो घूमता।।
हरसा बीर मेरा रे, मा बाबल आवै म्हारै याद।
जामण का रे जाया, नैणां चौमासो रे म्हारै लग रह्यो।।

(हे भाई हर्ष! मां-बाप नैं तौ भगवान खोस लिया अर सागी भाई नैं भावज। अबै इण घर में म्हारौ कुण है? म्हनैं तौ आभौ पटकी अर धरती झेली। हे भाई, जे आज मां जींवती होवती तौ आपरी अखन कंवारी बेटी नैं इयां नीं बिसारती अर जे बापू होवता तौ घर सूं कदैई नीं काढता। वै किणी गढपति सागै म्हारौ ब्यांव करनै हाथी-घोड़ा दायजै में देता। हे म्हारा मा-जाया भाई हर्ष! म्हनैं मा-बाप याद आय रैया है अर आंख्यां सूं सावण-भादवै री झड़ी लाग रैयी है।)

हरसा बीर मेरा रे, के थारै घर में रै पांती मांगती?
के थारो लेती राज बंटाय?
जामण का रे जाया, किस विध बिडारी रै छोटी भाण नै।।
हरसा बीर मेरा रे, कै तो मैं लेती धरम की चूनड़ी।
के तो मैं लेती आंगी बांय।
मेरी मा का रे जाया, देतो तो लेती रै पगां री मोचड़ी।।

(ज्यूं-ज्यूं जीण नैं आपरौ अपमान चेतै आवै, त्यूं-त्यूं उणरी रीस बधती जावै अर वा भाई सूं किरियावर करती थकी कैवै— हे भाई हर्ष! न तौ म्हैं घर में अर न राज में ई पांती मांगी, फेर क्यूं छोटी बैन नैं घर सूं काढी? म्हैं तौ थारी दियोड़ी चूनड़ी, कांचळी अर ज्यादा सूं ज्यादा अेक जोड़ी पगरखी ई लेवती।)

हर्ष री जोड़ायत जद घरां पूगी, तद उणरै आपरी बैन नैं नीं देखनै हर्ष पूछ्यौ कै जीण कठै रैयगी? तद नण-भोजाई रै झगड़ै रौ हाल सुण-समझनै हर्ष आपरौ माथौ पीट लियौ अर तळाब कानी भाज्यौ। बठै जायनै जीण रै पगां री दिस दिखणाद कानी जोयौ। फेर उणी दिस दौड़ पड़्यौ—

इसड़ा तो झुरणा ये जीण सगती झूरती गई,
गई कोस दोय रै च्यार।
देव्यां रा ये देवी कांकड़िये ढळता ये हरसो नावड़्यो।।
जीण मेरी बाई ए मुड़ मुड़ तूं घर नै पाछी चाल।
मेरी मां की ये जाई, हरसो तो ऊबो करै ये मनावणा।।

(इण भांत भाई नैं ओळमा देती-झूरती जीण नैं गांव री कांकड़ सूं कोई च्यारेक कोस रै आंतरै हर्ष नावड़ली अर बोल्यौ, ''हे देव्यां री देवी जीण, पाछी घरां चाल! हे जामण-जायी बैन, थारौ भाई हर्ष थनै खड़्यौ-ऊभौ मना रैयौ है। पण जीण तौ काठी धार राखी ही। वा दर ई नीं मानी अर बोली—)

हरसा बीर मेरा रे मनै मनासी रै बामण-बाणियां।
और मनासी कुळ रा लोग,
मेरी मा का रे जाया, बेटी मनासी रे हाडे राव की।।
हरसा बीर मेरा रे मनैं मनासी राजा मान।
जामण का रे जाया, और मनासी रे दिली रो बादस्या।।

(हे म्हारा भाई हर्ष, थूं म्हनैं कांई मनासी, म्हनैं तौ मनासी आखो राज-समाज। बामण-बाणियां रै सागै आखै कुळ रा लोग म्हनैं मनावैला। हाड़े राव री बेटी अर राजा मानसिंह ई म्हनैं मनावैला। अबै हर्ष करै तौ कांई करै? वौ बैन री सुख-सुविधावां सारू कौल वचन करण लाग्यौ।)

जीण मेरी बाई ये, उजळा रंधाद्यूं ये थांनै चावळ्या,
हरिये मूंगां री बाई नै दाळ,
जामण की ये जाई घीरत घलाऊं ये भूरी झोट को।।

(हे बैन, थारै सारू ऊजळा चावळ अर हरिया मूंगां री दाळ रंधवा देवूंला। सागै भूरी भैंस रौ घी भी परोस देवूंला, पण जीण तौ सैंग सुख-सुविधावां सूं मूंढौ फेर लियौ हौ। वा बोली—)

हरसा बीर मेरा रे, भावज जीमैली उजळा चावळ्या,
भावज जीमैली थारी दाळ।
जामण का रे जाया, घीरत जीमैली रे भूरी झोट को।।

(हे भाई, ऊजळा चावळ, हरिया मूंगां री दाळ अर भूरकी भैंस रौ घी भावज ई जीमसी। जीण रा अैड़ा बोल सुणनै हर्ष रै हियै में हेत हबोळा लेवण लागै। वौ कैवै—)

जीण मेरी बाई ये चोकी ढळवा द्यूं रतन जड़ाव की,
ऊपर लगवा द्यूं सुबरण थाळ।

जामण की ये जाई, झारी भरवाद्यूं ये पालर नीर की।।
जीण मेरी बाई ये ऊंचो सो घालूं ये थांनै बैसणूं,
बैनड़ भाई जीमांला साथ।।
जामण की ये जाई, बिच-बिच बदळांला ये बाल्हा गासिया।।

(हे बैनड़ जीण, थारै खातर रतनां सूं जड़्योड़ी चौकी ढळवायनै उण माथै सोनै रौ थाळ सजायनै पालर पाणी री झारी भरवास्यूं। ऊंचा आसण बिछायनै आपां दोनूं भेळा जीमांला अर बीच-बीच में अेक-बीजै नैं कवा ई देवांला। पण जीण हिमाळै दांई थिर ही। वा ठिमराई सूं बोली—)

हरसा बीर मेरा रे जे ओजूं जलमां रै अेकै माय के,
जद रे जीमांला दोन्यूं साथ।
मेरी मा रा रे जाया जद रे बदळांला बिचला गासिया।।
हरसा बीर मेरा रे आकां कै लागै रै मतीर।
जामण का रे जाया, फोगां कै लागै रे चाये काकड़ी।।
हरसा बीर मेरा रे, खेजड़ियां लागै चाये बोर।
जामण का रे जाया, झाड़ां कै रे लागै चाये सांगरी।।
हरसा बीर मेरा रे, पीपळ कै लागै चाये आम।
जामण का रे जाया, आमां रै लागै चाये पीपळी।।
हरसा बीर मेरा रे, फिरजावै कुदरत का साचल नेम।
जामण का रे जाया, मेरा वाचा पाछा ना फिरै।।
हरसा बीर मेरा रे, सिखर आयोड़ो रे सूरज मुड़चलै।
समै भी गयोड़ो मुड़ जाय।।
मेरी मा का रे जाया, जम पर गयोड़ा रै भंवरा मुड़ चलै।
हरसा बीर मेरा रे, बादळ री बूंनां रै पाछी मुड़ चलै।।
समदर हूं नदियां पाछी जाय,
जामण का रे जाया, जीण आयोड़ी रै पाछी ना मुड़ै।।

(हे मां-जाया भाई हर्ष, अबै तौ जे आगलै जलम में ओजूं अेक ई मां रै पेट सूं जलमांला, तद ई अेकै सागै जीमण जीमांला अर आपस में गासिया ई बदळांला। जीण आपरौ अटळ निरणै सुणावती बोली— हे भाई हर्ष, चायै आकड़ै रै मतीरा लागै, फोगां रै चायै काकड़ी लागै, खेजड़ी रै बोरिया अर झाड़्यां रै सांगरी ई क्यूं नीं लागै, पीपळ रै चायै आम अर आम रै चायै पीपळ-फळ लागै। हे भाई हर्ष, चायै कुदरत रा नेम-कायदा टळ जावै, पण जीण आपरै कौल-बचनां सूं पाछी नीं टळै। चायै सिखर चढ्योड़ौ सूरज पाछौ मुड़ जावै, गुजरेड़ौ समै ई पाछौ बावड़ आवै अर चायै जमराज कनै गयोड़ा जीव ई पाछा आय जावै। हे भाई, चायै बादळां री बूंदां पाछी मुड़ जावै अर समदर सूं नदियां पाछी बावड़ जावै, पण जीण पाछी किणी सूरत में नीं बावड़ै। वा आपरै बचनां माथै थिर है। जद हर्ष नैं पक्कौ पतियारौ होयग्यौ कै अबै जीण पाछी घरां नीं चालैली, तद वौ उणरै रूसणै रौ कारण जाणणौ चायौ—)

जीण मेरी बाई ये के थांनै काढी भावज गाळ।
जामण की ये जाई, के थांनै दीन्या ये ओळमा।।

(हे बाई जीण, कांई थनैं थारी भावज गाळ्यां काढी या थनैं किणी तरै रा मोसा मारया? तद जीण बोली—)

हरसा बीर मेरा रे, सौगन मैं खाई सरवर पाळपर,
आडो तो लीनूं सूरज देव।
जामण का रे जाया, भावज को चाढ्यो रे कळंक उतारस्यूं।।
हरसा बीर मेरा रे, एकण ओदर में रे दोन्यूं लोटिया,
एकै मायड़ को रे चूख्यो दूध।
जामण का रे जाया, अेकै पालणियै रे दोन्यूं झूलिया।।
हरसा बीर मेरा रे, अेकै आंगण में रे दोन्यूं खेलिया,
एकै बाटकियै पीयो दूध।
मेरी मा का रे जाया, एकै थाळकली रै सागै जीमिया।।
हरसा बीर मेरा रे, बैनड़ भाई रो गाढो नेह।
जामण का रे जाया, परघर की दूती रे आय तुड़ाइयो।।

(हे भाई हर्ष, म्हैं सरवर री पाळ माथै सूरज री साखी में सौगन खाई ही कै भावज रो लगायोड़ौ कळंक उतारूंली। हे भाई, आपां दोनूं अेक ई मां रै पेट में लोट्या, अेक ई पालणै में हींड्या, अेक ई कटोरी में दूध पीयौ अर अेक ई थाळी में जीमण जीम्यौ, पण हे भाई, परायै घर सूं आयोड़ी दूती जैड़ी भावज आपणै गाढै हेत नैं तोड़ नाख्यौ। जीण रा अै उद्‌गार सुणनै हर्ष गळगळौ होयग्यौ। उणरी आंख्यां सूं चौसारा चालण लागग्या। वौ संकळप करयौ—)

जीण मेरी बाई ये! इतणी निसासी ये बैनड़ क्यूं हुई?
हरसो तो चालै थारै साथ,
जामण की ये जायी, चाल बसांला ये बनखंड डूंगरां।।

(हे म्हारी बैन जीण! थूं इत्ती अणमनी क्यूं होवै है। म्हैं खुद थारै साथै हूं अर आपां वनखंड अर भाखरां में ई चालनै रैवास कर लेवांला।)

हरसा बीर म्हारा रे, कुण करैलो थारौ राज?
जामण का रे जाया, कुण तो रुखाळैलो पिरजा बापड़ी।
हरसा बीर मेरा रै, मुड़ मुड़ पाछो घर नै जाय।
जामण का रे जाया भावज बिलखै रै थां बिन अेकली।।

(हे म्हारा भाई हर्ष, जे थूं म्हारै सागै चालैला तौ थारौ राज कुण संभाळैला? हे जामण जाया बीर, फेर इण भोळी प्रजा नैं कुण रुखाळैला। इण वास्तै हे हर्ष वीरा, थूं पाछौ मुड़जा अर घरां जा परौ, थारै बिना घरै भावज बैठी अेकली झुर रैयी है।)

गाथा में आगै बैन जीण आपरै भाई हर्ष नैं घणौ ई समझावै, पण वौ नीं मानै अर सेवट बैन-भाई दोनूं भाखरां माथै अपूठा बैठ तपस्या में लीन व्है, आपरी आतमावां रौ उत्सरग करै अर भाई-बैन रै अटूट नेह रै प्रतीक रूप जग में पूजीजै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

खण=प्रण। भोळावण=संभळावण। गासिया=कवा, रोटी रौ कौर। कांठौ=किनारौ, सरवर री पाळ। भावज=भोजाई, भाई री जोड़ायत। बिडारणौ=बिसारणौ, भूलणौ। घुड़ला=घोड़ा। हसती=हाथी। चौमासो=चातुर्मास, बिरखा रुत रा चार महीना। मोचड़ी=पगां री पगरखी, चमड़ै री जूती। झूरणौ=विलाप करणौ, बिलखणौ। घीरत=घी। झोट=भैंस। रतन जड़ाव=रतनां सूं जड़्योड़ी। सुबरण=सोनै रौ, सोनलियौ। पालर नीर =बिरखा रौ पाणी। वाचा=कौल, बचन। जम=जमराज। बूंनां=बूंदां, बिरखां री छांटां। पिरजा=प्रजा, रैयत, जनता।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. हर्ष अर जीण कठै रा पहाड़ां माथै तपस्या करी ?

   (अ) सीकर रा (ब) आबू रा

   (स) देसूरी रा (द) चित्तौड़ रा

   ( )

2. जीण माता रौ बाळपणै रौ नांव कांई हो ?

   (अ) जोती (ब) जतिया

   (स) जीवणी (द) जसोदा

   ( )

3. जीण आपरै भाई हर्ष नैं पाछी घरां जावण सूं क्यूं नटै ?

   (अ) मां-बाप नीं होवण रै कारण (ब) भावज नैं दियोड़ा कौल-बचनां रै कारण

   (स) हर्ष नैं दुख होवण रै कारण (द) दासी री सिकायत रै कारण

   ( )

4. ''के थारो लेती राज बंटाय ?'' हर्ष-जीण री लोकगाथा में आ बात कुण किणनैं कैवै ?

   (अ) बैन आपरै भाई नैं (ब) लुगाई आपरै धणी नैं

   (स) दासी आपरी राणी नैं (द) टाबर आपरै माईतां नैं

   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'हर्ष-जीण री लोकगाथा' में हर्ष रौ जीण सूं कांई रिस्तौ है ?
2. पाणी भरण नैं सरवर री पाळ माथै कुण-कुण सागै जावै ?
3. हर्ष अर जीण पहाड़ां माथै जायनै तपस्या सारू किण तरै बैठै ?
4. हर्ष ई घरां पाछौ जावण सूं क्यूं नट जावै ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. हर्ष अर जीण रै बाळपणै री दो घटनावां लिखौ।
2. 'हर्ष-जीण री लोकगाथा' सूं आपां नैं कांई प्रेरणा मिळै ?

3. जीण नैं उणरी भावज कांई मोसा बोल्या हा ?
4. घर सूं निकळ्यां पछै हर्ष नैं जीण किण ठौड़ मिळी ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'हर्ष-जीण री लोकगाथा' रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।
2. ''हर्ष-जीण री लोकगाथा भाई-बैन रै अछेह नेह री बानगी है।'' इण कथन नैं लोकगाथा सूं दाखला देयनै पुख्ता करौ।
3. जीण नैं घरां पाछी ले जावण सारू हर्ष कांई-कांई मान मनवार करै अर जीण आपरै कौल-बचनां सूं नीं टळण सारू कांई-कांई दाखला देवै ? दाखलां समेत विस्तार सूं लिखौ।

नीचै दिरीज्यां पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. हरसा बीर मेरा रे, मा बाबल खोस्या मेरा राम।
   जामण का रे जाया, जलमी को जायो भावज खोसियो।।
   हरसा बीर मेरा रे, मेरा कुळ में कोई साथी नांय।
   जामण का रे जाया, अंबर तो पटकी रे धरती सांभळी।।

2. इसड़ा तो झुरणा ये जीण सगती झूरती गई,
   गई कोस दोय रै च्यार।
   देव्यां रा ये देवी कांकड़िये ढळता ये हरसो नावड़्यो।।
   जीण मेरी बाई ए मुड़ मुड़ तूं घर नै पाछी चाल।
   मेरी कां की ये जाई, हरसो तो ऊबो करै ये मनावणा।।

3. हरसा बीर मेरा रे, पीपळ कै लागै चाये आम।
   जामण का रे जाया, आमां रै लागै चाये पीपळी।।
   हरसा बीर मेरा रे, फिरजावै कुदरत का साचल नेम।
   जामण का रे जाया, मेरा वाचा पाछा ना फिरै।।

❑उपन्यास अंस

कनक-सुंदर

शिवचन्द्र भरतिया

उपन्यासकार परिचै

शिवचंद्र भरतिया रौ जलम वि. सं. 1910 में होयौ। भरतिया संस्कृत, हिंदी, मराठी अर राजस्थानी रा विद्वान हा। शिवचंद्र भरतिया घणी विधावां रा रचनाकार हा। आप आधुनिक राजस्थानी गद्य लिखणियां में पैलड़ा उपन्यासकार मानीजै। केई विद्वान आपरै 'कनक-सुंदर' उपन्यास नैं राजस्थानी रौ पैलौ उपन्यास मानै। औ उपन्यास आप सन् 1903 में लिख्यौ। आप 'केसर विलास', 'फाटका जंजाळ', 'बुढापा की सगाई' (लघु नाटक), संगीत मानकुंवर आद केई नाटक लिख्या। 'मोत्यां की कंठी' आपरी पद्य-रचना है। आपरौ लेखन कथ्य अर सिल्प दोनूं दीठ सूं राजस्थानी गद्य नैं सबळौ बणायौ। आपरै लेखन रा खास सुर है— देस री आजादी रौ चाव, जूनी संस्कृति नैं आधुनिक संस्कृति में वैग्यानिक रूप सूं ढाळणौ अर समाज-सुधार।

पाठ परिचै

'कनक-सुंदर' उपन्यास रो मूळ धेय है— समाज-सुधार। औ उपन्यास आदर्शवादी दीठ सूं रचीज्यौ है। उपन्यास सूं साच, मैणत अर ईमानदारी जैड़ा सफळता रा सूत्रां री आ सीख मिळै। मुरलीधर मैणत अर सचाई सूं राज अर समाज में घणा मानीता अर धनवान होय जावै। वांरौ ब्यांव भाई-भाभी करावै। वांरै लड़कौ होवै, उणरौ नांव कनक कढाईजै। उणरै सागै सुंदर पढै। दोनूं रौ ब्यांव होय जावै। आगै रौ हाल दूजै भाग में। दूजौ सायद लिखीज्यौ ई कोनी। इण में राजस्थानी जीवण रौ फूठरौ चित्रण होयौ है। उण समै री केई सामाजिक बुरायां अर समस्यावां भी प्रकास में आवै। उपन्यास माथै नाटक सैली रौ प्रभाव दीखै। उपन्यास घटणा अर वरणन प्रधान है। साफ अर सरल अभिव्यक्ति आपरी भासा-सैली में सगळै प्रगटै।

'कनक-सुंदर' रौ अेक भाग ई साम्हीं आयौ, वौ भी मिळणौ दुरलभ है।

कनक-सुंदर

(1)

दोपहर दिन को बखत, च्यारां कानी लू चाल रही छै, हवा का जोर सूं बाळू अठी की उठीनै उड-उड कर बीं का नवा-नवा टीबा हो रह्या छै। ओर भींजण भी रह्या छै, मुंह ऊंचो कर सामनै चालणो मुस्कल छै, लू कपड़ा मांहै बड कर सारा सरीर नैं सिकताव कर रही छै। धूप इसी जोर की पड़ रही छै के जमीं ऊपर पग देणो मुस्कल छै। रस्ता मांहै दूर-दूर कठै ही झाड़ को नांव नहीं, बाळू उडकर जगां-जगां नवा टीबा होणै सूं रस्ता को ठिकाणौ नहीं, आदमी तौ दूर, रास्ता मांहै कोई जीव-जिनावर का भी दरसण नहीं, इसी बखत, अेक जवान आदमी, जिणकी उमर सोळा-सतरा बरस की थी, माथौ कपड़ा सूं बंध्यौ हुवौ, पीठ पर सामान की पोटळी लाद्यां हुवौ, हाथ मांहै लोटौ-

डोर लटकायौ हुवौ, हुस-हुस करतौ अजमेर कानी चल्यो आरह्यौ छै, रैती गरम होणै सूं पगां के चरका लागकर फोड़ा आ रह्या छै। तौ भी जोर सूं चाल रह्यौ छै। मन मांहे बार-बार बोल रह्यौ छै, कै ''भाभी! साबास तनैं! मनैं थाळी पर सूं जीमता नै उठाकर घर छुड़ायौ! कांई हरकत छै? रामजी म्हां का भी दिन कदै ही लासी जरां आप ही म्हांकै पगां पड़ता फिरसौ! भाई तौ भाई छै! म्हैं तौ जाणतौ थो कै म्हारै लार कोई दौड़सी पण मा बिना कीं नैं पीड़ आवै? आज मां होती तो म्हैं घर बारै नीसरतौ कांई? इण तरह रा विचार करतौ हुवौ अजमेर की टेसण ऊपर दाखल हुयौ।

खंडवा तरफ की गाडी जावा नै हाल पांच-छै घंटां की देर थी। पीठ पर को बोझौ उतारनै नीचै राख्यौ। पाणी बिना मुंह सूक रह्यौ थो सू बिरामण कनै सूं लोटौ भर जळ लेकर, खूब मूंडौ धोकर, थोड़ौ जळ पियौ, जरां कुछ होस आयौ। उता मांहै अेक जणौ आकर इण मुसाफर को हाथ पकड़ कर बोल्यौ— जय गोपाळजी की भाई साहब! कठीनै की तैयारी छै? क्यूं इण तरहै कांई?'' बिना मिल्यां ही परभारा टेसण पर आया? साबास! इण तरहै चाहिजै।

—कुण भाई वंसीलाल जी? भला बखत ऊपर मिल्या! परभारा कांई। म्हांको बखत ही अबार इण तरहै को छै। घर मांहै सूं काढ दीनौ जरा थे तौ खाली दोस्त छौ, थांसूं मिलकर कांई होणौ छै? इण तरहै मुसाफर उदासी सूं बोल्यौ।

वंसी.— वाह साब वाह! दुनिया मांहै दोस्त कै बराबर और कोई होतो होसी? मां-बाप सूं भी दोस्त ज्यादा काम आया करै छै। और साचा दोस्त की परीक्षा विपत पड़यांज हुवा करै छै, समझ्या मुरलीधरजी?

मुरली.— हां भाई! म्हैं तौ गरीब आदमी छूं। म्हैं कांई इसौ दोस्त कै लायक छूं सूं मनै कोई काम आवै? दुनिया मांहै पैसौ बडी चीज छै। पैसा वाळा का हजार दोस्त-सगासोई ओर भाईबंध छै।

वंसी.— अब आ पोटली-वींटली लेकर कठीनै? परदेस जाणै को विचार दीखै छै? ठीक! पण आज कै दिन तौ म्हांकै अठै चालौ, काल की गाडी मांहै रवाना हो जायीजौ।

मुरली.— नहीं भाई! अब मनैं दोस्ती का फांसा मांहै मती नाखौ, अब मनैं जाबा दौ। श्रीजी की कृपा सूं अणचींत्यौ मिळाप भी होयग्यौ। फेर आपकै अठै चालकर कांई करणौ छै?

इण तरै मुरलीधर जी तिरस्कार-युक्त बोल्या खरा, पण मित्रता की मूर्ति सामनै खड़ी रहकर उणका हृदय कंपित करबा लागी। जाणै वंसीलालजी नै छोड़बा को दिल होवै नहीं और उणकै साथ उणकै अठै जाणै को भी दिल होवै नहीं। खूब धूप मांहै घबराता-घबराता जोर सूं पांव उठाकर, जाणै गाडी की टैम मिलसी कै नहीं? तिकासूं दौड़ता-दौड़ता आया और जाणै की तैयारी पक्की हो गई। कठै ही दिल रुकबा नै जबा रही नहीं, इतना मांहै वंसीलालजी को मिळाप हो गयौ और मन दुवध्या मांहै पड़ग्यौ।

वंसीलालजी पूरौ आग्रह करनै आपका मित्र मुरलीधरजी नैं घरा ले गया। बिचारा मुरलीधरजी धूप की तीव्रता सूं, चित्त की व्याकुलता सूं और क्षुधा की आतुरता सूं घणा श्रमी हो गया था, जमीं पर पग धरकर उठावणौ मुस्कल थो, तो भी प्रेम की रस्सी सूं खींचीजता हुवा वंसीलालजी कै अठै पूगा। घरां जातां पाण वंसीलालजी मुरलीधरजी को घणा प्रेम सूं आदर-सत्कार कीनौ। अर रसोई तैयार करायनै जिमाया। साम का दोन्यूं मिलकर हकीकत पूछी। सुणकर अचंबै रह्या। रात का रसोई जीम सुख-दुख की वातां करनै आराम कीनौ।

(2)

खंडवा की रचना ठीक छै। मोटौ स्हैर भी नहीं और छोटौ गांवड़ौ भी नहीं। टेसण को गांव होणै सूं रात-दिन लोगां को आणौ-जाणौ बण्यौ रहतौ। बैपार लंबौ-सो थो नहीं तौ भी मेहनत मजूरी वाळा नैं निभाव की जगा थी। मुरलीधरजी उठै अेक छोटी-सी कोटड़ी भाड़ा सूं लेकर रहबा लाग्या। चारयां कांनी फिरकर गांव देख्यौ। फेरी सूं कपड़ौ बेचबा को इरादौ कीनौ, किरकोल कपड़ौ, छींटां का टुकड़ा वगैरा दस-पंदरा रुपिया का घणी जांच करनै फायदा सूं लीना और फेरी देणी सरू कीनी। विचार कीनौ कै कपड़ा ऊपर थोड़ौ नफौ रखकर गिरायक नैं अेकज भाव

बोलणौ, माल बिकौ अथवा मत बिकौ, पहलै दिन सारा गांव मांहै फेरी दीनी, पण अेक भाव बोलणै सूं कुछ बिकरी हुयी नहीं। मुरलीधरजी दिल का पक्का और हीमत का पूरा। अेक निस्चय कर लीनौ कै झूठ तौ बोलणौ ज नहीं, क्यूं भी हो सचावट राखणी, देखां भला कांई परिणाम होवै? दो-तीन दिन इण तरहै ही गया। फेर थोड़ौ-थोड़ौ कपड़ौ बिकवा लाग्यौ। लोगां नैं मालम हो गयी कै बाण्यौ अेक बात बोलै छै, फेर उण मांहे कमी-ज्यादा करै नहीं। महिना-पंदरा दिनां पीछै बिकरी आछी होवा लाग गयी। ऊपर को ऊपर माल बेचकर जका को कपड़ौ लाता बींनै पैसा चुका देता। इण तरहै थोड़ा दिनां मांहै तीन-चार सौ की पूंजी हो गयी।

सांच नै आंच नहीं— सचावट दुनिया मांहै मोटी चीज छै। सच्चा आदमी पर सारां को विस्वास बैठ जावै। विस्वास बैठ्यां पीछै कोई बात की कमती नहीं, साच नैं कठै भी डर नहीं, धोकौ नहीं और खराबौ नहीं, सांच ऊपर सूर्य, चंद्र, तारा, प्रथ्वी चाल रह्या छै। सांच ऊपर राज्य को पायौ छै। सांच ऊपर वौपार की इमारत छै। सांच की लछमी बंधी हुई छै। जिण आदमी के पास सांच छै, उणकै सामनै अस्टसिद्धि-नवनिधि हाथ जोड़कर खड़्या छै। सांच के वसीभूत प्रत्यक्ष नारायण छै, सांच बिना सोभा नहीं, आबरू नहीं, धन नहीं, मान नहीं, कुछ भी नहीं, किसी भी विपत पड़ौ, किसौ परसंग आवौ, सांच नैं छोडणौ नहीं। राजा हरिसचंद्र सांच के वास्तै राज गमायौ, लुगाई-बेटा नैं गमाया, आप बिकग्यौ, नाना प्रकार का संकट भोग्या, पण सांच छोडी नहीं! नळ राजा महा संकट भोग्यौ पण सांच छोडी नहीं। पांडवां राज गमायौ, वनवास भोग्यौ, पण सांच छोडी नहीं। इण तरहै ही म्हांका मुरलीधरजी सांच ऊपर कमर बांधकर सांच को पूरौ-पूरौ आश्रय लीनौ।

इण सचावट सूं खंडवा मांहै सारा ही मुरलीधरजी की सोभा करवा लाग गया। उण पर सारां को पूरौ-पूरौ विस्वास बैठ गयौ। अब कपड़ां कै तांई बराणपुर, भुसावल, जळगांव तोड़ी जावा लाग गया। हजारां रुपियां को माल उधार मिलबा लाग गयौ। दुकान पर हर कपड़ा का थान ऊपर कीमत की चट्टियां मार दीनी। अेक फरदी करनै बार सूं हर भाव का थान, नामूद कर दीना, इण तरहै की साख बंधी कै भाव बोलणै की कींनै जरूरत रही नहीं। कोई भी गिरायक साबत थान लेवै तौ थान पर रुपिया मंड्योड़ा देख कर बिना बोल्यां देय जावै। और किरकोल वाळा फरदी मांहै भाव देखकर दाम देय जावै। डेढ दो बरस मांहै मुरलीधरजी आठ-दस हजार का मालक बण गया।

'उत्तम खेती, मध्यम वौपार, कनिस्ट चाकरी और भीख निदान' कहावत छै। खेती ऊपर तौ आपणौ सारौ ही देस छै। वौपार मध्यम कह्यौ छै, पण पारासर ऋसि को कहणौ छै कै वौपार मांहै लक्ष्मी पूरी, बीं सूं आधी खेती मांहै, बीं सूं आधी राजा री नौकरी मांहै और भीख मांहै तौ कुछ भी नहीं, इसी वास्तै वौपार सारा सूं घणौ ऊंचौ अर श्रेस्ठ छै, बीं को पार नहीं, अंग्रेज लोगां इत्ती बडी सत्ता और वैभव वौपार का कारण सूंज संपादन कीना छै। वौपार को मुख्य पायौ तथा आधार साच, उद्योग और नियमितपणा पर छै। टापटीप, व्यवस्थितपणौ, अेक बात, बखत की बखत भुगतावण, मीठी बात, नरमाई और गिरायक को आदर-सत्कार अै वौपार का अंग छै, अंग्रेज लोग मिट्टी को सोनौ कर रह्या छै। बै लोग कोई काम मांहै फस भी जावै तौ बींकौ पीछौ छोड कर निरास होकर बैठै नहीं, पूरौ पीसौ लेकर बीं काम नैं सेवट लेय जावै। आज सारौ दुनिया भर को वौपार उण लोगां कै हाथ मांहै छै।

(3)

अेक दिन इठै का बडा साहब कानी सूं कपड़ौ-लत्तौ और किरकोल माल की फैरिस्त आयी तिकी मुरलीधरजी आपका भाई नैं दीनी और कह्यौ कै फैरिस्त मुजब सारौ माल आपणा आदमी कै साथ देकर, माल की कीमत बराबर लगाकर, बीजक साथ देकर, भेज दियो। तिका परवाणै हजारीमलजी सारौ माल निकाळ कर गुमास्ता कनै सूं बीजक लिखवाय नै भेज दीनौ। साम का मुरलीधरजी जमा-खरच देखबा लाग्या। साहेब का नांव सूं माल नोंध्योड़ौ देख्यौ। सारा माल की कीमत बराबर थी, परंतु काळी बनात को थान, जका की कीमत खरच नफा सूधा नौ रुपिया वार की थी सूं हजारीमलजी जाण-बूझकर बारा रुपिया वार को भाव लगा दीनो थो। मुरलीधरजी देखकर चोंक उठ्या। और भाई नैं बोल्या कै औ कांई कीनौ? नौ कै ठिकाणै बारा कियांन लगाया? आ बात आछी कीनी नहीं, बात नैं बट्टौ लगायौ।

हजारीमलजी सुणकर बोल्या कै कांई हुवौ? चार-पांच सौ को माल गयौ जका मांहै अेक बनात का दाम ज्यादा लगाया तौ कांई हरकत छै? साहब लोगां को काम, बै किसा देखै छै?

मुरली.— (दोरा होकर) बै किसा देखै छै! नहीं-नहीं! नारायण तौ देखै छै ना? आदमी सूं तौ चोरी कर लेवां, पण श्रीजी कै आगै चोरी हो सकै कांई? और इसी चोरी सूं फायदौ भी कांई?

लाभ न होवै कपट सौं, जो कीजै व्योपार।
जैसे हांडी काठ की, चढै न दूजी बार।।

ओ काम आछौ नहीं हुवौ, आज तांई म्हारौ नेम पूरौ निभ्यौ, पण आज बीं को भंग हुवौ, मरजी नारायण की!

हजारी.— (नीचै झांककर) भाया! इण मांहै दोरौ होबा को काम कांई छै? साहब नैं चिट्ठी लिखकर भूल सूं ज्यादा कीमत लगी सूं दाम करा ल्यौ। साहब तौ उल्टौ खुसी होसी, आगै इण मांहै कोई आछी बात होगी छै। जरां औ इसौ काम हुवौ छै, भूलचूक को कांई? भूलचूक तौ सदा लेणी-देणी छै।

मुरली.— (विचार मांहै) ठीक छै, आज तांई श्रीजी इण तरहै की म्हारा हाथ सूं भूल करायी नहीं, आज बडेरां का हाथ सूं हुयौ छै, सूं बोही नारायण सुधारसी।

इण तरहै बोलकर मुरलीधरजी झट अेक अंग्रेजी लिखबा वाळा नैं बुलाकर घणी नम्रता सूं अेक चिट्ठी साहब कै नाम लिखाकर भेजी कै म्हांका भाई की भूल सूं काळी बनात नौ रुपिया वार थी सूं बारा को भाव लगायौ गयौ छै, सूं बीजक दुरस्त करनै उत्ता रुपिया भेज दीजौ।

साहब कै पास माल पूग गयौ थो। दो-चार साहब और भी था। उणां की मेम साहब भी थी। माल सारां कै पसंद आयौ। कीमत भी ठीक नजर आयी। काळी बनात देख रह्या था। आपकै पास की बनात इण बनात सूं मिलायी, अेक बणाणै वाळौ, अेक कारखानौ, अेक नंबर, अेक रंग और अेक कपड़ौ, मेमसाहब नैं भाव पूछ्यौ तौ बोल्या कै तैरा का भाव की ममोई सूं आयी छै, जरां साहब नैं बडो अचरज आयौ कै जो चीज ममोई मांहै तैरा का भाव की बिकै सूं अठै बारा का भाव की कियांन मिलसी? इण तरहै सारौ ही माल किफायत वार छै। जाण-बूझकर बाण्यौ कठै कीमत तौ कमी लगायी नहीं छे? आजू-बाजू का सारा ही लोग बोलबा लाग्या कै साहब! नहीं बाण्यौ घणौज ईमानदार आदमी छै। आप मोटा साहब छौ तौ भी बौ ही भाव और कोई गरीब जासी तौ भी बौ ही भाव, कमती-ज्यादा को हिसाब बींकै पास छै नहीं। कीं सूं पाई ई अेक को फरक नहीं। देसी लोगां मांहै इसौ वौपारी दूजौ कोई देखण मांहै छै नहीं। इण तरहै वातां हो रही छै।

इत्ता मांहै मुरलीधरजी की चिट्ठी लेकर उणको आदमी आयौ। साहब नैं चिट्ठी दीनी, साहब चिट्ठी बांचकर अचंबै रह्या। और समझ्या कै मनैं खुसी करबा की बाण्या की आ चालाकी दीखै छै, इण मांहै कोई सक नहीं, फेर आपका सईस नैं बुलाकर बोल्या कै तूं अै नौ रुपिया थारै पास रख, और मुरलीधर सेठ की दुकान ऊपर जाकर ऊंची सूं ऊंची काळी बनात अेक बार मांग, वार का नौ रुपिया मांगै तौ देकर लेय आ, ज्यादा दाम बोलै तौ पीछै आकर कमी रैवै सू रुपिया लेय जाकर फेर लेय आ, तूं म्हारौ सईस छै जिकौ पतौ दीजै मती, पूछै तौ महू-को छावणी को छूं करनै बोलजै।

सईस झट मुरलीधरजी की दुकान पर जाकर ऊंची सूं ऊंची काळी बनात मांगी। वार भरका दाम वै ही नौ रुपिया मांग्या। बनात फाड़ दी और रुपिया नौ लेय लीना। बनात को टुकड़ौ लेकर सईस साहब कै पास आयौ। साहब पहली की बनात सूं मिला लीनी, उणकी खातरी हो गयी, घर मांहै सूं सरकारी बार मंगा कर नापी। बराबर भरी, साहब झट आपकी डायरी मांहै मुरलीधरजी को नांव नोंध लीनौ, और लिख रख्यौ कै 'रायबहादुर' की खिताब देणै माफक औ बाण्यौ छै। फेर कित्ती ही वार इण कै अठै सूं माल मंगायौ पण पाई को फरक पड़्यौ नहीं। सरकारी कामकाज मांहै भी मुरलीधरजी नैं बुलाया, परंतु सारी बात सूं उणकी सचावट पायी गयी और सारां लोगां का मूं सूं

इण नर की बार-बार जठै-उठै सोभा ही सुणी, साहब की बाल-बाल खातरी हो गयी। और 'रायबहादुर' की खिताब देणै कै वास्तै सरकार मांहै मुरलीधरजी की सिफारिस कर दीनी।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

छै=है। भींजण=बिखरणौ। चरका=बाळू पर पग बळणा। फोड़ा=फफोला, घाव। जरां=तद, तब। सगासोई=सगा-संबंधी। फांसा=फंदा। श्रमी=थाकग्या। फेरी=घूम-घूमनै कोई चीज बेचणी। परसंग=स्थिति, अवसर। तोड़ी=तक। फरदी=सूची, फेहरिस्त। नामूद=प्रगट। किरकोल=खुदरा। संपादन=आछी हासल, प्राप्ति। ठिकाणै=ठौड़ माथै, स्थान पर। बाण्यौ=बाणियौ, वौपारी। वाद भरका=गज रौ नाप। खातरी=आव-आदर, मान-मनवार।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''भाभी! साबास तनैं। मनैं थाळी पर सूं जीमता नै उठाकर घर छुडायौ।''
   इण वाक्य में किसौ भाव छिप्यौ है?
   (अ) तारीफ रौ (ब) निरासा रौ
   (स) खीज रौ (द) अभिमान रौ

( )

2. ''जमीं पर पग धरकर उठावणौ मुस्कल थो।''
   मुरलीधरजी रौ जमीं पर पग धरकर उठावणौ क्यूं मुस्कल हौ?
   (अ) वंसीलालजी रै तिरस्कार रै कारण (ब) भाभी रै वैवार रै कारण
   (स) चित्त री व्याकुलता अर क्षुधा री आकुलता रै कारण (द) अणचींत्यौ मिळाप होवण सूं

( )

3. ''साहब चिट्ठी बांचकर अचंबै रह्या।''
   साहब चिट्ठी बांचनै अचंभै क्यूं रह्या?
   (अ) चिट्ठी में बनात रा भाव बारै रुपिया री जगां नौ रुपिया लगाया हा
   (ब) चिट्ठी में बाण्या री चालाकी दीखै ही
   (स) चिट्ठी में बीजक रा भाव बधायनै लिख्योड़ा हा
   (द) चिट्ठी में बिल रा रुपिया जल्दी भेजण रौ लिख्यौ हौ

( )

4. ''रायबहादुर की खिताब देणै माफक औ बाण्यौ छै।''
   साहब मुरलीधरजी नैं खिताब देवणै री क्यूं सोची?
   (अ) आछै व्यौहार खातर (ब) ईमानदारी खातर
   (स) प्रसिद्धि रै कारण (द) लाभ पुगावण रै कारण

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''हुस-हुस करतौ अजमेर कानी चल्यौ आ रह्यौ आदमी किण दसा में आय रह्यौ छै।'' इणरौ वरणन करौ।
2. ''साचा दोस्त की परीक्षा विपत पड़्यां ई हुया करै छै।'' आ बात कुण, किणनैं अर कद कही।
3. खंडवा मांहै मुरलीधरजी की साख आछी क्यूं बणगी?
4. मुरलीधरजी साहब कै नाम चिट्ठी क्यूं लिखवाई?
5. मुरलीधरजी बाबत लोगां मांहै कांई बातां हो रही छै?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. साहब नैं मुरलीधरजी रै सांच री खातरी कियां हुई?
2. पाठ रै आधार माथै गरमी री दोपहर रौ वरणन करौ।
3. 'कनक-सुंदर' उपन्यास रै मुजब खंडवा री रचना बाबत चार ओळ्यां लिखौ।
4. 'सांच नैं आंच नहीं' सांच री महिमा नैं बतावतां पांच ओळ्यां लिखौ।
5. वौपार रा अंग कांई-कांई छै?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'कनक-सुंदर' उपन्यास रै नायक रौ चरित्त उकेरौ।
2. 'ईमानदार व्यौहार सफळता रौ द्वार', सिद्ध करौ।
3. नीचै लिखी ओळ्यां रै भावां रौ खुलासौ करौ—
   (1) आज मां होती तौ म्हैं घर बारै नीसरतौ कांई?
   (2) अेक बनात का दाम ज्यादा लगाया तौ कांई हरकत छै?
   (3) आज तांई म्हारौ नेम पूरौ निभ्यौ, पण आज बींको भंग हुवौ, मरजी नारायण की!
4. नीचै लिख्योड़ा मुहावरां रौ अरथ लिखौ अर इणां सूं अेक-अेक वाक्य बणावौ—
   (1) मुंह ऊंचौ करनै चालणौ।
   (2) पग देणौ मुस्कल होवणौ।
   (3) पगां पड़तां फिरणौ।
   (4) फांसा मांहै नाखणौ।
   (5) सोभा करणौ।
   (6) अचंबै रहणौ।
   (7) खातरी होवणौ।

❑कहाणी

अलेखूं हिटलर

विजयदान देथा

कहाणीकार परिचै

साहित्य रै नोबल पुरस्कार सारू भारत री तरफ सूं नामित विजयदान देथा रौ जलम 1 सितंबर, 1926 नै जोधपुर जिलै रै बोरूंदा गांव में होयौ। वांरी माता रौ नांव सिरूकंवर अर पिता रौ सबळदान देथा हौ। विजयदान देथा 1949 में जसवंत कॉलेज, जोधपुर सूं बी.अे. पास करी। राजस्थानी इणां री काळजयी कृति 'बातां री फुलवाड़ी' (1 सूं 14 भाग) है। 'अलेखूं हिटलर' आपरौ चरचित कहाणी-संग्रै है। विजयदान देथा रै लेखन री सरुआत हिंदी सूं होयी। सै सूं पैली वांरी हिंदी तीन पोथ्यां— 'ऊषा' (कविता-संग्रै), 'बापू के तीन हत्यारे' (आलोचना) अर 'साहित्य और समाज' (निबंध-संग्रै) छपी। इणरै पछै वै पूरी तरै सूं राजस्थानी भासा नैं समरपित होयग्या। आपरै गांव बोरूंदा मांय उणां 'रूपायन' संस्थान री थापना करनै लोक-साहित्य नैं उजास में लावण रौ महताऊ काम करयौ। विजयदान देथा राजस्थानी लोककथावां रै अलावा राजस्थानी लोकगीतां रै संग्रै-संपादन रौ ई काम करयौ अर 'गीतां री फुलवाड़ी' रा छह भाग छपवाया। जनकवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' री कवितावां रौ संकलन आपरै संपादकत्व में 'कलम रौ उस्ताद' नांव सूं छप्यौ। विजयदान देथा 'राजस्थानी-हिंदी कहावत कोश' रौ वृहद् संकलन ई त्यार करयौ जकौ आठ भागां में छप्यौ है।

विजयदान देथा केई पत्र-पत्रिकावां रौ ई संपादन करयौ। वांरै संपादित करयोड़ी पत्रिकावां में 'वाणी' अर 'लोकसंस्क्रति' रा अंक संग्रैजोग है। श्री देथा री केई कहाणियां माथै हिंदी फिल्मां बणी। इणमें मणि कौल रै निरदेसित 'दुविधा' अर प्रकाश झा रै बणायोड़ी 'परणति' खास है। राजस्थानी साहित्य में उम्दा सेवा सारू वांनै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ सैं सूं पैलौ 'राजस्थानी भासा पुरस्कार', भारत सरकार सूं 'पद्मश्री' अर राजस्थान सरकार कांनी सूं 'राजस्थान-रत्न' रौ सम्मान मिळ्यौ। इणां रै टाळ मोकळा पुरस्कार अर सम्मान आपनैं मिळ्या। 87 बरसां री उमर मांय 10 नवंबर, 2013 नैं वांरौ सुरगवास होयग्यौ, पण वांरौ वृहद् साहित्य-सिरजण हमेस राजस्थानी साहित्य री अमोलक धरोड़ बण्यौ रैवैला।

पाठ परिचै

विजयदान देथा री कहाणी 'अलेखूं हिटलर' मरम नैं परसण वाळी कहाणी है। आरथिक सबळता रै पेटै पळ्योड़ी मानवी विद्रूपता रौ खुलासौ आ कहाणी करै। अेक साइकिल सवार रै ओळै-दोळै पूरी कहाणी आगै बधै। अखिल भारतीय साइकल दौड़ में सामल होवणौ अर जीतणौ उण साइकल सवार रौ सपनौ हौ, पण नूंवा मोलायोड़ा ट्रैक्टर सूं तीन-चार सौ री साइकिल आगै कीकर निकळ सकै। वौ साइकल दौड़ में जीतण री खिमता वास्तै ट्रैक्टर सूं आगै निकळनै खुद री परख करणी चावै। आगै निकळ्यां पछै घड़ी अेक राजी होवै, सपना देखै, पण इण दौड़ री होड में ट्रैक्टर सवार च्यारूं ई भाई जिनावरां सूं ई फोरा बणग्या अर आपरै सामंतपणै रै मद अर आतमतोस सारू साइकिल सवार नैं ट्रैक्टर सूं चिगद देवै। नूंवै ट्रैक्टर रौ मोद आ मांयलौ मद ऊगतै धान री पनैर नैं जड़ सूं उखेल न्हाखी।

कहाणीकार इण कहाणी में छोटा-छोटा संवादां में गैरी बात करै। कैवतां अर ओखाणां सूं लड़ालूम भासा घणी सजोरी लागै। गिरज अर ऊंदरां रै ओळावै अत्याचार, अन्याव अर दानवी सुभाव री बात करै। मिनखीचारा नैं जींवतौ राखण वास्तै कहाणीकार सरू में ई कैवै कै वांरा उणियारा मिनखां जैड़ा मिनख, बोली ई मिनखां जैड़ी बोलता अर इणीज बात नैं कहाणी रै अंत में पाछी कैयनै याद दिरावै कै मिनख विणास क्यूं करै, विणास क्यूं चावै? आपरी लांठाई रौ जोर निबळां माथै क्यूं जतावै? इण विणास-लीला नैं हिरोसिमा अर नागासाकी अर महाजुद्धां सूं तोलतौ कहाणीकार हिरदै नैं चीरण वाळौ चित्राम दियौ है। मानवी संवेदनावां अठै मर जावै। कागला अर गिरजड़ां सूं ई बेसी मिनखां रा उणियारा डरावणा लागै। वौ मिनख कागला अर गिरजड़ां सूं ई फोरौ निजर आवण लागै।

आज ई इण दुभांत नैं मेटण री दरकार है। ट्रैक्टर रेत में फिरै तौ खेत खड़ीजै अर धान ऊगै, पण जे वौ ई ट्रैक्टर अेक निरदोस नैं मारण रौ साधन बणै, तौ इणमें उण निरजीव मसीन रौ कांई दोस? उण माथै बैठा सवार उण मसीनरूपी साधन नैं किण भांत परोटै, वौ तौ वांरै ई विवेक माथै है। कहाणीकार विजयदान देथा इण कहाणी रै मारफत मिनख नैं खुद रौ अहम मारनै मानवी भावना जगावण रौ संदेस देवै। वरणन री विसेसता, ठेठ राजस्थानी सबदां री परोट, ध्वन्यात्मक सबदां सूं कहाणी में उठती हलचल पाठक रै मन में ई अेक अजाण अर अदीठ भौ (डर) जगावै। हया-दयाबायरा मिनखां रै वास्तै घिरणा रा भाव आवतां ई नाड़ियां रगत में उकळण लागै। उण अत्याचार नैं मिटावण खातर अेक सावचेत अर साचौ मिनख ऊभौ दीसै, आ इज कहाणी 'अलेखूं हिटलर' री सारथकता है।

अलेखूं हिटलर

वै पांचूं ईं मिनख हा। कोई ऊमर में छोटौ तौ कोई मोटौ। तीस अर पचास बरसां रै बिचाळै सगळां री ऊमर ही। सबसूं लांठोड़ां रै माथा में कठै-कठैई धोळा झांकण लागग्या हा। बाकी सगळां रा ई माथा काळा-भंवर। उणियारा मिनखां जैड़ा ई हा। आंख्यां री ठौड़ आंख्यां। नाक री ठौड़ नाक। दांतां री ठौड़ दांत। हाथ-पगां री ठौड़ हाथ-पग। तांबावरणौ रंग। सगळां रै माथै धोळा पोतिया। किणी रै नवा। किणी रै जूना। लट्ठा रा धोळा झब्बा अर धोळी ई धोतियां। कानां में निगोट सोना री सांकळियां अर मुरकियां। तीन जणां रै गळै काळै डोरां पोयोड़ा सोना रा फूल। सगळा मिनखां री बोली बोलता अर मिनखां री ई हाली हालता।

सगळां रै ई खेती रौ हलीलौ। खेत कमावता अर साखां निपजावता। गवूं, जीरौ, मिरचां, राई, बिराळी के मेथी इत्याद भांत-भांत री साखां रै मिस सूखी धरती री कूख सरसावता। देस री आजादी रै उपरांत लूंठा करसां रै फाचरै आई पण आई। आंधा होय धूड़ में बीज बूरता अर जाणै जित्ती कमाई बीणता!

आं पांचूं मिनखां रै ढंग-ढाळा सूं अैड़ौ लखावतौ कै किणी मां री कूख सूं जलम नीं व्हियां, आं सगळां रौ धरती री कूख सूं ई जलम व्हियौ। कैर, आक, खेजड़ी अर फोगड़ा फळै ज्यूं ई अै तर-तर बधिया अर फळिया। जाणै कुदरत री बनापाती ई आंरौ भाईपौ व्है।

पांचूं ई आगा-नैड़ा कड़ूंबै भाई हा। सीर में ट्रैक्टर मोलावण सारू गांव सूं जोधाणै जावै हा। झब्बां रै हेटै बंडियां रै ऊंडै खीसां में नोटां रौ सावळ जाब्तौ करयोड़ौ हौ। सगळां रै ई मूंडै रिपियां री झीणी आब झबूका भरती ही। धन री जड़ व्है तौ काळजा में ठेट ऊंडी पण उणरै अदीठां फळां री आब उणियारा माथै झळकै।

मोटर सूं उतरतां ई वै खीसां माथै हाथ फेरता पाधरा ट्रैक्टरां री धारयोड़ी दुकान कानी खाथा-खाथ व्हीर व्हिया। सड़क माथै पग टिकतां ई पाछा अजेज उठ जाता। वांरै बस री बात व्हैती तौ काळूड़ी सड़क माथै पग टेकता ई नीं।

नाळ रौ अेक पगोथियौ चढतां ई काच रै मांय रै धणी रौ माथौ सुभट निगै आयौ। पळकती टाट माथै निजर पड़तां ई सगळा अेकण सागै बोल्या, ''सुगनां री बात! खुदोखुद ओमजी ई मांय बैठा है।''

फड़कौ उघाड़तां ई हेम री जात ठाडी हवा रौ लैरकौ आयौ। पांचूं ई अेकण सागै ऊंडा-ऊंडा निस्कारा खांचिया। अेक जणौ बोल्यौ, ''सुरग री मोजां तौ अै लोग माणै। अपां तौ ढोर-डांगरां री जूण भुगतां।''

ओमजी मुळकता थका झीणा अर गळगच सुर में बोल्या, ''थांरी खेती-पाती सूं म्हारी दूकान रौ आटौ-साटौ करता व्हौ तौ ना कोनी।''

''देखौ पिछतावोला!''

''छौ पिछतावतौ।''

सबसूं लांठोड़ौ भाई बोल्यौ, ''चिपतां ई आ पिछतावा री बात कांई छेड़ी। अै तौ आप-आपरा करम अर आप-आपरा काम है। करै जिणनैं ई छाजै।

गुदगुदा रबड़ री कुरसियां माथै बैठतां ई अैड़ौ लखायौ जाणै वै बैठा ई नीं व्है। पतियावण सारू रबड़ में तीन-चार वळा आंगळियां खसोली तद वांनैं बैठण रौ पतियारौ व्हियौ। पछै कुरसियां रै हत्थां माथै खूणियां टेक नचीता व्हैगा।

रामा-सामा करयां उपरांत अेक जणौ कह्यौ, ''सेवट खपतां-खपतां म्हारौ ई नंबर आयग्यौ। आज रौ आज ट्रैक्टर खैंचावौ जकी बात करौ। सांतरौ वार अर सांतरी तिथ रौ मौरत कढाय घर सूं व्हीर व्हियां सदिये-सदिये पाछा गांव बड़ता व्हैणी चावां। म्हे जाणांला कै ट्रैक्टर सारू दो दिन ई सबर नीं व्है।''

छोटकियौ भाई बोल्यौ, ''दो दिन री भलां कही, म्हांनै तौ घड़ी री ई सबर नीं व्है। लुगायां तौ म्हारै वहीर व्हैतां ई मोड़ा माथै ट्रैक्टर बधावण सारू ऊभगी व्हैला। सौ रिपिया वत्ता लागै जिणरी आंट नीं, पण ट्रैक्टर तौ आपनैं अबारू खैंचावणौ पड़सी।''

वांरी खतावळ देख ओमजी मुळकिया। कैवण लागा, ''म्हैं थां गांववाळां री आदत पिछाणूं। ट्रैक्टर कालै ई रेड़ी-रेट कर दियौ! मरजी व्है जणां ट्रैक्टर खांच लीजौ।''

पांचां रै ई खुसी अर हरख रौ पार नीं रह्यौ। जाणै आखी दुनिया रौ राज हाथै लागग्यौ व्है। विचेटियौ भाई ओमजी री पळका पाड़ती टाट साम्हीं देखतौ बोल्यौ, ''बडभागियां रै हाथ भर रौ लिलाड़—पछै कांई ढील! जीवता रैवौ।''

ओमजी सगळै भायां नैं ओळखता हा। नंबर री तपास करण सारू सैंग दो-दो, तीन-तीन वळा अठै आयोड़ा हा। धंधा-परवांण पूजती ओळखाण ही। दीखतो सळियो सुभाव। मीठी बोली। झीणी मुळक। डील री बणगट सूं अैड़ौ लखावतौ जाणै ट्रैक्टर रै पुरजां री गळाई किणी कारखानां में ई सरूप रौ निरमाण व्हियौ। मसीनां रै उनमान ई वांरी काया घड़ीजी। टाट री ठौड़ टाट। हेटै तीन कानी कड़बटीला बाळां री झालरी। गळा री ठौड़ गळौ। मुळक परवाण मुळक।

साम्हीं बैठा पांचूं मिनखां रा उणियारा निरखता बोल्या, ''अबै तौ नेहचौ व्हियौ। पण आखै मारग बस रा गटका खावता आया हौ। कीं सुस्तावौ। पाहरौ खावौ। ठाडौ पाणी पीवौ।''

इण मान-मनवार रै उपरांत वै घंटी बजाई। उण समचै ई अेक आदमी मांय आयौ। लस्सी लावण रौ आदेस व्हियौ। हाजरिया रै बारै नीसरतां ई ओमजी कह्यौ, ''थांरै घर रा दूध-दही री तो होड ई नीं व्है, पण दूजी मनवार ई कांई करां। पाणी सस्तै दूध। मिचळौ दही। अठै तौ फगत ठाडी हवा, ठाडौ पाणी, रबड़ री गीदियां अर बिजळी री चकाचूंध है। मिळावट रा ठाठ-भेळ रा गाजा-बाजा है। रिपियां साटै ई नीं धान मिळै अर नीं मुसाला। खावण-पीवण री मनवार करतां ई लाज आवै।''

अेक जणौ हंसतौ थकौ बोल्यौ, ''जे साचा मन सूं मनवार करणी चावौ तौ घणी ई ऊंची-ऊंची चीजां मिळै। सुरग रै देवतावां नैं ईसकौ व्है जैड़ी। मनवार करौ तौ अै चीजां है, नींतर लस्सी सूं काळजौ ठाडौ करणौ तौ दीसै ई है।''

सांनी साव सुभट ही। ओमजी जोर सूं हंसता थकां कैवण लागा, ''अठै दुकान में अै ऊंची चीजां नीं चालै! सिंझ्या तांई ढबौ तौ म्हारै ठरका जोग घरै सरबरा कर सकूं।''

''थांरै कैतां पाणी म्हांरी सरबरा तौ व्हैगी। औ माईतपणौ ई घणौ। अेकर ट्रैक्टर निजरां तौ बतावौ!''

''लस्सी आवै। पीयनै चालां।''

''लस्सी किसी पाछी व्हाड़ा में बड़ै! ट्रैक्टर देख्यां पछै काळजौ घणौ झरैला। वत्तौ स्वाद आवैला।''

ओमजी खुद साथै व्हीर व्हिया! कारखाना में ट्रैक्टर तौ त्यार-टंच पड़्यौ ई हौ। लाल-बंब फरगुसन टैक्टर। जाणै ममोलिया री ढिगली अेकठ व्ही! माथै निजर पड़तां ई पांचूं भायां रौ अंतस रंगीजग्यौ।

ट्रैक्टर माथै सावळ हाथ फेर आछी तरै निरख-निरखाय सगळा ई पाछा कमरा में आया। लस्सी री गिलासां टेबल रा काच माथै ढक्योड़ी पड़ी ही।

कुरसी माथै बैठतां ई ओमजी कह्यौ, ''भाईड़ां, जमानौ बदळियौ पण बदळियौ। पैलां तौ गांव में अेक ठाकर हौ, पण अबै तौ सगळा ई थांरै जैड़ा मोटा करसा ई ठाकर बणग्या। आजादी रा ठाट सगळा थांरै ई पांती आयग्या! छाछ-राबड़ी रा ई जांदा पड़ता जकौ अबै ऊंची-ऊंची चीजां पाणी रै उनमान खळकाइजै। हळ अर हींयड़ी मोलावतां जोर पड़तौ जका हजारूं रिपियां रौ ट्रैक्टर बपरावतां सोचौ ई नीं। काटीड़ां, आजादी रौ लावौ लेणौ व्है सो ले लीजौ। मन में मत राखज्यौ।''

चौथोड़ौ भाई बिचाळै ई बोल्यौ, ''कैण रा धूड़ रा लावा है। धान खाय नीठ पेट भरां। हजारूं पीढियां लग विखौ भुगतियौ, आज थांनै काणी रौ काजळ ई को सुहायौ नीं! भलौ व्है गांधी-बाबा रौ जकौ म्हांनै ई मिनखाजूण रौ साव लिरायौ। नींतर गांवां में बिजळी री मोटरां, रेडिया अर ट्रैक्टरां रौ कांई वास्तौ।''

''पण म्हांनै तौ अबै कागदां रा नोट खाय पेट भरणा पड़ैला! गिणिया दिनां सूं म्हां लोगां नैं तौ धान मिळणौ ई दूभर व्है जावैला।''

थे म्हांनै ट्रैक्टर पूरियां जावौ, म्हे थांनै धान पूरियां जावांला! चावौ तौ माहोमाह लिखत करलां।''

बडोड़ौ भाई बोल्यौ, ''कांई किणी नैं कीं नीं पूरै। भैंस खड़ खावै तौ आपरा पेट सारू। सै आप-आपरै मतलब रा छातीकूटा है। कोई आपरी गरज ट्रैक्टर बेचै अर कोई आपरी गरज ट्रैक्टर मोलावै।''

आपरै कानां आं सबदां रौ भणकारौ पड़्यौ तौ बडोड़ा भाई नैं लखायौ कै बात कीं अंवळी उळझगी! पाछौ तांतौ सांधण री चेस्टा करतौ थकौ कैवण लागौ, ''हां ओमसा, बात तौ थे साची ई फरमाई। बाबा रै परताप म्हांनै आजादी रै उपरांत सुख रौ साव तौ खासौ-भलौ आयौ! घर-घर धान रा ढिगला, धीणा री धेछाळा...!''

बिचाळै ई टाटियौ माथौ धूणता ओमजी कह्यौ, ''घर-घर री बातां झूठी! इणिया-गिणिया थां मोटोड़ा करसां री अवस मन जाणी व्ही।''

छोटकियौ भाई थोड़ौ-घणौ भणियोड़ौ हौ। बोल्यौ, ''मन जाणी तौ कांई व्ही, दुख रौ टूंपौ कीं खोळौ व्हियौ, इण सूं सोरौ सांस आयौ। सुख रा साव तौ हाल चांद ज्यूं घणा अळगा है।''

बिचेटियौ भाई फालतू री झिकाळ रौ निवेड़ौ करता थकां बोल्यौ, ''चांद सारू झांपळियां मारण में कीं सार नीं। मतलब री बात करौ। खीसां मांयला नोट काढ ओमजी नैं संभळावौ। अपां री चीजां देख-भाळ करनै हानै करौ! बगत तौ बातां करां तौ ई बीतै।''

जाणै अणछक भूल्योड़ी बात याद आयगी। अजेज खीसां में हाथ बड़िया। टेबल माथै नोटां री ढिगली व्ही। पचास घोड़ां री ताकत रै विलायती फरगुसन ट्रैक्टर रै सागै ट्राली, तवियां, झूलौ अर हेरौ। साठ हजार रिपियां रौ निंवतौ हौ।

अठी ओमजी नोटां नैं गिण-गिणाय दराज तालकै करया अर उठी सगळा भाईड़ा अेकण सागै उठिया अर आपरी चीजां हानै करण सारू कारखाना री सोय करी। बडोड़ा भाई रै कह्यां छोटकियौ भाई सुरंगी माळावां, साख्या सारू रातौ रंग, गुळ अर छ: रम री बोतलां खरीदण वास्तै बजार कानी व्हीर व्हैगौ। बाकी चारूं भाई टिकिया जकौ हमालां साथै जुतनै झपाझप ट्राली भरली। वै आपरै काम सूं निवड़िया जित्तै छोटकियौ भाई आयग्यौ। अणूता कोड सूं गुळ बेंच्यौ! माळावां सूं ट्रैक्टर सिणगारयौ! साम्हो-सांम साख्यौ कोरयौ! छोटकिया तीनूं भाई खामची डलेवर हा।

व्हीर व्हैतां ई खासौ दिन ढळग्यौ। सूरज आथूण दिस रै ओलै लुकण री त्यारी में इज हौ! अजमेर-जैपर सड़क वाळी चुंगी-चौकी सूं सूं धकै निकळतां ई खुली सड़क ही। फरफरावती माळावां सूं सिणगारियोड़ौ ट्रैक्टर धरर-धरर चालतौ हौ। माथै पांचूं भायां नैं अैड़ौ लखायौ जाणै सड़क री ठौड़ आभौ ई वांरै ट्रैक्टर रै तळै पाथरग्यौ व्है। अर सांम्हली धरती वांनैं नारेळां सूं ई साव छोटी लखाई। आथमतौ सूरज जाणै वांरा ई वारणा लेवतौ व्है। आखी दुनिया रा हरख वांरै हिवड़ै भरण लागौ। सोना रै फूलां रौ परस करनै जाणै ढळता सूरज री किरण सारथक व्ही। रूंख-बांठकां में चापळियोड़ा पंछी ट्रैक्टर री धरधराहट सुणनै कानी-कानी उडता तद वांनै अैड़ौ लखावतौ जाणै वांरै अंतस रौ आणंद ई आं पखेरुवां रौ रूप धरनै कानी-कानी उडै।

कै इत्ता में सूं-सूं करतौ तीखौ सरणाटौ वांरै कानां खणकियौ। झिझकनै अठी-उठी जोयौ। पांखां थाम्योड़ौ अेक बाज नीचौ उतरयौ अर देखतां-देखतां सिणतरा रै पाखती चापळियोड़ा अेक धोळा सुसिया नैं आपरै पंजा में झांप पाछौ उडग्यौ। पांचूं ई अेकण सागै हंसनै अेक दूजा रै साम्हीं जोयौ। बडोड़ौ भाई बोल्यौ, ''जोग किणी भाव नीं टळै। इणी सिणतरा रै पसवाड़ै बाज रै पंजां इण सुसिया री मौत लिख्योड़ी ही।''

बाज अदीठ व्हियौ जित्तै वै उठी देखता रह्या। ट्रैक्टर री धरधराहट चालू ही। नाळा री ढळांत रै बीचोंबीच पूगतां ई चौथोड़ौ भाई बोल्यौ, ''नीं-नीं करतां ई खासौ अबेळौ व्हैगौ। पण तौ ई सांतरै मौरत रौ टाणौ सजग्यौ। गांव सूं वहीर व्हैतां सुगन ई टाळका व्हिया हा।''

चढांत ढळतां ई वांनै दो-अेक खेतवा धकै साइकिल चढ्यां अेक मोट्यार निगै आयौ! अर उठी मोट्यार नें कीं धरधराहट सुणीजी तौ वौ लारै मुड़नै जोयौ— कोई ट्रैक्टर आवै दीसै। वौ तुरंत पाछौ मुड़नै खाथा-खाथ पैडल दाबिया। ट्रैक्टर वाळां सूं उणरी वा खथावळ छानी नीं री। छेती बधतां ई वै आ बात लखग्या। ट्रैक्टर चलावतौ भाई बोल्यौ, ''कालौ कठा रौ ई! कित्ता ई आंचै पैडल मारै तौ कांई व्है। ट्रैक्टर सूं धकै जायनै कित्तोक जावैला!''

वौ थोड़ी-सी रेस वळै बधायी। ट्रैक्टर री धरधराहट ई वत्ती व्ही। साइकिल वाळा रै कानां ई इण बात रौ बेरौ पड़ग्यौ। वौ वळै आयै-आयै पैडल दाब्या। कीं छेती वळै बधगी।

तर-तर बधती छेती ट्रैक्टर चलावता भाई रै हीये झरी कोनी! वौ वळै कीं रेस खांची। छोटकियौ भाई बोल्यौ, ''मां रौ मांटी, सेवट तौ थाकैला। थोड़ी ताळ राजी व्है तौ छौ व्हैतौ।''

विचेटियौ भाई बोल्यौ, ''उघाड़माथ्या छोरां री अैड़ी इज अंवळी बुध व्है!''

धरधरातौ ट्रैक्टर सड़क नैं सवेटतां दौड़तौ हौ। सुरंगी माळावां हवा में वत्ती फरफरावण लागी। बडोड़ौ भाई बोल्यौ, ''मतै ई आहळैला। क्यूं बिरथा रेस खांचै! ट्रैक्टर आगै बापड़ी साइकिल री कांई जिनात।''

चीं-चीं करती अेक तीखी चींचाट अणछक वांरै कानां सुणीजी। बिल में बड़ता-बड़ता ऊंदरा नैं अेक चील हांकरतां झांप लियौ। वा चीं-चीं उण मरता ऊंदरा री ही। थोड़ी ताळ में चीं-चीं री आवाज इण दुनिया सूं बिलायगी।

सूरज री आधी कोर डूबगी ही। अबै वौ ई रात-भर तांई बिलाय जावैला। डूबता सूरज रै ओळूं-दोळूं गुलाल ई गुलाल पाथरग्यौ। जाणै ट्रैक्टर रै कसूंबल रंग रौ ई उण ठौड़ प्रतम पड़ै।

डलेवर रै टाळ च्यारूं भाई डूबता सूरज सूं मीट हटाय धकै जोयौ— अरै! साइकिल अर ट्रैक्टर री छेती तौ तर-तर बधती ई जावै! सगळां रै मन में अेकण सागै अेक बात ई रड़कै— सौ-दो सौ रिपल्ली री साइकिल अर साठ हजार रिपियां रौ ट्रैक्टर। आ कोई होड में होड! ऊंदरौ हाथी सूं आथड़ै!

दूजोड़ौ भाई बोल्यौ, ''फींपरौ फाटनै मरग्यौ तौ घरवाळां सूं छेती पड़ जावैला।''

चौथोड़ौ भाई बोल्यौ, ''राम जाणै घरवाळां सूं छेती कद पड़ै, पण अपां रै ट्रैक्टर सूं तौ छेती खासी बधती ई जावै है।''

छोटकियौ भाई थोड़ी रेस वळै खांची। नवौ अटंग ट्रैक्टर हौ। पूरी रेस खंचणी सावळ कोनी।

साइकिल वाळौ लारै मुड़नै जोयौ। साचाणी वौ खासौ आगै निकळग्यौ हौ। वौ जोस अर हूंस में वळै जोर सूं पैडल दाब्या। पग तौ जाणै भरणाटै चढग्या व्है। डूंगर सूं खळकता झरणा रै वेग साइकिल सड़क माथै रळकती ही। जाणै कोई बतूळियौ साइकिल रौ रूप धारण कर लियौ व्है अर कै वौ मोट्यार वतूळिया माथै सवार व्हैगौ व्है।

ट्रैक्टर माथै बैठा सगळा भाई ध्यान सूं देख्यौ। साचाणी छेती खासी बधगी ही अर तर-तर बधती ई जावै। माळावां सूं सिणगारयोड़ौ विलायती ट्रैक्टर! पचास घोड़ां री ताकत रौ! साठ हजार रिपियां री लागत रौ! अर आ दोसौ रिपल्ली री साइकिल! अर औ कॉलेजियौ छोरौ! उघाड़ै माथै! नेकर पैरयोड़ौ।

हवा रौ जोर सूं फटकारौ लाग्यौ तौ अेक माळा रौ डोरौ तूटग्यौ। वा चारूं कानी अठी-उठी फरफरावण लागी। कदैई दोवड़ी व्है जाती। कदैई पाधरी व्है जाती। अेक माळा रौ डोरौ वळै तूटग्यौ।

ट्रैक्टर चलावता छोटकिया भाई रै काळजै फरफरावती माळावां रै मिस जाणै झाटी रा सडिंदा लागा। वौ दांत पीसतौ-पीसतौ ई पूरी रेस खांची! तोप सूं छूट्या गोळा रै वेग ट्रैक्टर दौड़ण लागौ। हवा में चारूंमेर धरधराहट ई धरधराहट गूंजण लागी! ट्रैक्टर तळै पाथरयोड़ौ आभौ पाछौ पैलां सूं ई ऊंचौ— घणौ ऊंचौ चढग्यौ हौ।

कीं छेती कम पड़ी! वळै कम पड़ी! हां, अबै तौ खासी कम पड़गी।

टोपसी रै उनमान छोटी लागती दुनिया फगत दो ठौड़ सिवटनै बिखरगी ही। ट्रैक्टर अर साइकिल-सवार टाळ वांनैं दुनिया री किणी तीजी बात रौ ध्यान नीं हौ। साठ हजार रिपियां रौ ट्रैक्टर अर दो सौ रिपल्ली रौ खीलौ!

जोग री बात कै लगती दो मिलटरी री गाडियां साम्हीं आई तौ ट्रैक्टर री रेस धीमी करणी पड़ी। बाईसिकल वाळौ मोट्यार औ ताखौ राख खासौ आगै निकळग्यौ।

बिचेटियौ भाई बोल्यौ, ''अै उघाड़माथ्या छोरा कित्ता ओटाळ व्है! गाडियां रौ उकरास लगाय सपाक आगै बधग्यौ।''

बडोड़ौ भाई बोल्यौ, ''बापड़ौ थोड़ी ताळ मोदीजै तौ छौ मोदीजतौ! कित्तोक आगै जावैला। सेवट तौ सांस तूटैला ई। बावळौ, आपरी जवानी गाळै! नसां ढीली पड़गी तौ लुगाई रै काम रौ ई नीं रैवैला। आ जवानी कोई साइकिल माथै उतारण सारू नीं व्है।''

खुली सड़क मिळतां ई छोटकियौ भाई पाछी पूरी रेस खांचली। जाणै सोर नैं बत्ती बतायी! हवा नैं अपड़ण सारू झांपळियां भरतौ ट्रैक्टर जाणै आंधी रौ इज रूप बणग्यौ! अर तर-तर छेती भांगती ई गी!

ट्रैक्टर री धरधराहट सलबै सुणी तौ वौ अेकर वळै लारै मुड़नै जोयौ। रीस में तणकारौ देय पाछौ मुड़्यौ। फिड़कती रै उनमान उणरा दोनूं पग चकरी चढिया सो चढता ई गियौ। अबै उणनैं थोड़ौ-थोड़ौ परसेवौ होवण लागौ हौ। वौ राजस्थान रौ सबसूं तेज साइकिल चलावणियौ हौ। हां, वौ ई अेक मिनख हौ। बूकियां री ठौड़ बूकिया। पगां री ठौड़ पग। अर सांस री ठौड़ सांस! सपनां री ठौड़ सपना।

वौ नित साठ-सित्तर मील साइकिल बगड़ावण करतौ। लारला दो महीनां सूं अभ्यास करै। धकलै महीनै अखिल भारतीय साइकिल दौड़ में अगवाणी रैयग्यौ तौ कदास पैरिस जावण री बारी आ सकै। आज इण ट्रैक्टर री होड में उणरी परख व्है जाणी है। दांत पीसनै आपरै करार सूं ई सवाया पैडल दाब्या।

साइकिल चलावण री लकब अर आंट देख उणरै साथै भणती अेक साथण पैलपोत चिपतां ई सीधौ ब्यांव रौ प्रस्ताव धरयौ! वौ पाछौ सुभट हां-ना रौ कीं पड़ूत्तर नीं दे सक्यौ! थोड़ा दिन साथै रह्यां, माहोंमाह वंतळ करयां, अेक-दूजै रै अंतस नैं सावळ ओळखियां मतै ई सगळी बातां सुभट व्हैगी। अखिल भारतीय साइकिल दौड़ सूं निवड़्यां उपरांत ब्यांव रौ कौल कर लियौ! वौ विखा में पळ्योड़ौ हौ। वा आसूदा घर में रम्योड़ी ही। पण दोनूं ई अेक-दूजा माथै जीव देता। अेक दांत रोटी टूटती! ब्यांव री लाखीणी रात वांरी सेजां चांद उतरैला!

अणछक वाहेली रौ उणियारौ उणरी आंख्यां साम्हीं भळकियौ! जाणै वा हवा रै मिस आज री आ होड निरखै। उणरौ करार दस गुणा बधग्यौ! पगां रै जाणै पांखां लागगी। भलां वाहेली री अदीठ निजर सूं वत्ती इण निरजीव ट्रैक्टर री कांई जिनात! छेती बधण लागी सो तर-तर बधती ई गी! देखतां-देखतां पैलां सूं ई डोढी छेती पड़गी। ट्रैक्टर री रेस पूरम-पूर खांच्योड़ी ही। इण सूं आगै किणी रौ कीं जोर नीं हौ! पांचूं ई भयां रौ मन मठोठी खावण लागौ। चारूंमेर री सूंसाड़ा भरती हवा धरधराहट रा पळेटा में अळूझगी ही! आखी दुनिया रौ राज हाथां में आयोड़ौ देखतां-देखतां खुस जावैला!

तोप रै गोळा रै वेग ट्रैक्टर मलपतौ हौ। साइकिल वाळा उघाड़माथ्या छोरा रै पगां में जाणै कोई वतूळियौ सरण लेली व्है! वाहेली रौ उणियारौ उणरी आंख्यां साम्हीं झबूका भरतौ हौ। छेती तर-तर बधण लागी। नीं तौ उणरौ फींफरौ फाट्यौ अर नीं उणरौ सांस तूटौ। पण ट्रैक्टर रै टंग्योड़ी आधी माळावां तूट-तूटनै हेटै खिरगी। ट्रैक्टर माथै बैठा वै काटी दूजौ जोर ई कांई करता!

पण अदीठ रै जोर अर जोग रौ किणी नैं की बेरौ नीं हौ! वतूळियौ बण्योड़ा पग अणछक खाली घूमण लागा। साइकिल री चैन उतरगी ही। तौ ई वौ कीं हाबगाब नीं व्हियौ। ट्रैक्टर रै वेग रौ कूंतौ उणरा पग मतै ई कर लियौ हौ। वाहेली रौ उणियारौ च्यारूं कानी दीप-दीप करण लागौ। इण ताकत सूं ऊंची तौ दुनिया में दूजी कीं ताकत नीं। वौ तुरत साइकिल थाम फूंदी रै उनमान हेटै उतरयौ। स्टैंड माथै ऊभी करनै वौ निरांत सूं चैन चाढण लागौ।

तर-तर छेती कम पड़ती गी! ट्रैक्टर री धरधराहट अर पांचूं भायां री खुसी हवा में मावती नीं ही। भलां जोग रा जोर नैं कुण पूगै! साठ हजार रिपियां री लाज रै ढाका-ढूमौ व्हैगौ। इण भांत रै झूठा संतोख सूं कोई आपरौ मन पोखै तौ उणरौ कुण कांई करै!

ट्रैक्टर री धरधराहट साव सलबै सुणीजण लागी। चैन चाढण री हळफळाई खथावळ में साम्हीं वत्तौ मोड़ौ व्हैतौ गियौ! अर देखतां-देखतां ट्रैक्टर तौ साव पाखती आयग्यौ! पण उणनैं तौ आपरै करार अर वाहेली रै अदीठ उणियारा रौ अंजस हौ।

धरधरातौ ट्रैक्टर अड़ोअड़ आयनै धकै निकळग्यौ। पांचूं भाई मिनखां री बोली में कीं जोर सूं अेकण सागै बड़बड़ाया। उण वेळा ई कागलां री जान क्रांव-क्रांव करती माथा कर निकळगी। ट्रैक्टर री धरधराहट अर कागलां री क्रांव-क्रांव रै बिचाळै मिनखां री बोली सावळ उघड़ी कोनी।

वौ चैन चाढ साइकिल माथै चढ्यौ जणां ट्रैक्टर दोयेक खेतवा धकै निकळग्यौ हौ। च्यारूं भाई लारै मुड़नै देखण लागा। सोचण लागा कै गैलौ चैन चाढण रौ मिस करै। कदास अबै होड करण री हूंस ठाडी पड़गी दीसै। पण वौ तौ साइकिल माथै चढतां ई पाछौ वतूळियौ बणग्यौ! अर छेती तर-तर कम होवण लागी सो व्हैती ई गी।

मगसा-मगसा अंधियारा में कुदरत बुरीजण लागी ही। च्यारूं भाई आंख्यां फाड़-फाड़ देखण लागा। आ साइकिल तौ वळै धकै निकळ जावैला!

रेस पूरमपूर खांच्योड़ी ही। ट्रैक्टर रै वेग सूं आगै वांरौ कीं जोर नीं हौ। सगळा ई दांत पीसण लागा।

ट्रैक्टर रा कसूंबल रंग माथै मगसी झांई घिरण लागी। छोटकियौ भाई पूछ्यौ, ''उघाड़माथ्यौ कठैक आवै?''

च्यारूं भाई दांत पीसता थका बोल्या, ''औ तौ वळै हांकरतां ट्रैक्टर सूं धकै निकळ जावैला।''

''अबै तौ इणरौ बाप ई नीं निकळ सकै।'' आ बात कैतां ई छोटकिया भाई रै कानां बाज वाळौ सरणाटौ अर ऊंदरा वाळी चीं-चीं बारी-बारी सूं गूंजण लागी। थोड़ी ताळ उपरांत अेक कान में चीं-चीं अर दूजा कान में सरणाटौ ढबियौ ई नीं! बिरमांड री हवा जाणै इण गूंज सूं चीरीज जावैला! ट्रैक्टर रौ धरधराटौ ई इण गूंज में डूबग्यौ हौ!

अर उठी साइकिल वाळा उघाड़माथ्या री आंख्यां साम्हीं अेक दूजौ ई बिरमांड पळकतौ हौ! ठौड़-ठौड़ वाहेली रा उणियारा झमका भरण लागा— छिड़्या-बिछड़्या तारां में, रूंख-बांठकां में, धोरा में अर साम्हीं जावता ट्रैक्टर में, ट्रॉली में! आज उणरी परख व्है जाणी है! जे ट्रैक्टर सूं धकै निकळग्यौ तौ वेगौ ई ब्यांव कर लेला। वा मान जावै तौ कालै! नींतर पिरसूं। परलै रोज। जद-कद ई उणरौ मन व्है!

अबै तौ धकै निकळण में वारौ ई कांई! आखी दुनिया उणरा हथळेवा री मूठी में समाय जावैला। आंख्यां साम्हीं सोवन सपनां रौ बेजौ बुणीजण लागौ।

अर उठी जाणै बाज रै सरणाटा अर चीं-चीं री गूंज सूं हवा रौ रेसौ-रेसौ टूंपीजण लागौ हौ!

च्यारूं भाई किड़किड़ियां चाबता अेकण सागै बोल्या, ''अधबेरड़ौ उघाड़माथ्यौ छोरौ तौ आज अपां रै पोतिया री जबरी सान बिगाड़ी!'' पछै वै छोटकिया भाई नैं अेक जुगत बताई, ''पाखती आवतां ई ट्रैक्टर आडौ करदै! औ ओटाळ ई कांई जाणैला कै...!''

बाज रा सरणाटा अर ऊंदरा री चीं-चीं नैं मिनखां री वाणी रौ अरथ मिळग्यौ!

अर उठी उणरी वाहेली रा उणियारा रौ उजास ई खासौ बधग्यौ हौ। अेक-अेक उणियारौ साव सुभट दीखण लागौ।

अबै तौ ट्रॉली रै साव अड़ोअड़ पूगग्यौ। बाज रै सरणाटा अर ऊंदरा री चीं-चीं छोटकिया भाई रै माथा में चापळनै मून धारली ही।

वतूळिया रै वेग सूं दौड़ती साइकिल अणछक ट्रैक्टर सूं टकराई। अेकर आंख्यां साम्हीं बीजळी पळकी। पछै दीप-दीप करतौ अेक-अेक उणियारौ बडौ व्हैतौ गियौ! ट्रैक्टर रै लारलौ काळौ टायर माथा रौ गिरड़कौ काढ दियौ! सगळा उणियारा अेकदम बडा व्हैगा!

हवा में वळै मिनखां री बोली गुणमुणाई— मां रौ मांटी, ट्रैक्टर सूं धकै जावण री हूंस राखै।

छोटकियौ भाई कीं भण्योड़ौ हौ। तुरंत अेक जुगत विचारी। थोड़ी अळगी भांय जाय ट्रैक्टर ढाब्यौ। थैलां मांय सूं बोतल काढतौ बोल्यौ, ''बापड़ा नैं थोड़ी रम तौ पावां।''

पछै मिनख रै पगां-पगां वौ धकै बधियौ! साइकिल वाळा रै पाखती जाय बोतल रौ ढक खोल्यौ! उणरै मूंडा में आधी बोतल दारू ऊंधायौ! पछै माथा रै पाखती बोतल फोड़ वौ दौड़तौ-दौड़तौ ट्रैक्टर माथै चढग्यौ! धरधरातौ ट्रैक्टर धकै बधग्यौ! मोड़ा माथै ऊभी लुगायां बाट निहारती व्हैला! घरै गियां वांनैं कोड सूं वधावैला!

हवा में मिनखां री हंसी रौ ठहाकौ गूंज्यौ!

अर उठी काळी सड़क रै माथै अेक चित्राम किणी उम्दा पारखी नैं उडीकतौ हौ। लाल रगत रै बिचाळै मिनख रौ धोळौ भेजौ! फूटोड़ी बोतल रा टुकड़ा। किणी मोट्यार री ल्हास! धोळौ नेकर! ठौड़-ठौड़ रगत रा छाबका! सोसनी बंडी! सपनां रौ किचड़कौ! मोह-प्रीत रा रेळा! चित्राम कीं बेजा नीं हौ!

पण दोनूं महाजुद्धां रा चित्राम, हिरोसिमा, नागासाकी रा चित्राम अर बंगलादेस रा बेजोड़ चित्राम—इण नाकुछ चित्राम सूं घणा-घणा ऊंचा हा। घणा-घणा रूपाळा हा। औ चित्राम वांरी होड तौ नीं कर सकै, पण गिंवारू हाथां कोरयोड़ौ औ छोटौ चित्राम ई कीं बेजा नीं हौ!

हां, वै पांचूं ई मिनख हा! मिनखां री बोली बोलता अर मिनखां री ई हाली हालता!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

लांठोड़ा=बडौ, बळवान। पोतिया=साफा, पाघड़्यां। हलीलौ=धंधौ, कामकाज। फाचरै=ताबै, काबू में। फळिया=फळ्या-फूल्या, बडा होया। बनापाती=वनस्पति, वन रा फूल-फळ अर पानड़ा। सुभट=साफ, स्पष्ट। पळकती=चमकती। पतियारौ=भरोसौ, विस्वास। बडभागियां=भाग्यसाली। ममोलिया=वीर बहूटी, मेह री डोकरी, बिरखा में पैदा होवणियौ मखमली रातौ जीव। झिकाळ=बिरथा बहस। रातौ=लाल। खामची=पारंगत, हुंसियार। चापळियोड़ौ=दुबक्योड़ौ, दोलड़ौ व्हियोड़ौ। पाथरग्यौ=पसरग्यौ, फैलग्यौ। मीट=दीठ, निजर। सडिंदा=ताजणै री फटकार, कौड़ा रा सड़ीड़। ताखौ=मौकौ। सलबै=साव नैड़ी, अेकदम कनै। आसूदा=राता-माता। फींफरौ=फेफड़ौ, आंतड़्यां। हाबगाब=हाकबाक, आकळ-बाकळ। बांठकां=झाड़-झंखाड़। अधबेरड़ौ=बिगड़ैल, अधकालौ। गिरड़कौ=चिगद देवणौ। छाबका=धब्बा, दाग।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. हिरोसिमा अर नागासाकी किण देस रा महानगर है ?

(अ) जापान (ब) इटली

(स) भारत (द) जर्मनी

( )

2. पांचूं भाई जोधाणै किण सारू गया हा ?

(अ) सगपण सारू (ब) ट्रैक्टर लेवण सारू

(स) ब्यांव में (द) घूमण सारू

( )

3. पांचूं भायां रै रीस रौ कांई कारण हौ ?

(अ) ट्रैक्टर नीं मिळणौ (ब) पईसा गमणा

(स) साइकिल वाळै रौ आगै निकळणौ (द) किणी सूं राड़ रै कारण

( )

4. 'अलेखूं हिटलर' कहाणी रा कहाणीकार कुण है ?

(अ) अन्नाराम सुदामा (ब) डॉ. कल्याणसिंह

(स) मालचन्द तिवाड़ी (द) विजयदान देथा।

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. पांचूं भायां रौ काम धंधौ चालतौ ?
2. ट्रैक्टर रौ मोल कांई हौ ?
3. साइकिल वाळै नैं आखिर ट्रैक्टर हेटै कुण दियौ ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. पांचूं भायां रौ रूप-रंग कहाणी में किण भांत बखाणीज्यौ है ? लिखौ।
2. ''भाइड़ां, जमानौ बदळियौ पण बदळियौ...।'' ओमजी री इण बात माथै चौथोड़ै भाई कांई विचार राख्या ?
3. साइकिल चलावती बगत साइकिल वाळा रै मन में कांई कल्पना अर सपना चालै हा ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'अेलखूं हिटलर' मांय कहाणीकार किण हिटलरां री बात करै ? आज रै समाज में आंरी ओळखाण करावौ।
2. कहाणी रै तत्त्वां रै आधार माथै अलेखूं हिटलर कहाणी री विरोळ करौ।
3. विजयदान देथा री भासा अर सैली री इण कहाणी रै आधार माथै टीप लिखौ।

नीचै दिरीज्योड़ा गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. अणछक वाहेली रौ उणियारौ उणरी आंख्यां साम्हीं भळकियौ! जाणै वा हवा रै मिस आज री आ होड निरखै। उणरौ करार दस गुणा बधग्यौ! पगां रै जाणै पांखां लागगी। भलां वाहेली री अदीठ निजर सूं वत्ती इण निरजीव ट्रैक्टर री कांई जिनात! छेती बधण लागी सो तर-तर बधती ई गी!

2. वतूळिया रै वेग सूं दौड़ती साइकिल अणछक ट्रैक्टर सूं टकराई। अेकर आंख्यां साम्हीं बीजळी पळकी। पछै दीप-दीप करतौ अेक-अेक उणियारौ बडौ व्हैतौ गियौ! ट्रैक्टर रै लारलौ काळौ टायर माथा रौ गिरड़कौ काढ दियौ! सगळा उणियारा अेकदम बडा व्हैगा!

3. अर उठी काळी सड़क रै माथै अेक चित्राम किणी उम्दा पारखी नैं उडीकतौ हौ। लाल रगत रै बिचाळै मिनख रौ धोळौ भेजौ! फूटोड़ी बोतल रा टुकड़ा। किणी मोट्यार री ल्हास! धोळौ नेकर! ठौड़-ठौड़ रगत रा छाबका! सोसनी बंडी! सपनां रौ किचड़कौ! मोह-प्रीत रा रेळा! चित्राम कीं बेजा नीं हौ!

❑कहाणी

बंटवारौ

हनुमान दीक्षित

कहाणीकार परिचै

कहाणीकार हनुमान दीक्षित रौ जलम 4 मई, 1943 में होयौ। अेम.अे., बी.अेड. तांई भण्योड़ा श्री दीक्षित अध्यापन-सेवा करता थकां प्रधानाध्यापक रै पद सूं सेवानिवृत्त होया। आप हिंदी अर राजस्थानी दोनूं में लगोलग सिरजण करयौ। राजस्थानी में वांरा 'गांव-गळी री कहाणियां' अर 'माटी रौ मकान' कहाणी-संग्रै छप्योड़ा। 'डाकी दायजौ' नांव सूं आकासवाणी सारू रेडियो-रूपक ई लिख्यौ। आपरी कहाणियां जमीन सूं जुड़्योड़ी ग्राम्य परिवेस री रंगत लियोड़ी है, जिणमें राजस्थानी री माटी री मधरी-मधरी महक आवै। वै केई साहित्यिक संस्थावां सूं जुड़्योहा हा। राजस्थानी री सेवा सारू वांरौ काम सरावण जोग रैयौ। वै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रा उपाध्यक्ष रैया। इणरै अलावा वै राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर रा ई सदस्य रैया। कहाणियां रै अलावा वां राजस्थानी में कवितावां, व्यंग्य, बाल-साहित्य अर निबंध ई लिख्या। आपरौ सुरगवास 17 दिसंबर, 2015 नै होयौ।

पाठ परिचै

बडेरां री भेळप अर साझा रीत नैं दरकिनार करती आज री पीढी री मनोदसा अर फंटवाड़ै नैं चौड़ै करती सास्वत कहाणी 'बंटवारौ' आम आदमी रै जीवण री कहाणी है। आज भेळप अर भाईचारौ मिटता जाय रैया है। परिवार री संपत संपत्ति रै चक्कर में चकरीज री है। गांव री आतमा में जकौ परमातमा रौ वासौ हौ, बठै बगत रै बदळाव री चौसर सगळौ सत्यानास कर न्हाख्यौ। लोगां री जमीन अर मन दोनूं बंट रैया है। जमीन रै बंटण सूं घरां री दरारां आंगणै सूं लेयनै मिनख रै मन-मगज तांई बधगी है। साझा खेती आरथिक, सामाजिक अर वैग्यानिक आद सगळी दीठ सूं महताऊ है, पण आप-आपरा स्वारथ मांयलै धीरज नैं कपूर बणाय दियौ। सगळी भेळप, भाईचारौ, रिस्ता री मीठास, मिनखाचारौ सगळौ कीं होळै-होळै मिनख सूं अळगौ होवै है। इण सारू चेतणौ जरूरी है। दीक्षित जी आपरी इण कहाणी मांय बंटवारै री पीड़ नैं सांगोपांग ढंग सूं उकेरी है अर आखर कहाणी रै अंत में भेळप री हूंस अर आस सागै कथानक सिमटै। कहाणी में बगत सागै मिनख अर गांव दोनूं में बदळाव नैं बतायौ है। कुल मिळायनै बंटवारौ कहाणी सामाजिक समस्या प्रधान ग्रामीण परिवेस री प्रासंगिक अर युगीन कहाणी री पांत में सिरै आवै।

बंटवारौ

रामसरौ मोटौ गांव। चौधरी रतनाराम इलाकै रौ मोटौ मिनख। मोटी गुवाड़ी रौ धणी। रियासत रै बगत सूं मिल्योड़ी लंबरदारी। आजादी आयी। लंबरदारी गई परी, पण लोग अर सरकारी कारूंदा वांनैं लंबरदार सा'ब कैवै। चौधरी कनै मोकळी जमीन। अै ई कोई तीन सौ बीघा अर तीन भाई। बिचलै रौ नांव हेतराम जकौ खेती-पाती री देखभाळ करै। छोटै भाई रौ नांव साहबराम, जकौ दसवीं जमात तांई पढ्योड़ौ। राजनीति भी करै, सागै ई मंडी जायनै खेती री निपज बेचणी अर बठै सूं घर री जरूरत मुजब चीज-बस्त खरीदनै ल्यावण रौ काम ई करै।

खेती रौ घणकरौ काम–पाड़, पाती, बीजणौ, अनाज काढणौ आद ट्रैक्टर सूं करै। पण चौधरी नैं पुराणी रीत सारू मदुवौ ऊंठ राखण रौ घणौ कोड। सरदी रै टैम मांय बाखळ में खड़्यौ ऊंठ बलबलावै अर माकड़ी पीटै जद देखनै चौधरी रौ जी–सोरौ होय जावै। चौधरी सवारी करण खातर घोड़ी ई राखै। गांव–गांवतरौ करनै वौ अपूठौ आवतौ तद भीमलै रै ताल में पड़ती घोड़ी री टापां सूं ठा पड़ जावतौ कै चौधरी आवै है। वौ कारू–कारिंदा रै भरोसै ऊंठ–घोड़ी नीं छोडतौ। खुद नीरतौ अर आथण पौर रौ पाणी पावण सारू जोहड़ै ले जावतौ। गांव री बहू–बेटियां चौधरी रौ घणौ काण–कायदौ राखती। जद पाणी लावती बीनणियां साम्हीं मिळ जावती तौ वै आदर देवण खातर पीठ मोड़नै ऊभी ढब जावती।

चौधरी रै घरै दूध–छाछ री कमी नीं ही। तीन भैंस अर पांच–छह गायां नोहरै में हरदम बंधी रैवती। दिन ऊगणै सूं पैली ई बिलोवणै री आवाज उगाड़ में दूर–दूर तांई सुणीजती। भाख फाटतां रै सागै गांव री लुगायां अर टाबर लोटा, हांडी अर जग लेयनै छाछ खातर चौधरी री ड्योढी माथै ऊभा होय जावता।

आथण पौर चौधरी री चूंतरी माथै गांव री चौपाळ जुड्या करती। चौधरी होकौ भरनै मुड्ढै माथै बैठ जावतौ। सै भांत रा लोग आ बैठता। होकै री कुरड़–कुरड़ रै सागै गांव–देस री, सुख–दुख री बातां होया करती। चौधरी गांव रा गरीब–गुरबां रौ घणौ खयाल राख्या करतौ। जद कदै इलाकौ अकाळ री चपेट में आ जावतौ तद आपरी बखारी अर चारै–तूड़ी रै कुपां रौ मूंडौ खोल देवतौ। सगळां रै सुख–दुख रौ सीरी हौ। जरूरतमंद मिनख उम्मीद लेयनै आवतौ अर मूंडै पर हांसी लियां पाछौ जावतौ। लोग चौधरी रै भरोसै आपरी बेटी रौ ब्यांव मांड देता। बण जींवतै–जी ना–नुकर नीं करी। आधी रात पछै तांई चौपाळ लागी रैवती। जद होकौ ठंडौ पड़ जावतौ तद कारू–कारिंदा खीरा अर तंबाकू ओज्यूं टेक लावता। गरमी री टैम मांय धूणी कोनी धुकती, पण सरदी में सगळां बिचाळै धूणी धुक्या करती।

गांव में काम सारू सरकारी हाकम, पटवारी, सिपाही आद आवता तद लंबरदार री बैठक में रुकता। जाण–पिछाण वाळा ई नीं, राह–बगता बटाऊ भी रातवासौ लेवता। सैंग जणा नैं डोळ–माजणै सारू आवभगत अर रोटी–खाट मिळती।

सूरज भगवान रौ रथ जियां घूमै बियां टैम रौ पहियौ भी सरकतौ रैयौ। लंबरदार आपरी उमर रा अस्सी फागण देख लिया। आंख्यां अर गोडा जबाब देयग्या। अब घर में अर बारै साहबराम री चालण लागगी। बीं रौ राजनीति करण रौ चस्कौ बधतौ गयौ। पंचायत रा चुणाव आयग्या। चौधरी रै बरजतां–बरजतां वौ सरपंच रै चुणाव में खड़्यौ होयग्यौ। उणरै साम्हीं ठाकर जसवंत सिंह खड़्यौ हौ। ईं सूं पैली गांव री पंचायत रौ चुणाव सदीव निर्विरोध होया करतौ। सैंग जणा भेळा होयनै पंच–सरपंच चुण लेवता। सरकार कानी सूं पुरस्कार में मोटी रकम लेयनै गांव रै विकास में लगा देवता।

जकी चूंतरी माथै आखै गांव री चौपाळ जुड़्या करती, गांव रै विकास री बातां होया करती, अबै बठै पटका–पछाड़ी री योजना बणण लागगी। चौधरी रै प्रभाव सूं आधै सूं बत्तौ गांव साहबराम कानी हौ। पण गांव तौ बंटग्यौ ई। चौधरी कनै सगळी बातां पूगती जद सैंग जणां नैं आ इज समझावतौ कै मन माठौ ना करौ। अेक–दूसरै री बुराई ना काढौ। जिकै नैं जनता चावैला वौ इज सरपंच बणसी। पण सुणै कुण? सगळा आपचायी करै। जियां–जियां चुणाव री तारीख नेड़ै आवती गई बियां–बियां खरचै रा खाळ बिगड़ण लागग्या। रिपियां रा पनाळा बैयग्या। छेवट जीत साहबराम री होयी।

चुणाव रै सालेक पछै चौधरी बीमार पड़ग्यौ। घणी दवा–दारू करीजी, पण स्हारौ नीं आयौ। अेक दिन वौ सगळा जणा नैं भेळा करनै बोल्यौ, ''इण दुनियां में कोई कोनी रैयौ। राम–रावण सरीखा नीं रैया। सबनैं अेक न अेक दिन जावणौ ई पड़ै। म्हैं तौ सोरौ–सुखी जाऊंलौ। म्हारै जी में अेक बात अटकी पड़ी है जकी थांनै कैयनै जाऊं। बीं पर चालस्यौ तौ सुख पावोला। खानदान रौ नांव ऊंचौ रैसी। धरती किसान री मां होवै। मां कदैई कोनी बंट सकै। वा

सगळा बेटां री मां होवै। जमीन नीं होवण सूं भूमिहीण बण जावै। म्हारौ औ कैवणौ है कै जमीन मत बांटज्यौ। समै सारू भेळा नीं रैय सकौ कोई बात कोनी, पण खेती मिळनै करज्या। फसल भलांई बांट लीजौ। जमीन बांटण री बेमारी चाल रैयी है। घणै टैम पैली म्हारै कनै खेती-बाड़ी अधिकारी आयौ। आ बात म्हनैं समझायी कै छोटा-छोटा जमीन रा टुकड़ा आरथिक दीठ सूं लाभप्रद नीं होवै। आज आपणै कनै तीन सौ बीघा जमीन है जद मोटी गुवाड़ी बाजै। आ इज जमीन म्हे भाई बांटल्यां तौ सौ-सौ बीघा पांती आवै। फेरूं आपणै टाबरां में बंटती जावै तौ छेवट दो-दो बीघा पांती आसी। किसान सूं आपणी औलाद मजूर बण जासी। आपां नैं टाबरां नैं पढावणा चाईजै, जकै सूं वै दूजा धंधा कर सकै। आपणा बडेरा कैया करता हा कै 'घण जाम्या ऊत जा कै घण बरस्यां', साहबराम नैं खास तौर सूं ताकीद करूं हूं कै थूं सरपंच है, सगळै गांव रौ खयाल राखी। आपणै कनै आवणियै री डोळ-माजनै सारू मदद करजै। सगळां रौ भलौ करजै। बुरौ कदैई मत बिचारजै।''

केई दिनां पछै चौधरी बिंयासी बरस री उमर लेय देवलोक होयग्यौ। सगळौ गांव दुख मनायौ कै म्हारौ रुखाळौ चल्यौ गयौ।

चौधरी री सीख घणा दिनां तांई कोनी मानीजी। गढ जैड़ौ मकान तीन हिस्सा में बंटग्यौ। बाखळ में दो भींतां खींचनै तीन हिस्सा कर दिया। खेत ई बंटग्या। जमीन बंटी जद घणी ले-दे, चख-चख होयी। रिस्तेदार भेळा होया। आपस में खींचाताण होयी। जकौ घर सगळै इलाकै री पंचायती करज्या करतौ, अबै दूजा लोग उण घर री पंचायती करण लागग्या। छेवट चौधरी रतनाराम रौ बेटौ दुनीराम ई आपरी मां रै कैवण सूं कम उपजाऊ अर टीबै वाळी जमीन लेवण सारू राजी होयग्यौ। जमीन कांई बंटी, मन भी बंटग्या। जकी चूंतरी माथै आखौ गांव भेळा होया करतौ, बठै अब घरवाळा ई भेळा नीं होवै। अबै वा सूनी पड़ी रैवै या उण माथै झाबरियो गंडक पड़्यौ रैवै।

कई सालां पछै दुनीराम री छोरी चंदा रौ ब्यांव मंडग्यौ। दिनुगै-आथण गीत गाईजै। घर रा नीं आवै। आड़ोसी-पाड़ोसी जरूर आवै। इण मौकै परिवाररौ बामण तेजाराम आयौ। तेजाराम चौधरी रै देवलोक री बगत आयौ हौ। बाखळ में भींतां खींची देखनै उदास होयग्यौ। नीं बठै घोड़ी हिणहिणावै ही अर नीं मदुवौ बलबलावै हौ। भींत रै खूणै में बंधी डाग जरूर अरड़ावै ही। पंडतजी सगळा भाइयां रै घरां गयौ। सैंग जणा सूं रामा-स्यामा करी। हालात रौ जायजौ लियौ।

आथण पौर में रोटी जीमनै बैठक में जा बैठ्यौ। केई ताळ तांई अेकलौ ई बीड़ी फूंकतौ रैयौ। फेर मांची पर आडौ होयग्यौ। सांमली भींत माथै महात्मा गांधी री तस्वीर टंग रैयी ही। बीं तस्वीर रै तळै रतनाराम चौधरी री। तेजाराम सोच में पड़ग्यौ कै इण बापू गांधी देस नैं बांटण वाळी बात रौ घणौ विरोध करज्यौ। लोगां नैं, नेतावां नैं कितरा समझाया। भारत म्हारी मां है। आपणी सगळां री मां है। भेळा रैवौ, पण जिन्ना सरीखा धरमांध माणस हित री बात नीं सुणी। देस बंटग्यौ—तीन हिस्सां में। लाखू माणस तबाह होयग्या। हजारूं सुहाग उजड़ग्या। घणी उथळ-पाथळ माची। देस नैं बांट कांई सुखी होया। चौधरी भी घणा समझाया। जमीन मत बांटज्यौ। बीं रै जावतां ई जमीन बंटगी। घर बंटग्या अर सागै मन ई बंटग्या।

थोड़ी ताळ पछै तेजाराम कनै दुन्नीराम चिलम भरनै बैठग्यौ। केई ताळ तांई घरबार, गांव-गुवाड़ री बातां होयी। दुन्नीराम सगळी कहाणी बंटवारै री सुणाय दी। सुणनै तेजाराम बोल्यौ, ''चौधरी री बात पर थे सगळा जणा कोनी चाल्या। घर-जमीन बंटग्या। संपत कोनी रैयी। आ बात सैं सूं माड़ी होयी। ईंट जुड़्यां भींत खड़ी होवै। भींत पड़ी अर डगळिया खिंड्या। म्हैं थांनैं कैवूं कै ओज्यूं भी भेळा होय सकौ हौ।''

''म्हे फंट्योड़ा कीकर भेळा हो सकां हां पंडतजी? म्हांरा तौ मुसाण ई कोनी मिळै।'' दुन्नीराम बोल्यौ।

तेजाराम पडूत्तर देवतौ थकौ बोल्यौ, ''थांरा सगळां रा ओळ-नाळा जद अेक जग्यां गड्या है तौ मुसाण ई अेक जग्यां रैसी। थूं बडै मिनख चौधरी रतनाराम रौ बेटौ कुहावै। टूटी जेवड़ी नैं फेरूं जोड़। बिना गांठ लगायां बट लगायनै पाछी जोड़। चंदा रौ ब्यांव है। परिवार बिना ब्यांव फूठरौ नीं लागै। चंदा, रतनाराम री पोती नीं है, हेतराम

अर साहबराम री ई पोती है। थूं म्हारै सागै चाल, म्हैं सारी बात कर लेस्यूं। ब्यांव पर भेळा करणा म्हारै जिम्मै। म्हैं तौ सगळां रौ ई साझौ बामण हूं।''

केई ताळ तांई दोनूं जणा में बाथा-झोड़ होयौ। दूजै दिन आगै पंडित तेजाराम अर लारै दुन्नीराम आपरै दोनूं काकां रै घरां कानी जावतौ दीस्यौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

कारूंदा=काम करण वाळा। अपूठौ=पाछौ। सदीव=हमेसा। चूंतरी=चौकी। मन माठौ करणौ=मन खराब करणौ। गुवाड़ी=मोटौ परिवार। आथण=सिंझ्या। माणस=मिनख, आदमी। ताळ=बगत, टैम। संपत=भेळप। ओज्यूं=हाल तांई। कोड=हरख, उमाव। भाख=भोर, दिनुगौ। सीरी=सैयोगी, साझेदार। मुसाण=समसाण। चख-चख=कळह, मुखजोरी। फूठरौ=सुंदर। साझौ=भेळप रौ, सिरोळौ। निपज=उपज, नेपा। मोकळी=घणी, ज्यादा।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी कनै कुल कित्ता बीघा जमीन ही?

   (अ) तीन सौ बीघा (ब) दो सौ बीघा

   (स) पांच सौ बीघा (द) सौ बीघा

   ( )

2. चौधरी रतनाराम टाळ उणरै कित्ता भाई हा?

   (अ) तीन (ब) दो

   (स) अेक (द) चार

   ( )

3. खेती रा सगळा काम ट्रैक्टर सूं होवता हा, पण चौधरी नैं पुराणी रीत सारू किणरौ घणौ कोड हो?

   (अ) घोड़ी (ब) बळद

   (स) ऊंठ (द) घोड़ौ

   ( )

4. चौधरी री पोती रौ ब्यांव हो, वा किणरी बेटी ही?

   (अ) रतनाराम री (ब) साहब राम री

   (स) हेतराम री (द) दुन्नीराम री

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी रौ किसौ भाई ज्यादा पढ्योड़ौ हो, जिकौ राजनीति में ई रुचि लेवतौ हो?
2. चौधरी नैं सवारी सारू किणरौ कोड हो?

3. कहाणी में लंबरदार किणनै कैयौ गयौ है ?
4. चौधरी रै मांचौ पकड़्यां पछै घर अर बारै किणरी ज्यादा चालण लागगी ही ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. चौधरी आपरा दिन नैड़ा आवता देखनै सगळा जणां नैं भेळा करनै कांई हिदायत दीवी ही ?
2. ''घण जाम्या ऊत जा कै घण बरस्यां।'' इण कैवत रौ खुलासौ करता थकां समझावौ।
3. ''जमीं कांई बंटी, मन भी बंटग्या।'' इणनैं समझायनै लिखौ।
4. तेजराम बामण रौ चरित्र-चित्रण करौ।
5. 'बंटवारौ' कहाणी कांई संदेस देवै।

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''घर री गुवाड़ी रौ आप-आपरै स्वस्थ अर गांव री खुसहाली रौ राजनीति रा पड़पंच बंटवारौ कर दियौ।'' कहाणी रै कथ्य री दीठ सूं इण बात रौ खुलासौ करौ।
2. चौधरी रतनाराम रौ चरित्र-चित्रण करता थकां आ बात सुभव करौ कै कीकर वै गांव अर आपरी गुवाड़ी रौ भलौ सोचण वाळा मिनख हा।
3. कहाणी रै मूळ तत्त्वां रै आधार माथै 'बंटवारौ' कहाणी री समालोचना करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. चौधरी रै घरै दूध-छाछ री कमी नीं ही। तीन भैंस अर पांच-छह गायां नोहरै में हरदम बंधी रैवती। दिन ऊगणै सूं पैली ई बिलोवणै री आवाज उगाड़ में दूर-दूर तांई सुणीजती। भाख फाटतां रै सागै गांव री लुगायां अर टाबर लोटा, हांडी अर जग लेयनै छाछ खातर चौधरी री ड्योढी माथै ऊभा होय जावता।

2. चौधरी री सीख घणा दिनां तांई कोनी मानीजी। गढ जैड़ौ मकान तीन हिस्सा में बंटग्यौ। बाखळ में दो भींतां खींचनै तीन हिस्सा कर दिया। खेत ई बंटग्या। जमीन बंटी जद घणी ले-दे, चख-चख होयी। रिस्तेदार भेळा होया। आपस में खींचाताण होयी। जकौ घर सगळै इलाकै री पंचायती करया करतौ, अबै दूजा लोग उण घर री पंचायती करण लागग्या।

3. तेजाराम पड़ूत्तर देवतौ थकौ बोल्यौ, ''थांरा सगळां रा ओळ-नाळा जद अेक जग्यां गड्या है तौ मुसाण ई अेक जग्यां रैसी। थूं बडै मिनख चौधरी रतनाराम रौ बेटौ कुहावै। टूटी जेवड़ी नैं फेरूं जोड़। बिना गांठ लगायां बट लगायनै पाछी जोड़। चंदा रौ ब्यांव है। परिवार बिना ब्यांव फूठरौ नीं लागै। चंदा, रतनाराम री पोती नीं है, हेतराम अर साहबराम री ई पोती है। थूं म्हारै सागै चाल, म्हैं सारी बात कर लेस्यूं। ब्यांव पर भेळा करणा म्हारै जिम्मै। म्हैं तौ सगळां रौ ई साझौ बामण हूं।''

❑कहाणी

गाय कठै बांधूं

रामस्वरूप किसान

कहाणीकार परिचै

14 अगस्त, 1952 नै हनुमानगढ़ जिलै रै परलीका गांव में जलम्या रामस्वरूप किसान प्रतिभासाली अर मेहनती साहित्यकार है। वांरै अठै सिरजण अर मैणत अेकमेक है। बै पसीनै री पाणत सूं खेती रै साथै-साथै कविता-कहाणी री साख निपजावै। साहित्य मांय ई किसान खेती दांई पचै। किसान आपरी रचनावां सूं पुख्ता करै कै वै स्रमसील वर्ग नैं दूर सूं देखणवाळा नीं होयनै खुद बीं रा अणटूट हिस्सा है। इण वास्तै वांरी रचनावां में भोग्योड़ौ जथारथ प्रगट होयौ है। वै आपरी कहाणियां में ग्रामीण जीवण रौ जबरौ दोहन कर्‌यौ है। ग्रामीण जनजीवण अर संस्कृति माथै वांरी जबरी पकड़ है। आपरै लेखन सूं सामाजिक अर आर्थिक बदळाव रा पखधर किसान आपरै चिंतन नैं कलात्मक रूप देवण मांय माहिर है। आंरी कहाणियां पठनीयता रै गुणां सूं लबालब है।

किसान रा अजै लग 'हिवड़ै उपजी पीड़', 'आ बैठ बात करां' अर 'कूक्यो घणो कबीर' कविता-संग्रै, 'हाडाखोड़ी', 'तीखी धार' अर 'बारीक बात' कहाणी संग्रै, 'सपनै रो सपनो' लघुकथा संग्रै अर 'राती कणेर' नांव सूं रवीन्द्रनाथ टैगोर रै बांग्ला नाटक 'रक्त करबी' रै राजस्थानी अनुवाद री पोथी छप चुकी है। 'गांव की गली-गली' वांरी हिंदी में लांबी कविता री पोथी है। किसान कथा प्रधान राजस्थानी तिमाही पत्रिका 'कथेसर' रा संपादक है।

किसान नैं कहाणी 'दलाल' माथै कथा संस्था दिल्ली रौ कथा-पुरस्कार, 'हाडाखोड़ी' कहाणी-संग्रै माथै ज्ञान भारती कोटा रो गौरीशंकर कमलेश पुरस्कार अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रौ मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी' कथा पुरस्कार, 'राती कणेर' माथै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ अनुवाद पुरस्कार समेत मोकळा मान-सम्मान मिल चुक्या है। किसान री रचनावां रौ केई बीजी भासावां में अनुवाद पण होय चुक्यौ है। किसान रौ कविता-संग्रै 'आ बैठ बात करां' जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर अर 'दलाल' कहाणी रौ अंग्रेजी अनुवाद 'द ब्रोकर' नांव सूं क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बैंगलोर (कर्नाटक) अर महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी, कोट्टायम (केरल) रै पाठ्यक्रम में सामल है।

पाठ परिचै

'गाय कठै बांधूं' कहाणी किसान री कहाणी-कला रौ नायाब नमूनौ है। आ कहाणी किसान रै 'हाडाखोड़ी' कहाणी-संग्रै सूं सामल करीजी है। संस्मरणात्मक सैली में रचीजी इण कहाणी में दो वरगां री मनगत रौ खुलासौ होयौ है। अेक कानी ग्रामीण किसान है, जिकौ गाय सारू 'गावड़ी' अर 'ढांढी' सरीखा सबद बरतै, पण वै सबद आत्मीयता सूं भर्‌या-पूरा है। मजबूरी में जद उणनैं गाय बेचणी पड़ै तौ गाय टुरांवती वेळा वौ गळगळौ होय जावै अर यूं लागै जाणै वौ घर सूं बेटी नै विदा कर रैयौ है। दूजी कानी बाजारू मानसिकता रा लोग है, जिकां सारू गाय सेवा री नीं, फगत पूजा री वस्तु है। गाय री पूजा होवती देख बाजारू लोगां सारू कहाणी नायक रै मन में सरधा जागै, पण असलियत उजागर होवतां ई उणरै पगां तळै सूं जमीं खिसक जावै। गाय सारू साचौ हेत राखणवाळै अेक किसान री पीड़ नैं प्रगटावती आ अेक मनोवैग्यानिक कहाणी है। कहाणी में जबरी पठनीयता है, साथै ई मुहावरां अर कहावतां रौ सरस बरताव इणनैं बेजोड़ बणावै।

गाय कठै बांधूं

सै'र मांय दुधारू पसुवां रौ मेळौ लागै। हजारूं गाय-भैंस्यां बिकण सारू आवै। गोरती गाय त्यारी ब्यायोड़ी ही। हाथ तंग हौ। गाय ई दीखी। म्हैं गाय-बाछरू लेयनै बेगौ ई मेळै आयग्यौ। क्यूंकै म्हारौ गांव सै'र रै जाबक ई नजीक हौ।

इसी सूत बैठी, गाय जावतां पाण बिकगी। हीयै रौ आंधौ अर गांठड़ी रौ पूरौ मिलग्यौ। म्हैं तीन हजार मांग्या। उण पकड़ा दिया। इत्तौ ऊंतावळौ सौदौ तौ कदैई नीं बण्यौ। म्हारौ मन मांय ई मांय नाचण लागग्यौ। सोच्यौ, स्यात कोई पूगतौ आदमी है। पीसै नैं बाळ बरोबर ई नीं समझै। साथै गिरगराट ई होयौ। मोल में ऊकग्यौ बेलीड़ा! च्यार हजार मांग लेवतौ तौ कित्तौ ठीक रैवतौ। पण औ गिरगराट हुळस पर छावै इण सूं पैलां ई म्हैं सावचेत होयग्यौ। गिरगराट नैं बारै धक नै मन रा किंवाड़ मूंद लिया। भळै लाडू-सा फूटण लागग्या। दो हजार री गावड़ी अर तीन हजार बांट लिया। आछौ टूठ्यौ रामजी! आज तौ किणी भलै रा ई दरसण होया है। म्हैं रिपिया आछी तरियां गिण्या अर गोजै में घाल लिया। जद म्हैं पचास रिपिया धारणी साथै गाय-बाछरू उणनैं पकड़ावण लाग्यौ तौ वौ बोल्यौ, ''थोड़ा फोड़ा और घालसूं।''

''कांई?'' म्हैं चौकन्नौ होयौ।

''गाय म्हारै घर तांई पूगती करणी पड़सी। म्हनैं थोड़ौ डर लागै। क्यूंकै गाय औपरी है।''

''सूधी भौत है। सिर ई कोनी हलावै।'' म्हैं जी-टिकाई सारू कैयौ।

''फेरूं ई औपरापणा तौ कर ई सकै। थे डरौ नां। घर दूर कोनी। थांरौ गुण कोनी भूलूं।''

उणरा छेकड़ला सबद सुणनै म्हैं नट नीं सक्यौ। अेक हाथ में गाय री सांकळ अर दूजै में बाछरू री जेवड़ी पकड़नै उणरै लारै-लारै चाल पड़्यौ। वौ छव फुटै डील रौ धणी। गोडां चूमतौ कुड़तौ। झीणी धोती मांयकर पट्टैदार कच्छौ दीसै। काळै बूंटां में धोळी जराब आंख-सी काढै। आंख्यां पर धूप रौ चसमौ। औ रंग-ढंग देखनै म्हैं बूझ्यां बिनां नीं रैय सक्यौ, ''कांई काम करौ हौ थे?''

''म्हैं तौ सेठ रौ मुनीम हूं।''

''किसै सेठ रा?''

म्हारै इण सवाल रौ पडूत्तर गावड़ी खायगी। वा अेक ट्रकड़ै सूं बिदकनै सांकळ छुटागी। म्हैं संकट मांय पड़ग्यौ। तिल जित्ती हुयगी। गावड़ी दो ई डाकां में सड़क रै दूजै पसवाड़ै जाय पूगी। म्हैं बाछरू पकड़्यां उरलै पाळियै धूजूं तौ गावड़ी परलै पाळियै रांभै। म्हारै बिचाळै मसीनर्‌यां री अेक चालती भींत-सी तण्योड़ी। गाय, बाछरू कन्नै आवणौ चावै। पण सड़क कीकर लांघै? साधनां रौ खाळ-सो चालै हौ सड़क पर। वा चली तौ गयी बीं पासै, पण इब इन्नै आवणौ मौत होयग्यौ। वा फुटपाथ पर मसीनां रै बरोबर भाजै अर पाछी ई सागण जगां आयनै रांभण लागै। म्हारी ज्यान नै मालौ मंडग्यौ। बाछरू ई ताळ-ताळ कूदै। म्हारै हाथां सूं निकळ'र हेरण बणनौ चावै। म्हैं पसीनै सूं हळाडोब होयग्यौ। सोच्यौ, आज तौ आछा दोजख में फंस्या। जाण-बूझ अळबाद खरीदली। गावड़ी पकड़ायनै गेलौ नापतौ तौ कित्तौ ठीक रैवतौ। ठंडै-ठंडै घरां पूग जांवतौ। आज तौ आछौ कुड़कै में पग दियौ। मेळै मांय कित्ता डांगर बिकै। कुण कीं रै घरां पुगायनै आवै। म्हनै खुद पर झुंझळ-सी आवण लागी। म्हैं सैयोग सारू मुनीमड़ै नैं हेलौ मार्‌यौ, जकौ कड़तू रै हाथ लगायां अळगौ खड़्यौ हौ। पण वौ लोवै नीं आयौ। बोल्यौ, ''म्हनैं तौ गावड़ी मारै।''

''बाछरू तौ पकड़ सकौ हौ।'' म्हैं कैयौ।

उण धूजतै-धूजतै बाछरू री जेवड़ी पकड़ली। म्हैं सड़क रै दूजै पाळियै गयौ अर गावड़ी नै ओखी-सोखी पकड़नै ल्यायौ ई हौ कै दूजी अणहोणी देखनै म्हारौ काळजौ जगां छोडग्यौ। अचाणचक बाछरू अेक जीपड़ी रै आगै

पवन बणग्यौ। गावड़ी बाछरू री भौत हेजाळू ही। वा आपरै बच्चै लारै रेल बणगी। सांकळ म्हारै हाथ में ही। म्हैं और काठी पकड़ली। म्हारी भाज गावड़ी आपरी भाज रै बरोबर बणाली। म्हैं उणरै लारै उड्यौ ई बगूं। सगती गाय री अर धीजौ म्हारौ। म्हारा पग कठै ई टिकै तौ कठै ई नीं। आखी सड़क रौ ध्यान म्हारै पर। सगळौ फुटपाथ भींतां चिपग्यौ। म्हारै कानां भणकार पड़ी, ''अरे गिंवार, मरावैलौ। अरे मूरख! इयां के करै है?''

अेक बाबू ताळी पीटनै हांस्यौ, ''अरे औ कठै सूं आय बड़्यौ अठै?''

आं बाणां सूं म्हारौ काळजौ चालणी होयग्यौ। पण म्हनै बोलण नै कठै फोरौ। अेक किलोमीटर री बेओसाण दौड़ रै पछै म्हैं बाछरू नै काबू कर सक्यौ। म्हारी कोडी चकीजगी। गावड़ी ई हांफगी। वा बाछरू नै चाटण लागगी। म्हारौ दम टिक्यौ। इतराक में मुनीम आयग्यौ। म्हैं सांस खींच'र बूझ्यौ, ''कित्ती'क दूर और चालणौ पड़सी?''

''चालणौ तौ थोड़ौ ई पड़तौ, पण इब तौ खासा ई चालणौ पड़सी। आपां नै आ गावड़ी दूजी सड़क माथै ठरड़ ल्यायी। जीपड़ीआळै निरभाग बाछरू रै मांय ई ल्याय मारी जीपड़ी। बस, बाळ-बाळ ई बचग्या। नीं तो मारग्या जावता। आज तौ भाग ई भलेरा हा।''

उण आपरौ पख पाळण सारू खुद री कमी जीपड़ीआळै रै माथै मंढदी। म्हनैं उणरी झूठ पर रीस-सी आयी।

म्हे उणी सड़क पर पूठा मुड़्या। सागण जगां पूग्या। जठै सूं गाय चौफाळियां होयी ही। भळै वौ आगै-आगै अर म्हैं लारै-लारै। गळी पर गळी। नुक्कड़ पर नुक्कड़। चौरावां पर चौरावा लारै रैंवता जावै हा। पण घर आवणै में नीं आवै। झाळ उठी, मुनीमड़ै रै थोबै पर मारूं। साळा, थूं कैवै हो नीं, घर लोवै ई है। क्यूं झांसौ दियौ म्हनैं। पण सगळी गिटग्यौ। गावड़ी नै ठरड़तौ रैयौ। उणमें चिमक बड़गी। बा लारै तणावै। म्हैं सांकळ रै बळ आगै खींचूं। बाछरू ई पग रोपै। खींचूं जणां नौ-नौ ताळ कूदै। छोळां चढै। कदै गावड़ी रै डावै तौ कदैई जींवणै आवै। इसी खैंचाताण में तौ कदैई नीं फंस्यौ। आछौ घरड़घसियौ होयौ। सांकळ अर जेवड़ी हाथां में गडण लागगी। भळै सोच्यौ, देख तेरी... घर होग्यौ कै अमरीका! कित्ता मोड़ लांघग्यौ, आवणै में नीं आवै। आज तौ आछा कान कतर्‌या इण मुनीमड़ै। आछी फाक्यां चढ्यौ इण री। ठा नीं कठै लेजायनै मारैलौ। अेकर तौ इसी रीस आई कै सांकळ रौ दूजौ सिरौ मुनीमड़ै रै गळै में घालनै गावड़ी रै गदगदी करद्यूं, पण आ रीस पीड़ भर्‌यै सवाल रै बंट निकळगी, ''इब तौ थोड़ौ ई चालणौ होसी?''

''बस, इब तो ठिकाणौ आ ई लियौ मानौ।'' मुनीम धोळै बाळां में आंगळ्यां फेरतौ बोल्यौ।

''थे थोड़ी गावड़ी नैं टोरौ दिखाण।''

वौ डरतौ-डरतौ गावड़ी नै टोरण लागग्यौ। म्हैं सोच्यौ, औ काम तौ गळत भुळायौ मुनीमड़ै नैं। जे गावड़ी लात फटकार दी तौ? औ सै'र है बावळा! लेणै रा देणा पड़ जासी। लोग पीसा पाछा खोसनै ढांढी कर देसी पूठी। म्हैं बोल्यौ, ''आगै ई आ ज्यावौ मुनीमजी! म्हैं गळी कोनी जाणूं।''

''इब तौ आ ई ग्यौ घर। बा दीखै सामनै नुक्कड़आळी हेली।''

म्हारी ओरी-सी ढळगी। अेक लांबो सिसकारौ आपौ-आप भरीजग्यौ।

म्हैं गाय-बाछरू पकड़्यां अेक बंगलै रै बारणै आगै चेताचूक-सो खड़्यौ हौ। मुनीम बंगलै रै भीतर बड़ग्यौ। म्हैं उणरी बाट जोवूं। म्हनैं अचाणचक लाग्यौ जाणै म्हैं गाय रौ बिकवाळ कोनी। गंगा-घाट रौ कोई मंगतौ हूं। गाय रै मिस लोगां रै बारणै-बारणै भीख मांगतौ फिरूं। म्हनै खुद सूं घिन होवण लागी। पण म्हैं करड़ौ भौत हौ। सगळी हीणतावां पाणी ज्यूं पीयग्यौ। माथै रौ पसीनौ पूंछ्यौ अर चैरै पर भळै गुमेज उपजायौ। इतराक में मुनीम आयग्यौ। केई ताळ सूं अेक सवाल हिवड़ै नै सालै हौ। म्हैं ताचकनै बूझ्यौ, ''औ बंगलौ थारौ ई है?''

म्हारौ सवाल बायरै रळग्यौ। पडूत्तर री जगां मुनीम आदेस दियौ, ''आ भई। भीतर लेय आ गाय-बाछरू।''

म्हैं आदेस नैं आदेस मान्यौ। गाय-बाछरू बंगलै रै 'लॉन' में लेय आयौ। इन्नै-बिन्नै ख्यांत्यौ। डांगर-ढोरां सारू अठै कठैई जगां कोनी दीखी। बंगलौ! पांच तारा होटल जिसौ बंगलौ अर इण मांय अेक मुरदी-सी गाय बंधै! म्हारै मन कोनी मानी। धूजणी-सी छूटगी। अेक अणजाण्यौ डर मलोमल काळजै छावण लाग्यौ। अनेकूं सवाल म्हारै साम्हीं दांत काढण लाग्या। म्हैं मुनीम सूं पूछ्यौ, ''गाय कठै बांधूं?''

''थोड़ी ताळ पकड़्यां राखौ। म्हैं सेठजी नै बुलायनै लावूं।''

'सेठजी' सबद सुणतां ई म्हारौ अेक सवाल तौ सुळझग्यौ कै औ बंगलौ मुनीम रौ नीं, किणी मोटै सेठ रौ है अर आ गाय सेठ मंगवाई है। पण इण सुळझाव रै 'साइड इफैक्ट' सूं केई और सवाल खड़्या होयग्या। पैलौ तौ औ कै इत्तौ मोटौ सेठ गावड़ी रौ हड़दौ करै ई क्यूं? जे चावै तौ रोजीना कूंटल दूध मोल लेय सकै। अर जे गाय रौ चाव ई होवै तौ कम सूं कम बीस-पच्चीस हजार री आछी नसल री खरीदै। कै फेर कामल गायां री डैरी लगावै। म्हारै भीतर आ दोगाचींती चालै ही, इतराक में सेठ रौ आखौ परिवार आयनै गाय रा इत्ता कोड करण लाग्यौ कै मत बूझौ बात। सेठ-सेठाणी गाय रै पगां री धोख खावण लाग्या। म्हनै अंचभौ-सो आयौ। बीनण्यां भाजनै आरती रौ थाळ ल्यायी। थाळ में सोनै रौ अेक हार हौ। म्हैं सोच्यौ, पूगता आदमी नुंवै-नुंवै पसु नैं सोनौ सुंघायनै खूंटै बांधता होसी। क्यूंकै म्हारै अठै चांदी सुंघावण रौ रिवाज है। पण सेठाणी तो गाय रै माथै रोळी रौ टीकौ काढनै इण हार नैं उणरै गळै में घाल दियौ। सेठ रा बेटा-बेटी अर पोता-पोती गाय रै लिपट-लिपट कोड करण लागग्या।

गाय सारू आं रौ अणूतौ प्यार देखनै म्हारी रीस ई माठी पड़गी। गाय पुगावण रा फोड़ा भूलीजण लागग्या। म्हनै आनंद-सो आवण लाग्यौ। जद गाय छिंगास करण लागी, सेठाणी भाजनै कांसी रौ कचोळौ मांड दियौ। आखै कड़ूंबै गौ-मूत रौ टीकौ काढ्यौ। अेक जणी अचाणचक गावड़ी आगै लाडुवां रौ टोकरियौ छोड्यौ तौ म्हारा तिराण फाटग्या। गावड़ी लाडुवां पर टूट पड़ी। म्हनैं गुड़ याद आयग्यौ। क्यूंकै म्हे लोग नुंवै-नुंवै पसु नै गुड़ धामां। गुड़ री जगां लाडू! इयां कै पाणी मांग्यां घी मिलै। आछी ताबै आई गावड़ी रै। आछा भाग जाग्या ढांढी रा। देख, राजा-घर बंधी है। स्यात लारलै भो रा आडा आवै। सेठ गाय रै डील पर खाज करण लागग्यौ। भळै म्हारै कानी मुळकनै बोल्यौ, ''मारै कोनी के?''

''नां-नां, भौत सूधी है। देवता बरगी। बारह-मासी धीणौ है ईं रौ। टाबर आसीस देवैला। थारै सागै दगौ थोड़ौ ई करूं।'' म्हारी इण गारंटी पर सेठ भळै मुळक्यौ। म्हनैं लाग्यौ, सेठ म्हारै पर मुळक्यौ है। म्हैं इणरौ अरथ सोधूं इतराक में सेठाणी आयी अर गाय नैं अेक घणमोली पळपळांवती चूंदड़ी ओढा दी। गळै में हार अर डील पर चूंदड़ी। औ नजारौ देखनै म्हारा रूं फाटग्या। म्हैं गळगळौ-सो होयग्यौ। म्हनै वा विदा होंवती बेटी ज्यूं लखाई।

इब सेठां सारू म्हारी चींत बदळी। आज सूं पैलां म्हारी दीठ में औ वरग गरीबां रौ खून चूसणियौ जोंक सरीखौ हौ। हर बात नैं मुनाफै री ताकड़ी तोलणियौ, पण आज म्हारी आंख्यां खुलगी। सोच्यौ, म्हारौ खास पेसौ पसु पाळणौ। दिन-रात पसुवां में रैवणौ। पण वां सारू इत्तौ हेत तौ म्हारै ई हिवड़ै कोनी। हेत तौ दूर, मामूली चूक पर ई डांग ठोकां। पण अै लोग। धन-धन है आं री जामण नैं। लखदाद है आं सेठां नैं। पसुवां सारू कित्तौ हेत है आं रै हिवड़ै। जद पसु ई आं नै इत्ता आछा लागै तो मिनख? आं रै काळजै री कोर है मिनख। अै लोग म्हां सूं भौत आछा है। इत्ता दिन म्हैं अंधारै में हो। बरत्यां बेरौ लागै आदमी रौ।

सोचतां-सोचतां म्हारी आंख्यां आली होयगी। म्हैं खुद नै धिक्कारण लाग्यौ, लाणत है म्हारी सोच नैं। आं दयालू अर हेताळू लोगां नै म्हैं सोसक मानतौ आयौ हूं। म्हनैं हर सेठ रै खूंटै गाय बंधी दीखी। अर हर गाय रै आगै दीख्यौ लाडुवां रौ टोकरियौ। म्हैं ऊंडी सोच मांय डूब्योड़ौ हौ। अचाणचक म्हारै हाथ सूं अेक दूजै हाथ गाय री सांकळ खोसली। साम्हीं देख्यौ तौ पगां तळै सूं जमीन निकळगी।

गळै में जनेऊ अर माथै पर टीकैआळौ अेक आदमी गाय री सांकळ झाल्यां खड़्यौ हौ। दूजी कानी सेठ मुनीम नैं आदेस दियौ, ''जा, पुरोहितजी रै खूंटै गाय बंधाइया।''

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

गाय-बाछरू =गाय-बाछड़ौ। सूत बैठी=संजोग होयौ। धारणी=बिक्योड़ै पसु रौ मोल चुकायां पछै मामूली-सी रकम पाछी मोड़ण रो अेक रिवाज। फोड़ा=परेसानी। औपरी=अणजाण। पाळियै=किनारै। चालणी=छलनी। रांभणौ=गाय रै बोलणै री क्रिया। ताळ-ताळ=ऊभो मिनख हाथ ऊंचा करै जितरी ऊंचाई। हळाडोब=तरबतर। अळबाद=मुसीबत। लोवै=नजदीक। ठरड़ ल्यायी=घींसनै लेय आयी। चौफाळियां=च्यारू पगां नै अेक साथै ऊंचाय-ऊंचायनै भाजणै री क्रिया। बिकवाळ=बेचण वाळौ। ख्यांत्यौ=देख्यौ। हड़दौ=काम रौ अतिरिक्त बोझ। कामल=योग्य। दोगाचींती=दुविधा। छिंगास=गोमूत्र। कचोळौ=बाटकौ। ढांढी=गाय। बेरौ=पतौ। खोसली=छीन ली। बंधाइया=बंधवायनै आव।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामस्वरूप किसान जिण पत्रिका रा संपादक है, उणरौ नांव कांई है ?

   (अ) कथेसर (ब) अपरंच

   (स) माणक (द) राजस्थली

   ( )

2. हियै रौ आंधौ अर गांठड़ी रौ पूरौ मिलग्यौ, कुण ?

   (अ) सेठ (ब) सेठ रौ छोरौ

   (स) मुनीम (द) पसुपालक

   ( )

3. गाय रा कित्ता रिपिया बंट्या ?

   (अ) अेक हजार (ब) दो हजार

   (स) तीन हजार (द) चार हजार

   ( )

4. मुनीम गाय लेयनै कठै गयौ ?

   (अ) सेठ रै खेत में (ब) सेठ रै बाड़ै में

   (स) सेठ री दुकान आगै (द) सेठ रै बंगलै माथै

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामस्वरूप किसान रा कहाणी संग्रै कुण-कुणसा है ?
2. कहाणी 'गाय कठै बांधूं' कुणसै कहाणी-संग्रै में सामल है ?
3. 'गाय कठै बांधूं' कहाणी किण सैली में लिख्योड़ी है ?
4. कहाणी-नायक गाय क्यूं बेची ?
5. गाय किणसूं बिदकनै सांकळ छुटायगी ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामस्वरूप किसान री खास-खास कृतियां रा नांव लिखौ।
2. मुनीम रै डील-डोळ अर पहनावै रौ वरणाव लेखक किण भांत करयौ है?
3. कहाणी-नायक रै मन में लाडू-सा कीकर फूटण लाग्या? खुलासौ करौ।
4. 'धारणी' रौ कांई मतलब है? लेखक धारणी रा कित्ता रिपिया छोड्या?
5. ''आं बाणां सूं म्हारौ काळजौ चालणी होयग्यौ।'' बै बाण कुणसा हा?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'गाय कठै बांधूं' कहाणी री मूळ संवेदना आपरै सबदां मांय लिखौ।
2. ''रामस्वरूप किसान री कहाणी 'गाय कठै बांधूं' कहाणी-कला रौ नायाब नमूनौ है।'' खुलासौ करौ।
3. कथा तत्वां रै आधार माथै 'गाय कठै बांधूं' कहाणी री कूंत करौ।
4. सेठ रै बंगलै माथै गाय रा कोड किण भांत हुया? विस्तार सूं लिखौ।
5. इण कहाणी रै आधार माथै खुलासौ करौ कै गाय सारू साचौ हेत किणरै मन में हौ अर कियां?

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. इसी सूत बैठी, गाय जावतां पाण बिकगी। हीयै रौ आंधौ अर गांठड़ी रौ पूरौ मिलग्यौ। म्हैं तीन हजार मांग्या। उण पकड़ा दिया। इत्तौ ऊंतावळौ सौदौ तौ कदैई नीं बण्यौ। म्हारौ मन मांय ई मांय नाचण लागग्यौ। सोच्यौ, स्यात कोई पूगतौ आदमी है।

2. उण धूजतै-धूजतै बाछरू री जेवड़ी पकड़ली। म्हैं सड़क रै दूजै पाळियै गयौ अर गावड़ी नै ओखी-सोखी पकड़नै ल्यायौ ई हौ कै दूजी अणहोणी देखनै म्हारौ काळजौ जगां छोडग्यौ। अचाणचक बाछरू अेक जीपड़ी रै आगै पवन बणग्यौ। गावड़ी बाछरू री भौत हेजाळू ही। वा आपरै बच्चै लारै रेल बणगी।

3. म्हैं गाय-बाछरू पकड़्यां अेक बंगलै रै बारणै आगै चेताचूक-सो खड़्यौ हौ। मुनीम बंगलै रै भीतर बड़ग्यौ। म्हैं उणरी बाट जोवूं। म्हनैं अचाणचक लाग्यौ जाणै म्हैं गाय रौ बिकवाळ कोनी। गंगा-घाट रौ कोई मंगतौ हूं। गाय रै मिस लोगां रै बारणै-बारणै भीख मांगतौ फिरूं। म्हनै खुद सूं घिन होवण लागी।

मुहावरा अर वांरा अरथ

1. हीयै रौ आंधौ अर गांठड़ी रौ पूरौ	—	बिना सोच्यै-बिच्यारै खरच करण वाळौ।
2. लाडू-सा फूटणा	—	घणौ हरख होवणौ।
3. तिल जित्ती होवणौ	—	संकट में पड़णौ।
4. कुड़कै में पग देवणौ	—	जाण-बूझनै आफत मोलावणी।
5. कोडी चकीजणौ	—	दम भरीजणौ।
6. ओरी-सी ढळणौ	—	आराम आवणौ।
7. तिराण फाटणा	—	आंख्यां फाटणौ, घणौ अचरज होवणौ।
8. हेरण बणनौ	—	भाज जावणौ।
9. पाणी मांग्यां घी मिलणौ	—	छोटी-सी मांग माथै घणौ मिलणौ।

❑लघुकथा

आज रौ सरवण

डॉ. लीला मोदी

लेखिका परिचै

डॉ. लीला मोदी रौ जलम कोटा में 10 मार्च, 1960 में होयौ। अेम.अे., पीअेच.डी., डी. लिट, बी.अेड., आयुर्वेद रत्न, अेम.लिट. तांई भण्या-गुण्या लीला जी अबार जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय, कोटा में अध्यक्ष अर कोटा विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग रा संयोजक है। बाल-साहित्यकार, शोधवेत्ता अर कवयित्री अर कथाकार रै रूप में ख्यातनांव डॉ. लीला मोदी री छप्योड़ी पोथ्यां मांय 'हाड़ौती लोकगीत', 'हाड़ौती लोकगीतां में संस्कृति', 'लाख टकां की बात', 'हाड़ौती की कृषि संबंधी सबदावळी', 'फुलवाड़ी', 'जातरा', 'सुपना', 'राघव' अर 'लहर लहर चंबल' उल्लेखजोग है। हिंदी मांय भी आपरी केई पोथ्यां छप्योड़ी है। आपनैं 'तुलसी पुरस्कार', 'आशु कविता प्रतियोगिता पुरस्कार' अर भारतेंदु साहित्य समिति, कोटा सूं 'अखिल भारतीय कहाणी प्रतियोगिता पुरस्कार', 'सहकार गौरव' अर 'साहित्य रत्न पुरस्कार' समेत केई इनाम-इकराम मिल्योड़ा।

पाठ परिचै

इण पाठ में सामल लघुकथा 'आज रौ सरवण' आज री पीढी माथै अेक करारौ व्यंग्य है, जकी कै आपरै माईतां नैं बोझ समझनै वांरौ आव-आदर नीं करै अर वांरा हाण ढळ्यां पछै वांनै वृद्धाश्रम में छोड आवण सूं ई परहेज नीं करै। अठै कथा रौ नायक रामरतन वृद्धाश्रम री ठौड़ आपरी मां नै टोकरै में ऊंचायनै आपरै गांव में रैवणियै छोटै भाई कनै छोडण नै जाय रैयौ है, पण देखण वाळा लोग-लुगायां समझै कै रामरतन आपरी मां नैं कठैई तीरथ करावण नै लेजाय रैयौ है, का पछै मिंदर में दरसण करावण नै कै परिक्रमा दिरावण नै लेजाय रैयौ है। कथा रै अंत में जद अेक आदमी रामरतन नैं चाय पीवण री मनवार करै तद वौ न्हासतौ-दौड़तौ कैवै कै अबार उण कनै टैम नीं है क्यूंकै वौ आपरी मां नैं कनै ई आपरै गांव में छोटकियै भाई कनै छोडण नै जाय रैयौ है तद कथा रौ असली मरम प्रगट होवै। कळजुग रा सरवण बेटा कैड़ा होवै, औ भेद प्रगट करणौ इज इण छोटी-सी लघुकथा रौ मोटौ मकसद है। डॉ. लीला मोदी कनै लघुकथा रचण रौ अेक आंटौ है, जकौ पाठकां नैं बांध्यां राखै अर अंत में उण लघुकथा री घुळगांठ अैड़ी सौरी खुलै कै पढेसरी अचंभै में पड़ जावै।

आज रौ सरवण

रामरतन की उमर पचास के आस-पास होवैगी। उंका माथां पै अेक बडौ सारौ टोकरौ छौ। उंमें बीचूं-बीच अेक गांठड़ी-सी पड़ी छी। उभाणा पावां उ भाग्यो जा रियौ छौ। उफणतौ तावड़ौ छौ, माथा सूं पसीनौ चू रियौ छौ। उइं फुरती सूं भागतौ देखनै अेक साग बेचबा हाळौ पूछ्यौ, ''अरे रामरतन! कठी भाग्यौ जा रियौ छै। अरे बता तो सही, ईं टोकरा में खीं ले जा रियौ छै?

रामरतन हाथ हिलायनै बोल्यौ, ''टैम कोईनै।''

साग लेबा वाळी लुगाई थी। बोली, ''भला मनख, थे तौ साग तोलौ। उ तौ उंकौ काम कर रियौ छै।'' अेक लुगाई और साग लेबा आगी। वा बोली, ''टोकरा में तो वांकी जामण दीखै। बीमार होगी। चाल फिरबा माफक नीं होवैगी। अस्पताळ लेजा रियौ होवेगौ। थे भी कांई बावळा होग्या।''

साग वाळौ बोल्यौ, ''लोग-बाग तौ झूठयांई खेवै छै कै घोर कळजुग आग्यौ। देखल्यो! असा कळजुग में भी सपूत छै न! धरती यांका धरम सूं ही चाल री छै।''

चौराहा पै अेक हैंडपंप छौ। वां लुगायां पाणी भर री छी। आपणा दुख-सुख अेक दूजी नैं बांट री छी। रामरतन वां थमग्यौ। उंनैं अेक हाथ सूं टोकरो थामल्यौ। दूसरा हाथ सूं पाणी पिलाबा को इशारौ करयौ। अेक पिछाण की बायर नै पाणी प्वायौ। पाणी पी'र फेर भाग्यौ-भाग्यौ आगै बड़्यौ।

बायरां आपस में बातां करबा लागी—

पैली, ''टोकरा में मायड़ दिखै। पाणी भी तौ साता सूं कोनै पीयो।''

दूसरी, ''मंदर के आड़ी जा रियौ छै। दरसण कराबा ले जा रियौ होवैगौ। ''

तीसरी, ''डोकरी धीमां चालती होवैगी। महाप्रभुजी रौ मंदर तो झट ही बंद हो जावै छै। ईं लेखै बचारौ मांई नैं टोकरा में माथै पे धरनै ही ले आयौ।

चौथी, ''हे रे, म्हारा भगवान! कळजुग में सभ्याईं असा ईं बेटा दीज्यौ। अरे म्हारा राम! अेक म्हूं छूं। बुढापा में भी पाणी भरबा आणी पड़ै छै।''

पाचवीं, ''घरां रैवां तौ गाळ्यां खावां। आज भी धरती पै धरम छै। कोख उजळी कर दी। थू धन्न छै रे रामरतन।''

रामरतन रेलवे क्रासिंग के पास पूग गियौ। वां सूं रेल गुजर री छी। धड़-धड़ करनै रेल भागी जा री छी। रामरतन रौ काळजौ रेल री रफ्तार सूं भी तेज धड़क रियौ छौ। उन्हैं रफ्तार थोड़ी दमनी कर दी। पसीना पूछ्यौ। थोड़ौ थमणौ पड़्यौ।

अेक बायर बोली, ''टोकरा में डोकरी ही दीखै छै।''

दूसरी बोली, ''मंदर कै आड़ी जा रियौ छे, अधक मास छै। पचकोसी परकम्मा लगाबा ले जा रियौ दीखै।

तीसरी सोचनै बोली, ''डोकरी सूं परकम्मा भी कांईं दी जाती होवैगी। ल्याई माथां पै ढोकै ई परकम्मा देणी होवैगी।

चौथी बोली, ''बेच्यारो! म्हनैं घणी बार तौ ईं कांधा पे बिठाण के लातो देख्यौ छै। अबकी बार ही टोकरा में माथा पै धरनै ले जा रियौ छै।''

अेक आदमी पूछ्यौ, ''रामरतन, डोकरी मरगी के! मसाणा आड़ी जा रियो छे कै?

रामरतन बोल्यौ, ''मरी तो कोनै। छोकी भली छै।''

आदमी, ''तौ बीमार छै के? भाग्यौ-भाग्यौ कठी ले जा रियौ छै? आजा चाय पी ल्यां।''

रामरतन बोल्यौ, ''अबार टैम कोनी। पाछौ आऊंगौ तौ चाय कांई नास्तौ भी कर लेगां। म्हारी टैम तौ अब पूरी होगी, सो माथै री आफत नैं उतारबा छोटा भाई के घरां पास रा गांव में जा रियौ छूं।''

⌘⌘

माटी री मनस्या / बांझ

भंवरलाल 'भ्रमर'

लेखक परिचै

कथाकार भंवरलाल 'भ्रमर' रौ जलम बीकानेर में 22 अक्टूबर, 1946 में होयौ। आप अेम.अे., अेम.अेड. री डिग्री अर साहित्य-रत्न, साहित्य शिरोमणी री उपाधियां हासल करी। आप राजस्थान रै शिक्षा महकमै में अध्यापन सेवा करी। राजस्थानी में 'तगादो', 'अमूजो कद तांई', 'सातूं सुख' कहाणी-संग्रै छप्योड़ा। 'भोर रा पगलिया' आपरौ बाल उपन्यास है। 'भ्रमर' शिवचन्द्र भरतिया रै उपन्यास 'कनक सुंदर' अर राजस्थानी री प्रतिनिधि कहाणियां रै संग्रै रौ 'पगडांडी' नांव सूं संपादन-प्रकाशन ई करयौ। आप 'मनवार' अर 'मरवण' नांव सूं राजस्थानी री दो कथा-पत्रिकावां रौ संपादन करयौ अर कीं बरस राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी री पत्रिका 'जागती जोत' रौ संपादन ई करयौ। अबार आप राजस्थानी लघुकथा री अनियतकालीन पत्रिका 'अपणायत' रौ संपादन करै। आपनैं कहाणी-संग्रै 'सातूं सुख' सारू राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर कानी सूं 'शिवचंद्र भरतिया राजस्थानी गद्य पुरस्कार' अर मारवाड़ी सम्मेलन मुंबई रौ 'राजस्थानी पुरस्कार' मिळ्यौ। इणां रै टाळ ई केई इनाम-इकराम आपनैं मिळ चुक्या है।

पाठ परिचै

इण पाठ में भंवरलाल 'भ्रमर' री दो लघुकथावां 'माटी री मनस्या' अर 'बांझ' सामल करीजी है। पैली लघुकथा में माटी री अभिलासा अर परोपकार री भावना दरसाईजी है। इणमें अेक कुंभार माटी नैं लाळच देवै कै थूं कैवै तौ थनैं गणेसजी, लिछमी कै सरस्वती री मूरत बणाय देवूं जिकौ लोग थनैं घणैमान पूजैला। पण माटी कैवै कै म्हनैं तौ थूं अेक दिवलै रै रूप में घड़ दै, जिणसूं म्हैं जगत में उजाळौ करण रौ निमित्त बण सकूं। इणी भांत दूजोड़ी लघुकथा 'बांझ' में अेक अैड़ी नारी-पात्र नैं साम्हीं लाईज्यौ है, जिण माथै बांझ होवण रौ आरोप लगाईजै अर पछै सासरिया उणनैं घर सूं काढ देवै। पण वा ई नारी जद दूजौ घर मांड लेवै तौ उणरै आंगणै बेटौ खेलै, पण पैलड़ौ धणी जकौ उणनैं घर सूं काढै, वौ दूजवर बण्या उपरांत ई अेक टाबर सारू तरसै। कैवण रौ मतलब औ कै खोट भलांई आदमी में होवौ, पण उणरी तूमत लुगाई माथै लगाईजै। भारतीय लोकमानस रै इण सोच नैं मिटावण में आ लघुकथा घणी सहायक सिद्ध होवै।

माटी री मनस्या

कुंभार माटी नै गीली करनै सागीड़ी गूंधी। गुंधीज्यां पछै माटी सूं पूछ्यौ, ''कांई बणावां, थनै?''

माटी अबोली रैयी।

कुंभार पाछौ पूछ्यौ, ''देवळी बणावां? कैवै तौ गणेस जी री मूरती बणाय देवूं? सगळां सूं पैली पूजीजसी, का पछै लिछमी बणाय देवूं? जिकी नै हरेक गृहस्थ नित पूजै-ध्यावै। लिछमी सगळां नैं नाच नचावै। थूं कैवै तौ सुरसत बणाय देवूं! जिकी कला, साहित्य, संगीत अर ग्यान री अधिष्ठात्री देवी है। सगळां री आदरजोग। अबार थकां बताय दै, बाकी थारी मरजी।

माटी खासी ताळ तांई अबोली रैयी, अमूझबौ करी। पछै टसकती होळै-सी'क बोली, ''म्हारी मानै जणै तौ

पाणी रा घड़ा-मटकियां बणायलै, जिकै सूं सगळां री तिस बुझाय सकूं अर गांव-नगर सगळी ठौड़ चावी बण सकूं। जनसेवा करनै आगोतर सुधार सकूं।

नीं तो फेर दिवलौ बणाय दै, जिकै सूं म्हैं अंधारौ भगायनै घर-घर उजाळौ कर सकूं।

बांझ

उण री कूख सूनी ही।

सात बरस होयग्या ब्यांव हुयां नै। तौ ई टाबर कोनी होयौ।

''बांझड़ी है, आ तौ'' कैयनै उणरै धणी उणनैं घर सूं काढ दी।

बापड़ी रै आगै-लारै कोई कोनी हौ। पीहर न सासरौ। जावै तौ कठै जावै ? किणी सैंध-पिछाणवाळै री सरण लीनी। चौका-बासण करनै टैम पूरौ करै ही।

उणी दिनां अेक जणै री जोड़ायत जापै में मरगी। टाबर नै छोडगी लारै। धणी नैं लुगाई सूं बत्ती आपरै टाबरियै वास्तै अेक मां री घणी जरूत ही। उणरी निजर उण माथै पड़गी। नौरा काढ्या अर समझायी उणनैं। वा राजी-राजी उणरै घरै आयनै नातै बैठगी। दोनां रौ घर बसतौ होयग्यौ।

छव महीनां में ई कूख हरी होयगी उणरी। रामजी री दया सूं वा तीन टाबरां री मां है, आज। अेक पैलड़ी रौ है अर दो आपरा जायोड़ा।

उणरौ पैलड़ौ धणी ई दूजी परणीजग्यौ। दायजौ घणौ ई लायौ। रामजी री दया सूं वौ ई आपरी जोड़ायत सागै सौरौ-सुखी है। पण वौ अेक टाबरियै सारू तरसै हाल तांई !

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

उंका=उणरै। उफणतौ तावड़ौ=तीखी धूप। उइं=उणनैं। कठी=कठीनै, किन्नै। खीं=कांई। खेवै=कैवै। परकम्मा=फेरी, परिक्रमा। दमनी=धीमी। छोकी=चोखी, आछी। थे=आप। वांकी=उणरी। जामण=मां, मायड़, मांई। वां=बठै। साता सूं=सौराई सूं, सुख सूं। मंदर के आड़ी=मिंदर कानी। सभ्याईं=सगळां नैं। बायरां=लुगायां।

देवळी=मूरती। सुरसत=सरस्वती। सगळा=सैंग, सारा। ताळ=देर। अबोली=मून धार्‌योड़ी, चुप। होळै-सी'क=धीरै-सी। आगोतर=आगलौ जलम। उजाळौ=च्यानणौ। बांझड़ी=निपूती। जोड़ायत=लुगाई, पत्नी। जापै में=प्रसव री वेळा। नौरा=मनवार, गरजां। कूख हरी होयगी=गरभ ठैरग्यौ। दायजौ=दहेज।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'लहर लहर चंबल' किण लेखिका री पोथी है ?

(अ) डॉ. लीला मोदी (ब) किरण राजपुरोहित 'नितिला'

(स) नीता कोठारी (द) मोनिका गौड़

( )

2. 'आज रौ सरवण' लघुकथा में रामरतन आपरी मां नैं टोकरा में कठै ले जावै ?

(अ) मिंदर दरसण करावण नै (ब) पंचकोसी परकम्मा दिरावण नै

(स) आपरै छोटै भाई रै घरै पूगावण नै (द) तीरथ करावण नै

( )

3. भंवरलाल 'भ्रमर' राजस्थानी में किसी पत्रिका निकाळी ?

(अ) गणपत (ब) मरवण

(स) लीलटांस (द) ओळख

( )

4. 'माटी री मनस्या' में माटी री कांई मनस्या है ?

(अ) घड़ा-मटकियां अर दीवौ बणण री (ब) देवी अर देवतावां री मूरत बणण री

(स) गल्लौ अर गमलौ बणण री (द) हटड़ी अर ढकणी बणण री

( )

5. 'बांझ' कहाणी रौ नायक किण सारू तरसै ?

(अ) रोटी सारू (ब) पाणी सारू

(स) गाय सारू (द) टाबर सारू

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'आज रौ सरवण' लघुकथा किण लेखिका री है ?
2. रामरतन रौ काळजौ किण सूं भी तेज धड़क रैयौ हो ?
3. 'माटी री मनस्या' लघुकथा रा लेखक कुण है ?
4. माटी नैं दिवलौ बणण रौ चाव क्यूं है ?
5. 'बांझ' लघुकथा मांय धणी आपरी लुगाई नैं घर सूं क्यूं काढै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. डॉ. लीला मोदी री च्यार पोथ्यां रा नांव लिखौ।
2. सागवाळौ रामरतन नैं देखनै कांई कैयौ ?
3. कुंभार माटी सूं कांई पूछै ?
4. 'बांझ' लघुकथा री मूळ संवेदना कांई है ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'आज रौ सरवण' लघुकथा री मूळ संवेदना दाखला देयनै लिखौ।
2. टोकरा नैं देखनै मिनख-लुगायां रामरतन रै बारै में कांई बातां करी ?
3. माटी अर कुंभार रै बिचाळै कांई संवाद होवै ? विस्तार सूं लिखौ।
4. 'बांझ' लघुकथा लोकमानस रै किण सोच नैं मिटावण में सहायक सिद्ध होवै ?

निबंध

सुख-दुख

प्रो. कल्याणसिंह शेखावत

निबंधकार परिचै

प्रो. कल्याणसिंह शेखावत रौ जलम 7 जुलाई, 1942 नै होयौ। आपरै पिता रौ नांव शिवदयालसिंह हो। आपरी मायड़ भासा राजस्थानी रा रुखाळा, उण रा हिमायती अर उणनैं पोखण री तजबीज करणवाळा प्रो. शेखावत पंदरै पोथ्यां रौ लेखन अर संपादन करयौ। जोधपुर विश्वविद्यालय में राजस्थानी विभाग री थरपणा अर रुखाळ रौ जस प्रो. शेखावत नै जावै।

आप राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति नैं सरल सबदां रौ बागौ पैरायनै पाठक-समाज नैं सूंपियौ। साहित्य रै इतिहास री गैरी कूंत अर संस्कृति रौ ओपतौ ओछाड़ ओढायौ। आपरी सिरजण ऊरमा अर विद्वता रै पाण केई सम्मान आपनैं मिल्या। केई विश्वविद्यालयां मांय आप पाठ्यक्रम मंडळ रा संयोजक अर सदस्य रैया। आप केई राष्ट्रीय अर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियां में भाग लियौ अर संगोष्ठियां रौ आयोजन ई करयौ। मीरां बाई रै व्यक्तित्व अर कृतित्व नै लेयनै आप साहित्यिक कूंत करी। निबंध रचना री पोथी 'मणिमाळ' मानवी भावां री पारख अर अंवेर करै।

पाठ परिचै

निबंध गद्य री कसौटी मानीजै। राजस्थानी रै मांय निबन्ध-लेखन री परंपरा आधुनिक गद्य विधा सूं आई। दूजी भासावां री गद्य विधावां जियां राजस्थानी में आजादी रै पैलै सूं ई केई वरणनात्मक, भावनात्मक, घटनात्मक अर आत्मकथात्मक निबन्ध लिखीजता रैया है। सामाजिक, सांस्कृतिक अर राजनीतिक तौ केई व्यंग्यात्मक निबंध लेखन री परंपरा अठै रैयी है। कोई अेक विसय, घटना कै भावां रै सागर में डूब'र लेखक आपरै विचारां नैं सबदां रै ओळै-दोळै गूंथै अर समाज नैं नूंवी दीठ अर नूंवी सोच देवण रा जतन करै। भासा अर भाव रा संजोग नैं लेयनै पोथी 'मणिमाळ' रा निबंध ई राजस्थानी गद्य-साहित्य री विसेसतावां साथै खरा उतरै। 'सुख-दुख' निबंध भावनात्मक निबंधां री पोथी 'मणिमाळ' सूं लिरीज्यौ है। औ निबंध प्रो. कल्याणसिंह शेखावत रै निबन्ध-संग्रै 'मणिमाळ' सूं लिरीज्यौ है। इण पोथी में मनगत भावां अर अंतस रौ गैरौ आध्यात्मिक चिंतन निजर आवै। आप जीव-जगत, मोह, माया, सपनौ, रीस, ईसकौ, हरख, हेत, डर, भूख, आत्मा, धरम, मौत अर सुख-दुख जैड़ा विसयां नै लेयनै निबन्धां री रचना करी है। सुख-दुख मानवी भाव ई है, जिकौ मिनख री दसावां साथै ऊपजै। भौतिक सुख, आत्मिक सुख या आध्यात्मिक सुख दो न्यारा रूप है। मरजी रौ काम बणतौ जावै, सगळी थितियां अर बगत मिनख रौ साथ देवता जावै तौ उणसूं सुख रौ अनुभव होवै। थितियां अर बगत साथ नीं देवै, जिकौ चावै वौ काम पूरौ नीं होवै, इच्छावां पूरी नीं होवै तौ उणसूं दुख ऊपजै। इच्छावां रौ पूरौ होवणौ सुख है। आ बात ई खरी है कै हरेक मिनख रै वास्तै सुख अर दुख रा नांव, रूप अर म्यांना न्यारा-न्यारा होवै। परम सुख में आनंद है अर आनंद आध्यात्मिक सुख सूं आवै। सुख-दुख तौ भौतिक अर नासवान देही री भावनात्मक अवस्थावां है। ढळती-उतरती छियां रै ज्यूं जीवण में सुख-दुख आवता-जावता रैवै। कोई मिनख हरमेस सुखी नीं रैय सकै अर नीं दुखी रैय सकै। जीवण रै साथै ज्यूं मौत ई आवैला। सांत चित्त में कणैई रीस ई अवस आवैला, सूरज ऊगै तौ वौ आथमै ई है। रात रै पछै दिन अर दिन रै पछै

रात आवै। बगत बदळतौ रैवै। जीवण में बदळाव आवै अवस। किणी रौ ई जीवण अेक जैड़ौ नीं रैय सकै। उणीज भांत जीवण में सुख-दुख ई आवै। इच्छावां रौ तिरपत रूप सुख है अर सुखां री इच्छा राखणी ही दुखां रौ मूळ है। लेखक मानवी दसावां माथै सगळी बातां रौ खुलासौ करण री खेचळ करी है। देह रा हाव-भाव सूं हियै रा भाव प्रगटीजै।

राजस्थानी रौ औ दूहौ जिणमें कवि भौतिक सुखां रौ वरणाव इण भांत करै—

गो-धन, गज-धन, बाजि-धन, और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन, (तो) सब धन धूरि समान।।

तौ दूजै कानी कवि बांकीदासजी पूरण सुख इण भांत बतावै—

ज्यांरै खाक बिछावणौ, ओढण नै आकास।
ब्रह्म पोख संतोस वित्त, पूरण सुख त्यां पास।।

हाथी, घोड़ा, रथ अर रतन भण्डार दिन-दिन बधता जावै तौ ई बिना संतोस करियां सुख नीं मिळै अर जिणरै कनै कीं कोनी, वौ ई जे संतोस नैं धारण करलै तौ पूरण सुख मिळ जावै। बात कैवण में साव छोटी लागै कै 'संतोसी सदा सुखी' पण कांई आपां संतोस राखां? कांई सुखी रैवण रा असल साधनां नै अपणायनै दुखां नैं मिटावण रा जतन करां? कांई सुख-दुख नैं आपां खुद ई न्यूंत बुलावां कोनी? अैड़ा घणाई सवालां रा पड़ूत्तर इण निबंध नैं पढनै समझण सूं मिळैला। आपणा धरम-ग्रंथां— वेद-सास्त्रां, गीता, रामचरितमानस, बडा-बडा विद्वान, सन्त, साहित्यकारां सुख-दुख नैं लेयनै जिका भाव राख्या, उणां रा रूपाळा दाखला देतां थकां लेखक आपरी बात राखी है। इण निबंध में च्यारूंमेर देख्योड़ौ, भोग्योड़ौ साच इधकी परिभासावां साथै उजागर करीज्यौ है। निबंध री भासा सरलता अर सहजता लियोड़ी है। उक्तियां साथै छोटा-छोटा वाक्यां में आपरी बात कैवणी, अेक वाक्य रै साथै दूजै वाक्य रौ जुड़ाव, केई ठौड़ां काव्यमय अभिव्यक्ति, जनमानस में परोटीजै जैड़ा सबदां रौ प्रयोग सरलता सूं गैरी बात नैं समझावण री खिमता इण निबंध री विसेसतावां है। हरेक बार नूंवै ढाळै आपरी बात कैवण री कळा राखणी, आ निबधंकार री इधकाई है। सब सूं मोटी बात कै सुख अर दुख रौ कोई अेक सरूप कोनी। औ निबंध आखरां रूपी मणियां नैं पोयनै 'दुलड़ी' (सुख-दुख) री अमोलक माळा ज्यूं पाठकां रै हिवड़ै हिलोळा लेवै अर नूंवै मारग री सोझी देवै।

सुख-दुख

संचय रौ भाव ही दुख रौ मूळ है अर त्याग सूं सुख-सांति मिळै। श्रीमद्भागवत गीता में भगवान वासुदेव कैयौ है— 'त्यागाच्छानिरूत्तरम् (12/12) त्याग सूं इज तुरंत परम सांति मिळै।

सुख री आसक्ति छूटण सूं ही सै दुखां रौ कळेस मिट जावै अर आणंद मिळै। जिका संसारी सुख प्राणी नै दीसै, वै सै दुख री ही जड़ है। सुख री कामना ही दुख है। जे सुख री इच्छा ही नीं हुवै तौ दुख उपजै कठै सूं? सुख अर दुख रौ जोड़ौ है, पण दोनूं सदा रैवण वाळा कोनी। ज्यूं धूप अर छाया आता-जाता रैवै— कदैई चढै तौ कदैई ढळ जावै। इणी भांत सुख अर दुख भी आवै अर चल्या जावै। इण खातर न सुख में घणौ राजी होवणौ अर न दुख में निरास। संतवाणी रा बोल इणी भाव नै दरसावता कैवै—

देह धरै रा दंड है, सब कोऊ को होय।
ज्ञानी भुगतै ज्ञान से, मूरख भुगतै रोय।।

चाणक्य नीति मुजब—

क्रोधौ वैवस्वतौ राजा, तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुधा धेनुः, सन्तोषी नंदन वनम्।।

रीस जमराज ही है। इच्छावां वैतरणी जैड़ी विसाल नदी है, विद्या कामधेनु समान है अर संतोस नंदनवन ज्यूं सुखदाई है। सुख अर दुख प्राणी रै मन रा भाव है। यूं तौ सै प्राणी सुख-दुख री अनुभूति करै, पण मानखै में अै भाव कीं इधका है अर आं भावां नै समझावण री वाणी भी उणरै कन्नै है जिकी दूजा प्राणियां कन्नै कोनी! जिकी बातां अर कारज मनुज रै मन नैं भणण वाळा या लुभावण वाळा है, वांसूं उणरै मन में सुख उपजै। किण बात अर काम सूं कित्तौ सुख उपजै औ बतावणौ घणौ दोरौ है, पण मिनख रा हाव-भाव, हास-विलास नैं देखनै इणरौ कीं अंदाजौ अवस लगायौ जा सकै है। हरेक मानवी सुखी रैवणौ चावै, पण सुख सदा रैवै कोनी— इणरौ कांई कारण है? गुणीजन सुख-दुख रौ संबंध उणरौ पूरबला अर अबार रा करमां सूं जोड़ै। आछा करम सुख देवै अर बुरा करमां सूं दुखां रौ कळेस भुगतणौ पड़ै।

सुख री अनुभूति भी न्यारी-न्यारी होवै। काया रौ सुख न्यारौ है अर मन, बुद्धि अर आत्मा रौ सुख दूजौ है। आछौ खावण-पीवण, आछा कपड़ा अर रैण-सैण सूं काया नैं सुख मिळै पण मन, बुद्धि अर आतमा उणनैं सुख नीं समझै। भगत नैं ईस नैं भजियां सूं ही सुख मिळै। चिंतक अर साधक रौ सुख बुद्धि सूं संबंध राखै अर मन विसय-वासना सूं सुखी होवै। साधु-सन्त सदआचरण सूं सुख री अनुभूति करै। उणां नैं मदिरापान सूं सुख री जागां दुख री अनुभूति होवै। संसार बोल-बतळावण सूं सुखी होवै पण साधक मौन धारण सूं। इण जग में सुख रा कारण भी भांत-भांत रा है। गरीब अपार धन मिलण सूं, निपूतौ पूत मिलण सूं, कुंवारौ ब्यांव होवण सूं, रोगी निरोगा होयां सूं, वकील मुकदमौ जीतण सूं सुखी होवै, पण भगत भगवान मिलण सूं, विग्यानी नयौ आविस्कार करण सूं, धरमी परोपकार, चांडाळ पापाचार कर राजी होवै। वौ ही उणां रै सुख रौ आधार बणै। कीड़ी कण सूं राजी होवै अर हाथी मण सूं। संत कबीर रा सबदां में—

सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।

ओ सुख अग्यानता रौ है जिण सूं संसारी सुखी रैवै, पण ग्यानी ग्यान री जोत नैं देख्यां पछै दुखी रैवै। जिकौ मनुज जय-पराजय, लाभ-हाण अर सुख-दुख नै अेक समझ'र करम करै बो सच्चौ साधक बाजै, पण औ काम हरेक संसारी रै बस रौ कोनी

श्रुति री मानता है कै 'यो वै भूमा तत् सुखं नाल्पे सुखमस्ति'। इणरौ मतळब औ कै थोड़ा में सुख कोनी, जिकौ भूमा है पूरौ है— वौ ही सुख है। औ सुख भगवत मिलण रौ है। ग्यानी कैवै— अग्यानी मनुज संसारी संबंधां, धन-संपदा, माया-मोह नैं ही सुख मान लेवै जिकौ असल में दुख रौ मूळ है—भ्रम है। औ जगत तौ अपूर्ण अर सदा नीं रैवण वाळौ है, पण प्रभु तौ पूरण अर सदा रैवण वाळा है। ग्यान अर सतसंग रै बिना औ अंधारौ मिटै कोनी, जिण सूं मानवी, झूठा संसारी सुख नैं ही साचौ मान भगवान री भगती रा सुख कानी लागै कोनी। ब्रह्म नै पावण सूं मिलण वाळौ सुख ही साचौ, हमेस रैवण वाळौ अर आणंद देवण वाळौ है।

धरम री धारणा है कै भगत अर ग्यानी सदा सुखी रैवै।

त्याग सूं प्रेम, प्रेम सूं सुख अर सुख सूं सांति रौ जलम होवै। हेत रौ आधार है त्याग अर उणनै समूळ खतम करण वाळौ है स्वारथ। अनुभूत साच औ ही है कै जठै प्रेम है बठै ही सुख है अर जिण जगां सुख है सांति भी उण ठौड़ है। सुख मीठा बोलां सूं भी मिळै, इण खातर ही तुलसीदासजी कैयौ है—

'तुलसी' मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुं ओर।
वसीकरन यह मंत्र है, परिहरू बचन कठोर।।

मीठा बोल बोलनै जद किणी नैं बस में करयौ जाय सकै है तौ कठोर वचन क्यूं बोलणा?

स्वीडिस कहावत है कै— बांट लेवण सूं सुख दुगणौ व्है अर दुख आधौ। इण खातर सुख अर दुखां नै बांट लेवणा चाइजै। आपां दूजां नैं सुख देयनै ही सुखी रैय सकां हां। ओरां नैं दुख देयनै आपां सुखी नीं रैय सकां। सुख रौ भरपूर आणंद लेवण खातर उणनैं बांटणौ जरूरी है।

सुख रै पछै दुख अर दुख रै पछै सुख आवै। औ विधि रौ विधान है—

सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत।
दिवस गये निसि उदित, निसिगत दिवस उदोत।।

बुराई सूं सुख घटै अर दुख बधै—

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावे कोय।
बोवै पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते होय।।

सुख री पिछाण है खुली हंसी अर छिपी मुस्कान। सुखी वौ कोनी जिणरै कन्नै सो-कीं है—पण जिणरै कन्नै जिकौ है उण सूं तुस्ट रैवण वाळौ ही सुखी है। इण तरै संतोस रौ दूजौ नांव ही सुख है। म्हारै कन्नै कांई है—इणसूं सुख नीं मिळै, पण जिकौ है उण सूं राजी अर तुस्ट रैवणौ ही सुख है। ईमानदारी भी सुख देवण वाळी है।

धन सूं सुख खरीद्यौ नीं जा सकै, फगत आपां मन रौ रंजण खरीद सकां हां। सुख रौ भोग भोगणौ जठां तांई दोरौ है जद तांई कै आपां उणनैं पैदा नीं करां।

दुख भी प्राणी रै हीयै री पीड़ सूं उपजै। है तौ औ मन अर हीयै रौ भाव, पण इणरौ सबसूं बेसी असर काया पर पड़ै।

दुख दो तरै रा होवै— अेक काया रौ अर दूजौ हीयै रौ। किणी तरै री विपदा जिणमें काळ पड़णौ, बाढ अर तूफान आवणौ, आग लागणी, अकाळ मौतां होवणी, भूचाळ आवणौ, बीजळी पड़ै, लावौ निकळै जैड़ा संकट आवै तद मिनख ही नीं आखौ प्राणी जगत दुखी होवै, तद प्राणी री काया अर मन हीयै नै पीड़ झेलणी पड़ै।

चिंता दुख रौ भारौ है। डर सूं भी दुख उपजै। दुख रा दिन लांबा अर सुख रा दिन छोटा हुया करै। दुख रौ अेक पल भी अेक जुग रै बरोबर लागै, पण सुख री छियां ढळतां कीं जेज नीं लागै। बीत्योड़ा दुखां नैं कदैई याद नीं करणा चाईजै।

दुखां री सरुआत आखरां सूं व्है। बळता खीरा सो अेक-अेक आखर मन अर तन दोनुवां नैं झुळसा देवै। सुख री लालसा दुख रौ ही अेक रूप है। जिण कदैई दुख नीं देख्यौ, वौ सब सूं बडौ दुखी है। दुख रौ अेक कारण करजौ भी मानीज्यौ है। इण खातर मिनख नैं जे सुखी रैवणौ होवै तौ करज लेवण सूं बचणौ चाईजै।

देह रा इण दुख सूं हीयै रौ दुख घणौ दुखदाई होवै। गाळी-गळौज करण, तानौ मारण, स्राप-दुरासीस देवण, चिड़ावण, मान घटावण, नीचौ दिखावण, निंदा, बदनामी अर चुगली करण, बात नैं बार-बार काटण, ठगी अर चोरी करण, बिना कारण सतावण, घात करण, जमीन, जोरू, धन-संपदा अर घर दबावण, दियोड़ी वसत नैं खावण री नियत करण, बणता काम अर बधोतरी में रोड़ौ अटकावण, मां, भाण, बेटी अर लुगाई नैं बुरी निजर सूं देखण, धरम, देवी-देवता, आस्था विस्वास, मानीता सत्पुरुसां, लोकनायकां, वीरां, धीरां खातर ओछा बोल बोलण वाळा या बुराई करण वाळां सारू मानवी मन में दुख री झाळ उठ्यां बिना नीं रैवै। मन, वाणी, सरीर अर करम सूं दुख अर सुख उपजै।

भगवान मनु कैवै— जिकौ बारली जिनसां रै अधीन है, वौ सगळौ दुख है अर जिकौ आपणै अधिकार में है, वौ सुख है।

भोग सूं बैर-भाव पनपै अर बैर सूं दुख रौ जलम हुवै जिणसूं असांति फैलै। भोगी मिनख भोग कानी ही

आसक्ति राखै अर जिकौ उणरै भोग में बाधक बणै उणसूं बैर राखै— बैर-भाव सूं दुख अर दुख सूं आसक्ति, औ चक्कर चालतौ ही रैवै।

इण संसारी दुख सूं दुखी मनुज करतार री सरण लेवै, पण भगतां अर संतां रौ कैवणौ है—

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जे सुख में सुमिरन करै, दुख काहै को होय।।

जठै त्रस्या, राग, द्वेष अर ईरखा है, बठै सुख कठै? दुख अर सुख में समभाव राखण वाळौ मनुज जोगी पुरुसोत्तम मानीज्यौ है।

धरम दुख नैं समूळ खतम करण खातर परम सुखदायक परमात्मा री सरण में जावण री बात कैवै। भगत रौ दुख भगवान मिल्यां सूं ही मिटै अर दुख में ही प्रभु याद आवै। सुख में मिनख भगवान नैं याद ही नीं करै। दुख क्यूं जलमै? उण रा कारण अर हेतु कांई है? इण बात पर विचार करां तौ लखावै कै यूं तौ दुख रा घणकरा कारण है, पण मूळ कारण है आपणी मनचींती नीं होवण सूं दुख उपजै। मिनख सोचै कीं है अर होय जावै कीं, तद दुख होवै।

समाज में मान घटणौ भी दारुण दुख रौ कारण है। विसय भोग कानी राग दुख रौ मूळ बणै। गरीबी अर करजदार होवणौ दुख उपजावण वाळा दो सीगा है।

दुख पूरबला करमां रौ फळ भी मानीजै। भगवान भी जद मानवी देह धारण करै तद वांनै भी काया रा अै दुख भोगणा ही पड़ै।

दुख रौ कारण मोह अर आसक्ति भी है। औ म्हारौ है। म्हारौ इणरै साथै संबंध है— मां, बाप, भाई, भाण, बेटी-बेटौ, दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी, साळी-साळौ-बैनोई, नणदोई न जाणै कित्ता संसारी रिस्ता-नाता है जिकां रै मोह बंधण सूं औ मानवी बंध्योड़ौ है।

दुख रौ कारण अग्यान है, क्यूं कै सुख-दुख तौ घिरती-फिरती छियां है। जठै सुख है बठै दुख आवणौ ही है। इण जग में सुख कमती अर दुख बेसी रैवै। दुखां रौ सोच न करणौ ही दुखां सूं मुगती रौ मारग है। दुख नैं हंस नै काटै वौ ही सुखी रैय सकै। महाभारत में छह तरै रा दुखियां रौ खुलासौ करतां कहीज्यौ है कै दूजां सूं ईरखा राखण वाळौ, घिरणा करण वाळौ, असंतोसी, रीसाळू, संका करणहार, परधन सूं जीवण वाळौ— अै छह संसारी दुखी है।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

आसक्ति=लगाव, प्रेम। कळेस=भावां रौ द्वंद्व, पीड़ या दुख रौ दरद। दण्ड=यातना, दुख। नंदनवन=सदा सुख देवण वाळी सरस सजीवनता। रीस=किरोध, गुस्सौ, झाळ। मुस्कान=मुळक, मधरी हंसी। मनचींती=मन री इच्छा, मन में सोच्योड़ौ। ईरसा=ईरस्या, ईढ। देह धरैका— देहधारियां रा।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'मणिमाळ' किण विधा री पोथी है?

(अ) निबंध री (ब) कहाणी री
(स) नाटक री (द) संस्मरण री

( )

2. 'सुख-दुख' निबंध रा रचयिता रौ नांव—
   (अ) डॉ. गजादान चारण (ब) डॉ. मनोज स्वामी
   (स) रवि पुरोहित (द)प्रो. कल्याणसिंह शेखावत
   ( )

3. 'सुख-दुख' निबंध रौ रूप है—
   (अ) वरणनात्मक (ब) राजनीतिक
   (स) भावनात्मक (द) आं मांय सूं अेक ई कोनी
   ( )

4. 'सुखिया सब संसार है' तौ दुखी कुण है ?
   (अ) तुलसीदास (ब) कबीर
   (स) सूरदास (द) रसखान
   ( )

5. दुख रौ मूळ कारण है—
   (अ) संचय रौ भाव (ब) बैर रौ भाव
   (स) त्याग रौ भाव (द) संतोस रौ भाव
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'देह धरै रा दण्ड है सब कोऊ को होय' ओळी रौ भाव लिखौ।
2. इच्छावां किण नदी जितरी विसाल है ?
3. स्वीडिस कहावत रौ म्यानौ देवौ।
4. सुख किण सूं मिळ सकै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. आदमी नैं सुख अर दुख क्यूं भोगणा पड़ै ?
2. 'संतोसी सदा सुखी' लेखक क्यूं कैवै ?
3. मनु कांई कैवै ? इण निबंध मांय सूं लिखौ।
4. कांई धन सूं सुख मोलायौ जाय सकै ? इण विसय में दो ओळ्यां मांडौ।
5. 'भोग सूं बैर-भाव पनपै।' इणरौ कांई कारण है अर बैर-भाव सूं कांई मिळै ?

बडा पडूत्तर वाळा सवाल

1. सुख-दुख जैड़ा भावां नैं लेयनै निबंध लिखण रै लारै लेखक रौ मूळ ध्येय कांई रैयौ होवैला ? आपरा विचारां में खुलासौ करौ।
2. सुख-दुख निबंध रौ सार आपरा सबदां में लिखौ।
3. लोक मानता रै मुजब सुख पुण्य सूं अर दुख पाप सूं मिळै। इण कथन रौ खुलासौ करौ।
4. धरम ग्रंथां अर संत-भक्त कवियां सुख-दुख रै वास्तै आपरा कांई-कांई विचार राख्या है। इणरौ वरणाव दूहां रा दाखलां सागै करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. सुख री पिछाण है खुली हंसी अर छिपी मुस्कान। सुखी वौ कोनी जिणरै कन्नै सो-कीं है—पण जिणरै कन्नै जिकौ है उण सूं तुस्ट रैवण वाळौ ही सुखी है। इण तरै संतोस रौ दूजौ नांव ही सुख है। म्हारै कन्नै कांई है—इणसूं सुख नीं मिळै, पण जिकौ है उण सूं राजी अर तुस्ट रैवणौ ही सुख है। ईमानदारी भी सुख देवण वाळी है।

2. दुखां री सरुआत आखरां सूं व्है। बळता खीरा सो अेक-अेक आखर मन अर तन दोनुवां नैं झुळसा देवै। सुख री लालसा दुख रौ ही अेक रूप है। जिण कदैई दुख नीं देख्यौ, वौ सब सूं बडौ दुखी है। दुख रौ अेक कारण करजौ भी मानीज्यौ है। इण खातर मिनख नैं जे सुखी रैवणौ होवै तौ करज लेवण सूं बचणौ चाईजै।

3. धरम दुख नैं समूळ खतम करण खातर परम सुखदायक परमात्मा री सरण में जावण री बात कैवै। भगत रौ दुख भगवान मिल्यां सूं ही मिटै अर दुख में ही प्रभु याद आवै। सुख में मिनख भगवान नैं याद ही नीं करै। दुख क्यूं जलमै ? उण रा कारण अर हेतु कांई है ? इण बात पर विचार करां तौ लखावै कै यूं तौ दुख रा घणकरा कारण है, पण मूळ कारण है आपणी मनचींती नीं होवण सूं दुख उपजै। मिनख सोचै कीं है अर होय जावै कीं, तद दुख होवै।

4. दुख रौ कारण अग्यान है, क्यूं कै सुख-दुख तौ घिरती-फिरती छियां है। जठै सुख है बठै दुख आवणौ ही है। इण जग में सुख कमती अर दुख बेसी रैवै। दुखां रौ सोच न करणौ ही दुखां सूं मुगती रौ मारग है। दुख नैं हंस नै काटै वौ ही सुखी रैय सकै। महाभारत में छह तरै रा दुखियां रौ खुलासौ करतां कहीज्यौ है कै दूजां सूं ईरखा राखण वाळौ, घिरणा करण वाळौ, असंतोसी, रीसाळू, संका करणहार, परधन सूं जीवण वाळौ— अै छह संसारी दुखी है।

❑रेखाचितराम

चामळ का घाट पे

अतुल कनक

लेखक परिचै

अतुल कनक रौ जलम 16 फरवरी, 1967 नै कोटा जिलै री रामगंज मंडी में होयौ। राजस्थानी रा चावा कवि, कथाकार, आलोचक अर उल्थाकार अतुल कनक री राजस्थानी में 'आओ बातां करां' (कविता-संग्रै), 'जूण जातरा' अर 'छेकड़लो रास' (उपन्यास) अर राजस्थानी भासा को मध्यकाल (आलोचना), हिन्दी में 'पूर्वा' (गीत-संग्रै), 'चलो चूना लगाएं' (व्यंग्य संग्रै) अर 'प्रेम में कभी-कभी' (प्रेम कवितावां) छप्योड़ी पोथ्यां। राजस्थानी अर हिंदी रै अलावा अंग्रेजी में ई लेखन। देस री नामी पत्र-पत्रिकावां में दस हजार सूं बेसी रचनावां छप्योड़ी। उपन्यास 'जूण जातरा' सारू साहित्य अकादेमी, दिल्ली रै राजस्थानी पुरस्कार समेत मोकळा इनाम-इकराम। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर अर वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा रै पाठ्यक्रम मांय रचनावां सामल। मंच रा ई चावा कवि। दूरदरसण सारू केई वृत्तचित्रां अर दो धारावाहिकां रौ लेखन। भासा, साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास, पुरातत्त्व अर लोकजीवण आपरी लेखकीय रुचि रा खास विसै। अबार कोटा में रैवै अर साहित्य लेखन रै साथै-साथै पत्रकारिता करै।

पाठ परिचै

'चामळ का घाट पे' अतुल कनक रौ लिख्योड़ौ भावपूर्ण रेखाचितराम है। बदळतै बखत में आपरै प्राकृतिक संसाधनां सारू लोगां री धारणावां अर आस्थावां ई बदळती जा रैयी है। अैड़ै बखत में लेखक चंबल नदी सारू आपरी आस्था प्रगट करी है। लेखक नदी रौ मानवीकरण करता थकां उणरी तुलना मां सूं करै अर बतावै कै आज री भाजानासी री जिंदगाणी में इण मां री बेकदरी होय रैयी है। लेखक साची कैवै— 'जीं कोई सूं कोय कारज न्हं सधतो दीखे, ऊं के कनै जाबा की फुरसत छै कुण के गौड़े?' इण रेखाचित्राम में लेखक रा दारसणिक भाव प्रगट होया है। हाड़ोती बोली रौ मीठास लियां औ रेखाचित्राम आपणी कुदरती चीजां सारू मिनखां रै मोहभंग माथै चिंता प्रगट करै।

चामळ का घाट पे

नरा दनां पाछै चामळ (चंबल नदी) का यां घाटां का दरसन कर्‌या। पिताजी याद आयग्या। बालपणां में वांकी आंगळी पकड़नै नरी बेर यां घाटां पे आयो छूं। घणां उछाह सूं वां मनैं ब्हैती धारा बीचै तिरबौ सिखायौ छौ। ऊं बगत तांई म्हारै गौड़े न्हं तो वांका उछाह अर उमाव के तांई प्हैचाणबा की सामरथ छी अर न्हं ही हूंस। पण अब जद खुद बाप बण्यौ छूं तौ समझ सकूं छूं के कोय बाप के तांई आपणी औलाद के तांई तिरबौ सिखाबा में कांई सुख मिळै छै। बाप सूं बधकर जगत का समदर में तिरबा की चोखी सीख दे भी कुण सकै छै? पिताजी घाट पे मनख्यान् सूं बतियाता होता, तौ भी म्हूं छपाक सूं नदी में कूद जातो। पिता को होबो ही म्हां के तांई सगळी चिंतावां अर सगळा डरप सूं कश्यां बचा ल्ये छै, यौ साच म्हूं पिताजी का रामसरण होयां पाछै जाण्यौ। घाट पे ऊबौ छौ तौ जाणै घाट ओळमौ दियौ, ''आज अेकलो कश्यां आग्यो भाया? पिताजी चिंता करेगा न!''

म्हूं समझूं छूं, घाट का म्हैड़ला की बात। यां की आंख्यां में तौ अबार भी वै ही चतराम छै— कै म्हूं छणीक-सी जेज आंख्यां सूं दूरै सरकतौ तौ पिताजी की आवाज नदी को काळज्यौ चीर देती, ''पम्मी, ओ पम्मी...'' अब न्हं वश्यां हेलौ पाड़बा हाळा पिताजी जगत में रया अर न्हं घाट पे वशी रौनक। लारला बरसां में चामळ का बंधा सूं होयनै कतनौ पाणी खड़ग्यौ, तोळ ही न्हं पड़ी।

देखतां ही देखतां जिनगाणी कतनी बदळगी ? कोई बगत छौ जद मनख या घाटां पे ही परभाती गाकर आपणा दन की सरुवात करै छौ। आज तो शहर तगात में नरा मोट्यार अश्या छै, ज्यांनै अबार तांई यां घाटां को मूंडौ ही न्हं ओळख्यौ होवैगौ। मनख्यां की जरूरतां बदळगी। जमारौ मुट्ठी में सिमटकर कांई आयौ, काळज्या भी जाणै सिकुड़ग्या। जीं कोई सूं कोय कारज न्हं सधतौ दीखे, ऊं के कनै जाबा की फुरसत छै कुण के गौड़े ? नदी तो नळ का पाइप में हो-होकर घर-घर तांई पूगगी, अब नदी तांई पूगबा की गरज कुण के छै ? फेर, जद नदी आप आपणां अस्तित्त बेई मोटी लड़ाई लड़ती होवै तौ यां घाटां को महत्त तो नदी सूं ही छै। गंगा होवै कै चामळ, म्हंई लागै छै कै वां कै सिराणै ऊब्या घाट म्हां मनख्यां का माजणां ईं देखकर अतनी जोर सूं कचकची खाता होवैगा कै वांका डील में ही ठांव-ठांव पे जखम पड़ग्या।

नद्यां कोय का सुख में पांती न्हं पाड़ै, लगौलग पुन्न की पांती बांचै छै। पण ईं दौर में वांका नीर ईं भी लीर-लीर करबा हाळी राजनीति तौ पुन्न की पूण्यूं पे राहू बणकर ग्रहण लगा र्‌ही छै। लोग नद्यां पे भी हक जता रया छै। नद्यां के तांई आपणी मूठी में बांध लेबा को सुपनो सजाबा हाळा यां मनख्यां सूं कोय पूछै कै नद्यां तौ सबकी महतारी छै अर महतारी की ममता पे कोय अेक ही बेटा को अधिकार न्हँ होवै। पॅण या बात वे लोग न्हँ समझ सकै छै, ज्यांनै घाटां सूं लिपटकर ब्हैती नदी को बहाव न्हं देख्यो होवै।

बालपणां में ज्यां घाटां पे मनख्यां को मजमौ देखै छौ, अब वां ही घाटां पे सरणाटो पसर्‌यौ छौ। घाट पे अेक आड़ी थरप्या शिवलिंग (शिवजी की पिंडी) ईं देखकर लाग्यौ, मानौ कोई बूढाकर हरिनाम जपकर मनखजूण का तमाशा ओळख र्‌यौ छै। जश्यां कोय भर्‌या-पूरा घर में अेकलौ बूढाकर हाउजी, किटी पार्टी, कंप्यूटर जश्यां कौतुकां सूं परै जाकर आपणी कोठरी में ईं आस सूं सुमरनी का मनक्या फैरतो र्‌हे छै कै कोय तौ मनक्यौ मौत की मंसा पूरेगौ। पण कांई नदी अर ऊं का घाट भी अतना परबस अर बूढा हौ सकै छै ? जीं दन नद्यां मौत मांगणी सरू कर दी, ऊं दन मनख जमारौ कांई करेगौ ?

... और की कांई क्हूं, म्हारा बालपण की तो नरी यादां यां घाटां सूं गूंथी होई छी, पण म्हूं आप भी तो बरसां पाछै चामळ का ईं तीर पे आयौ छूं। आयौ कांई छूं, आणौ पड़्यौ। म्हां लोग यां दनां नदी तीरै जावां ही कद छां ? जद कोय रामसरण हौ ज्यावै छै तौ मसाणां सूं बावड़ती बगतां शुद्धि को लालच म्हां के तांई घाट की आड़ी धकेल दयै छै। मसाणी माटी का अपसगुन सूं मुगती को लालच न्हं होतो तौ आज भी कुण जातौ घाट पे ? अब तौ नरा मनख ईं रीत की भी काट खाड़ ल्यै छै। नळ के पींदै बैठ जाबा सूं ही जे कारज सध जाता होवै तौ फेर नदी का घाट की पैढ्यां कुण उतरै ?

जे चीज काम में न्हं आवै, वा हवळै-हवळै आपणौ महत्त खो दयै छै। घाट तौ अब आपणौ रूप भी खोबा लागग्या। उठी पड़्या कूड़ के तांई ओळखकर घिन आबा लागी। कदी ये ही घाट मुळकै छा अर मुळकावै छा। आप आपणां हाल पे अर जमारा का बरताव पे खून का आंसू ओसरता दीखै छै। म्हंई बालपणां में हेत लड़ाबा हाळौ घाट गंदगी सूं आंथड़ र्‌यौ छौ। नदी कशी साता में छी ? ऊं में भी मनख कूड़ पटक र्‌या छा। मानता क्हैवै छै कै पाणी में कूड़ पटक्यां सूं पाप बदै छै। म्हनै सोची कै बालपणा की ओळूं दोन्यूं हाथां सूं अंगेज ल्यूं। ईं के बेई घाट सूं कूड़ हटाबौ भी जरूरी छौ। पण जद सगळौ शहर नदी में कूड़ पटककर पाप कमा र्‌यौ होवै तौ म्हूं ढोबौ भर पुन्न करके भी कश्या कारज साध लूंगौ ?

म्हूं सोच में डूब्यौ थकौ छौ, म्हारै लारै आया मनख चाल पड़्या। म्हंई सोच में डूब्यौ देख अेक बेली नैं सुझाव दियौ, ''आप मूंडा अर माथा पे आलौ हाथ फेरल्यौ भाई साहब! फेर घरां जाकर नहा लीजौ।'' ऊ समझ्यौ कै म्हूं गंदळा पाणी में उतरबा सूं डरप रयौ छूं। म्हूं ऊं के तांई कांई समझातौ? म्हूं या बात भी जाणै छौ कै उठी रुकबा की थरता कोय में कोय न्हं। म्हूं भी भीड़ के सागै आगै बदग्यौ।

घाट सूं ऊपरै चढता सतां म्हंई लाग्यौ जाणै कोय आवाज छै, जे क्है र्‌ही छै, ''फेर आइजै बेटा! थारी ओळूं सतावै छै अर थासूं दो बोल बोलबा को मन करै छै।'' म्हारै तांई उपेक्षा अर अेकलोपण झेलती वा जामण याद आगी, जीं नै घणां उमाव सूं अेक मकान बणायौ छौ, पण मोट्यार होतां ही पेट का जाया बेटां नै अेक अेक करके सगळा कमरा पे कब्जो कर ल्यौ अर अब डोकरी की खाट पैढ्यां के सौढै बणी अेक छोटी-सी कोठरी में बिछी छै। खाट घर सूं बारै भी जा सकै छी, पण अब मां की पेंसन सूं नरा कारज सध जाबा को लालच मां को महत्त अतनौ भी न्हं नकारबा दयै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

नरा=खासा। दनां=दिनां। चामळ=चम्बल। नरी बेर=खासा देर। उछाह=उत्साह। उमाव=चाव। गौड़े=कनै। हूंस=इच्छा। मनख्या=मिनखां। रामसरण=निधन। म्हैड़ला=मन। खड़ग्यौ=निकळग्यौ। तोल=अंदाजौ। ओळख्यौ=पिछाण्यौ। सधतौ=सिध होवतौ। माजणां=औकात। महतारी=माता। ईं=नै। आड़ी=कानी। तीर=किनारौ, कांठौ। मसाणां=समसाणां। हवळै-हवळै=धीरै-धीरै। कूड़=कूटळौ। ओसरता=बैवणा सरू होवता। म्हंई=म्हनैं। आंथड़ रयौ=भर्‌योड़ौ। साता=चैन। ढोबौ=धोबौ। थरता=धीरज। सतां=थकां। ओळूं=याद। जामण=माता। पैढ्यां=देहरी, थळी। सौढै=नजदीक।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. बाळपणै में लेखक नैं चामळ रा घाट माथै कुण ले जावता हा?

(अ) पिताजी (ब) दादोसा

(स) नानोसा (द) काकोसा

( )

2. रेखाचितरामकार 'नदी' नैं किणसूं बेसी मानी है?

(अ) बैन सूं (ब) नवी बीनणी सूं

(स) मां सूं (द) भुवा सूं

( )

3. चामळ रा घाट माथै कांई बदळाव देखनै लेखक दुखी है?

(अ) पाणी कम होवण सूं (ब) सरणाटौ पसरण सूं

(स) घाट टूट-फूट जावण सूं (द) मिनखां रौ मेळौ मंडण सूं

( )

4. घाट सूं पाछौ ऊंची चढती बगत लेखक नैं कांई आवाज सुणण रौ लखाव होवै ?

(अ) लोगां नैं अठै मत आण दीजै ! (ब) अब कदैई मत आइजै !

(स) जोड़ायत नैं सागै लाइजै ! (द) फेर आइजै, बेटा !

( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. अतुल कनक नैं साहित्य अकादेमी पुरस्कार कुणसी पोथी माथै मिल्यौ ?
2. इण रेखाचितराम मांय राजस्थानी भासा री कुणसी बोली रौ मीठास है ?
3. लेखक नैं तिरणौ कुण सिखायौ ?
4. लेखक रौ बाळपणै में नांव कांई हो ?
5. 'माता' सबद रा दोय पर्याय बतावौ, जिका इण पाठ में आया है।

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. अतुल कनक री राजस्थानी पोथ्यां रा नांव लिखौ।
2. अतुल कनक री लेखकीय रुचि रा खेत्र कुण-कुणसा है।
3. पिताजी घाट माथै मिनखां सूं बतळावता तद लेखक कांई कर जावतौ ?
4. रेखाचितराम 'चामळ का घाट पे' मुजब पैली लोग दिन री सरुआत किण भांत करता ?
5. ''बाप सूं बधकर जगत का समदर में तिरबा की चोखी सीख दे भी कुण सकै छै ?'' ओळी रौ म्यानौ द्यौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'चामळ का घाट पे' रेखाचितराम री मूळ संवेदना विगतवार बतावौ।
2. इण रेखाचितराम में लेखक नदी रौ मानवीकरण किण भांत कर्‌यौ है ? खुलासौ करौ।
3. इण रेखाचितराम रै आधार माथै खुलासौ करौ कै आज कुदरती चीजां सारू मिनखां रौ मोहभंग होवतौ जाय रैयौ है ?
4. इण रेखाचितराम रै आधार माथै अतुल कनक री भासा-सैली अर लेखन-कला विस्तार सूं समझावौ।
5. ''रेखाचितराम 'चामळ का घाट पे' में लेखक अतुल कनक रा दारसणिक भाव प्रगट होया है।'' खुलासौ करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. नरा दनां पाछै चामळ (चंबल नदी) का यां घाटां का दरसन कर्‌या। पिताजी याद आयग्या। बालपणां में वांकी आंगळी पकड़नै नरी बेर यां घाटां पे आयो छूं। घणां उछाह सूं वां मनैं ब्हैती धारा बीचै तिरबौ सिखायौ छौ। ऊं बगत तांई म्हारै गौड़े न्हं तो वांका उछाह अर उमाव के तांई प्हैचाणबा की सामरथ छी अर न्हं ही हूंस।

2. बालपणां में ज्यां घाटां पे मनख्यां को मजमौ देखै छौ, अब वां ही घाटां पे सरणाटो पसर्‌यौ छौ। घाट पे अेक आड़ी थरप्या शिवलिंग (शिवजी की पिंडी) ईं देखकर लाग्यौ, मानौ कोई बूढाकर हरिनाम जपकर मनखजूण का तमाशा ओळख र्‌यौ छै।

3. जे चीज काम में न्हं आवै, वा हवळै-हवळै आपणौ महत्त खो द्यै छै। घाट तौ अब आपणौ रूप भी खोबा लागग्या। उठी पड़्या कूड़ के तांई ओळखकर घिन आबा लागी। कदी ये ही घाट मुळकै छा अर मुळकावै छा। आप आपणां हाल पे अर जमारा का बरताव पे खून का आंसू ओसरता दीखै छै।

❑व्यंग्य

सवाल शुद्धता रौ

डॉ. भगवतीलाल व्यास

लेखक परिचै

डॉ. भगवतीलाल व्यास रौ जलम 1941 में होयौ। आप अेम.अे., अेम.अेड. तक भण्योड़ा है। आप लारलै पांच दसकां सूं राजस्थानी साहित्य री सेवा कर रैया है। आप राजस्थानी में पद्य अर गद्य दोन्यूं विधा में लिखै। 'अणहद नाद', 'अगनी मंतर' अर 'सबद राग' आपरा चावा कविता-संग्रै है। कविता टाळ आप कहाणी अर व्यंग्य भी लिखै। आप राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर री मासिक पत्रिका 'जागती जोत' रौ केई बरस संपादन ई करयौ। आपनैं के. के. बिड़ला फाउंडेशन कानी सूं 'बिहारी पुरस्कार', साहित्य अकादमी, दिल्ली कानी सूं 'राजस्थानी पुरस्कार', महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन, उदयपुर कानी सूं 'महाराणा कुंभा अवार्ड' अर राजस्थान रत्नाकर कानी सूं राजस्थानी पुरस्कार मिळ चुक्या है। इणां रै टाळ ई केई इनाम-इकराम। बरस 2014 में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर कानी सूं आपरै व्यक्तित्व अर कृतित्व माथै मोनोग्राम छप्यौ।

पाठ परिचै

'सवाल शुद्धता रौ' व्यंग्य रचना आज रै आपा-धापी रै जुग में मिलावट माथै चोट करै। इणमें धणी-लुगाई रै पात्रां रै माध्यम सूं दूध री शुद्धता नैं लेयनै सामाजिक विसंगति रौ सांगोपांग व्यंग्यात्मक चित्राम उकेरण री कोसीस करीजी है। मिलावट री इण दुनिया में सामाजिक संबंध ई प्रभावित होवै है, इण कानी भी आ व्यंग्य-रचना इसारौ करै। लेखक व्यंग्य रै सायरै सामाजिक तानै-बानै रै सागै मिनख मांय पसरती खोट अर उणरौ सामाजिक अर मनोवैग्यानिक असर घणै सांगोपांग ढंग सूं बतायौ है। पुराणा अखाणां नैं उघाड़ता साच सूं परिचै करावै। पाठक रै मन में जथारथ रौ चानणौ करै। आज रै जुग री सब सूं मोटी समस्या मिलावट अर गिरावट है। इण रा दरसण हर ठौड़ निगै आवै। आलंकारिक भासा अर मुहावरैदार सैली घणी असरदार है। 'सवाल शुद्धता रा' रौ साचाणी आज रै जुग री मोटी अबखायी अर अबखौ सवाल ई है। हवा में भांग घुळण रौ कैयनै लेखक मिलावट रौ फैलाव अर प्रभाव बतावण री कोसिस करी है। व्यंग्य, हास्य, रोचकता आद विसेसतावां नैं अंगेजतौ औ व्यंग्य मिनख री सोच रौ साचौ चित्राम है।

सवाल शुद्धता रौ

आपां रै देस में दूध, दही रौ तोड़ौ नीं तौ पैलां कदैई रैयौ अर नीं आज है। जिका लोग दूध-दही रौ रोवणौ रोवै वै या तौ देस में हुयी श्वेत-क्रांति सूं अणजाण है या निहित स्वारथां सूं घिरयोड़ा है।

रैयी बात शुद्ध दूध री। शुद्ध दही तौ आपै ई मिळ जासी जे दूध शुद्ध होसी। जावण में कोई कित्तीक मिळावट करसी। सैंग रोळौ इण दूध री शुद्धता रौ इज तौ है। शुद्धता अेक भरम है। आ बदळती रैवै है। अबै पैलां जिस्यौ शुद्ध सोनौ ई नीं रैयौ तौ दूध-दही री कांई बात? आ तौ अपणी-अपणी समझ री बात है कै कोई शुद्धता रै मामलै में नब्बै प्रतिशत सूं नीचै समझौतौ ई नीं करणौ चावै तौ कोई पचास-पिचपन सूं ही काम सरा लेवै। आ बात तौ खराखरी है कै सौ प्रतिशत शुद्धता खाली विग्यापनां में इज देखी-सुणी जा सकै है।

विस्वास करावौ। म्हनैं तथ्यां नैं तोड़-मरोड़नै परूसवा रौ शौक कदैई नीं रैयौ। आप चावौ तौ इतिहास-पुराणां सूं प्रमाण दिया जा सकै। अबै इणी बात नैं इज लोग कैवै है कै पुराणै जमानै में घी-दूध री नदियां बैवती ही। आप ई सोचौ कै जे नदियां में घी-दूध बैंवतौ हौ तौ उणमें पाणी नीं मिळतौ हौ कांई? आ तौ हौ नीं सकै कै पैलां शक्तिशाली पम्प-सेटां री मदद सूं सगळा नदी-नाळा खाली करीजग्या व्हैला अर पछै उणां में घी-दूधां रा टैंकर खाली कीधा व्हैला। छनीक देर रै वास्तै आ बात मान भी लेवां तौ महताऊ सवाल औ उठै है कै नदी-नाळां सूं खाली कीधोड़ौ पाणी अेक दिन में तौ भाप बणनै आभै चढवा सूं रैयौ। अबै कठै रैयी शुद्धता री बात? वौ पाणी भूमिगत जळ रै रूप में पाछौ नदियां-नाळां में बैंवतै दूध-दही-घी में बावड़ियौ इज होसी! म्हैं इण सारू इज बजुर्गां नैं वीणती करूं हूं कै पल-पल में पुराणै जमानै री घी-दूध री नदियां रौ नांव लेयनै नूंवी पीढी में हीण-भावना मत भरौ। उणरौ मनोबळ मत गिरावौ। इण सूं म्हारी आतमा नैं घोर संताप पूगै है अर म्हैं सोचूं कै म्हैं इण जमानै में पैदा क्यूं व्हियौ?

घी-दूध री नदियां बहावण री बातां करणियां आ ई भूल जावै कै जे सगळी नदियां में घी-दूध ई बैंवतौ हौ तौ बापड़ौ जळ कठै बैंवतौ? कांई खेती-बाड़ी में सिंचाई भी घी-दूध सूं इज होया करती ही। लोग सिनान ई घी-दूध सूं ई करता होवैला वां दिनां में? प्राचीन काळ रा रिसी-मुनियां री दिनचर्या तौ सिनान सूं इज सरू व्हैती ही। जे जळ नीं हौ तौ वै कियां काम चलावता होसी? अै जबरा सवाल है, जिणरा उथळा दीधां बिना घी-दूध री नदियां बैय नीं सकै।

पुराणै जमानै में राजा जिकी गायां दान में दिया करतौ हौ, वांरा सींगड़ा सोना सूं मंढावतौ। सवाल औ है कै शुद्ध दूध अर स्वर्ण में कांई संबंध है? जे गाय रौ दूध महताऊ हौ तौ सोना सूं सींगड़ा मंढावण री कांई जरूत ही?

म्हैं कैवणौ औ चावूं हूं कै मिळावट दूध में नीं, दूध रा विचार में आदकाळ सूं आज तांई होवती रैयी है अर आगै भी होसी। औ अेक मनोवैग्यानिक साच है कै ज्यूं-ज्यूं मिळावट बधसी, त्यूं-त्यूं ई शुद्धता रौ आग्रह ई बधतौ रैसी।

शुद्धता रौ आग्रह अेक निजू मामलौ है। इणमें नेम-कानून आडा नीं आ सकै। म्हैं आपनैं घरबीती इज अरज करूं तौ सायद बात खुलासा व्है जासी। म्हारी होवा वाळी लुगाई फेरां रै समै इज आ सरत राख दी ही कै म्हैं उणरै सारू दूजी भलांई कोई सुख-सुविधा जुटा सकूं कै नीं जुटा सकूं, कोई चिंता नीं, पण शुद्ध दूध री जुगाड़ म्हनैं आजीवण करणी पड़सी। म्हारी मत मारी गी ही कै उण घड़ी म्हनैं आ सरत भोत मामूली-सी लागी अर म्हैं नाड़ हिलायनै मंजूर कर लीधी। म्हनैं कांई ठा ही कै इण घड़ी नाड़ हिलावणौ कितरौ मूंघौ पड़सी। साथै ई म्हनैं इण बात रौ गुमेज ई होयौ कै म्हारी लुगाई कितरी शुद्धतावादी महिला है।

म्हैं म्हारा यार-दोस्तां नैं घणै गरब सूं कैवतौ, ''यार, थांरी भाभी बिचारी कितरी सीधी-सादी है। बंगलौ, कार, फ्रीज, रंगीन टीवी जिसी किणी सुविधा री फरमाइस नीं करनै फकत दो किलौ शुद्ध दूध हमेस लावा री

फरमाइस कीधी है।'' अनुभवी भायला म्हारी बात सुणनै 'नो कमेंट्स' री मुद्रा धारयां मंद-मंद मुळकता रैवता। म्हनैं वां दिनां उण मित्रां माथै रीस ई आवती। म्हैं मन ई मन सोचतौ कै अै लोग भावात्मक दीठ सूं कितरा कृपण है कै म्हारी लुगाई रै त्याग अर सादगी री सरावणा में दो सबद ई नीं कैय रैया है। पण बाद में जद असलियत साम्हीं आयी तौ म्हैं खुद री अनुभवहीणता माथै मन मसोसनै रैयग्यौ।

होयौ इयां कै ज्यूं ई वा आणै आई, म्हारै दुरभाग रा दिन सरू व्हैग्या। दूजै ई दिन दूधवाळा री छुट्टी कर दीधी। घरवाळी री पारखी आंख्यां उण दूध में मिळ्योड़ै पचास प्रतिशत पाणी नैं अेक दिन में इज देख लियौ अर म्हैं इणीज दूध नैं खालस समझनै लारलै पांच बरस सूं सेवन कर रैयौ हौ। म्हैं समझावण री कोसीस कीधी, ''भागवान! औ स्हैर है। भागजोग सूं आपणौ दूधवाळौ सतगुणी है, जकौ आधौ पाणी ई मिळा रैयौ है। औ तीन चौथाई भी मिळाय देवै तौ ई लोग उण तरल पदारथ नैं दूध इज कैवैला अर दूध लावणिया नैं दूधवाळौ कैयनै इज हेलौ पाड़ैला।''

म्हारौ तरक तौ बोदौ नीं हौ, पण ठा नीं क्यूं, घरवाळी भूंडै ढाळै बिफरगी अर अगन री साखी में खायी सौगन री याद दिरायदी। वा बोली, ''देखौ, फेरां री वेळा थे आ प्रतिग्या करी ही कै शुद्ध दूध रौ बंदोबस्त करोला। जे नीं कर सकौ तौ कोई हरज कोनी। म्हनैं म्हारै पीवर भिजाय देवौ। बठै घणौ ई धीणौ है। म्हनैं म्हारा मायत इस्यौ दूध पीवा सारू थोड़ै ई उछेरी है। म्हनैं आज सिंझ्या रा ई भेज दौ।''

आप समझ सकौ हौ कै अेक नूंवी परण्योड़ी पैल आणै आयोड़ी कामण रौ इस्यौ 'अल्टीमेटम' मरद री मरजाद नैं जड़ामूळ सूं हिलायनै रख दिया करै है। उण दिन सूं म्हारै चैन-आराम रौ पत्तौ कटग्यौ। दो दिन रै सोध-सर्वेक्षण रै बाद घरवाळी जकौ फरमान जारी करयौ कै काल सूं इज दूध 'आदर्श डेयरी' सूं आसी। फरमान रै सागै ई डेयरी री कूपन-बुक थमायनै बोली, ''सुबै छह बज्यां पूग जाज्यौ दूध लेवण नैं। कैतली साफ करनै परेंडै धरदी है।''

म्हैं आठ बजी तांई सोवण वाळौ। छह बज्यां डेयरी पूगण रौ फरमान सुणनै कांपग्यौ। पण होणी नैं कुण टाळ सकै?

फरमान जारी कीधां पछै ई श्रीमती जी नचींत नीं व्है सकी। घड़ी में पांच बज्यां रौ अलारम भर दियौ अर बोली, ''अलारम बाजतां ई उठ'र त्यार व्हैज्यौ। कोई आधीक घंटौ तौ त्यार होवा में ई लागसी। आधीक घंटौ पूगण में अर लाइन में लागवा में। जद कठैई शुद्ध दूध रा दरसण होसी।''

अलारम टैम माथै बाजणौ इज हौ। वौ बाज्यौ। पण उठणौ तौ म्हारै हाथ हौ। म्हैं नीं उठ्यौ। वा उठगी। थोड़ी देर म्हनैं देखती रैयी कै म्हारौ कर्तव्यबोध जागै! पण म्हैं नीं उठ्यौ तौ वा समझगी कै म्हारौ कर्तव्य म्हारै सूं ई ज्यादा निद्राप्रेमी है। बस, फेर कांई हौ? अेक झटकै सूं रजाई खेंचनै सिंघणी री तरै दहाड़ी, ''अेऽऽजी, सुणौ कै नीं? दूध नीं लावणौ कांई?''

औ अेक सबद 'अेऽऽजी' इतरौ पावरफुल व्हैला, म्हैं कदैई कल्पना भी नीं कीधी ही। जाणै कठां सूं म्हारै नींदाळू डील में गजब री फुरती बावड़गी। म्हैं उठ्यौ अर चपलां पैरतौ बोल्यौ, ''केतली कठै?''

केतली आई। डेयरी सूं दूध भी आयौ। सागै ई आयग्यौ जुकाम। चार दिन री सी.अेल.। डेढ-दो सौ रुपिया दवा-दारू में। म्हैं सोची, अब तौ सायद छुट्टी मिळ जासी डेयरी-जातरा सूं। पण छुट्टी म्हारै भाग में कठै? हां, थोड़ी रियायत मिळगी। संशोधित फरमान जारी होयौ— ''छह बज्यां री जगां सात बज्यां डेयरी पूगौ अर दूजी खेप सूं दूध लावौ।''

म्हैं संशोधित आदेश रौ पालन सरू कर दियौ। पण नंबर दो री खेप रौ दूध घरवाळी री पारखी आंख्यां में नंबर दो री कमाई ज्यूं अखरवा लागौ अर अेक दिन घोसणा होई— ''शुद्ध दूध रै खातर गाय राखांला। न डेयरी जावण

रौ झंझट अर न शुद्धता रौ संकट! घर री गाय व्है तौ दूध ई मन माफिक वापरौ। पीयौ अर पावौ। बच जावै तौ जावण न्हाख दौ। छाछ फेरौ। घी काढौ। जांका घरै दोझा वांका घर सोझा।'' घरवाळीजी घर री गाय रा गुणानुवाद अेक सांस में इण तरै करगी जिण तरै विग्यान रौ कोई छात्र फार्मूलौ बोल जावै अर अणमणियौ उणरै मूंछां कानी टक-टक न्हाळतौ रह जावै।

घरवाळी जी आपरै पिताश्री नैं संदेसौ भेज दियौ। पांचवैं दिन गाय हाजर। सागै ई ग्वाळ भी हाजर। बारह-तेरह बरस रौ अेक छोरौ। घरवाळी रै दूर रै रिस्तै में भतीजौ।

इण नूंवी व्यूह रचना नैं देखनै म्हनैं भावी विपत्ति रौ अनुमान व्हैतां देर नीं लागी। पण करयौ कांई जा सकै। जे म्हैं लगन मंडप में इज अै सगळी बातां सोच लेवतौ तौ कितरौ चोखौ होवतौ? घरवाळी सायद म्हारी मनस्थिति भांपगी। बोली, ''गाय किसीक लागी? ठीक है नीं? न घणी मोटी, न छोटी। पूळै भूखी अर पूळै धापी। घर में गाय राखणौ सास्त्रां में ई पुन्न रौ काम बखाणीज्यौ है। दिनुगै-दिनुगै ई गोमाता रा दरसण। धन्न भाग! म्हैं थांनै कैवूं हूं कै थे रोज गोमाता रा सगुन लेयनै दफ्तर पधारज्यौ। थांरी रुक्योड़ी तरक्की छह महीनै में नीं मिळ जावै तौ म्हनैं कैईज्यौ।'' कुसळ ज्योतसी री तरै घरवाळी म्हनैं सब्जबाग दिखा दिया। थोड़ीक ठैरनै बोली, ''औ गोपाळ है नीं, इणनैं तौ म्हैं खुद ई पांच-सात दिन में पाछौ गांव खिणा द्यूंला। बस, यूं समझौ कै गाय जमी, अर गोपाळ गयौ।''

जिण छत रै तळै दो प्राणी हा अचाणचक चार व्हैग्या। घरवाळी जी रौ बेसी टैम गो-गोपाळ सेवा में बीतबा लागौ। म्हारौ लिखणौ-पढणौ छूटग्यौ। आज गाय रै बांटौ लाणौ, आज कुट्टी लाणी, आज रजकै री बंधी बांधणी, आज गाय मांदी पड़गी। जिनावरां रै सफाखानै ले जावणी। चौमासौ छाती चढ्यौ तौ गाय रै टाप घालणी।

घर में पग मेलतां ई नित नूंवौ आदेस। आज गाय रै खातर औ करणौ, आज वौ करणौ। दो किलो शुद्ध दूध माथै जिनगाणी री सगळी खुसियां निछावर व्हैगी। नचींताई कपूर ज्यूं उडगी। म्हैं बेबस हौ।

थोड़ा दिनां पछै घरवाळी कैयौ, ''देखौ, थे तौ दफ्तर चल्या जावौ। मीटिंगां-फीटिंगां में बारै भी जावता ई रैवौ। सिंझ्या रा घरां भी मोड़ा ई आवौ। म्हैं इतरै बडै बंगलै में घबराऊं अेकली। नीं व्है तौ इयां करां कै इण गोपाळ नैं अठै ही राखलां। म्हारै भी बसती रैसी अर छोटा-मोटा काम भी सलटा देसी औ। स्कूल में भरती करा देवांला। विद्यादान रौ पुन्न भी मिलसी थांनै अर टाबर री जिंदगी बण जासी स्हैर में रैवा सूं।''

दान-पुन्न रा मामला में म्हैं म्हारै ससुराजी रै लारै कीकर रैवतौ? पैलां वां कन्यादान अर पछै 'गोदान' रौ पुन्न कीधौ तौ म्हनैं 'विद्यादान' रौ करणौ ई हौ।

पांच-छह महीनां पछै गाय डाकगी। म्हैं सोची कै कठैई घरवाळी पीहर सूं दूजी गाय मंगायनै डेयरी नीं खोलदै। पण म्हारी संका निरमूळ ही। घरवाळी बोली, ''गाय डाकगी है।''

म्हैं कैयौ, ''कोई बात कोनी। डेयरी सूं बंधी कर लेस्यां। अबै तौ गोपाळ है इज। लेय आया करसी।''

पण घरवाळी आपरै पीहर रै किणी प्राणी नैं कष्ट देवण रै पख में नीं ही। वा बोली, ''नीं रैवा दौ। डेयरी वाळा ई किस्यौ घी घालै है? मिनख री नीत में इज मिलावट बापरगी है। थे तो इयां करौ कै उणीज पुराणै दूधवाळै सूं बंधी बांध दौ। थोड़ा दिनां री ई तौ बात है। फेर तौ गाय ब्याय ई जासी।''

अेक बरस रै विवाहित जीवण में सायद पैली बार श्रीमतीजी रा मुखारविंद सूं इमरत जिसी वाणी सुणनै म्हैं अेडी सूं चोटी तांई पुलकित होयां बिना नीं रैय सक्यौ। म्हैं तुरता-फुरती साइकिल उठायनै पुराणा दूधवाळै सूं दूध री बंधी बांधवा निकळ पड़्यौ। म्हनैं संकौ हौ कै कठैई घरवाळी फेर कोई संशोधित आदेश जारी नीं कर देवै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

तोड़ौ=कमी, अभाव। छनीक=छिन भर, पल भर। गुमेज=अंजस, गौरव। दीठ=दृष्टि। आणै आई=पैली वळा सासरै आयी। बोदौ=पुराणौ, जूनौ। उछेरी=टोरी, भेजी। परेंडौ=पाणी रौ पळींडौ, मटकी राखण री ठौड़। डील=सरीर। दोझा=जिण घर में धीणौ होवै। न्हाळतौ=देखतौ, ढूंढतौ। खिणा द्यूंला=भेज देवूंला। डाकगी=टळगी, दूध देवणौ बंद कर दियौ। इमरत=अमृत।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. लेखक री घरवाळी फेरा सूं पैली कांई सरत राखी ?

   (अ) शुद्ध दूध री वैवस्था (ब)शुद्ध पाणी री वैवस्था

   (स) शुद्ध घी री वैवस्था (द) शुद्ध वातावरण

   ( )

2. लेखक री घरवाळी शुद्ध दूध लावण री पैलपोत वैवस्था कांई करी ही ?

   (अ) डेयरी सूं दूध लावणौ (ब)दूधवाळौ बदळ दियौ

   (स) गाय खरीदली (द) चौहटै सूं दूध लावण री

   ( )

3. लेखक री घरवाळी डेयरी सूं दूध लावण री पैलपोत वैवस्था किणनैं सूंपी ही ?

   (अ) खुद नैं (ब) गोपाळ नैं

   (स) धणी नैं (द) घरै पूगावण वाळा नैं

   ( )

4. पुराणै जमानै में राजा–महाराजा किण रौ दान करता हा ?

   (अ) गऊदान (ब)जमीं रौ दान

   (स) सोनै रौ दान (द) मोहरां रौ दान

   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. लेखक री लुगाई शुद्ध दूध सारू छेवट कांई वैवस्था करी ?
2. घी दूध री नदियां किण देस में बैंवती ही ?
3. लेखक नैं किण बात रौ गरब होयौ ?
4. लेखक जद छह बज्यां उठनै डेयरी सूं दूध नीं ला सक्यौ तौ दूजौ कांई उपाय करीज्यौ ?
5. गाय रै टळ्यां पछै दूध री पाछी कांई वैवस्था करीजी ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''ज्यूं–ज्यूं मिळावट बधसी, त्यूं–त्यूं ई शुद्धता रौ आग्रह भी बधतौ रैसी।'' इण बात नैं समझायनै लिखौ।
2. ''जांका घरै दोझा वांका घर सोझा।'' इणरौ अरथ समझावता थकां इणमें छप्योड़ै व्यंग्य रौ खुलासौ करौ।

3. घर में गाय आवण सूं लेखक रौ काम कीकर बधग्यौ ?
4. लेखक री लुगाई आपरै भतीजै गोपाळ नैं स्थायी रूप सूं आपरै अठै राखण सारू कांई बहानौ बणायौ ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'सवाल शुद्धता रौ' व्यंग्य रचना री भासा-सैली री विसेसतावां उजागर करौ।
2. ''आज तौ हवा मांय भांग घुळगी है।'' इण दीठ सूं मिळावट री समस्या री चरचा करता थकां इणनैं मेटण सारू आपरा सुझाव दिरावौ।
3. आज रै सामाजिक विसंगति रै परिपेख में इण व्यंग्य री महत्ता उजागर करौ।
4. ''मिनख री नीति में इज मिळावट वापरगी है।'' इण कथन रौ खुलासौ करता थकां समाज में फैल्योड़ी इण बुराई नैं रेखांकित करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. अबै इणी बात नैं इज लोग कैवै है कै पुराणै जमानै में घी-दूध री नदियां बैवती ही। आप ई सोचौ कै जे नदियां में घी-दूध बैंवतौ हौ तौ उणमें पाणी नीं मिळतौ हौ कांई ? आ तौ हौ नीं सकै कै पैलां शक्तिशाली पम्प-सेटां री मदद सूं सगळा नदी-नाळा खाली करीजग्या व्हैला अर पछै उणां में घी-दूधां रा टैंकर खाली कीधा व्हैला।
2. घी-दूध री नदियां बहावण री बातां करणियां आ ई भूल जावै कै जे सगळी नदियां में घी-दूध ई बैंवतौ हौ तौ बापड़ौ जळ कठै बैंवतौ ? कांई खेती-बाड़ी में सिंचाई भी घी-दूध सूं इज होया करती ही। लोग सिनान ई घी-दूध सूं ई करता होवैला वां दिनां में ?
3. केतली आई। डेयरी सूं दूध भी आयौ। सागै ई आयग्यौ जुकाम। चार दिन री सी.अेल.। डेढ-दो सौ रुपिया दवा-दारू में। म्हैं सोची, अब तौ सायद छुट्टी मिळ जासी डेयरी-जातरा सूं। पण छुट्टी म्हारै भाग में कठै ? हां, थोड़ी रियायत मिळगी। संशोधित फरमान जारी होयौ— ''छह बज्यां री जगां सात बज्यां डेयरी पूगौ अर दूजी खेप सूं दूध लावौ।''
4. पण घरवाळी आपरै पीहर रै किणी प्राणी नैं कष्ट देवण रै पख में नीं ही। वा बोली, ''नीं रैवा दौ। डेयरी वाळा ई किस्यौ घी घालै है ? मिनख री नीत में इज मिलावट बापरगी है। थे तो इयां करौ कै उणीज पुराणै दूधवाळै सूं बंधी बांध दौ। थोड़ा दिनां री ई तौ बात है। फेर तौ गाय ब्याय ई जासी।''

❑व्यंग्य

म्रित्युरासौ

शंकरसिंह राजपुरोहित

व्यंग्यकार परिचै

शंकरसिंह राजपुरोहित रौ जलम 12 सितंबर 1969 में राजस्थान रै पाली जिलै रै आऊवा गांव में होयौ। आऊवा गांव सन् सत्तावन रा गदर रै गांव रै रूप में चौताळै चावौ। आपरा दादोसा हमीरसिंहजी, बिज्जी (विजयदान देथा) री 'बातां री फुलवाड़ी' री कथावां गांव री हथाई माथै सुणावता, जिणसूं विद्यार्थी जीवण में इज आपनैं राजस्थानी सूं लगाव होयग्यौ। आप व्यंग्यकार, कवि अर राजस्थानी उल्थाकार रै रूप में ख्यातनांव है। संपादन-कौशल में ई सिद्धहस्त। इग्यारवीं कक्षा में भणती बगत राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी री पत्रिका 'जागती जोत' में कवितावां अर आवरण छप्या। इणी अकादमी रौ 'पैलौ भत्तमाल जोशी महाविद्यालय पुरस्कार' (1989) आपरै आलेख 'राजस्थानी राखियां, रैसी राजस्थान' नैं मिळ्यौ। आप केई बरस पत्रकारिता करी अर पछै आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान, गंगाशहर में शोध अधिकारी रैया। राजस्थानी में 'सुण अरजुण' व्यंग्य-संग्रै अर 'आभै रै उण पार' कविता-संग्रै छप्योड़ौ। राजस्थानी रै पखवाड़ियै छापै 'मरुधर ज्योति' अर त्रैमासिक पत्रिका 'गणपत' रौ कीं बरस संपादन कर्‌यौ। राजस्थानी कवि-सम्मेलन रै मंच रा सबळ हस्ताक्षर।

आप राजस्थानी उल्थाकार रै रूप में ई आपरी ऊरमा दिखाई है। राजपुरोहित केई पोथ्यां रा राजस्थानी उल्था कर चुक्या। इणां में साकेतानंद रै मैथिली कहाणी-संग्रै 'गणनायक' अर ख्यातनाम उपन्यासकार कमलेश्वर रै हिंदी उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' रौ राजस्थानी उल्थौ साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं छप्यौ। इणी भांत पॉस्कल एलन नाज़रेथ री 'गांधी'ज आउटस्टैंडिंग लीडरशिप' रौ राजस्थानी उल्थौ 'महात्मा गांधी री बेजोड़ आगीवांणी' सिरैनामै सूं राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर छाप्यौ। मैथिली कथा-संग्रै 'गणनायक' रै उल्थै सारू आपनैं साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ 'राजस्थानी अनुवाद पुरस्कार' (2010) मिळ्यौ। व्यंग्य-संग्रै 'सुण अरजुण' राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रै 'पैली पोथी पुरस्कार' (1996) सूं पुरस्कृत होयौ। राव बीकाजी संस्थान रै 'राजस्थानी प्रोत्साहन पुरस्कार' (2003) अर नगर विकास न्यास, बीकानेर रै 'राजस्थानी पीथळ पद्य पुरस्कार' (2006) समेत केई इनाम-इकराम आपनैं मिळ्या।

पाठ-परिचै

पाठ्यक्रम में सामल व्यंग्य 'म्रित्युरासौ' लेखक री चरचित व्यंग्य-रचना है। इणमें लेखक म्रित्यु रै उपरांत आपरी खुद री, आपरै घरवाळां री अर दुनियां री मनगत रौ सांतरौ खुलासौ कर्‌यौ है। व्यंग्य, लेखक रै मरण सूं सरू होवै पण छेकड़ जावतां पाठक नै ठाह पड़ै कै उणनैं तौ रात रा सूत्यै नैं मरण रौ आळ-जंजाळ आयौ हौ, हकीगत में तौ वौ पाठकां रै भाग रौ जींवतौ-जागतौ बैठ्यौ है। इण आळ-जंजाळ वाळै सुपनै रै टूटतां ई लेखक नैं आपरौ नांव अर मरण री खबर अखबारां में नीं छपण रौ रंज ई है। लेखक आपरै इण व्यंग्य रै मार्फत मरण वाळै प्राणी रै पेटै दुनिया री मनगत दरसायी है। आज री भागदौड़ भरी जिंदगाणी में लोगां री व्यस्तता, किणी री मौत री खबर ई अखबारां सूं ठा पड़ण री मजबूरी, छपास रा रोगियां री आफळां, स्वारथ रा भायलाचार रै सागै अंतिम-संस्कार में सामिल होवणिया लोगां में अेकरकै उठतै मुसाणियै बैराग अर बारै आयां पछै 'वै ई घोड़ा अर वै ई मैदान' वाळी बातां माथै करारौ व्यंग्य करीज्यौ है। लेखक आ रचना इण ध्येय सूं लिखी लखावै कै आपसी समाजू-रिस्ता, आपां रा सीर-संस्कार अर म्रित्यु जैड़ै मौकै माथै आपां री मानवी संवेदनावां बणी रैवै।

म्रित्युरासौ

म्हैं मरग्यौ हौ। सुरगवास होयौ कै नरकवास, इण गांगरथ में कांई सार! म्हैं तौ इत्तौ ई सुण राख्यौ हौ कै संसार असार है अर मरण में इज सार है। इण कारण म्हैं सार नैं धार चुक्यौ हौ। अबै आप कैवोला कै थूं मरियां पछै ई म्हारौ लारौ क्यूं नीं छौडै! जे थूं मरग्यौ हौ, तौ पछै औ 'म्रित्युरासौ' कांई थारौ कोई चोटीकटियौ चेलौ सिरधांजळी सरूप लिख्यौ है?

अरे हुकम, म्हैं आपनैं फकत म्हारै मरण रा समाचार भुगताया है अर आप मर्‌यौड़ै मुड़दै में ई मीन-मेख काढण लागग्या? कांई आपनैं म्हारी आतमा री मुगती सूं कीं तल्लौ-मल्लौ कोनी। कांई आप म्हारी मुगती सारू दो मिंट रौ मौन ई नीं राख सकौ? इण सारू आपनैं किणी सिरधांजळी सभा रौ सांग रचण री जरूत कोनी, क्यूंकै बठै तौ आप अेक-डौढ मिंट ई आंख मींच्योड़ी अर मूंन धार्‌योड़ी नीं राख सकौ। अठी-वठी बाका फाड़ता 'ॐ सांति-सांति' करण सारू ताखड़ा तोड़ौ, जाणै पगां रै कीड़ियां चैंठती होवै। मरणियौ आदमी जींवतौ हौ जित्तै तौ आप उणरौ माथौ चाटता नीं थाकता, आंती आयनै आगलै नैं ई सिरकणौ पड़तौ अर उणरै मरियां पछै आप आपरै इष्ट सूं उणरी आतमा री मुगती सारू थोड़ीक सिफारस ई नीं कर सकौ? इण भटकती आतमा री बात माननै आप तौ बैठा हौ जठै इज पसर जावौ अर इणरी मुगती सारू ईस्वर सूं नीं तौ आपरी आतमा सूं इज प्रार्थना कर लिरावौ। आतमा सो परमातमा अर परमातमा तौ म्हारी आतमा री मुगती सारू त्यार ऊभौ है, पण आपरी आतमा री हरी झंडी मिल्यां बिना म्हारौ औ आतम-वियांण आगै नीं सिरक सकैला।

म्हनैं ठा है, म्हारै मरण सूं किणी रौ सांस कोनी अटकै, पण म्हारी आतमा तौ अजै ई भटकै है। म्हैं वौ दरसाव कियां भूल सकूं हूं, जद म्हारै मरियां सूं पैलां ई म्हारै मरण री त्यार्‌यां बरतीजण लागगी ही। छैली सांसां सूं पैली ई म्हनै मांचै सूं हेठै पधराय दियौ हौ। पिलंग सूं सिरख-पथरणा सांवटीजग्या हा अर अेक लीरझीर दरी आंगणै बिछाईजगी ही। बडेरां रौ कैवणौ हौ कै मांचै माथै सांस निकळ्यां नरक में ई ठौड़ नीं मिळै। जे म्हनैं इण बात रौ पैली ठा होवतौ तौ घर में कदैई मांचौ ई नीं बपरावतौ। सगळां नैं नीचै ई सुवण अर सुरग में लेय जावण रौ पुख्ता बंदोबस्त करतौ। पण अबै पछतायां कांई होवै।

मरती बगत म्हारा दोनूं बेटा डील सूं म्हारै कनै ऊभा हा, पण आतमा वांरी ई और कठैई भटकै ही। म्हारै औळै-दौळै औरूं ई केई लोग ऊभा हा, पण आजकाल लोग मुड़दै नैं बाळण री त्यारी पछै करै, अखबार में 'सोग-संदेस' अर 'तीयै रौ बैठक' रौ विग्यापन फोटू समेत पैली देयनै आवै। म्हारौ छोटियौ छोरौ इणीज सुभ काम में लाग्योड़ौ हौ। वौ म्हारै अेलबम री हजारूं फोटुवां मांय सूं अेक लाखीणी फोटू पैली ई छांट राखी ही— फेंटौ बांध्योड़ी। बाल उड्‌योड़ा होवण सूं म्हैं आणै-टाणै माथै फेंटौ बांध लिया करतौ। म्हैं ई कांई आपरौ किणी गंजै सूं भेंटौ कै फेंटौ पड़ै तौ आप ई देख लीजौ, कोई दुरंगौ, कोई पिचरंगौ, कोई छुरंगौ फेंटौ बांध्योड़ौ लाधसी। भांत-भांत री टोपियां तौ वांरी टोपाळी नैं सांतरी ढाकी ई राखै, पण फेंटै री आब अर फाब न्यारी है। फेंटौ तौ बियां म्हैं ब्यांव री बगत ई बांध्यौ हौ, पण उण बगत तौ म्हारै बाल सांघणा हा। खाल तौ ब्यांव रै पछै ई खंचै अर पछै ईज बालां री गरुड़-पुराण बंचै। खैर, ब्यांव री बगत ई म्हारा मोकळा फोटू खांचीज्या हा, पण वौ 'हरखै बनड़ै' रौ फोटू तौ इण दुख री घड़ी में दिरीज नीं सकतौ हौ। म्हारा बिस्तरा गोळ होवै हा, इण वास्तै छुरंगै री ठौड़ म्हारौ बेटौ गोळ साफा वाळौ ईज फोटू छांट्यौ। म्हैं उणनै उमर-भर डफोळ समझतौ रैयौ, पण मरती बगत म्हनैं वौ खासौ अकलवान लखायौ। म्हारी जूती उणरै पग में ज्यूं ई पूरी आवती लागी, म्हारी सांसां लेखै लागगी।

म्हारै मरियां पछै घर में कूका-रौळौ मचग्यौ। म्हैं जींवतौ हौ जित्तै घरवाळा मांय रा मांय धमीड़ लेय लेवता, पण अबै तौ वै चौड़ै-धाड़ै लेवण लागग्या हा। आड़ोसी-पाड़ोसी भेळा होय थावस बंधावण नै आयग्या। बियां तौ

वांनै मरण री ई फुरसत कोनी, पण अबार केई दिनां सूं वै म्हारै मरण री झाक में हा। सुख-दुख में पाड़ोसी ई आडा आवै, सो वै ऊभा ई आयग्या।

लोक में कैवत है कै जलम तौ रात रौ अर मरण परभात रौ। पण म्हैं मर्‌यौ जणै ना तौ रात ही अर ना परभात। सिंझ्या री चारेक बजी ही। औ बगत म्हारै चाय पीवण रौ होया करतौ, पण अबै कुण म्हारौ बाप चाय चढावै हौ अर वा ई मुड़दै नैं पावण सारू? म्हारी लोथ नैं बाळ्यां बिना तौ पाड़ोस्यां रा चूल्हा ई कोनी जग सकै। स्याणा-समझणां तोड़ काढ्यौ कै दाग तौ दिन बधियां पैली देवां जणै होवै, नींतर रात-भर लास नैं रुखाळणी भारी व्है जावैला। वांरी आ बात म्हारै पाड़ोस्यां अर भाईबंधां नैं ई अणूती दाय आयी अर वै म्हारै बडोड़ै बेटै नैं सिणिया-बांस अर अरथी री दूजी सामग्री रौ तुरत बंदोबस्त करण री बात भुगतायी। हालांकै वौ मोबाईल माथै बीजी हौ, पण काम म्हारौ ईज सारै हौ। वौ म्हारै किरिया-करम री जुगत जचावै हौ अर आपरा भायलां सागै म्हारी लेखक बिरादरी नैं ई म्हारै मरण रा समाचार भुगतावै हौ।

म्हारौ छोटियौ छोरौ जकै काम में लाग्योड़ौ हौ, उणरौ रिजल्ट तौ अखबार में दूजै दिन दिनुगै आवणवाळौ हौ। आजकल घणकरै लोगां नैं किणी रै मरण-ठरण रौ ठा अखबार सूं इज पड़ै। दूजै दिन तौ विग्यापन रै सागै म्हारी छोटी-मोटी खबर ई छपणी चाईजै! बियां तौ आजकल खबर छपावण सारू सागै विग्यापन देवण रौ ई रिवाज है, पण म्हारी बात न्यारी है। छोरौ म्हारौ सोग-संदेस नीं देवतौ तौ ई म्हारी खबर जरूर छपती, क्यूंकै म्हैं तौ खबरां में इज छोटौ-मोटौ होयोड़ौ हूं। खबरां छपावणिया अर छापणियां रै म्हैं घणौ आडौ आयोड़ौ हूं। वांरी विज्ञप्तियां घस-घसनै म्हारी आंगळ्यां रै आंयठण पड़ग्या। कांई वै म्हारै सारू च्यार ओळ्यां ई मांडण जोगा कोनी। म्हारै मना-ग्यानां तौ म्हारी खबर फेंटैआळी फोटू समेत अखबार रै फ्रंट पेज माथै आवणी चाईजै अर हैडिंग ई म्हारै मन मुजब लागणी चाईजै— ''अबै कुण घड़ैला घड़िया... ?''। म्हारै स्हैर में खबर होवै कोनी, घड़ीजै। इण वास्तै उणनैं 'घड़ियौ' कैवै। कैयां नैं तौ अखबार में आपरौ नांव पढ्यां बिना हाजत ई कोनी होवै। वांनै खबर सूं कीं मतलब कोनी। उसेन बोल्ट ओलंपिक में भलां ई सौ मीटर री दौड़ जीतौ अर भलां ई दौय सौ मीटर री, पण आंरी दौड़ तौ अखबार रै दफ्तर तांईज होवै। कोई खबर नीं बणै तौ उसेन बोल्ट नैं बधाई देवण रौ घड़ियौ ई घड़ काढै।

खैर, 'राम-नाम सत है' रै साथै जद म्हारै म्रित सरीर री अरथी उठण लागी तौ म्हारी भटकती आतमा आनंद-निकेतन में आयोजित अेक ग्यान-गोठ में गोता खायनै पाछी म्हारी अरथी माथै आयनै बैठगी। वा बैठी-बैठी सिंघावलोकन करण लागी। कूड़ बोलनै म्हनैं कोई चुनावी अंदाजौ तौ लगावणौ कोनी, पण पचास-पिचपन लोग तौ पक्का हा। लोग तौ पाणी बतावै जठै कादौ ई कोनी लाधै, म्हैं तौ म्हारी उमर सूं ई कम आदमी बताय रैयौ हूं। इण हिसाब सूं तौ साठ बरसां री उमर पाक्यां पछै ई म्हैं साल दीठ अेक आदमी ई कोनी पकाय सक्यौ। पण म्हारी जाण-पिछाण वाळा सगळा म्हारै ज्यूं कोई बैला थोड़ी ई बैठा हा। जका टाइम काढनै आया हा, वै ई म्हारै लांपौ लगावण री उंतावळ में हा। सिंघावलोकन करती म्हारी आतमा में गादड़ै रै गळैई हुकहूकी ऊठगी। म्हारी आतमा सिंघावलोकन करणौ छोडनै छिद्रान्वेषण करण लागगी।

म्हारी अंतिम-जातरा में सामल लोगां में वै लौग ई भेळा हा, जका मौकौ लाग्यां म्हारी टांग खींचण सूं नीं चूकता, पण आज अरथी रै खांधौ देवण सारू ताता दीसै हा। म्हारी आतमा नैं तौ इणमें ई वांरौ कोई स्वारथ निगै आयौ। 'राम नाम सत है' रै नारै सागै वां लोगां में ई सत वापरग्यौ, जका कदैई हाथ सूं फळी ई कोनी फोड़ी अर ना ई किणी री बाढी आंगळी माथै मूत्यौ, पण आज मसाणियै बैराग रै मिस पुन्न कमावण में पाछ नीं राखै हा। तीन तिलंगा अैड़ा ई हा, जका जींवता-जी तौ म्हारै चींचड़ ज्यूं चिप्योड़ा रैवता, पण अबार म्हारी अरथी सूं अळघा-अळघा आपरी ई गांगरथ गावता चालै हा। म्हारी इण चौकड़ी नैं जाणणियौ अेक जणौ वां मांय सूं अेक नैं कैयौ, ''थे ई अबै पाका पान हौ, अरथी रै खंवौ देयनै पुन्न कमायलौ!''

आ बात सुणनै वौ उण माथै रातौ-पीळौ होवतौ बोल्यौ, ''म्हारी तौ थूं चिंता ई मत कर, थारा फूल चुग्यां बिना म्हैं कठैई कोनी जाऊं। म्हारी मानै तौ थूं लकड़ां रौ गाडौ आगूंच नखायलै भलांई। अै ई तर-तर मूंघा होवै है।''

मारग में चौरायौ आयौ। अरथी नीचै राखीजी। पिंड उछाळीज्या। चौराया माथै अेक पनवाड़ी री दुकान ही। अठै सूं इज म्हैं आथण-दिनुगै मीठै पत्तै सागै लंबी सुपारी रौ पान खाया करतौ। भायलां नैं ई खवावतौ। बुधवार नैं इक्कीसिया गणेसजी सारू मीठै मसालै रौ पान ई अठै सूं इज बंधावतौ। म्हैं जिण हिसाब सूं इण पनवाड़ी रौ पुराणौ अर पक्कौ ग्राहक हौ, उण हिसाब सूं तौ इणनैं अबार दुकान बंद राखणी चाईजती। पण पनवाड़ी नैं कांई मरेठी, इलायची कै पीपरमेंट ज्यूं म्हारै मरण री सौरम थोड़ी आवै ही। म्हनैं मरियां नैं तौ हाल दो-ढाई घंटा इज होया हा। कालै अखबार में सोग-संदेस छपियां पछै सायद दौपारै तांई बंद राखै तौ, पण अबार तौ वौ म्हारी अंतिम-जातरा में सामल कीं पान रा रसियां नैं फटाफट पान पकड़ावण में लाग्योड़ौ हौ। केई लोग पैली सूं अठै इज ऊभा म्हारी बाट जोवता हा। अठै सूं इज क्यूं, मुसाण पूगतां-पूगतां सित्तर-पिचहत्तर जणा होयग्या हा। सगळा आप-आपरौ जरूरी काम सलटायनै आया हा। जे नीं आवता तौ ई म्हैं किसौ वांनै पूछण नैं जावै हौ कै आपरै अैड़ी कांई फाडी फंसगी ही ? छोरौ सौ-सवासौ नैं फोन करया होवैला अर म्हारी उमर सूं बेसी लोग मुसाण पूगग्या हा। डूबतै नैं तौ तिणकलौ ई घणौ, मर्‌यौड़ै नैं और कांई चाईजै ? लांपौ तौ घरवाळा लगासी। कपाळ-क्रिया ई वै इज करैला। लारै आया लोग तौ म्हनैं थेपड़ी देवण रा सीरी हा। इण वास्तै तौ वांनै घंटौ भर अडीकणौ पड़ैला। वै टाइम पास रै हिसाब सूं निरगुट सम्मेलन ज्यूं च्यार-च्यार, पांच-पांच रौ गुट बणायनै घरविध सूं लेयनै देस-विदेस री घाण-मथाण में उळझ्योड़ा हा। केई सूना-मूना ई बैठ्या हा। वां में स्यात मुसाणियौ बैराग जागग्यौ हौ। औ बैराग ई जबरौ होवै। फगत किणी मुड़दै नैं बाळण वाळी टैम ई उठै। बारै आयां पछै सोनै पाणी रौ छांटौ लागतां ई मसाणियौ बैराग छू-मंतर। आदमी पाछौ आपरै गोरखधंधा में अळूझ जावै। तीन-च्यार जणा लक्कड़ जचावण में घरवाळां री मदद ई कर रैया हा। इण काम रै सागै मुड़दै रै हरेक क्रिया-करम में वां लोगां री मास्टरी ही। म्हारी चिता सूं पैलां ई म्हैं वांनैं केई वेळा लकड़ा जचावतां देख चुक्यौ हौ। अबार लग वै केई जणां रौ कल्याण कर चुक्या हा। मरणियै रा घरवाळा वांनै गरजां करनै ले जावै। वै मुड़दै री कद-काठी देखनै बळीतै रौ अंदाज लगाय लेवता। म्हारै जिसै मुड़दै आदमी सारू तौ चिता चिणणी वांरै डावै हाथ रौ खेल हौ। म्हैं डील सूं मुड़दौ जरूर हौ, पण म्हारा हाड चीढा हा। चीढा हाडां सारू चीढी लकड़ी सूं काम कोनी चलै, अेकदम सूकी अर नीमण चाईजै। पण दाई सूं पेट छानौ रैवै तौ वां सूं औ छानौ रैवतौ। वै अेकदम नीमण अर सूकी लकड़्यां ई चिणी ही।

पण ज्यूं ई परिक्रमा देयनै म्हारौ बडोड़ौ बेटौ म्हारै लांपौ लगावण लाग्यौ कै म्हैं पिलंग माथै सूं ओझक नै ऊभौ होयग्यौ। म्हारी आंख खुलगी। म्हनैं मरण रौ इत्तौ डर नीं लाग्यौ, जित्तौ सुपनै में लांपै रौ लाग्यौ। सुपनौ टूटतां ई म्हारी आतमा पाछी ठायैसर आयगी, जकी मांझळ रात में कांई ठा कठै-कठै भटकनै आयी ही। दिनुगै अखबार में फोटू छोडनै म्हारौ कठैई नांव ई कोनी छप्यौ। थे ई बतावौ, पछै म्हारी आतमा नैं सांयती कियां मिळती!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

गांगरथ=फालतू झिकाळ, बाधू बंतळ। ताखड़ा तोड़णा=उंतावळ मचावणी। आंती=काठौ कायौ होवणौ, परेसान। वियांण=विमान। फेंटौ=साफौ, पाघ। टोपाळी=भोड, माथौ। सांघणा=घणा, सघन। लोथ=लाश, शव। आंयठण=आइटन, करड़ा छाळा। घड़ियौ=कपोल कल्पित खबर घड़णी। बैला=खाली, ठाला। मुसाण=भोमका। आगूंच=पैलां सूं। तिणखलौ=तृण, तिनकौ। घाण-मथाण=मन में मंथण, अंतर्द्वंद्व। चीढा=करड़ा, आला-गीला। लांपौ=आग लगावणी, बाळणौ। ओझक नै=झिझक नै, डरनै। ठायैसर=जग्यांसर, जथास्थान। मांझळ रात=आधी रात, मझ रात।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. व्यंग्य 'म्रित्युरासौ' में लेखक रौ मूळ ध्येय कांई है?
   (अ) आपरै मित्रां री हंसी उडावणी (ब) म्रित्यु-संस्कार री जाणकारी देवणी
   (स) घरवाळां री चिंता प्रगट करणी (द) मानवी संवदेनावां जगावणी
   ( )

2. 'म्रित्युरासौ' में लेखक नैं आपरी मौत रौ—
   (अ) पैलां ई आभास होयग्यौ (ब) सुपनौ आयौ
   (स) द्रिस्टांत देख्यौ (द) डर लाग्यौ
   ( )

3. शंकरसिंह राजपुरोहित नैं राजस्थानी अकादमी रौ 'पैली पोथी पुरस्कार' किण पोथी माथै मिल्यौ—
   (अ) रुळपट रासौ (काव्य) (ब) सुण-अरजुण (व्यंग्य-संग्रै)
   (स) गणनायक (उल्थौ) (द) आभै रै उण पार (कविता-संग्रै)
   ( )

4. 'म्रित्युरासौ' व्यंग्य रै लेखक शंकरसिंह राजपुरोहित रौ गांव आऊवा किण रूप में प्रसिद्ध है?
   (अ) म्रित्यु रौ गांव। (ब) गुणीजनां रौ गांव।
   (स) गदर रौ गांव। (द) गोरड़्यां रौ गांव।
   ( )

5. व्यंग्य 'म्रित्युरासौ' में अखबार में 'सोग-संदेस' देवण सारू लेखक रौ किसौ फोटू टाळीज्यौ?
   (अ) छुरंगै फेंटा वाळौ (ब) गोळ साफा वाळौ
   (स) पिचरंगी पाघ वाळौ (द) धोळा पोतिया वाळौ
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. शंकरसिंह राजपुरोहित रौ जलम कद अर कठै होयौ?
2. 'म्रित्युरासौ' किण विधा री रचना है?
3. 'म्रित्युरासौ' में मौत रौ सुपनौ टूट्यां पछै लेखक नैं किण बात रौ रंज है?
4. लेखक 'म्रित्युरासौ' री सरुआत में सार अर असार किणमें समझै?
5. लोक में कैवत मुजब जलम अर मरण किण समै आछौ मानीज्यौ है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'म्रित्युरासौ' रै व्यंग्यकार री म्रित्यु अर सुरग-नरक नैं लेयनै कांई धारणा है?
2. लेखक आज रै जुग में अखबार में 'सोग-संदेस' री जरूरत क्यूं अर कियां बताई है?
3. लेखक 'म्रित्युरासौ' में आपरै घरवाळां री मनगत बाबत कांई लिख्यौ है?

4. 'म्रित्युरासौ' में शवयात्रा री बगत चौरायै माथै कांई दरसाव है?
5. 'म्रित्युरासौ' व्यंग्य रै मार्फत लेखक कांई संदेस देवै?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''व्यंग्य 'म्रित्युरासौ' में मृतक रै प्रति लोगां री दोघाचिंती अर मनगत रौ सांगोपांग वरणाव हुयौ है। इण कथन री पुष्टि में आपरा विचार राखौ।
2. ''व्यंग्यकार 'म्रित्युरासौ' रै मार्फत पाठकां रै मनोरंजन रै सागै-सागै वांरै व्यंग्य रूपी चूंठिया भरण रौ ई काम करयौ है।'' इण कथन री विरोळ दाखला देयनै करौ।
3. 'म्रित्युरासौ' व्यंग्य रचना बाबत विस्तार सूं आपरा विचार प्रगट करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. म्हैं वौ दरसाव कियां भूल सकूं हूं, जद म्हारै मरियां सूं पैलां ई म्हारै मरण री त्यारयां बरतीजण लागगी ही। छैली सांसां सूं पैली ई म्हनै मांचै सूं हेठै पधराय दियौ हौ। पिलंग सूं सिरख-पथरणा सांवटीजग्या हा अर अेक लीरझीर दरी आंगणै बिछाईजगी ही। बडेरां रौ कैवणौ हौ कै मांचै माथै सांस निकळ्यां नरक में ई ठौड़ नीं मिळै। जे म्हनैं इण बात रौ पैली ठा होवतौ तौ घर में कदैई मांचौ ई नीं बपरावतौ।

2. सुख-दुख में पाड़ोसी ई आडा आवै, सो वै ऊभा ई आयग्या। लोक में कैवत है कै जलम तौ रात रौ अर मरण परभात रौ। पण म्हैं मरयौ जणै ना तौ रात ही अर ना परभात। सिंझ्या री चारेक बजी ही। औ बगत म्हारै चाय पीवण रौ होया करतौ, पण अबै कुण म्हारौ बाप चाय चढावै हौ अर वा ई मुड़दै नैं पावण सारू? म्हारी लोथ नैं बाळ्यां बिना तौ पाड़ोस्यां रा चूल्हा ई कोनी जग सकै।

3. ज्यूं ई परिक्रमा देयनै म्हारौ बडोड़ौ बेटौ म्हारै लांपौ लगावण लाग्यौ कै म्हैं पिलंग माथै सूं ओझक नै ऊभौ होयग्यौ। म्हारी आंख खुलगी। म्हनैं मरण रौ इत्तौ डर नीं लाग्यौ, जित्तौ सुपनै में लांपै रौ लाग्यौ। सुपनौ टूटतां ई म्हारी आतमा पाछी ठायैसर आयगी, जकी मांझळ रात में कांई ठा कठै-कठै भटकनै आयी ही। दिनुगै अखबार में फोटू छोडनै म्हारौ कठैई नांव ई कोनी छप्यौ। थे ई बतावौ, पछै म्हारी आतमा नैं सांयती कियां मिळती!

❑गद्य-काव्य

नुकती-दाणा

गोविंद अग्रवाल

कवि परिचै

गोविंद अग्रवाल राजस्थानी भासा री मुडिया लिपि रा देस रा नामी जाणकार हा। आपरौ जलम 17 अगस्त, 1922 नै होयौ। इतिहास, साहित्य अर लोक-संस्कृति विसय रा शोधकार्यां में आप देस-विदेस रा केई शोधार्थियां रौ मारग-दरसण करयौ। हिंदी अर राजस्थानी में लगोलग अर समरूप सिरजण करयौ। सन् 1960 सूं 1965 तांई उणां इतिहास रा स्रोता, घटनावां, लोकगाथा, लोकगीतां अर लोकगाथा आद माथै 1500 पानां री प्रामाणिक अर तथ्यपरक सामग्री संकलित-संपादित करनै राजस्थानी सारू लूंठौ काम करयौ। आपरौ औ कारज राजस्थानी री लूंठी हेमाणी है। आपरी चावी-ठावी रचनावां में 'राजस्थानी लोककथावां', 'राजस्थानी कहावत कोश', 'राजस्थानी लोककथा कोश' (दो भाग) अर गद्यकाव्य री रचना 'नुकती-दाणा' प्रमुख है। श्री अग्रवाल राजस्थानी अर हिंदी री 21 पोथ्यां लिखी, जिणमें इतिहास अर लोक-साहित्य रौ वरणन, शोधपरक अर सरावणजोग है। 350 रै लगैटगै वांरा शोधपत्र देस री ख्यातनांव पत्र-पत्रिकावां में छप्या। वै चूरू में 'नगरश्री' लोक-साहित्य संस्थान री थापना करी अर इण संस्थान सूं 'मरुश्री' नांव सूं 1971 सूं 1987 तांई शोध-पत्रिका ई निकाळी, जिणरा केईक विसेसांक शोधार्थियां सारू घणा महताऊ अर संग्रैजोग है।

पाठ परिचै

आधुनिक काल रै गद्य-साहित्य री विधावां में गद्य-काव्य घणी वाल्ही विधा है, जिणमें भाव पद्य रौ अर भासा गद्य री आवै। गद्य अर पद्य रौ सरीर अर आतमा जैड़ौ मेळ है। राजस्थानी में गद्य-काव्य लिखणियां में डॉ. मनोहर शर्मा, ठा. रामसिंह, चन्द्रसिंह बिरकाळी, गोविंद अग्रवाल, कन्हैयालाल सेठिया अर नूंवा लिखारा में विक्रमसिंह चौहान खास है। गोविंद अग्रवाल री पोथी 'नुकती-दाणा' सूं कीं टाळवीं गद्य-कवितावां अठै लिरीजी है। नीति, दरसण अर वैवार रौ बोध कम सूं कम सबदां में घणै असरदार ढंग सूं होवै। घमंड अर सरलता, अमीरी अर गरीबी रौ भेद अर मिनख री दीठ में माया रै असर रौ बारीक चित्रण आं रचनावां में होयौ है।

नुकती-दाणा

(1) माटी को दीवौ चिनो'क सो उजास देयनै भी आपकै काजळ सूं आपकी बिड़दावळी भींत ऊपर मांडै, पण आखै जगत में परगास देवणियौ सूरज कदै इसी बात मन में ई को ल्यावै नीं।

(2)मालदारां का पग तौ माया कै नसै सूं धरती पर टिकै कोनी अर गरीब कै दो पगां नैं कठैई ठौड़ कोनी, जद पछै आ धरती क्यां जोगी है?

(3)पाणी सूं भर्‌योड़ै कुंडै में टिकाणै सूं सीधी अर निरजीव लकड़ी भी बांकी लखावै जणा माया सूं भर्‌योड़ै बखारां कै बिचाळै रैवणिया मिनख सीधा कियां रैवै?

गळगचिया

कन्हैयालाल सेठिया

कवि परिचै

कवि कन्हैयालाल सेठिया रौ जलम सन् 1919 में चूरू जिलै रै सुजानगढ कस्बै में होयौ। आपरी भणाई-लिखाई घरां ई होयी। 'धरती धोरां री' अर 'पाथळ अर पीथळ' जैड़ी लोकप्रिय रचनावां रा सिरजणहार स्व. सेठिया री राजस्थानी अर हिंदी में पचास सूं बेसी काव्य-पोथ्यां छप्योड़ी। जनकवि रै रूप में सुविख्यात कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भासा राजस्थानी रा साचा पुजारी, टकसाळी भासा रा जाणकार हा। वां मोकळी आध्यात्मिक अर दार्शनिक कवितावां ई लिखी। भारतीय समाज अर लोकमानस नैं आपरी लेखनी रौ विसै बणावण वाळा स्व. सेठिया आधुनिक काळ रा मौलिक अर मौजीज कवि मानीजै। राजस्थानी में आपरी 13 काव्य-कृतियां छप्योड़ी है, जिणां में रमणिया रा सोरठा, मींझर, कूंकूं, गळगचिया, लीलटांस, धर कूचां धर मजलां, मायड़ रौ हेलो, सबद, सतवाणी, अघोरी काळ, दीठ, कक्को कोड रो अर लीक-लकोळ्या खास है।

आधुनिक राजस्थानी कविता में सेठिया जी अेक न्यारी-निकेवळी पिछाण राखै। अेक संतअर दारसनिक सरीखौ गैरौ चिंतन, सबदां री बारीक कारीगरी, मीठी रसभरी अभिव्यक्ति आपरै काव्य री विसेसतावां है। मिनखापणै री मरजादा, चरित्र रौ ऊजळौ पख, देस अर समाज रै सुधार री हूंस, प्रकृति अर राजस्थानी भासा री पीड़ आपरै काव्य में सांगोपांग ढंग सूं प्रगट होवै।

पाठ परिचै

कन्हैयालाल सेठिया री गद्य-काव्य पोथी 'गळगचिया' मांय सूं कीं टाळवीं गद्य-कवितावां इण पाठ में लिरीजी है। अै कवितावां मिनख-मानखै री सावळ ओळखाण करावै। तांबै अर माटी रै घड़ै रौ दाखलौ प्रेम, ग्यान अर अपणायत रौ घणौ झीणौ अरथ प्रगट करै। कोयल अर काग रै मीठा अर खारा बोलां रौ आपरौ असर है। जेवड़ी मिनख री कुबुद्धि अर गैलपणै नैं चौड़ै करै, तौ घड़ौ परिपक्वता मांगै। नीमड़ौ अर मतीरै री बेल लुळणौ अर धरातळ सूं जुड़नै आगै बधण री साख भरै, तौ पानड़ै जैड़ा मिनख मूळ सूं टूटनै आगै बधै जरूर है पण क्यां जोगा ई नीं रैवै। मूळ सूं जुड़ाव जरूरी है। इण गद्यकाव्य री भासा आलंकारिक अर भाव गागर में सागर ज्यूं है।

गळगचिया

(1) तांबै रौ कळसौ माटी रै घड़ै नैं कैयौ, ''घड़ा, थारै में घाल्योड़ौ पाणी ठंडौ कियां रैवै अर म्हारै में घाल्योड़ौ तातौ कियां हो ज्यावै ?'' घड़ौ बोल्यौ, ''म्हैं पाणी नैं म्हारै जीव में जग्यां द्यूं हूं अर तूं आंतरै राखै, औ ही कारण है।

(2) रूंख रै पत्तां में लुक्योड़ी कोयलड़ी बोली, ''कूहूऽऽ'' मारग बैंवता बटाऊ निजर उठायनै बोल्या, ''आ कठैक बोली ?'' रूंख री ऊंचली टोखी पर बैठ्यौ कागलौ बोल्यौ, ''कुरांऽ कुरांऽऽ'' पण कोई आंख उठायनै ई नीं देख्यौ।

(3) मिनख कैयौ, ''उळझ्योड़ी जेवड़ी, म्हैं तनैं सुळझायनै कित्तौ उपगार करूं हूं।'' जेवड़ी बोली, ''तूं किस्योक उपगारी है जकौ म्हारै सूं छानौ कोनी। कोई और नैं उळझाणै खातर ई मन्नै सुळझातौ होसी।''

(4) कुम्हार काचै घड़ै नैं चाक सूं उतारनै न्यावड़ै री उकळती भोभर में ल्या न्हाख्यौ। घड़ौ रोयनै बोल्यौ, ''विधाता, आ कांई करी?'' कुम्हार हंसनै कैयौ, ''पणिहारी रै सिर परां इयां सीधौ ही चढणौ चावै हौ के?''

(5) नीमड़ै रौ रूंख मतीरै री बेल नैं हंसनै कैयौ, ''म्हारी टोखी तौ आभै नैं नावड़ै है अर तूं धूळ पर ही पसरयोड़ी पड़ी है?'' मतीरै री बेल बोली, ''पैली थारै फळ कानी देख, पछै म्हारै सूं बात करजै।''

(6) पानड़ौ झरनै पाणी में पड़ग्यौ, डूब्यौ कोनी, तिरण लागग्यौ। मन में फुलीजनै रूंख नैं कैयौ, ''म्हैं किस्योक हुंस्यार तिराक हूं?'' सिंझ्या पड़तां ई रूंख कैयौ, ''पानड़ा, अेकर अठीनै आईजै।'' पण पानड़ौ रोवतौ सो बोल्यौ, ''म्हारै सारै री बात कोनी।''

(7) पान पीळा पड़ता देखनै माळी रौ चैरौ पीळौ पड़ग्यौ, पण फळ पीळा पड़ता देखनै माळी रै मूंडै पर ललाई आयगी।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

दीवौ=दीपक, दिवलौ। उजास=प्रकास, उजाळौ। बिड़दावळी=जस रौ गीत। चिनोक=थोड़ोक, छोटोक। मालदार=धनी, अमीर। बांकी=टेढी। कळसौ=तांबै रौ छोटौ मटकौ। तातौ=गरम। आंतरै=दूर। रूंख=पेड़। बटाऊ=राहगीर, पंथी। टोखी=ऊंची डाळी। जेवड़ी=रस्सी। चाक=जिण माथै गीली माटी नैं कुंभार आकार देवै। भोभर=जगता खीरा रै ऊपरली गरम राख। ललाई=लालिमा, चैंरै रौ चिळकास। फूलीजनै=गरब सूं, घमंड सूं।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. पाठ में आयौ गद्य-काव्य गोविंद अग्रवाल रै किण संग्रै सूं संकलित है?

   (अ) राजस्थानी लोककथावां (ब) सीपी

   (स) वंदनमाळ (द) नुकती-दाणा

   ( )

2. कन्हैयालाल सेठिया री किण पोथी सूं गद्य-काव्य रा अंस लिरीज्या है?

   (अ) लीलटांस (ब) मींझर

   (स) गळगचिया (द) अघोरी काळ

   ( )

3. माटी रौ दीयौ आपरै काजळ सूं भींत माथै कांई मांडै?

   (अ) चित्राम (ब) बिड़दावळी

   (स) मांडणा (द) साखियौ

   ( )

4. मिनख जेवड़ी नैं क्यूं सुळझावै?

   (अ) दूजै नैं उळझावण सारू (ब) गाय बांधण सारू

   (स) मांचै री देवण सारू (द) चारै रौ भारौ बांधण सारू

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. माळी रौ चैरौ पीळौ क्यूं पड़ै ?
2. कुम्हार काचै घड़ै नैं चाक सूं उतारनै कठै न्हाख्यौ ?
3. किण रै पगां नैं धरती माथै ठौड़ नीं मिळै ?
4. घड़ै में पाणी ठंडौ रैवण रौ कांई कारण बताईज्यौ है ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. पाणी रै कुंड में पड़ी लकड़ी किणरै प्रभाव रै कारण टेढी लखावै ?
2. माटी रौ दीयौ अर सूरज समाज में कैड़ा मिनखां रा प्रतीक है ?
3. कोयल अर काग रै बहानै रचनाकार कांई बात कैवै ?
4. गोविंद अग्रवाल कुणसी संस्था री थापना करी अर बठै सूं किसी शोध-पत्रिका निकाळी ?
5. कवि कन्हैयाला सेठिया री चार पोथ्यां रा नांव लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''कन्हैयालाल सेठिया री पोथी 'गळगचिया' री गद्य कवितावां मिनख खातर मोटी सीख है।'' इण कथन नैं सिद्ध करौ।
2. तांबै रै कळसै अर माटी रै घड़ै बाबत सेठियाजी रा विचार लिखौ।
3. गोविंद अग्रवाल रै गद्य-काव्य में आयोड़ा मूळ भावां नैं लिखौ।
4. कन्हैयालाल सेठिया रै गद्य-काव्य री मूळ भावना समझावौ।

नीचै दिरीज्या गद्यकाव्य अंसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. माटी को दीवौ चिनो'क सो उजास देयनै भी आपकै काजळ सूं आपकी बिड़दावळी भींत ऊपर मांडै, पण आखै जगत में परगास देवणियौ सूरज कदै इसी बात मन में ई को ल्यावै नीं।

2. पाणी सूं भर्‌योड़ै कुंडै में टिकाणै सूं सीधी अर निरजीव लकड़ी भी बांकी लखावै जणा माया सूं भर्‌योड़ै बखारां कै बिचाळै रैवणिया मिनख सीधा कियां रैवै ?

3. मिनख कैयौ, ''उळझ्योड़ी जेवड़ी, म्हैं तनैं सुळझायनै कित्तौ उपगार करूं हूं।'' जेवड़ी बोली, ''तूं किस्योक उपगारी है जकौ म्हारै सूं छानौ कोनी। कोई और नैं उळझाणै खातर ई मन्नै सुळझातौ होसी।''

4. नीमड़ै रौ रूंख मतीरै री बेल नैं हंसनै कैयौ, ''म्हारी टोखी तौ आभै नैं नावड़ै है अर तूं धूळ पर ही पसर्‌योड़ी पड़ी है ?'' मतीरै री बेल बोली, ''पैली थारै फळ कानी देख, पछै म्हारै सूं बात करजै।''

❑उल्थौ

साहित्य रौ मकसद

प्रेमचंद

उल्थाकार : नन्द भारद्वाज

उल्थाकार परिचै

हिंदी अर राजस्थानी रा कवि, कथाकार, समीक्षक अर संस्कृतिकर्मी रै रूप में ख्यातनांव नंद भारद्वाज रौ जलम बाड़मेर रै माडपुरा गांव में 1 अगस्त, 1948 नै होयौ। राजस्थानी में 'अंधार पख' (कविता-संग्रै), 'दौर अर दायरौ' (आलोचना), 'सांम्ही खुलतौ मारग' (उपन्यास), 'बदळती सरगम' (कहाणी-संग्रै) छप्योड़ी पोथ्यां। हिंदी में ई अेक कहाणी-संग्रै अर तीन कविता-संग्रै छप्योड़ा। साहित्यिक पत्रिका 'हरावळ' रौ केई बरसां संपादन। 'तीन बीसी पार' (राजस्थानी कहाणी संकलन) अर 'रेत पर नंगे पांव' (हिंदी कविता संचयन) रौ अेन.बी.टी. सारू अर 'जातरा अर पड़ाव' (राजस्थानी कविता संकलन) रौ साहित्य अकादेमी सारू संपादन। राजस्थानी अकादमी, बीकानेर सूं नरोत्तमदास स्वामी गद्य पुरस्कार (1984), साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2004), के. के. बिड़ला फाउंडेशन कानी सूं बिहारी पुरस्कार (2008), सूचना अर प्रसारण मंत्रालय सूं भारतेंदु पुरस्कार (2010) अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रै सूर्यमल्ल मीसण शिखर पुरस्कार समेत केई संस्थावां सूं सम्मानित। दूरदर्शन जयपुर रै वरिष्ठ निदेशक ओहदै सूं सेवानिवृत्त।

पाठ परिचै

'कुछ विचार' नांव री पोथी में प्रेमचंद रा हिंदी निबंध है, जिणां मांय अेक निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' ई महताऊ है। सन् 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ रै 'लखनऊ अधिवेशन' में प्रेमचंद सभापति रै आसण सूं जिकौ भासण दियौ, उणनैं ई ज्यूं रौ त्यूं इण निबंध में अंवेरयौ है। इणी निबंध रौ राजस्थानी उल्थौ 'साहित्य रौ मकसद' नांव सूं ख्यातनांव कवि-कथाकार नन्द भारद्वाज आपरी पोथी 'आलोचना री आधार भोम' मांय सामल करयौ है।

इण निबंध मांय बताईज्यौ है कै साहित्य रौ मकसद प्रगतिशीलता होवै। सिरजक जद समाज में सुख रौ अभाव देखै, तद उणरै मन मांय असंतोष रा भाव जाग जावै अर वौ उणरै प्रतिकार मांय जिकौ सिरजण करै, वौ सिरजण प्रगतिशील सिरजण होवै। साहित्य आपरै समै रौ प्रतिबिंब होवै अर साहित्यकार-कलाकार मनगत सूं ई प्रगतिशील होवै। इणरै सागै ई लेखक सिरजण री उपयोगिता माथै ई जोर देवै। लेखक कैवै कै सिरजक आपरी कला रै फूठरापै सूं परिवेस रै विगसाव में सैयोग देवै अर उणनैं समाज सारू उपयोगी बणावै। इणरै सागै ई साहित्य रौ मकसद जथारथ रौ चित्रण करणौ पण है। लेखक कैवै कै बंगलां अर म्हैलां में इज साहित्य रौ वास नीं होवै, गांवां रा झूंपड़ां अर गरीबी मांय भी साहित्य रौ समान रूप सूं वास होवै। लेखक नैं आपरै सिरजण में समाज रै जथारथ नैं प्रगट करणौ चाईजै। साहित्य रौ मकसद मनोभावां नैं संवेदनसील बणावणा भी है। निबंधकार कैवै कै रचनाकार में जित्ती ज्यादा संवेदना होसी, उणरी रचना बित्ती ई ऊंचै दरजै री होसी।

प्रेमचंद मनोरंजन सूं ई बेसी मानसिक संस्कारां अर जीवणमूल्यां माथै जोर देवै। निबंधकार रौ कैवणौ है कै साहित्य सूं ई मन रौ संस्कार होवै। साहित्य रौ अेक मकसद समाज रा सुख-दुख आखै मिनख-समाज साम्हीं लावणा अर समाज मांय सेवा-भावना रौ बधेपौ भी है। इणरै सागै ई साहित्य नैं सत्ता लारै चालण री ठौड़ उणरै आगै मसाल दिखावण रौ कारज करणौ चाईजै अर मिनखाचारै रा ऊजळा आदर्शां री थापना करणी चाईजै। साहित्य रौ

मकसद दलित, पीड़ित अर पिछड़्योड़ा लोगां री हिमायत करणौ भी है। इणरै सागै ई भला मिनखां में बधेपौ करणौ, जीयाजूण रै साच रौ जथारथ प्रगट करणौ, कमी-बेसी नैं उजागर करणौ, मनोरंजन अर सुंदरता रौ मंडण करणौ, आमजन री भासा में जथारथ, आदर्श अर कर्मठता रौ संदेस देवणौ भी साहित्य रौ मकसद होवै। निबंधकार कैवै कै म्हारी दीठ में खरौ साहित्य वौ ईज है, जिणमें ऊंचौ चिंतन, स्वाधीनता रा भाव, सुंदरता रौ सार, सिरजण री आतमा अर जीयाजूण रै जथारथ रौ उजाळौ होवै।

साहित्य रौ मकसद

साहित्य में वा इज रचना कथीजै, जिणमें कोई गाढौ साच उजागर होयौ व्है, जिणरी भासा मीठी, मंज्योड़ी अर सोवणी व्है अर जिणमें मन अर मगज माथै असर राखण री कूवत व्है अर साहित्य में आ खासियत पूरसल उणी औस्था में पैदा व्है, जद उणमें जीवण रौ साच अर मन री ऊरमा परगट व्है। साहित्य री अलेखूं परिभासावां करीजी, पण म्हारै विचार सूं उणरी सगळां सूं आछी परिभासा जीवण री आलोचना व्है, भलांई वा निबंध रूप में व्हौ, भलांई कथा या काव्य सरूप में, उणनै आपां रै जीवण री निरपेख आलोचना अर अरथावणी करणी चाईजै।

आपां जिण जुग नैं अबार पार कियौ, उणनैं जीवण सूं कोई मतळब कोनी हौ। आपां रा साहित्यकार कल्पना री अेक स्रिस्टी ऊभी करनै उणमें मनचींता तिलस्म बांध्या करता। कठै ई फसाने-अजायब री दास्तान ही, कठैई दास्ताने-खयाल री अर कठैई चंद्रकांता संतति री। आं कथावां रौ मकसद फगत मनोरंजन हौ अर आपां रै अजब प्रेम-रस री धाप। साहित्य रौ जीवण सूं कोई लगाव व्है, आ बात कल्पना सूं परे ही। कथा कथा है, जीवण जीवण, दोनूं अेक-दूजै री विरोधी चीजां जाणीजती। कवियां माथै ई व्यक्तिवाद रौ रंग चढियोड़ौ हौ, प्रेम रौ सिरै रूप वासनावां री पूरती करणौ हौ अर फूठरापै रौ आंख्यां नैं।

निस्चै ई कविता अर साहित्य रौ मकसद आपां रै मनोभावां रै आवेग नैं बधावणौ व्है, पण मिनख रौ जीवण फगत नारी-पुरुस प्रेम रौ जीवण नीं व्है। जिकौ साहित्य सिणगारू मनोभावां अर वां सूं उपजण वाळै वैराग, निरासा इत्याद तांई मैदूद व्है— जिणमें दुनियां अर दुनियां री अबखायां सूं छेड़ौ राखणौ ई जीवण री सारथकता समझी व्है, कांई वौ आपांरी विचार अर भाव सूं जुड़ियोड़ी जरूरतां पूरी कर सकै? सिणगारू मनोभाव मानवी जीवण रौ फगत अेक अंग व्है अर जिकौ साहित्य घणकरौ इणी सूं ताल्लुक राखतौ व्है, वौ उण जात अर उण जुग सारू गरब करण री बात नीं व्है सकै अर नीं इणरी आछी रुचि रौ परियांण ई व्है सकै।

कवियां री रचना ई वांरी जीवारी रौ साधन ही अर कविता री कदरदानी रईसां अर अमीरां टाळ दूजौ कुण कर सकै? आपां रै कवियां नैं आम जीवण रौ आमनौ करण अर उणरी असलियत सूं रूबरू होवण रा कै तौ औसर ई नीं हा या हरेक छोटै-बडै माथै कीं इण भांत री मनोगत गिरावट छायोड़ी ही कै मानसिक अर बौद्धिक जीवण रह्यौ ई कोनी।

म्हे इणरौ दोस उण बगत रा साहित्यकारां माथै नीं राख सकां। साहित्य आपरै जुग रौ पड़बिंब व्है। जिका भाव अर विचार लोगां रै हीयै नै परस करै, वै ई साहित्य माथै ई आपरी छाया राखै। अैड़ै अबखै अर गिरावट वाळै बगत में लोग कै तौ रळी करै कै अध्यात्म अर वैराग में मन रमावै।

जद साहित्य माथै संसार रै विणास रौ रंग चढ्योड़ौ व्है, उणरौ अेक-अेक सबद वैराग में डूब्योड़ौ व्है, बगत री उल्टी चाल रै रोवणै सूं भरियोड़ौ व्है अर सिणगारू भावां रौ पड़बिंब बण्योड़ौ व्है, तौ समझ लेवौ कै जात जड़ता अर हाण रै पंजां में अळूझ्योड़ी है अर उणमें उद्यम अर जूझण रौ बळ बाकी नीं बच्यौ। उण ऊंचा अर ऊजळै जीवण रा सपनां बिसराय दिया है, उणरै मांय दुनियां नैं देखण-समझण री सगती लोप व्हैगी है।

पण म्हांरी साहित्य री तास में तेजी सूं बदळाव अवस आयौ। अबै साहित्य फगत मन-बिलमाव रौ साधन नीं रह्यौ, मनोरंजन सूं अलायदा, उणरौ कीं औरूं मकसद बण्यौ है, अबै वौ फगत नायक-नायिका रै संजोग-विजोग री कथा नीं सुणावै, बल्कै जीवण री अबखायां माथै विचार करै अर वांरौ निवेड़ौ करै। अबै वौ स्फूरती अर प्रेरणा सारू अजब, इचरजभरी घटनावां नीं सोधै अर नीं अनुप्रास री खोज करै, पण उणरी वां सवालां में रुचि बधी है, जिका समाज अर मिनख माथै गैरौ असर राखै। उणरी आलै दरजै री मौजूदा कसौटी अणभूती री वा तेजी अर रफत है, जिणसूं वौ आपां रा भावां अर विचारां में गति अर वेग पैदा करै।

आपां जीवण में जिकौ कीं देखां, कै जिकी आपां पर बीतै, वै ई अणभव अर वै ई घाव कल्पना में पूगनै साहित्य सिरजण री प्रेरणा उपजावै। कवि या साहित्यकार में अणभूती रौ जित्तौ तीखौ आवेग व्है, उणरी रचना उत्ती ई आकरसी अर आलै दरजै री व्है। जिण साहित्य सूं आपां री रुचि नीं जागै, आत्मिक अर मानसिक तोस नीं मिळै, आपां रै चित्त में सगती अर गति नीं पैदा व्है, आपां रै हीयै में रूप-राग नीं जागै, जिकौ आपां रै मांय साचौ संकळप अर अबखायां नैं काबू करण री साची इंछा-सगती नीं पैदा करै, वौ आज आपां सारू अकारथ है। वौ साहित्य कैवावण रौ कोई इधकारी कोनी।

आधुनिक साहित्य में हकीकत बयान करण री प्रवृत्ति इत्ती बध रैयी है कै आज री कहाणी जठै तांई संभव व्है, परतख अणभवां री सींव सूं बारै नीं जावै, आपां नै फगत इत्तौ ई सोचण सूं संतोस नीं व्है कै मनोविग्यान री दीठ सूं सगळा ई चरित मिनखां सूं मेळ खावता है, म्हे आ तसल्ली पण चावां कै वै साच-माच रा मिनख व्है अर लेखक आपरी बणती कोसीस में वांरै ई जीवण चरित रौ वरणन कियौ है, क्यूंकै कल्पना सूं घड़ियोड़ा मिनखां में म्हांरौ विस्वास कोनी, वांरा कारज अर विचार म्हांरी चेतणा माथै कीं असर नीं राखै। म्हांनै इण बात री तसल्ली व्है जावणी चाईजै कै लेखक जिकी रचना करी है वा परतख अणभवां रै आधार माथै करी है अर चरितां री जबान में वौ खुद बोलै।

म्हांरी सगळी निबळायां री जिम्मेवारी म्हांरी कुरुचि अर आपसी प्रेमभाव री कमी री वजै सूं है। जठै साची सुंदरता अर प्रेम रौ विस्तार है, वठै कमजोरियां कठै रैय सकै! प्रेम ई तौ अध्यात्म सरूपी भोजन व्है अर सगळी कमजोरियां इणी भोजन रै नीं मिळणै या दूसित भोजन रै मिळण सूं पैदा व्है। कळाकार आपां रै चित्त में सुंदरता रौ मनोभाव पैदा करै अर प्रेम रौ गरमास। उणरौ अेक वाक्य, अेक सबद, अेक संकेत इण भांत आपां रै मांय जा बैठै कै म्हांरौ अंतस उजास सूं भरीज जावै, पण जद तांई कळाकार रूप-रळी सूं धापनै मस्ती में नीं व्है अर उणरी खुद री आतमा खुद उण जोत सूं उजासित नीं व्है, वौ आपां नैं उजास किण भांत देय सकै।

सवाल इण बात रौ है कै सुंदरता कांई चीज है? खुलै रूप में औ सवाल नूंवौ पण लागै, क्यूंकै सुंदरता नैं लेयनै म्हारै मन में कोई संकौ कै बैम कदैई रैवै ई कोनी। म्हे सूरज रौ ऊगणौ अर डूबणौ देख्यौ है, दिनुगै अर सिंझ्या री लालिमा देखी है, सुंदर सौरम सूं भरियोड़ा फूल देख्या है, मधरी बोलियां बोलण वाळी चिड़कल्यां देखी है, कळ-कळ संगीत उच्चारती नदियां देखी है, निरत करता झरणा देख्या है, आ ई कुदरत री रूपाळी सुंदरता है।

अै दरसाव देखनै आपां रौ अंतस क्यूं खिल जावै? इण वास्तै कै आं मांय रंग अर धुन रौ आछौ मेळ व्है। साजां रौ सुर-मेळ ई संगीत रै मोवणैपण रौ कारण व्है। आपां री रचना ई तत्त्वां रै समानुपाती संजोग सूं बणी है, इण वास्तै म्हांरी आतमा सदीव उणी समानता अर आपसी ताळ-मेळ री खोज में रैवै। साहित्य कळाकार रै अध्यात्मी ताळ-मेळ रौ परतख रूप है अर औ ताळ-मेळ ई उण सौवणै सरूप री सिरजणा करै, विणास नीं। वौ विस्वास, साच, हमदरदी, न्याव-प्रेम अर ममता रै भावां री स्रिस्टी करै। जठै अै भाव है, वठै ई लूंठौ टिकाव अर जीवण है, जठै इणरौ अभाव है, वठै ई फूट, विरोध अर स्वारथ है— वैर-विरोध, दुस्मीचारौ अर मौत है। औ अळगाव-कुदरती विरोध जीवण रौ अैनांण है, ज्यूं रोग कुदरत रै विरोध में आहार-विहार री निसांणी व्है। जठै कुदरत सूं अनुकूलता अर ताळ-मेळ है, वठै अंवळाई अर आप-मतळबीपणौ किण भांत कायम रैय सकै। जद आपां री आतमा कुदरत रै

खुलै वायुमंडळ में पळी–पोसी व्है, तौ नीचता अर कुटळाई रा कीड़ा खुदोखुद हवा अर उजाळै में खतम व्है जावै। कुदरत सूं न्यारौ व्हैयनै खुद में ई सीमित व्है जावण सूं ई आ सगळी मनगत अर भावगत परेसानियां पैदा व्है। साहित्य आपां रै जीवण नैं सुभाविक अर स्वाधीन बणावै। दूजा सबदां में उणी वजै सूं मन संस्कारी बणै। औ ई उणरौ मूळ मकसद व्है।

साहित्यकार या कळाकार सुभाव सूं ई प्रगतिसील व्है, जे औ उणरौ सुभाव नीं व्हैतौ तौ स्यात वौ साहित्यकार ई नीं व्हैतौ। उणनैं आपरै मांय ई अेक कमी–सी लखावै अर बारै पण इणी कमी नैं पूरी करण सारू उणरी आतमा बेचैन रैवै। आपरी कल्पना में वौ मिनख अर समाज नैं सुख अर बंधण–मुगती री जिण औस्था में देखणी चावै, वा उणनैं दीखै कोनी। इणी वास्तै मौजूदा मानसिक अर समाजू औस्थावां सूं उणरौ काळजौ चूंटीजतौ रैवै। वौ आं अप्रिय औस्थावां रौ अंत कर देवणौ चावै, जिणसूं कै औ संसार में जीवण अर मरण सारू सगळां सूं आछी जिग्यां व्है जावै। आई पीड़ अर औई भाव उणरै काळजै अर मगज नैं काम में उळझायां राखै। उणरौ पीड़ सूं भरयोड़ौ हीयौ इण बात नैं झेल नीं पावै कै अेक समुदाय क्यूं समाजू नेम–कायदां अर रूढियां रै बंधण में झिल्योड़ौ कळेस भोगतौ रैवै ? क्यूं नीं अैड़ौ सरंजाम कियौ जावै कै वौ गुलामी अर गरीबी सूं मुगती पा जावै ? वौ इण वेदना नैं जित्ती बेचैनी सूं अणभव करै उत्ती ई उणरी रचना में सगती अर साच पैदा व्है।

म्हनैं आ बात कैवण में कीं हिचक कोनी कै म्हैं दूजी चीजां री भांत कळा नैं ई उपयोग री ताकड़ी माथै तोलूं, निस्चै ई कळा रौ मकसद फूठरापै री आदत नैं पोखणौ व्है अर वा आपां रै अध्यात्म–आणंद री कूंची व्है, पण अैड़ौ कोई रुचिगत मानसिक अध्यात्म आणंद कोनी, जिकौ आपरै उपयोग रौ पाखौ नीं राखतौ व्है। आणंद खुद में अेक उपयोग–सम्मत चीज व्है अर उपयोग री दीठ सूं अेक ई चीज सूं आपां नैं सुख पण व्है अर दुख ई। आभै में छायोड़ौ गैरूं वरणौ उजास निस्चै ई अेक मोवणौ दरसाव व्है, पण असाढ में जे आभै में वैड़ी रंगत छा जावै, तौ वा म्हारै जीव नैं राजी करण वाळी नीं व्है सकै। उण बगत तौ आभै में काळी–काळी घटावां देख्यां ई म्हांरौ जीव राजी रैवै। फूलां नैं देखनै म्हे इण वास्तै राजी व्हां कै वांरै लारै फळ आवण री आस व्है। कुदरत सूं आपणै जीवण रौ सुर मिळायां राखण में म्हांनै इण वास्तै अध्यात्म सुख मिळै कै उण सूं म्हांरौ जीवण विगसै अर पोखीजै। कुदरत रौ विधान बुद्धि अर विकास व्है अर जिकां भावां, अणभूतियां अर विचारां सूं म्हांनै आणंद मिळै, वै इणी बधापै अर विगसाव में मददगार व्है, कळाकार आपरी कळा सूं रूप री स्रिस्टी करनै हालात नैं विकास सारू उपयोगी बणावै।

भाईचारौ अर बराबरी, सभ्यता अर प्रेम समाजू जीवण री सरूआत सूं ई आदर्शवादी लोगां रा सौवणा सपना रह्या है, धरमाचारी लोग धारमिक, नैतिक अर अध्यात्म रा बंधणां सूं इण सपनै नै साचौ बणावण रा लगूलग पण निरफळ जतन करता रह्या है। महात्मा बुद्ध, हजरत ईसा, हजरत मुहम्मद इत्याद सगळा पैगंबरां अर धरम धोरियां नीती री नींव माथै आ बराबरी री इमारत ऊभी करणी तेवड़ी, पण किणी नैं कामयाबी नीं मिळी अर छोटै–बडै रौ भेद जिण निरमम रूप सूं पैदा व्हेतौ रह्यौ है, स्यात् कदैई नीं व्हियौ।

'अजमायोड़ै नैं अजमावणौ मूरखाई व्है', इण कैवत रै मुजब जे अबै ई आपां धरम अर नीती रौ पल्लौ पकड़नै बराबरी रै ऊंचै मकसद तांई पूगणौ चावां तौ नाकामयाबी ई मिळैला। कांई आपां इण सपनै नैं किणी उछांछळै मगज री उपज समझनै बिसराय देवां ? तद तौ मिनख री तरक्की अर पूरणता सारू कोई आदर्श ई बाकी नीं रैवैला। इणसूं तौ आछौ है कै मिनख रौ वजूद ई मिट जावै। आदर्श नैं आपां सभ्यता री सरुआत सूं पाळ्यौ है, जिणरै वास्तै मिनख, भगवान जाणै कित्ती कुरबानियां करी है, जिणरै नतीजै सारू धरमां री नींव पड़ी। मानवी समाज रौ इतिहास जिण आदर्श नैं हासल करण रौ इतिहास है, उणनैं सगळां सारू मान्य समझनै, अेक अमिट साच समझनै, आपां नैं तरक्की रै मैदान में पांवडौ राखणौ है। आपां नैं अेक अैड़ै संगठण नैं पूरी तरै सूं मुकम्मल बणावणौ है, जठै बराबरी फगत नीतिगत बंधणां माथै आधारित नीं रैयनै, ज्यादा ठोस रूप हासल कर लेवै, आपां रै साहित्य नैं उणी आदर्श नैं आपरै साम्हीं राखणौ है।

म्हांनै फूठरापै री कसौटी बदळणी पड़ैला। अबार तांई आ कसौटी अमीरी अर भोग-विलास रै ढंग री ही। आपां रौ कळाकार अमीरां रौ पल्लौ पकड़्योड़ौ रैवणौ चावतौ, वांरी कद्रदानी माथै उणरौ वजूद टिक्योड़ौ हौ अर वांरै ई सुख-दुख, आसा-निरासा, होड अर वैर-विरोध री अरथावणी कळा रौ मकसद हौ। उणरी निजरां अंतैपुर अर बंगलां कांनी उठती, झूंपड़ा अर खंडहर उणरै ध्यान रा इधकारी नीं हा। वांनै वौ मिनखीचारै रै दायरै सूं बारै समझतौ। कदैई आंरी चरचा करतौ ई तौ फगत चिगाळी काढण सारू। गांव रै आदमी रौ देहाती पैरवास अर तौर-तरीकां माथै हंसण सारू, वांरौ सीन-काफ सही नीं व्हेणौ कै मुहावरै रौ गळत उपयोग उणरै व्यंग-विडरूप री काम-चलाऊ सामग्री ही। वौ मिनख है, उणरी काया में पण काळजौ है अर उणमें ई हूंस है, आ कळा री कल्पना रै बारै री बात ही।

कळा नांव हौ अर अबार ई है, सांकड़ौ रूप पूजा रौ, सबद-योजना रौ, भाव-निबंध रौ। उणरै वास्तै कीं आदर्श कोनी, जीवण रौ कोई मकसद कोनी— भगती, वैराग, अध्यात्म अर दुनियां सूं छैड़ौ उणरी सगळां सूं ऊंची कल्पनावां है, म्हारै उण कळाकार रै विचार सूं जीवण रौ चरम मकसद औ ई है। उणरी दीठ अबार इत्ती विसाल कोनी कै जीवण रै संग्राम में सुंदरता रौ परम विगसाव देख सकै। उपवास अर नरमाई में ई सुंदरता रौ वजूद संभव है, आ बात स्यात् उणनैं कबूल कोनी। उणरै वास्तै फूठरापौ रूपाळी लुगाई है— उण टाबरां वाळी गरीब, रूप-बिहूणी लुगाई में नीं, जिकी टाबर नैं पाळी माथै सुवाण्यां बिनां परसेवौ बहावै, उण निस्चै कर राख्यौ है कै रंग्योड़ा होठां, गालां, अर भूंवारां में निस्चै ई फूठरापै रौ वासौ है, उणरै वास्तै उळझ्योड़ै केसां, फेफी आयोड़ा होठां अर कुम्हळायोड़ै रूप री अगवाणी करण री ताब कठै?

औ ओछी दीठ रौ दोस है। जे उणरी फूठरापौ देखण वाळी दीठ में विस्तार व्है जावै तौ वौ देख सकै कै रंग्योड़ै होठां अर गालां री आड में जे रूप रौ गीरबौ अर निठुराई छिप्योड़ी है, तौ आं मुरझायोड़ा होठां अर कुम्हळायोड़ा गालां रै आंसुवां में त्याग, सरधा अर तकलीफां सैवण री नरमाई है। हां, वां में सफाई कोनी, दिखावौ कोनी, ऊपरी कंवळाई कोनी।

म्हांरी कळा जोबन रै प्रेम में व्याकळ है अर आई बात नीं जाणै कै जोबन छाती माथै हाथ राखनै कविता पढण, नायिका री निठुराई माथै रोवण कै उणरै रूप-गुमेज अर चोंचलां माथै माथौ धूण्यां सूं नीं संज आवै, जोबन नांव व्है आदर्शवाद रौ, हींयाणी रौ, अबखायां रौ आमनौ करण वाळी इंछा रौ, त्याग रौ।

म्हांनै अमूमन आ सिकायत व्है कै साहित्यकारां सारू समाज में कोई जिग्यां कोनी— खासकर भारत रा साहित्यकारां सारू। केई बारला सभ्य मुलकां में तो साहित्यकार समाज रौ माणजोग सदस्य व्है अर बडा-बडा अमीर अर सरकार रा मंत्री तकात वां सूं मिळाप में आप सारू गरब री बात समझै, पण हिंदुस्तानी मिनख तौ अबार तांई मध्यकाळ री औस्था में पड़्यौ है। जे साहित्यकार अमीरां रौ ओलियाड़ बणण रौ जीवण अपणाय लियौ व्है अर आन्दोलनां, हलगलां अर क्रांतियां सूं बेखबर होय, जिकी समाज में व्हे रही है, आपरी न्यारी दुनियां बणाय उणमें ई हंसतौ-रोवतौ व्है, तौ इण दुनियां में उण सारू जिग्यां नीं व्हैण में कोई अन्याव कोनी।

साहित्यकार रै साम्हीं आजकाल जिकौ आदर्श राखीज्यौ है, उणरै मुजब साहित्य री प्रवृत्ति अहंवाद कै व्यक्तिवाद तांई सीमित नीं रही, वौ मनोविग्यानी अर समाजू व्है, अबै वौ व्यक्ति नैं समाज सूं न्यारौ करनै नीं देखै, पण समाज रै अेक अंग सरूप देखै, इण वास्तै नीं कै वौ समाज माथै हकूमत करै, इणनैं आपरै स्वारथ-पूरती रौ औजार बणावै— जाणै उणमें अर समाज में कोई सनातन वैर-विरोध व्है, बल्कै इण वास्तै कै समाज रै वजूद रै साथै ई उणरौ वजूद कायम है अर समाज सूं अळगौ व्हियां उणरौ मोल नाकुछ रै बरोबर व्है जावै।

आपां मांय सूं जिकां नैं सगळां सूं आछी सीख अर सगळां सूं आछी मानसिक सगत्यां मिळ्योड़ी है, वां माथै समाज बाबत वांरी कीं जिम्मेवारी पण है, म्हे उण मानसिक पूंजीपती नैं पूजनीक नीं मानां, जिकौ समाज रै धन सूं ऊंची पढाई हासल करनै उणनै आपरै स्वारथ-साधण में लगावै। समाज सूं निजी लाभ उठावणौ अैड़ौ काम व्है, जिणनैं कोई साहित्यकार पसंद नीं करैला। इण मानसिक पूंजीजीवी रौ फरज है कै वौ समाज रै लाभ नैं आपरै निजू

लाभ सूं बधीक ध्यान देवण जोग समझै— आपरै हूनर अर हुंसियारी सूं समाज नैं बधीक सूं बधीक लाभ पुगावण री कोसीस करै।

जे आपां अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलनां री रपट पढां तौ आपां देखांला कै अैड़ौ कोई सास्त्र-सम्मत, समाजू, इतिहासू अर मनोविग्यानी सवाल नीं है, जिण माथै उणमें विचार नीं व्हियौ व्है। इणरै उल्टौ म्हे खुद रै ग्यान नैं जद देखां तौ म्हांनै खुद रै अग्यान माथै लाज आवै। म्हे समझ राख्यौ है कै साहित्य रचना सारू तौ बस तुरत-बुद्धि अर तेज कलम व्हेणी घणी, पण आई सोच म्हारै साहित्यिक पतन रौ कारण है, म्हांनै आपरै साहित्य रौ माप-जोख ऊंचौ करणौ व्हैला, जिणसूं के वौ समाज री बधीक अणमोल सेवा कर सकै, जिणसूं समाज में उणनै वौ औहदौ अर आदर मिळै, जिणरौ वौ हकदार व्है, जिणसूं वौ जीवण रै हरेक पख री आलोचना-विवेचना कर सकै अर आपां दूजी भासावां अर साहित्य रौ अैंठवाड़ौ खायनै नैहचौ नीं करां, खुद पण उण पूंजी नैं औरूं बधावां।

जिकां नैं धन-दौलत वाल्ही लागै, साहित्य रै मिंदर में वां सारू कोई जिग्यां नीं व्है। अठै तौ वां सेवकां री दरकार है, जिकां सेवा नैं ई आपरै जीवण री सारथकता मानी व्है, जिकां रै हीयै में दरद री तड़फ व्है अर प्रीत री हूंस व्है। आपरी इज्जत तौ खुद रै हाथ व्है। जे आपां साचै मन सूं समाज री सेवा करांला तौ मान-सम्मान अर ख्यात स्सै कदम चूमैली— फेर मान-सम्मान री चिंता आपां नैं व्है ई क्यूं? अर उणरै नीं मिळण सूं आपां नैं निरासा क्यूं व्है? सेवा में जिकौ अंतस रौ आणंद व्है, वौई म्हांरौ पुरस्कार है— म्हांनै समाज माथै आपरौ बडपण जतावण, उण माथै आपरौ रौब जमावण री हवस क्यूं व्है? दूजां सूं बधीक आराम सूं रैवण री इंछा ई क्यूं संतावै? म्हे तौ समाज री धजा लेय आगै चालण वाळा सिपाही हां अर सादै जीवण साथै ऊंची निजर राखणी म्हारै जीवण रौ मकसद व्है। जिकौ मिनख साचौ कळाकार है, वौ स्वारथी जीवण रौ प्रेमी नीं व्है सकै, उणनैं तौ आपरै मन री तुस्टी वास्तै दिखावै री जरूत नीं व्है, उणसूं तौ उणनैं घिरणा ई व्हैणी चाईजै। म्हां साहित्यकारां में करम-सगती री पण कमी लखावै, औ अेक कड़वौ साच है। पण म्हे उण कानी सूं आंख बंद कोनी कर सकां। अबार तांई म्हे साहित्य रौ जिकौ आदर्श म्हारै साम्हीं राख्यौ हौ, उण वास्तै करम री जरूत नीं ही।

जद तांई साहित्य रौ काम फगत मन-बिलमाव रौ सामान जुटावणौ, फगत लोरियां गा-गायनै सुवाणणौ, फगत आंसू ढळकायनै जीव हळकौ करणौ हौ, तद तांई उण वास्तै करम री जरूत नीं ही, वौ अेक दीवानौ हौ, जिणरौ गम दूजा खावता। पण म्हे साहित्य नैं फगत मन-बिलमाव अर विलास री चीज नीं समझां। म्हांरी कसौटी माथै वौ ई साहित्य खरौ जाणीजैला, जिणमें आला दरजै रौ चिंतण व्है, आजादी रौ भाव व्है, सुंदरता रौ सार व्है, सिरजण री आतमा व्है, जीवण रै साच रौ उजास व्है— जिकौ म्हारै मांय आगै बधण रौ आवेग, आफळ अर बेचैनी पैदा करै, सुवाणै नीं, क्यूंकै अबै औरूं सोवणौ म्रित्यु री निसांणी है।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

मकसद=उद्देस्य, ध्येय। फूठरापौ=सुंदरता, सौंदर्य। ताल्लुक=तल्लौ-मल्लौ, संबंध। पड़बिंब=प्रतिबिंब, प्रतिछबि। निवेड़ौ=निष्कर्ष, निरणै, न्याव। अंवळाई=गोतौ, टेढौ अर लांबौ मारग। कुटळाई=मिजळापणौ, कुटिलता। वजूद=आपौ, अस्तित्व। परसेवौ=पसीनौ। हूंस=लगन, लगाव, प्रबळ इंछा। अळगौ=न्यारौ। ओलियाड़=हेठवाळ। चिगाळी=कूंट काढणी, चिगाणौ। लोप=अदीठ। बधीक=ज्यादा, बेसी। बिसराय=भुलावौ। उपजण=निपजण। अंतस=हियौ, हिवड़ौ। रूपाळी=फूठरी, सौवणी। ख्यात=जस, ख्याति। कंवळाई=नरमाई। सरंजाम=बंदोबस्त। अबखायां=बाधावां। अकारथ=बेकार, बिरथा। आफळ=खेचळ, प्रयत्न। उछांछळै=बोछरड़ौ, अचपळौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'साहित्य रौ मकसद' निबंध रा लेखक कुण है—
   (अ) प्रेमचंद (ब) सुभद्रा कुमारी चौहान
   (स) जयशंकर प्रसाद (द) रवीन्द्रनाथ
   ( )

2. किणरौ मकसद आपां रै मनोभावां रै आवेग नैं बधावणौ है ?
   (अ) समाज रौ। (ब) साहित्य रौ
   (स) जिनावरां रौ। (द) कोई भी नीं
   ( )

3. अध्यात्मरूपी भोजन है—
   (अ) साहित्य (ब) कविता
   (स) प्रेम (द) कोई भी नी
   ( )

4. कळाकार रै अध्यातमी ताळ-मेळ रौ परतख रूप है—
   (अ) समाज (ब) कुदरत
   (स) चित्राम (द) साहित्य
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. संगीत रै मोवणैपण रौ कारण कांई होवै ?
2. साहित्य आपां रै जीवण नैं कांई बणावै ?
3. किणां रौ सुभाव प्रगतिसील होवै ?
4. साहित्य नैं आपरै जुग रौ कांई मान्यौ जावै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कुदरत री रुपाळी सुंदरता कांई है ?
2. साहित्य कैवावण रौ सही हकदार कुण है ?
3. साहित्य सिरजण री प्रेरणा कियां उपजै ?
4. साहित्यकार रै साम्हीं आजकाल किसौ आदर्श राखीज्यौ है ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. साहित्य रौ खास मकसद कांई-कांई होवै ?
2. साहित्यकारां नैं फूठरापै री कसौटी किण भांत बदळणी पड़ैला ?
3. प्रेमचंद रै मुजब आज रै साहित्य मांय कांई बदळाव आयौ है ?
4. आधुनिक साहित्य मांय हकीकत बयान करणै प्रवृत्ति किण भांत बध रैयी है ?

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. कवियां री रचना ई वांरी जीवारी रौ साधन ही अर कविता री कदरदानी रईसां अर अमीरां टाळ दूजौ कुण कर सकै ? आपां रै कवियां नैं आम जीवण रौ आमनौ करण अर उणरी असलियत सूं रूबरू होवण रा कै तौ औसर ई नीं हा या हरेक छोटै-बडै माथै कीं इण भांत री मनोगत गिरावट छायोड़ी ही कै मानसिक अर बौद्धिक जीवण रह्यौ ई कोनी।

2. सवाल इण बात रौ है कै सुंदरता कांई चीज है ? खुलै रूप में औ सवाल नूंवौ पण लागै, क्यूंकै सुंदरता नैं लेयनै म्हारै मन में कोई संकौ कै बैम कदैई रैवै ई कोनी। म्हे सूरज रौ ऊगणौ अर डूबणौ देख्यौ है, दिनुगै अर सिंझ्या री लालिमा देखी है, सुंदर सौरम सूं भरियोड़ा फूल देख्या है, मधरी बोलियां बोलण वाळी चिड़कल्यां देखी है, कळ-कळ संगीत उच्चारती नदियां देखी है, निरत करता झरणा देख्या है, आ ई कुदरत री रूपाळी सुंदरता है।

3. म्हांरी कळा जोबन रै प्रेम में व्याकळ है अर आई बात नीं जाणै कै जोबन छाती माथै हाथ राखनै कविता पढण, नायिका री निठुराई माथै रोवण कै उणरै रूप-गुमेज अर चोंचलां माथै माथौ धूण्यां सूं नीं संज आवै, जोबन नांव व्है आदर्शवाद रौ, हींयाणी रौ, अबखायां रौ आमनौ करण वाळी इंछा रौ, त्याग रौ।

4. साहित्यकार रै साम्हीं आजकाल जिकौ आदर्श राखीज्यौ है, उणरै मुजब साहित्य री प्रवृत्ति अहंवाद कै व्यक्तिवाद तांई सीमित नीं रही, वौ मनोविग्यानी अर समाजू व्है, अबै वौ व्यक्ति नैं समाज सूं न्यारौ करनै नीं देखै, पण समाज रै अेक अंग सरूप देखै, इण वास्तै नीं कै वौ समाज माथै हकूमत करै, इणनैं आपरै स्वारथ-पूरती रौ औजार बणावै।

❑जूनौ काव्य

रणमल्ल छंद

श्रीधर व्यास

कवि परिचै

श्रीधर व्यास आदिकाळ रै वीर रसात्मक कवियां री पांत में सिरमौर कवि मानीजै। 'रणमल्ल छंद' आंरी अैतिहासिक, वीर रसात्मक खंडकाव्य री अमोलक रचना है। व्यास ब्राह्मणां रौ अेक उपवरग, उपाधि अर राजकीय पद मानीजै। 'रणमल्ल छंद' रै अलावा दूजी रचनावां में 'भागवत दसम स्कंध' (127 छंद), 'सप्तसती' (120 छंद) आद रौ उल्लेख मिळै। कवि श्रीधर व्यास रै जीवण परिचै अर रचना-संसार री घणी जाणकारी कोनी मिळै। इण सारू शोध री दरकार है। कवि प्राकृत, संस्कृत अर फारसी रै सागै अपभ्रंस रा चोखा जाणकार हा, जिणरी बानगी 'रणमल्ल छंद' रचना भरै। श्रीधर व्यास 'रणमल्ल छंद' रै पाण इतिहास में रणमल्ल राठौड़ नैं अेक सुभट, भड़-किंवाड़, कमधज अर वीरवर रै रूप में अमर कर दियौ। अनेक विद्वान श्रीधर व्यास नैं रणमल्ल रौ राजकवि मानै अर कई विद्वान उणनैं राज रै पुरोहित रै रूप में स्वीकारै। श्रीधर व्यास रौ परिचै काळ रै अंधारै कूवै में रैवतौ जे पूना डेकन कॉलेज रै सरकारी संग्रहालय मांय मौजूद पांडुलिपि में प्रतिलिपिकार उणरी पुष्पिका में 'श्रीधर व्यास कृत रणमल्ल छंद' नीं लिखतौ। राजस्थानी रै आदिकालीन वीर रसात्मक रचनावां में 'रणमल्ल छंद' खंडकाव्य आपरी महताऊ ठौड़ राखै।

पाठ परिचै

रणमल्ल आपरै बगत रौ सुभट अर भड़-किंवाड़ जोधा हौ। 'रणमल्ल छंद' में रणमल्ल रै ही वीरत्व रौ बखाण है। आथूणै भारत में उण वेळा री उथळ-पुथळ रौ साचौ चित्राम इण काव्य में मिळै। दिल्ली रौ तुगलक सुल्तान नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह रा नियुक्त करचोड़ा सूबेदार जफरखां सन् 1398-99 में ईडर (गुजरात) माथै दूजी बार हमलौ करचौ। उण वेळा ईडर राव रणमल्ल राठौड़ अर जफरखां रै बीचाळै जकौ जुद्ध होयौ, कवि उणरौ इज सांगोपांग ढंग सूं ओजपूरण वरणाव करचौ है। इचरज भरचै ढंग सूं रणमल्ल परंपरागत सैली सूं जुद्ध कर खान सेना नैं धरासाही कर न्हाखी अर जीत रौ सेवरौ आपरै सिर बांध्यौ। उण बगत इण जीत रौ घणौ जबरौ असर पड़्यौ। रणमल्ल आपरै रण-कौसल सूं अनमी अर हिंदू संस्कृति नैं पोखण वाळा रावां-उमरावां मांय धरमांध अर जुलमी यवनां रै खिलाफ जुद्ध करण री हूंस जगाई। रणमल्ल आपरै बूकियां रै ताण उण बगत में केई जुल्मी यवन सासकां नैं धरासाही करचा।

'रणमल्ल छंद' छंद-संज्ञक काव्य परंपरा री पांत री आदिकालीन वीररसपरक अेक अैतिहासिक खंडकाव्य रचना है, जिण मांय रणमल्ल रौ जुद्ध-कौसल अर उणरौ सूरापण रौ घणौ ओजपूरण अर उछाव-उमाव सागै अद्‌भुत वरणन कवि श्रीधर व्यास करचौ है।

रणमल्ल छंद

।। दूहू ।।

साहस वसि सुरताण दळ, समुहरि जिम चमकंत।
तिम रणमल्लह रोस वसि, मूंछ सिहरि फुरकंत।।

।। सारसी ।।

फुरफरहि लंब अलंब अंबरि नेज निकर निरंनर।
भरभरहि भेरि भयंक भू कर भरळि भूरि भयंकर।
दड़दड़ी दड़दड़ कारि दड़वड़ देसि दिसि दिसि दड़वड़इ।
संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।

।। दूहू ।।

साहस वसि सुलतान दळ समुहरि जिम दमकंत।
तिम तिम ईडर सिहर वरि, ढोल गहिर ढमकंत।।

।। सारसी ।।

ढम ढमइ ढम ढम कर ढूंकर ढोल ढोली जंगिया।
सुर करहि रण सरणाइ समुहरि सरस रसि समरंगिया।
कळकळहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थरथरइ।
संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।

।। चुप्पइ ।।

रा असि सरिसु बाहु उठ भारिअ,
बुल्लइ हठि हेजब हक्कारिअ।
मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ,
तु गयणंग (भ)णि भाण न उग्गइ।।
बिबहर भरि बुंबारव वज्जइ,
जळहर जिम सींगणि गुण गज्जइ।
बहु बलकाक करइ बाहुब्बळि,
धंधळि धड़ धरइ धरणी तळि।।
अरियण दारण! दीन अभयकर,
पंडरवेस थया निब्भय धर।
बंभण बाळ बंदि बहु किज्जइ,
धा कमधज्ज धार करि लिज्जइ।।

अबखा सबदां रा अरथ

तिम=ज्यूं ही। रोस=रीस। वसि=रै कारण। फुरकंत=फुरकण लागी। लंब=मोटी। अलंब=छोटी। अंबरि=आकास। नेज=ध्वजा। भेरि=जुद्ध में बाजण वाळौ वाद्य। दड़दड़ी=वाद्ययंत्र। देसि=देस। दिसि-दिसि=दसूं दिसावां। सुरतांण=सुलतान। दळ=सेना। जंगिया=जंगी। समुहरि=हरावळ, सेना रै सबसूं आगलौ भाग। समरंगिया=जुद्ध रा रसिया। काहल=जुद्ध-वाद्य। कळकळिया=काहल सूं निकळ्योड़ी ध्वनि। थरथरइ=कांपणौ। रा=राजा, राव। असि=तलवार। बाहु=बाजू, बूकिया। मेच्छ=यवन, मुस्लिम आक्रमणकारी। पय=पग। लग्गइ=लागणौ। गयणगणि=आकास, गिगन, आभौ। भांण=सूरज। उग्गइ=ऊगणौ। बुल्लइ=बुलावणौ। हेजब=दूत। हक्कारिअ=संबोधन करणौ। बुंबारव=जुद्ध रौ अेक वाद्ययंत्र। भेरि=रण रौ वाद्ययंत्र, रणभेरी। जळहर=बादळ, मेघ। सींगणि=धनुसां री प्रत्यंचावां। बहु=घणा। बलकाक=यवन (बलक देस रा)। बाहूब्बळि=बाजू (बूकियां रौ जोर)। धरणी=धरती। अरियण दारण=सत्रुवां सूं मुक्त करणवाळा। दीन अभयकर=हे दीन अभयकारी, गरीब नैं भयमुक्त करण वाळौ। पंडरवेस=यवन। थया=होयग्या। निब्भय=भयमुक्त। बंमण=ब्राह्मण। बाळ=अबलावां। बहु=घणा। कमधज्ज=रणमल्ल, राठौड़ां री उपाधि। धार=जुद्ध।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'रणमल्ल छंद' रा कवि कुण है?

(अ) सालिभद्र सूरि (ब) समय सुंदर

(स) पृथ्वीराज राठौड़ (द) श्रीधर व्यास

( )

2. 'रणमल्ल छंद' किण काल री रचना है?

(अ) रीतिकाल (ब) भक्तिकाल

(स) आदिकाल (द) आधुनिककाल

( )

3. 'रणमल्ल छंद' री भासा किण भांत री है?

(अ) मालवी मिश्रित राजस्थानी (ब) व्यंग्यमूलक

(स) अपभ्रंस मिश्रित जूनी राजस्थानी (द) हिंदी मिश्रित राजस्थानी

( )

4. 'रणमल्ल छंद' काव्य रौ नायक कुण है?

(अ) दुर्गादास (ब) सातल सोम

(स) हमीर चौहान (द) रणमल्ल

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रणमल्ल किण सागै अर कद जुद्ध करयौ?
2. रणमल्ल छंद में आयोड़ा छंदां रा नांव लिखौ।

3. रणमल्ल री मूंछां किणनैं देखनै रीस सूं फुरकै ?
4. यवन सैनिक किणनैं बंदी बणावै ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. धरती माथै कुण आतंक अर धूंध मचा राखी ही ? अर किण भांत ?
2. दूत रा वचन सुणनै रणमल्ल री कांई दसा होवै ?
3. दूत रै संदेसै रै जबाब में रणमल्ल कांई वचन बोलै ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. रणमल्ल छंद री काव्यगत विसेसतावां लिखौ।
2. रणमल्ल छंद में छंद अर अलंकारां री ओप माथै टीप लिखौ।
3. रणमल्ल छंद मांय रणमल्ल रौ अनमी सुभाव अर उण रा मायड़ भोम सारू विचारां नैं लिखौ।
4. रणमल्ल छंद रौ भावगत फूठरापौ उदाहरण सागै लिखौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1 ढम ढमइ ढम ढम कर ढूंकर ढोल ढोली जंगिया।
सुर करहि रण सरणाइ समुहरि सरस रसि समरंगिया।।

2. रा असिसरिसु बाहु उठा भारिअ, बुल्लइ हठि हेजब हक्कारिअ।
मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ, तु गयणंग (भ)णि भाण न उग्गइ।।

3. बिबहर भरि बुंबारव वज्जइ, जळहर जिम सींगणि गुण गज्जइ।
बहु बलकाक करइ बाहुब्बळि, धंधळि धड़ धरइ धरणी तळि।।

❑लोक-काव्य

ढोला-मारू रा दूहा

पाठ परिचै

'ढोला-मारू रा दूहा' राजस्थानी रौ अेक लोक प्रसिद्ध जूनौ गाथा-काव्य है। आ 'गाथा' दूहां में रच्योड़ी अेक अैड़ी प्रेमगाथा है जिकी राजस्थान ई नीं, इणरी सींवां वाळा प्रांतां में ई घणी लोकचावी रैयी है। इणरी लोकप्रियता रौ प्रमाण औ है कै इणरौ कोई न कोई दूहौ थेट गांव में रैवणियौ अणपढ आदमी भी आपरी जबान माथै राखै। इण बाबत औ दूहौ इणरी साख भरै—

सोरठियौ दूहौ भलौ, भल मरवण री बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।

'ढोला-मारू रा दूहा' प्रेमगाथा होवतां थकां ई इणरौ सिणगार वरणाव घणी मरजादा सूं रच्योड़ौ है। राजस्थानी भाव अर भावना सूं इणरी आत्मा सराबोर है। साहित्यकारां री दीठ मांय इणरौ काव्य-सौष्ठव सांगोपांग है। औ अेक गाथा-काव्य है।

'ढोला-मारू रा दूहा' रौ रचयिता कुण हौ अर इणरी रचना कद होयी, इण सारू विद्वानां रा न्यारा-न्यारा मत है। कीं विद्वानां री दीठ सूं आ 'गाथा' किणी खास कवि री कृति नीं होयनै मौखिक परंपरा रै जूनै काव्य जुग री अेक खास काव्य-कृति है, तौ कीं इणनै कवि 'कल्लोल' री काव्यकृति मानै। कीं विद्वान जैनकवि कुसळलाभ नैं इणरौ रचयिता मानै। पण आं धारणावां रा कोई पुख्ता प्रमाण नीं मिळै। इण खातर इणरै विसै में डॉ. माताप्रसाद रौ औ विचार लय पड़तौ लागै कै 'ढोला-मारू रा दूहा' रौ सिरजण-काळ अर उणरौ सिरजक अग्यात ई है। विद्वानां री मानता है कै असली काव्य सरुआत में सगळौ ई दूहां में हौ, पण समै रै साथै लोग दूहा भूलता गया अर इणी बिचै कीं दूहा बचग्या, ज्यांरौ कथासूत्र अेकदम विडरूप होयग्यौ। इण कथासूत्र नैं मिळावण खातर जैनकवि कुसळलाभ वि. सं. 1618 रै लगैटगै चौपाइयां बणाई अर दूहां रै बिचै जोड़-जोड़नै कथासूत्र नैं संवारियौ। औ काम जैसलमेर रै रावळ हरराज रै समै होयौ। की विद्वान 'ढोला-मारू रा दूहा' रौ बगत संवत 1000 रै लगैटगै बतावतां कुसळलाभ अर रावळ हरराज रै समै नैं कूंतता थका इण रचना रौ सिरजण काळ वि. सं. 1450 सूं पैली मानै।

कथा-सार

देस-काळ रै किणी टैम पूगळ में पिंगळ अर नरवर में नळ नाव रा राजा राज करता हा। समै रै संजोग सूं पूगळ देस में अेक बार काळ पड़ग्यौ। राजा पिंगळ परिवार समेत राजा नल सूं पुष्कर में मिल्या। राजा पिंगळ रै मारवणी नांव री अेक कन्या ही अर नळ रै ढोला उर्फ साल्हकुंवर नांव रौ राजकुमार हौ। उण टैम ढोला नैं देखनै राजा पिंगळ री राणी इण माथै रीझगी ही अर राजा माथै जोर देयनै आपरी कन्या मारवणी रौ ब्याव उणरै सागै कराय दियौ। उण बगत ढोलौ तीन अर मारवणी फगत डोढ बरस री ही। टाबर होवण रै कारण राजा पिंगळ आपरी लाडल मारवणी नैं नरवर नीं राखनै पाछा आवतै समै पूगळ लेय आया।

...यूं करतां-करतां केई बरस बीतग्या। बठीनै राजा नळ पूगळ नैं घणौ अळगौ अर उणरौ मारग अबखौ समझनै ढोला रौ दूजौ ब्यांव माळवै री राजकुमारी माळवणी रै साथै कर दियौ। इणसूं पैली होयोड़ै ब्यांव री बात नैं वै ढोला नैं नीं बताई। ब्यांव होयां ढोलौ अर माळवणी प्रेम रै सागै राजसी ठाठ-बाट अर आंणद सूं रैवण लाग्या।

उठीनै पूगळ में मारवणी बड़ी होयी। अेक दिन सपना में उणनैं ढोलो दिखै। ढोला रै रूप-रंग नैं देखनै उण रै मन में प्रेमभाव जागै तद उणरी साथण रै मारफत उणरी मां बतावै कै जकौ उणरै सपना में आयौ है वौ तौ उणरौ सायबौ है। आ बात सुणनै मारवणी ढोला रै विरह में कुदरत रै सागै अेकमेक होयनै संताप करै। पूगळ रा राजा ढोला तांई संदेसा भेजै, पण मालवणी री चतुराई रै कारण वै ढोला तक नीं पूग सकै। छैकड़ अेक ढाढी रै साम्हीं मारवणी आपरी प्रेम भावनावां नैं उजागर करै जिणनैं ढाढी काव्य रूप में मांड ढोला तांई पुगावै।

ढाढी मारवणी रौ संदेस लेयनै गुप्ताऊ रूप सूं नरवर पूगै अर आपरै गावणै-बजावणै री कळा रै बळबूतै आपरी समझदारी सूं वौ ढोला तांई उण संदेस नैं पूगाय देवै। ढाढी रै मारफत मारवणी री सुंदरता, प्रेम अर समरपण भाव री जाणकारी मिल्यां पछै ढोलौ खुद उण सूं मिळण री सबळी आफळ करै पण सोरै सांस पार नीं पड़ै। ढोलौ कीं दिनां पछै माळवणी री विणती नैं अजाणी कर ऊंट माथै सवार होयनै पूंगळ देस पूगै। जठै राजा पिंगळ ढोला नैं बधावै, जोरदार मान-मनवार करै। राजकुमारी मारवणी मोद मनावै अर उणरी साथणियां मंगळ गावै। कीं समैं रै पछै ढोलौ अर मारवणी राजा पिंगळ सूं सीख लेयनै नरवर पूगै। इण बिचाळै केई अंतर्कथावां ई आवै, जिणमें मारवणी नैं पीवणौ सांप खावणौ, अेक जोगी रै प्रताप सूं पाछी जीवती होवणौ, ऊमरा-सूमरा री सेना सूं मुकाबलौ करणौ अर कुदरत री विपदावां भेळी है।

इण पाठ में मारवणी ढाढी नैं आपरै मन री बात बतावती थकी समझावै कै वा ढोला रै प्रेम में किण भांत रमियोड़ी है अर उणनैं ढोला तांई कांई संदेस पूगावणौ है, इण भाव सूं ओत प्रोत दूहा लिरीज्या है। अै दूहा काव्य-कला री दीठ सूं बेजोड़, भासा री दीठ सूं सहज है, जिका प्रेम, विरह अर कुदरती फूठरापै री साख नैं सवाई करै।

ढोला-मारू रा दूहा

सोरठौ

जेती जउ मनमांहि, पंजर जइ तेती पुळइ।
मनि वइराग न थाइ, वालंभ वीछड़ियां तणी।।

दूहा

फूलां फळां निघट्टियां, मेहां धर पड़ियांह।
परदेसां का सज्जणा, पत्तीजूं मिळियांह।।
सालूरा पांणी विना, रहइ विलक्खा जेम।
ढाढी, साहिब सूं कहइ, मो मन तो विण एम।।
पावस मास विदेस प्रिय, घरि तरुणी कुळसुध्ध।
सारंग सिखर, निसद्द करि, मरइ स कोमळ मुध्ध।।
तुंही ज सज्जण मित्त तूं, प्रीतम तू परिवांण।
हियड़इ भीतरि तूं वसइ, भावइं जांण म जांण।।
हूं बळिहारी सज्जणां, लज्जणां मो बळिहार।
हूं सज्जण पग पानही, सज्जण मो गळहार।।
लोभी ठाकुर आवि घरि, कांई करइ विदेसि।
दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि।।
बहु धंधाळ आव घरि, कासूं करइ विदेस।
संपत सघळी संपजे, आ दिन कदी लहेस।।

अवसर जे नहि आविया, वेळा जे न पहुत्त।
सज्जण तिण संदेसड़इ, करिज्यउ राज बहुत्त।।

सोरठौ

संभारियां संताप, वीसारियां न वीसरइ।
काळेजा बिचि काप, परहर तूं फाटइ नहीं।।

दूहा

यहु तन जारी मसि करूं, धूंआ जाहि सरग्गि।
मुझ प्रिय बद्दळ होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि।।
भरइ, पळट्टइ भी भरइ, भी भरि भी पळटेहि।
ढाढी हाथ संदेसड़ा, धण विललंति देहि।।
दूहा संदेसा मिसइं, दीधा तिणां सिखाइ।
प्रीतम आगळि वीनती, करिया इण विधि जाइ।।

ढाढियां रौ नरवर जावणौ

स्रवण संदेसा सांभळे, ढाढी किया प्रयांण।
मागरवाळ जु आविया, देसे साल्ह सुजांण।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

पंजर=पिंजरा (अस्थिपंजर)। आगळी=आगै वाळी। वइराग=वैराग, विरक्ति। सांभळे=सुणणौ, सांभळणौ। वालंभ=बालम, प्रियतम। प्रयाण=प्रस्थान। पत्तीजूं=भरोसौ करूं, पतीजणौ। मागरवाळ=याचक। साल्ह=साल्हकंवर (ढोला रौ नांव)। सालूरा=मेंडक, डेडरिया। सुजाण=स्याणौ–समझणौ, चतुर। जेम=जियां, जिसौ। एम–इयां, इसौ। पावस=बिरखा री रुत, चौमासौ। सारंग=मोर। मरइ=म्रित्यु, मौत। परिवाण=प्रमाण। वसइ=वासौ करै, रैवै। धंधाळू=धंधा वाळौ। संभारियां=याद करणौ। परहर=छोडणौ, छिटकावणौ। पळट्टइ=पलटै, बदळै। विललंती=विळाप करती, बिलखती।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ढोला रा पिता कठै रा राजा हा?

(अ) पूंगळ देस (ब) नळ देस
(स) धूंधळ देस (द) जळ देस

( )

2. मारवणी रै पिता रौ नांव कांई हौ?

(अ) राज पिंगळ (ब) राजा नरवर
(स) राज गजराज (द) राजा साल्ह

( )

3. ढोला रौ असली नांव कांई बतायौ जावै ?

(अ) साल्ह कुंवर (ब) समदर कुंवर

(स) सगत कुंवर (द) रूपल कुंवर

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजा पिंगळ किण देस रौ राजा हौ ?
2. ढोला री धण मारवणी किण देस री राजकुमारी ही ?
3. 'विललंती' सबद रौ कांई अरथ हुवै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. मारवणी किणसूं प्रेम करै ?
2. मारवणी रौ संदेस ढोला तांई कुण पूगावै ?
3. ढोला–मारू री कथा कांई है ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ढोला–मारू री कथा रौ सार लिखौ।
2. मारवणी रै विरह भाव नैं उजागर करौ।
3. मारवणी ढाढी सागै ढोला नैं कांई संदेस भेजै ?

नीचै दिरीज्या दूहां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. फूलां फळां निघट्टियां, मेहां धर पड़ियांह।
   परदेसां का सज्जणा, पत्तीजूं मिळियांह।।

2. पावस मास विदेस प्रिय, घरि तरुणी कुळसुध्ध।
   सारंग सिखर, निसद्द करि, मरइ स कोमळ मुध्ध।।

3. अवसर जे नहि आविया, वेळा जे न पहुत्त।
   सज्जण तिण संदेसड़इ, करिज्यउ राज बहुत्त।।

4. स्रवण संदेसा सांभळे, ढाढी किया प्रयांण।
   मागरवाळ जु आविया, देसे साल्ह सुजांण।।

❑रास

वीसलदेव रास

नरपति नाल्ह

कवि परिचै

कवि नरपति नाल्ह आदिकाळ अर मध्यकाळ रै संधिकाळ रा मौजीज कवि मानीजै। नाल्ह आंरौ मूळ नांव अर 'नरपति' पदवी रै रूप में विद्वानां मानी है। कवि भाट जाति सूं जाणीजै। आंरी लिख्योड़ी रचना 'वीसलदेव रास' 14वीं सदी री रचना मानीजै अर कवि री भासा भी अजमेर रै आसै-पासै री लखावै, पण प्रामाणिकता रै सागै कवि रौ जलम अर दूजी रचनावां रौ परिचै नीं मिळै। इण रचना रै अलावा कवि रै व्यक्तित्व अर कृतित्व री खोज शोध रौ विसय है। कवि रासपरक काव्य-सैली रौ पुख्ता जाणीकार है। कवि री आ रचना लौकिक, प्रेमाख्यान, सिणगारपरक, गीत अर नाच-सैली री अमोलक रचना है। राजस्थानी साहित्य में नरपति नाल्ह नांव रै जैन कवि रौ उल्लेख 16वीं सदी में मिळै अर कवि भाण री रचना 'हमीर दे चउपई' वि. सं. 1538 में भी नाल्ह रौ नांव मिळै पण अै दोनूं नरपति नाल्ह सूं मेळ नीं खावै। कवि री आ अेक रचना ही उणनैं राजस्थानी आदिकालीन रासपरक काव्य-सैली रौ मौजीज कवि बणावै।

पाठ परिचै

'वीसलदेव रास' आदिकालीन राजस्थानी साहित्य में रास-संज्ञक, विरहपरक, गेय काव्य री घणी महताऊ रचना है। सिणगार रस रै वियोग पख नैं प्रगट करता थकां बारहमासा काव्य-सैली री रीति रौ निरवाह इण काव्य नैं दूजा काव्यां सूं ऊंचै दरजै रौ थरपै। राजमती री विरह-वेदना बारह मास री न्यारी-न्यारी दसावां में ओपतै, ऊंडै भावां सागै सांगोपांग ढंग सूं प्रगट होयी है। अैतिहासिक चरित्र माथै आधारित औ गेय काव्य री पांत में आवै। रास रा मूल तत्त्वां रौ इण मांय सांतरौ मेळ होयौ है। इण री भासा राजस्थानी रै सागै-सागै उत्तर अपभ्रंस काळ री भासा सूं मेळ खावै। इण री भासा जूनी राजस्थानी मानीजै। इण काव्य में अेक ही तरै रौ खास छंद प्रयोग में आयौ है। उण जुग रै सामाजिक-सांस्कृतिक परिचै रै सागै-सागै उण बगत रै लोकाचार, रीति-रिवाज, नेगचार, उत्सव आद रौ भी बखाण इण काव्य में मिळै।

कथासार

धार नगरी रै राजा भोज पंवार री बेटी राजमती रौ ब्यांव अजमेर रा राजा वीसलदेव सूं होवै। ब्यांव में राजा भोज घणै चाव सूं वीसलदेव नैं उण बगत रा नामी ठिकाणा, रजवाड़ा, राज रा नगर, हाथी-पालकी, दासियां आद उपहार में देवै। ब्यांव पछै अजमेर आयां वीसलदेव नैं आपरै सवा लाख घोड़ां, सात सौ हाथियां, गढ अर मिंदर रै वैभव नैं देखनै मन में घमंड आयग्यौ। उणरै इण घमंड नैं राजमती लख लेवै। लारलै जलमां रा पाप अर विधाता री लेखनी रौ लेखौ इण जलम में भोगणौ पड़ै। राजमती रै मूंडै सूं निकळ्या ताता अर अकरा बोल राजमती रै संजोग नैं विजोग में बदळ देवै। राजमती वीसलदेव नैं कैवै कै आप इण बात रौ घणौ घमंड मत करौ, आप जिसा घणा ही वैभवसाली राजा धरती माथै बिराजै है अर उड़ीसा रै राजा रै तौ खाणां में हीरा निपजै है।'' अै ताता बोल वीसलदेव

रै मन–मगज में कील ज्यूं गड जावै। राजा वीसलदेव बारह बरस तांई उड़ीसा जावण रौ प्रण करयौ। राजा नैं मनावण रा घणा ही उपाय करया, पण वीसलदेव राजमती अर राजपाठ नैं छोडनै उड़ीसा सिधारग्या। इण बिछोह में राजमती रै घणौ विजोग होयग्यौ। बारह बरसां तांई वा विरह रै ताप में नित तपती, कळपती अर झुरती रैयी। विरह रै ताप सूं पंजर होयगी अर आखर बारह बरसां पछै वीसलदेव धन–माल सागै पधारयौ। राजमती रै पाछौ संजोग–सुख होयौ।

वीसलदेव रास

(1)

चालियउ उलगाणउ कातिग मास।
छोडीया मंदिर घर कविलास।।
छोडीया चउबारा चउखंडी, तठइ पंथ सिरि नयणा गमाइया रोइ।
भूख गई त्रिस ऊचटी, कहि न सखीय नींद किसी परि होइ।।

(2)

मगसिरियइ दिन छोटा जी होइ।
सखीय संदेसउ न पाठवइ कोइ।।
संदेसइ ही बज पड़यउ, ऊंचा हो परबत नीचा घाट।
परदेस पर भुइं गयउ, तठइ चीरीय न आवइ न चालए बाट।।

(3)

देखि सखी हिव लागउ छइ पोस।
धण मरतीय को मत दीयउ दोस।।
दुखि दाधी पंजर हुई, धान न भावए तज्या सिरि न्हाण।
छाहड़ी धूप न आलिंगइ, देखतां मंदिर हुयउ मसांण।।

(4)

माह मास इसीय पडइ ठंठार।
दाधा छइ बनखंड कीधा हो छार।।
आप दहंती जग दहाउ, तूं तउ उवइगउ रे आविज्यो करह पलाणि।
जोवन छत्र उमाहियउ, म्हाकी कनक काया माहे फरेबी आण।।

(5)

फागुण फरहरच्या कंपिया रूंख।
चितइ चमकियउ निसि नींद न भूख।।
दिन राया रितु पालटी, महांकउ मूरख राउ न देषइ आइ।
जीवउं तउ जोवन सखी, फरहरइ चिंहु दिसि बाजइ छइ बाइ।।

(6)

चेत्र मासइ चतुरंगी हे नारि।
प्रीय बिण जीविजइ किसइ अधारि।।
आज दीसइ सु काल्हे नहीं, म्हे किउं होळी हे खेलण जांह।
उलगांणइ की गोरड़ी, म्हांकी आंगुळी काढतां निगलीजइ बांह।।

(7)

बइसाखइ धूर लूणीजइ धान।
सीला पाणी अर पाका जी पान।
कनक काया घट सीचिजइ, म्हांकउ मूरख राउ न जाणए सार।
हाथ लगामी ताजणउ, ऊभउ सेवइ राज दुआर।।

(8)

देखि जेठाणी हिव लागउ छइ जेठ।
मुह कुमलाणा नइ सूक गया होठ।।
मास दिहाडउ दारूण तवइ, धण कउ हे धरणि न लागए पाउ।
अनल जळइ धण परजळइ, हंस सरोवर छंडि गयउ ठांउ।।

(9)

आसाढइ धुरि बाहुड़या मेह।
खलहल्या खाळ नइ बह गई खेह।।
जइ रि आषाढ न आवइ, माता रे मइगल जेउं पग देइ।
सद मतवाळा जेउं ढुळइ, तिहि धरि ऊलग काइ करेइ।।

(10)

सावण बरसइ छइ छोटीय धारि।
प्रीय विण जीविजइ किसइ अधारि।।

सह कोइ खेलइ काजळी, तठइ चिडीय कमेडीय मंडिया आस।
बाबहियउ प्रीय प्रीय करइ, मोनइ अणख लगावइ हो सावण मास।।

(11)

भाद्रवइ बरिसइ छइ गुहिर गंभीर।
जळ थळ महियल सहु भरया नीर।।
जागे कि सायर ऊलटयउ, निसी अंधारीय बीज खिवाइ।
बादळ धरती स्यउं मिल्या, मूरख राउ न देखइ जी आइ।
हूं तो गोसामी नइ एकली, दुइ दुख नाल्ह किउं सहणा जाइ।।

(12)

आसोजइ धण मंडिया आस।
मंडिया मंदिर घर कविलास।।
धउळिया चउबारा चउखंडी, साधण धउळिया पउलि प्रकार।
गउख चढी हरखी फिरइ, जउ घर आविस्यइ मंध भरतार।।

काव्य रौ सार

कवि बारहमासा रीति सूं बारह महीनां री रितुवां रौ महीनै वार चित्रण करता थकां राजमती री मनोदसा अर विरह री वेदना रौ इण भांत वरणन कर्‌यौ है—

1. पीव परदेस बैठ्या है। काती रौ महीनौ लागग्यौ। देव री पूजा पतिदेव बिना कियां होवै! देव मिंदर छूटग्या। पौढण सारू ऊंचा म्हैल-माळिया छूटग्या। चौक, माळिया सगळा धणी बिना सूना। नित प्रियतम आवण री राजमती बाट जोवै। उण रा नैण नित आंसूड़ां रै कारण मगसा पड़ रैया है। विरह री पीड़ा सूं भूख अर तिस उचटगी। हे सखि! नींद कांई होवै, म्हनैं तौ इणरौ बोध तक नीं है।

2. मिगसर रै मास में दिन घणा छोटा होवै। प्रियतम रौ संदेसौ भी नीं आवै। संदेसै माथै जाणै बाधा रौ पड़दौ पड़ग्यौ। पीव रै मारग ऊंचा-ऊंचा भाखर है अर नीची-नीची घाट्यां। म्हारौ भरतार परदेसी धरा पर है। जठै सूं कोई चिट्ठी-पत्री कै संदेसौ नीं आवै अर ना ही सखरौ मारग। रस्तौ घणौ अबखौ है।

3. हे सखि, देख! अबै पोस रौ महीनौ लाग्यौ है। राजमती रा विरह री पीड़ा सूं प्राण निसरै। इणरौ दोस म्हनैं (राजमती) नीं लागै। इण विरह री दांझ में बळनै राजमती पंजर होवै है। नित रौ न्हावण छूटग्यौ। धान भी नीं भावै। तावड़ौ अर छियां रौ आलिंगन भी रुचिकर नीं लागै। उणरौ मन रूपी मिंदर पीव रूपी देव बिना कोरौ मसाण ज्यूं लखावै।

4. माघ रै महीनै में हाड कंपावण वाळौ सी पड़ै। इण हाडकंपाऊ सियाळै सूं सगळा रूंख अर वन बळग्या अर राख ज्यूं होयग्या। ठंठार खुद ठरै अर आखौ जगत धुजावै। राजमती री विरह पीड़ा ठंठार ज्यूं परकत रौ कण-कण ठारै, इण भांत लखावै। राजमती वीसलेदव नैं बिना रुक्यां बेगा आवण री अरदास करै। इण देह अर रूप रूपी ऊंठ रै पलाण कसण सारू बेगौ आवण री विनती करै। जोबन रौ छत्र घणौ ऊंचौ कैयनै वा आपरी स्वर्ण-काया री वीसलदेव नैं आंण देवै अर मिळण सारू बेगा पधारण रौ विनय करै।

5. फागण आपरै उफाण माथै है। रूंख कंपकंपावै। मनड़ौ घणौ अधीर है। दिन-रात भूख नीं लागै। फागण में दिन घणा सुहावणा होय जावै। रितु भी आपरौ मिजाज पलटै। पण राजमती रौ मूरख राव परदेसां सूं घरां नीं पधारै। उणरै जोबन रौ आधार उणरौ प्रियतम है। फागण में बायरौ चारूं दिस में घणौ जोर सूं बाजै।

6. चैत्र मास में नारी रौ हिवड़ौ अर पहनावौ अलेखूं रंगां वाळौ होवै। पण पीव रै बिना इण वेळा राजमती रै पति बिना जीवण अर रंग रौ कांई आधार? आज री वाल्ही वेळा काल नीं रैसी। अै बातां अर रंग काल कोनी रैवै। राजमती किण सागै होळी खेलण जावै? उणरौ सायबौ परदेसां अर वा विरह री पीड़ा में दाझीजै। उणरै आंगळी री अंगूठी उणरै बांह तांई निसरण लागी। उणरौ डील इत्तौ पतळौ होयग्यौ है।

7. बैसाख महीनौ सरू होवतां ही पाक्योड़ौ धान काढणौ सरू होय जावै। पाणी सीतळ लागै अर रूंख रा पाना पाका पड़ जावै। म्हारौ मूरख पीव मनड़ै रौ मरम अर रुत रौ सार नीं समझै। जोबन नैं रोकणौ किणी रै वस में नीं है।

8. हे जेठाणी, देख अबै जेठ रौ महीनौ लागग्यौ है। जेठ री तपती सूं मूंडौ कुम्हळावण लाग्यौ है अर होठ सूकण लाग्या है। जेठ रै महीनै में दिन भयंकर तपै। धणी सूं मिलण किण विध होवै? बळती पून में धरती अर धण दोनूं परजळीजै। हंस सरोवर छोडनै ठाडै ठांव चला गया।

9. आसाढ महीनै रै आवतां ई घणौ जोरदार मेह आयौ है। खाळा अर नाळा पाणी सूं खळकण लाग्या। खेह बैवण लागी। इण वेळा बादळ मदमस्त हाथी ज्यूं आभै में बरसता फिरै। हमेसा मतवाळा ज्यूं मिजाज लियां जळ बरसावै। पण उणरौ पति इण रुत में परदेस बसै तौ वा कांई कर सकै है अर्थात उण खातर आ वेळा आणंद री नीं विरह री पीड़ा बणै।

10. सावण महीनै में बादळां सूं नेन्ही-नेन्ही बूंदां बरसै, पीव रै बिना अेक विरहणी रै जीवण रौ कांई आधार होय सकै। सगळी सखियां काजळी तीज रै तिंवार में रमै। चीड़ी-कमेड़ी रै भी आस बंधै अर वै आपरौ आलणौ बणायनै नेह सूं रसै-बसै। बाबहिया (पपैया) पीहु-पीहु रौ कलरव अर विलाप करै। पीहु-पीहु रौ विलाप अर औ सावण रौ महीनौ म्हनैं ईसकै रौ दुख देवै अर म्हैं पीव रै बिछोह में दुख भोगूं।

11. भादवै रै महीनै में बादळ गरजणा रै सागै भारी बरसै। च्यारूंमेर जळ ही जळ। जळ-थळ अेक होय जावै। जाणै धरती माथै सागर आयनै उलट्यौ होवै। अंधारी रातां में मेघ अर बीजळी गरजणा सागै चमकै। बादळ अर धरती अेक होय जावै। पण म्हारौ मूरख राव परदेसां सूं घरां नीं पधारै। हे ईश्वर, म्हैं इण वेळा अेकली हूं। दो-दो दुख भेळा भुगतूं— अेक तौ विजोग अर दूजी बिरखा री आ सुहावणी रुत, दोनूं कीकर सहीजै?

12. आसोज रौ महीनौ लागतां ही आसा बंधै। घर, मिंदर अर कविलास सगळां में नूंवौपण अर आसा रौ संचार होवै। चौबारा, पोळ आद ऊजळा धवळ होय जावै। ऊंचै गवाक्ष माथै चढनै राजमती हरख सूं फिरै, कदास घर आवै म्हारा परदेसी पीव!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

चालियउ=चाल्यौ। उलगांणउ=प्रवासी। कातिग मास=काती रौ महीनौ। कविलास=ऊंची अट्टालिका, कैलास। चउबारा=चौबारौ, चौक। चउखंडी=चौखंडौ माळियौ। नयण=नैण। त्रिस=तिरसा, प्यास। ऊचटी=गयी, उच्चंट। सखीय=सखि। मगसिरिइ=माघ महीनौ। संदेसउ=संदेसौ। न पाठवइ=नीं भेजै। बज=वस्त्र, कपड़ौ। परदेसे=विदेस में। भुंई=भूमि। चीरीय=पत्र, चिट्ठी। बाट=मारग। चालए=चालै। पोस=पौह रौ मास। लागउ=लागग्यौ। छह=है। धण=पत्नी। दीयउ=देवणौ। दाधि=बाळणौ। पंजर=अस्थिपंजर, कंकाळ होवणौ। तज्या=छोड दिया, त्यागणौ।

छाहड़ी=छियां। आलिंगइ=गळै मिळणौ। इसीय=इसौ। ठंठार=हाडकंपाऊ सियाळौ। वनखंड=जंगळ। उवइगउ=तेजी सूं। पलाणि=ऊंठ माथै पिलाण कसणौ। उमाहियउ=उमंग सूं, फैला लियौ। फेरबी=फिरा दी। आण=दुहाई। फरहर्‌या=फहराईजै। चितइ=हिवड़ौ, हीयौ। चमकियउ=अधीर, आकळ–बाकळ। राया=सुहावणा। राउ=राजा, पीव। चिहू=चारू। दिसी=दिसावां। बाइ=बायरौ, हवा। जांह=जाऊं। अलगाणइ=परदेसी पीव। गोरड़ी=धण, स्त्री। बइसाखइ=बैसाख रौ महीनौ। धुर=सरू में। लूणीजइ=काटणौ, निकाळणौ। सीला=सीतळ। अरु=अर। राउ=राजा। ताजणउ=ताजणौ, चाबुक। आसाढइ=आसाढ मास। बाहुड़्या=आया। मेह=बिरखा। खेह=खंख, रजकण, गरद। जेउ=ज्यूं। खलहल्या=खळ–खळ बैवणौ। माता मइगल=मस्त हाथी। ढुळइ=मदरौ–मदरौ चालणौ। सत्रावण=सावण मास। छह=है। धार=बिरखा री धारा। जीवियइ=जीवण रौ। बाबहियउ=पपैयौ। अनख=ईसकै री पीड़। भाद्रवइ=भादवौ। गुहिर=गैरौ। सायर=सागर। उलटयउ=उलटियौ। निसि=रात। बीज=बीजळी। स्यउं=दोनूं। दुइ दुख=दोनूं दुख। आसोजइ=आसोज रौ मास। धवळिया=सफेद, धोळा। पहिल=पोळ, प्रतोळी। गउख=गवाक्ष, गोखौ।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजमती किणरी बेटी ही—
   (अ) राजा भोज री (ब) अचलदास री
   (स) आनंदपाल री (द) वीसलदेव री
   ( )

2. वीसलदेव नैं तानौ कुण मार्‌यौ—
   (अ) राजा भोज (ब) उणरौ मंत्री
   (स) राजमती (द) उणरी माता
   ( )

3. वीसलदेव प्रवास माथै किण ठौड़ गयौ—
   (अ) बंगाल (ब) गुजरात
   (स) मालवा (द) उड़ीसा
   ( )

4. राजमती रौ विरह वरणन किण सैली में होयौ है—
   (अ) वचनिका सैली (ब) संवाद सैली
   (स) बारहमासा सैली (द) दवावैत सैली
   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजमती रै पिव अर पिता रौ नांव बतावौ।
2. वीसलदेव कित्ता बरसां तांई प्रवास माथै रैया?

3. ठंठार किण महीनै में ठारै ?
4. किण मास में दिन सुवावणा लागै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. माघ रै महीनै ठंठार किण भांत री पड़ै ?
2. राजमती रै विजोग रौ कारण बतावौ।
3. बिरखा रुत विरहणी माथै कांई असर न्हाखै ? लिखौ।
4. ''आसोज रै महीनौ नूंवौपण अर उल्लास लावै।'' इण कथन नैं समझावौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''वीसलदेस रास में राजमती रौ विजोग सांगोपांग ढंग सूं बारहमासा सैली में प्रगट होयौ।'' इण कथन नैं दाखला देयनै सिद्ध करौ।
2. बारमासा री रितुवां रौ प्रभाव लिखौ।
3. वीसलदेव रास री काव्यगत विसेसतावां लिखौ।
4. वीसलदेव रास रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ—

1. मगसिरियइ दिन छोटा जी होइ।
   सखीय संदेसउ न पाठवइ कोइ।।
   संदेसइ ही बज पड़यउ, ऊंचा हो परबत नीचा घाट।
   परदेस पर भुइं गयउ, तठइ चीरीय न आवइ न चालए बाट।।

2. चेत्र मासइ चतुरंगी हे नारि।
   प्रीय बिण जीविजइ किसइ अधारि।।
   आज दीसइ सु काल्हे नहीं, म्हे किउं होळी हे खेलण जांह।
   उलगांणइ की गोरड़ी, म्हांकी आंगुळी काढतां निगलीजइ बांह।।

3. सावण बरसइ छइ छोटीय धारि।
   प्रीय विण जीविजइ किसइ अधारि।।
   सह कोइ खेलइ काजळी, तठइ चिडीय कमेडीय मंडिया आस।
   बाबहियउ प्रीय प्रीय करइ, मोनइ अणख लगावइ हो सावण मास।।

❑सबद-वाणी

सबद

सिद्धाचार्य जसनाथ

कवि परिचै

राजस्थानी साहित्य रै इतिहास में मध्यकाळ री थितियां मुजब भगती री भागीरथी लावण में अठै रा संतां अर संत-संप्रदायां रौ घणौ योग रैयौ। समाज में उण बगत ईश्वर जैड़ी अदीठ सत्ता रै वास्तै विश्वास अर आत्मबळ देवण खातर अठै अनेक संत संप्रदायां री थरपणा होयी। संस्थापक संत अर वांरा चेला (शिष्य-परंपरा) आपरी साधना, अनुभव, ईश्वरीय प्रेम, जीवण मूल्यां अर नीति सूं जुड़्योड़ौ काव्य राजस्थानी साहित्य नैं सूंप्यौ। लोकभासा में सरल अर सहज भाव सूं संतां री वाणियां, सबद-साखियां, जलम- झूलणा आद रै रूप में संतां रौ औ काव्य संत-साहित्य रै नांव सूं जाणीजै, जिण रौ खास उद्देश्य लोककल्याण रौ रैयौ। आं रचानावां में काव्य-गुण, दोष अर व्याकरण रै नेमां री पालणा माथै निजर नीं राखीजी, क्यूंकै संत कवियां री दीठ मानखै री भलाई माथै ही।

संत-संप्रदायां री परंपरा में जसनाथी संप्रदाय ई अेक है। इण रा प्रवर्तक संत जसनाथजी हा। आं रौ जलम वि. सं. 1539 में काति महीनै री चानणी इग्यारस रै दिन बीकानेर जिलै रै कतरियासर गांव में होयौ। आपरै मां-बाप रै विसय में खास जाणकारी नीं लाधै। हमीरजी जाट अर वांरी जोड़ायत रूपांदे जसनाथजी नैं बेटा ज्यूं पाळ-पोसनै मोटा कर्‌या। अैड़ी मान्यता ई है कै जसनाथजी आंनैं मारग में पड़्या लाधा हा, जिणांनैं बेटा रै ज्यूं इण जोड़ै सूं लाड-प्यार मिळ्यौ। बारह बरसां री ऊमर में कांकड़ मांय सांढियां चरावती बगत बाळक जसवंत री गुरु गोरखनाथ सूं भेंट होयी। गोरखनाथजी 'गुरु सबद' दियौ। बाळक जसवंत सूं जसनाथजी नांव होयग्यौ। इण बाबत अेक उक्ति चावी है—

संवत् पनरै इक्यावनै, आसोजी सुद पाय।
वां दिन गोरखनाथ सूं, जसवंत जोग पठाय।।

जप-तप, जोग-साधना करतां वि. सं. 1563 में आसोज सुद सातम रा आप कतरियासर में समाधि लेयली। उण बगत जसनाथजी 24 बरसां रा हा। कतरियासर जसनाथी पंथ रौ पवित्र तीरथ मानीजै। जसनाथजी, विश्नोई पंथ रा प्रवर्तक संत 'जांभोजी' अर राठौड़ां री कुळदेवी भगवती 'करणीजी' रै बगत रा संत होया। आप मुगती खातर गुरु रौ मारग दरसण अर नांव-सिमरण री लगन नैं घणी महताऊ मानता। वांरी वाणियां में ब्रह्मा, विष्णु, महेश अर राम-कृष्ण रा नांव आया है, पण मुगती वास्तै वै निरगुण निराकार री उपासना नैं सिरै मानी। वै करमवाद रा खरा समर्थक हा। वांरौ मानणौ हो कै मिनख नैं उणरी करणी रौ फळ जरूर मिळै। जैड़ा करै, वैड़ा भरै अर भोगै। आपरी शिष्य-परंपरा में ई केई संत कवि ज्यूं- करमदास, देवोजी, चोखनाथजी, हरोजी, सोभोजी सोनी, पांचोजी अर 18वीं सदी में नामी संत कवि लालनाथजी होया।

पाठ परिचै

इण पाठ मांय जसनाथजी रै सबदां रा कीं अंस लिरीज्या है। जियोजी ब्राह्मण नैं तत्त्व-ग्यान करायौ, जगत-पिता परमेसर सूं भेंट रौ आध्यात्मिक मारग बतायौ। आप कैवै— 'धरती अर इंद्र रौ जोड़ौ अमर है, दूजा जोड़ा तौ बिछड़ण वाळा ई है।' वै नासवान देह, आछी करणी अर सिमरथ गुरु-ज्ञान री बात अठै करी है, जिणरा साखीधर वांरी सबद-वाणियां है।

सबद

धरती इन्द सिरो जुड़ावो, नित लग नेह सनेहा।
अमी मंडळ में बाजा बाजै, बरस सवाया मेहा।
इन्दर बरसै धरती सोसै, ऊंडा बैसैं तेहा।
धरती माता सरब संतोखै, रूप छत्तीसौं ऐहा।
कांई रे पिराणी खोज नैं खोजै, खाख हुवै भुस खेहा।
काची काया गळ-बळ जासी, कूं-कूं बरणी देहा।
हाडां ऊपर पून ढुळैली, घण हर बरसै मेहा।
माटी में माटी मिळ जासी, भसम उडै हुय खेहा।
हुय भूतळा खाख उडावै, करणी रा फळ ऐहा।
करणी हीणा नित पिछतावै, लाधै न गुरु का भेवा।
पूरै गुरु नैं जोय पिराणी, आवै पापां रा छेहा।

बुधबायरां नैं आपरा उपदेसां रौ इमरत पाय जसनाथजी हरिभजन री बात कैवै। बिन हरि नैं पिछाण्यां मिनख सींग-पूंछबायरौ ढोर है, बिना कणुका वाळौ बूमणौ है। औसर चूक्यां पछै पिछतावौ ई लारै रैवै। आप गो-रिछ्या री बात कर अहिंसा रौ पाठ पढावै। गाय रौ महत्त्व अर उणरा रुखाळा सूरज-चांद नैं बतावै—

गाय न गोखी शीसो सूअर, न चीनो हरियाई।
बै बिमुणा विमुख हांडै, कण बिन कुगस गाई।
रण में पंछी तिस्यो मरियो, ओसर चूको डाई।
सांभळ मुल्ला, सांभळ काजी, सांभळ बकर कसाई।
किण फरमाई बकरी बिरदो, किण फरमाई गाई।
गाय गोरख नैं इसी पियारी, पूत पियारो माई।
फिर चरि आवै सांझ दुहावै, राख लेवै सरणाई।
थे मत जाणो रुळी फिरै है, चांदो-सूरज गिंवाळी।

कूड़ा-कपटी, ठगोरा अर राम-नांव री भगवां चादर पैरयोड़ा धरम रा धाड़ायतां नैं सावचेत करै। साच, सील, मीठा बोल, जीव रिछ्या, परोपकार, हरिभजन अर हरिकथा साचा संतां रा गुण है। नीति-उपदेस रा कीं उदाहरण अठै देखणजोग है—

जत-सत रै'णा कूड़ न कै'णा, जोगी तणी सहनाणी।
मनकर लेखण तनकर पोथी, हरगुण लिखो पिराणी।
अमीं चवै मुख इमरत बोलो, हालो गुरु फरमाणी।
गाय'र गाडर भैंस'र छाळी, दुय दुय पिवो पिराणी।
सिरज्या देव अमीं रा कूंपा, गळबी काट न खाणी।
जे गळ काट्यां होय भलेरो, अपरो काट पिराणी।
कांटो भागां थरहर कांपो, पर जिवड़ो यूं जाणी।
कुंडा धोवै करद पलारै, रगत करै महमाणी।
सै नर जाणे सुरगे जास्यां, कोरा रह्या अयाणी।

झूठां नैं जमदूत धवैंला, भाड़ धवैं ज्यूं धाणी।
बळ-बाकळ भैरूं री पूजा, गोरख मना न माणी।
साधां नै इन्द लोके वासो, देव तणी देवाणी।
साधु हिंयर हिंडोळै हींडा, पुंता सुरग बिवाणी।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सिरो=श्रेष्ठ। अमीं=इमरत। सौसे=सोंखणौ, चूसणौ। रूप छत्तीसो ऐहा=प्रकृति रै छत्तीसूं रूपां रौ वरणन करणौ। खोज नै खोजै=लाध्योड़ी चीज नैं कांई सोधणौ। खाख=भसमी, राख। पून=हवा, वायरौ। घण हर बरसै मेहा=चिता री अगन सूं जकौ धूंवौ उठैला वौ हवा रै योग सूं पाणी नैं सोखनै थारै हाडां माथै बादळ रै रूप में बरसैला। भूतळा=भतूळियौ, चक्रवात। वाइन्दा=झंझावात। छेहा=अंत। शीसो=खरगोश। चीनो=पिछाणणौ। हरिभाई=परम प्रभु। बिमुणा=लज्जाहीण। विमुख हांडै=उलटौ मारग पकड़नै गोता खावणा। कुगस गाई=फूस, फोफळिया, अनाज रा छिलका, थोथा। रण=अरण्य, जंगळ। विरदो=वध करौ, मारौ। सरणाई=दूध देयनै ई गाय सरण में राखै। गिंवाळी=गवाळिया, रुखाळा। जत=संयम। फरमाणी=आदेस। गाडर=भेड़। अमीं रा कूंपा=दूध रूपी अमृत भंडार। गळबी=गळा करद, छुरी। पलारै=धार देवै। महमाणी=बखाण करणौ, गुण बखाणणौ। भाड़=भड़भूंजा, धान सेकण वाळौ। हियर=हाथी-घोड़ा।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रा प्रवर्तक कुण हा?

(अ) जांभोजी (ब) चरणदासजी
(स) जसनाथजी (द) हरिरामदासजी

( )

2. जसनाथजी री जलमभोम रौ कांई नांव है?

(अ) पूगळ (ब) लिखमीदेसर
(स) बम्बलू (द) कतरियासर

( )

3. जसनाथजी रौ जलम कद होयौ?

(अ) वि. सं. 1539, काति री चानणी इग्यारस (ब) वि. सं. 1450, माघ री अंधारी सातम
(स) वि. सं. 1540, काति सुद इग्यारस (द) वि. सं. 1965, वैसाख सुद तीज

( )

4. संत-साहित्य रौ मूळ उद्देश्य कांई है?

(अ) कवियां में नांव कमावणौ (ब) पुरस्कार लेवणौ
(स) लोककल्याण अर जनचेतना जगावणी (द) साहित्य री समृद्धि करणी

( )

5. जसनाथजी जीवित-समाधि ली, जणां वांरी ऊमर ही—

(अ) 25 बरस (ब) 24 बरस

(स) 29 बरस (द) 39 बरस

( )

6. संत-संप्रदायां रै मूळ में किसी परंपरा चालै ?

(अ) गुरु-शिष्य परंपरा (ब) देवी-देवतावां री परंपरा

(स) देव-पुजारी परंपरा (द) खाली गुरु परंपरा

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रौ मोटौ तीरथ-धाम किसौ गिणीजै ?
2. जसनाथजी रौ बाळपणै में कांई नांव हो ?
3. जसनाथजी नैं 'गुरु-सबद' कुण दियो ?
4.. जसनाथजी किणनैं तत्त्व-ज्ञान दियौ हो ?
5. 'फिर चरि आवै सांझ दुहावै' किणरै सारू कथीज्यौ है ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथी संप्रदाय रा जीव-मुगती खातर कांई विचार है ?
2. संत-काव्य रूपां में किणी तीन रा नांव लिखौ।
3. जसनाथजी परमात्मा रै किण रूप रा उपासक हा ?
4. जसनाथजी री रचनावां रा मूळ विसय कांई रैया है ?
5. 'धरती इन्द सिरो जुड़ावो' रा भाव कांई है ?
6. 'कांटो भागां थरहर कांपो' में कवि कांई कैवणी चावै ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. जसनाथजी रै जीवण अर सबद-साहित्य सूं कांई सीख मिळै ?
2. जसनाथजी रै सबद-साहित्य रा भाव आज रा जुग में ई घणा महताऊ है। इणरौ खुलासौ करौ।
3. ''संत जसनाथजी रो सबद-साहित्य सांचै अरथां में मिनख रो मारग-दरसण करै।'' इण कथन माथै आपरा विचार राखौ।
4. संत-साहित्य अर उणरा महत्त्व नैं दाखला देयनै समझावौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. कांई रे पिराणी खोज नैं खोजै, खाख हुवै भुस खेहा।
   काची काया गळ-बळ जासी, कूं-कूं बरणी देहा।
   हाडां ऊपर पून ढुळैली, घण हर बरसै मेहा।
   माटी में माटी मिळ जासी, भसम उडै हुय खेहा।।

2. माटी में माटी मिळ जासी, भसम उडै हुय खेहा।
हुय भूतळा खाख उडावै, करणी रा फळ ऐहा।
करणी हीणा नित पिछतावै, लाधै न गुरु का भेवा।
पूरै गुरु नैं जोय पिराणी, आवै पापां रा छेहा।।

3. गाय न गोखी शीसो सूअर, न चीनो हरियाई।
बै बिमुणा विमुख हांडै, कण बिन कुगस गाई।
रण में पंछी तिस्यो मरियो, ओसर चूको डाई।
सांभळ मुल्ला, सांभळ काजी, सांभळ बकर कसाई।।

4. कांटो भागां थरहर कांपो, पर जिवड़ो यूं जाणी।
कुंडा धोवै करद पलारै, रगत करै महमाणी।
सै नर जाणे सुरगे जास्यां, कोरा रह्या अयाणी।
झूठां नैं जमदूत धवैंला, भाड़ धवैं ज्यूं धाणी।।

❑भक्ति-काव्य

देवियांण

ईसरदास बारठ

कवि परिचै

ईसरदास बारठ रौ जलम बाड़मेर जिलै रै गांव भादरेस में वि. सं. 1595 री चैत सुद नवमी नै होयौ। वांरै पिता रौ नांव सूराजी बारठ अर माता रौ नांव अमरा बाई हौ। बाळपणै में ई मां-बाप चालता रैया जणै वांरा काकोसा आसोजी बारठ वांनै पाळ-पोसनै मोटा करया अर ठेठ तांई आपरौ माइतपणौ निभायौ। ईसरदासजी रै जलम नैं लेयनै औ दूहौ चावौ है—

पनरा सौ पिच्याणवै, जलम्या ईसरदास।
चारण वरण चकार में, उण दिन हुवौ उजास।।

आसोजी ई ईसरदासजी नै पढाया-लिखाया अर काव्य-सिरजण री सीख ई वांनै आपरै काकोसा सूं ई मिळी। ईसरदासजी रा दोय ब्यांव होया। पैली जोड़ायत देवलबाई सूं दो बेटा जगोजी अर चूंडोजी रौ जलम होयौ। जोड़ायत री मौत सूं वांरै मन में विजोग रै कारण वैराग भाव आवण लागौ जणै काकोसा आसोजी हवा-पाणी बदळावण खातर वांनै द्वारका लेयग्या। आवती बगत गुजरात रै जामनगर रावळ जाम री सभा में गिया, उठै ईसरदासजी री काव्य-प्रतिभा सूं रावळ जाम रीझग्या। राजपंडित पीतांबर भट्ट उणां री काव्य-हटोटी सूं राजी होया अर भगवद्काव्य रचण री सीख दीवी। आगै जायनै ईसरदासजी पीतांबर भट्ट नैं आपरौ गुरु मान धरमग्रंथां रौ सार समझियौ अर आपरी रचनावां में गुरु नैं अंजस ई दियौ। ईसरदास बारठ जामनगर में इज रैया अर काका आसोजी पाछा भादरेस आयग्या हा। रावळ जाम अवसूरा साखा रा चारण पेमा भाई गढवी री बेटी राजबाई सूं ईसरदासजी रौ दूजौ ब्यांव करायौ। राजबाई री कूख सूं कवि रै तीन बेटा— गोपाळदासजी, जैसाजी, कान्हदासजी अर अेक बेटी रौ जलम होयौ। बेटी मीसण साखा रा चारणां में परणायोड़ी ही। ईसरदासजी रा वंसज आज ई है। रावळ जाम ईसरदासजी नैं संचाणो, रंगपुर, बीरबदरका, गूंढो आद केई गांवां री जागीर दीवी। रावळ जाम सूं वांनै 'क्रोड़पसाव' मिळण रौ उल्लेख ई नैणसी री ख्यात रै दूजै भाग में मिळै।

आप जीवण रा पड़ता दिनां वै आपरै गांव भादरेस आयाग्या। गांव में रैवता थकां ई लूणी नदी रै कांठै आप अेक कुटिया बणाई अर जीविया जठै तांई उण कुटिया में भगवद्-भजन करतां 80 बरसां री उमर में आपरौ सरीर छोड़ परलोक सिधाया। मध्यकाळ रा अलेखूं संत-कवियां में ईसरदासजी ई रौ चाव नांव हो। वै 'ईसरा सो परमेसरा' रै नांव सूं ओळखाण बणायी। आपरै जीवणकाळ री केई चमत्कारिक घटनावां चावी है। लोकप्रवाद अर दंतकथावां में लोकमानस आपरौ विस्वास रुखाळै। वांरै बगत रा कवियां अर उणरै पछै होया भक्त-कवियां, जिणां में मांडण, नाभादास, राघवदास, रामदास, परसराम रतनू रा नांव आवै, आपरी भक्तमाळ अर दूजी रचनावां में ईसरदासजी रौ उल्लेख घणी श्रद्धा साथै करयौ है। ईसरदास री फुटकर रचनावां रै साथै भक्तिपरक काव्य रचनावां में हरिरस, गुण रास लीला, गरुड़ पुरांण, देवियांण, गुण आगम, गुण वैराट, भगवत हंस, बाललीला, निंदास्तुति चावी है। मध्यकालीन थितियां मुजब आप वीर रसात्मक काव्य 'हालां-झालां रा कुंडळिया' रौ सिरजण करयौ जिकी वीर-काव्यां री सिरै ओळी में आवै। आपरी भक्ति रचनावां में 'हरिरस' जित्ती चावी-ठावी रचना है, 'देवियांण' सक्ति री सरब व्यापकता रौ वरणाव करण वाळी उत्ती इज चावी रचना मानीजै।

पाठ परिचै

महात्मा अर महाकवि ईसरदास कृत 'देवियांण' देस रै सांस्कृतिक इतिहास, भूगोल, प्राकृतिक परिवेस रै चित्रण साथै भक्ति, ग्यान अर वेदांत रै अद्वैत दरसण नै उजागर करण वाळी नामी रचना है। इण कारण ई भक्ति रचना 'हरिरस' रै ज्यूं ई 'देवियांण' ई भक्त रै हिरदै रौ कंठहार बण्योड़ी है।

देवियांण देवी री सरब व्यापकता नैं दरसावतौ स्तुति-काव्य है। डिंगळ री इण सक्ति-भक्ति री रचना में चार (4) मंडल छंद, पिच्यासी (85) छंद भुजंगी अर अंत में तीन (3) छप्पय देयनै कविय रचना नैं पूरी करी है। वेद, महाभारत, रामायण, पुराण, भागवत, सब में वा सरब सक्ति ई विराजमान है। अठै तांई कै आ सगळी प्रकृति जिणमें परबत, सागर, नदियां, सूरज, चांद, आभौ, बादळा, मेह, बीजळी, धरती रा कण-कण में सक्ति रौ ई संचरण है। इण आवगै ब्रह्मांड में अैड़ी कोई ठौड़ कोनी कै अैड़ी कोई वस्तु कोनी, जिणमें सक्ति रौ रूप अर नांव नीं होवै। देवियांण सक्ति-भक्ति री अनूठी रचना है। डिंगळ-सैली में ऊंचै सुर रै साथै इणरौ पाठ करीजै।

ईसरदास बारठ री भक्ति रचनावां में 'हरिरस' में परम पिता परमेसर रै गुणां रौ बखाण अर सरब व्यापकता है तौ 'देवियांण' में जगत री जननी भगवती रै गुणां अर सरब सक्ति होवण रा बखाण अर अरदास है। इण पाठ में 'देवियांण' रा कीं छंदां री बानगी दिरीजी है। कवि इण पोथी में लियोड़ा छंदां में केई नदियां रा नांव लेयनै कैवै कै— हे देवी भागीरथी (गंगा), गंडकी, गोगरा, रामगंगा (राम रा चरण पखारण रै कारण रामगंगा), सरस्वती, जमुना अर श्री (सरी) नांव वाळी लोकमाता (सिद्धा) आप ई हौ। आप ई त्रिवेणी संगम प्रयाग अर त्रिस्थली— हरिद्वार, प्रयाग, काशी में दैहिक, भौतिक अर दैविक तापां रौ नास करण वाळी हौ। हे देवी, सिंधु, गोदावरी अर माही रै साथै गोमती दमण गंगा (धम्मला), बाणगंगा, नरबदा, सरयू, गल्लका अर तुंगभद्रा आद बारहमास बैवण वाळी गंभीर (सदा नीरा) नदियां आपरौ इज सरूप है। देस रै दिखणाद में बैवण वाळी कावेरी, ताप्ति, कृष्णा, कपिला अर पैली खळकतौ महानद (सोन), आथूण-धुराऊ में सतलज, भीमा (महान), कुंवारी नदी (सुसीला, सील नैं धारण करयोड़ी), आकास-पताळ में बैवण वाळी गुप्तगंगा, पवित्र प्रगट अर अप्रगट सगळी नदियां आपरा इज तौ रूप है।

हे देवी! समदर में निपजण वाळी सीप में, स्वाति नखत री छांट इमरत बण जावै, वा मेह री छांट आप ई हौ। आ पचास करोड़ योजन भूखेतर वाळी पिरथी आपरौ इज पवित्र सरूप है। समदर में लैरां या छौळां आपरौ ई रूप है। सागर में उठण वाळी लैरां आप ई हौ, सागर में लैरां बण आप ई हिलोळा लेवौ अर आभै में बादळा बण गड़गड़ाट करण वाळी सक्ति आप इज हौ। हे देवी! अगन री झाळ (लपट, ज्वाला) में, बादळां में बीजळी री पळक अर आकास में जकौ तेज है वौ आपरौ ई है। आकास में तेजरूप (अनल पंछी) रै रूप में भमण वाळी आप ई हौ। मानव रै रूप म्रितुलोक में रमण करण वाळी ई आप हो।

हे देवी! पताळ में सेसनाग रै रूप में धरती नैं धारण करण वाळी, सुरग में देवतावां रै रूप में निवास करण वाळी, अधिकारां रौ भोग-उपभोग करण वाळी आप ई हौ। परमात्म रूप में आप हरेक सरीर में बसण वाळी हौ। आवगै ब्रह्मांड में सून-निराकार रूप में आप इज लीन हौ। हे देवी! आप आतमा रै रूप में भौतिक देह रौ संचालण करौ। सरीर रूप में आतमा नैं आणंद देवण वाळी, वन-उपवन में बसंत री सोभा आप ई हौ। अगन (दावानळ) रूप में आप ई वनां नैं बाळण वाळी हो। सिरजण, पाळण अर संहार सब आपरा ई रूप है। हे देवी! वेदां रै रूप में आप ई ब्रह्मा री वाणी हौ। योगियां में आप मच्छेन्द्रनाथ हौ अर्थात योग रै रूप में आपनैं कोई जाणै तौ वौ मच्छेन्द्रनाथ ई जाण सकै। राजा बलि में दानदाता री सक्ति ही, वा आप ई हौ। दानियां में राजा बलि आप हौ अर्थात बलि दान रूप में आपनै ई देवण वाळौ होयौ। सत रै रूप में राजा हरिश्चंद्र आपनैं ई सिद्ध करयौ। सत रूप में हरिश्चंद्र री सिद्धता आप ई हौ। योगियां रौ योग, दानवीरां री दानवीरता अर सतवादियां रौ सत आप ई हो।

हे देवी! ब्रह्मा, विष्णु, महेस में आपरी ई सत्ता, आपरी ई सक्ति (परब्रह्म स्वरूपा) बिराजमान है। चार वाणी (परा, पश्यन्ति, बेखरी, मध्यमा), चार योनियां (जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्‌भिज), पंचभूत (आकास, हवा, पाणी, अगन अर पिरथी), प्राणियां में प्राणवायु (सांस) स्वरूपा आप इज तौ हो। हे महादेवी! मन, पवन, माया, मुक्ति, करम-प्रारब्ध अर परिस्रम धरम चेतना (जीव) अर काया सरबस आप ई हौ। आपरी गति अर गैराई (तत्त्व) नैं कुण जाण सकै? जिणरै माथै आपरी किरपा होवै उणरी गति नैं आपरौ ई आसरौ है।

इण भांत कवि भगवती रै अदीठपण, असीम रूप नैं प्रकृति रा कण-कण री मणिमाळ में गूंथण रा जाझा जतन कर्‌या है। डिंगळ री इण काव्यकृति रौ अेक-अेक छंद देदीप्यमान मणी है, जिण सूं तत्त्व-ग्यान रा किंवाड़ खुलै अर अंतस उजास सूं सरोबार होवै।

अेक अखंड देवी रा अलेखूं नांव अर रूपां री न्यारी-न्यारी व्यंजना भक्तकवि करै। कवि मुजब हवा, पाणी, नदी, समदर, झरणा, बादळा, आभौ, बीजळी रा पळका, मेघां री गड़गड़ाट अर सीप में स्वाति री छांट सब देवी रा ई रूप है। परतख अर अपरतख में ई देवी री सत्ता बिराजमान है। पौराणिक देवीसक्तियां अर लोकसक्तियां रै रूप में वा अेक सक्ति ई न्यारा-न्यारा नांवां अर रूपां में ओळखीजै। सिरजण, पाळण अर संहार तीनूं रूपां रौ जबरौ चित्रण कवि करै। वन, उपवन, कांकड़, परबत, गढां-कोटां-मढां, झाड़-झंखाड़ अर ऊजड़ मैदान कोई ठौड़ अैड़ी नीं जठै सक्ति रौ वास कोनी। प्रकृति रा कण-कण में अदीठ सक्ति बिराजमान है। इणमें कवि विष्णु रा अनेक अवतारां रौ वरणन कर उण रूप में ई सक्ति री सत्ता नैं बताई है। जिण मिनख या मानवी में जिकी विसेसता है उणमें सक्ति रूप विराजित है। सतवादियां रौ सत, दानवीरां री दानवीरता, जोगियां रौ जोग, रद्धाळां रौ रद्ध (वाद, जिद), धीरजवानां रौ धीरज, सीलवानां रौ सील आचरण, अहंकारियां रौ दंभ, बळसालियां रौ बळ, धरम रुखाळां रौ धरम... सब उण भगवती रा ई रूप अर नांव है। वेद, महाभारत, रामायण, पुराणां, गीता सब में देवी रौ ई रूप अर सत्ता विराजित है। 'देवियांण' ग्रंथ में संस्कृति री पिछाण, इतिहास रौ ग्यान, धरम री मरजाद, भूगोल री ओळखाण, प्रकृति रा विध-विध रूप उण परम दैवीय सक्ति रै रूप में ई देखीजै। ग्यान री गोख, भक्ति री गंगा अर वेदां रौ सार इणमें मिळै। अद्वैत दरसण री सत्ता नैं उजागर करण वाळी आ डिंगळ रचना फगत रचना कोनी, सबद चित्राम में घणी चतुराई अर अंतस री निजरां दीठोड़ी ख्यांतीला कारीगर रै हाथा साचोड़ै अनुभवां समचै ढाळ्योड़ी सक्ति री या देवी री साकार मूरत है। वा मूरत आखै ब्रह्मांड री नियामिका उण सक्ति री सरब व्यापकता में अेकता अर अखंडता नैं उजागर करै।

देवियांण

(मूळपाठ)

देवी नाम भागीरथी नाम गंगा,
देवी गंडकी गोगरा रामगंगा;
देवी सर्सती जम्मना सरी सिद्धा,
देवी त्रिवेणी त्रिस्थली ताप रुद्धा। 1

देवी सिन्धु गोदावरी मही संगा,
देवी गोमती धम्मला बाणगंगा;
देवी नर्मदा सारजू सदा नीरा,
देवी गल्लका तुंगभद्रा गंभीरा। 2

देवी कावेरी तापि क्रस्ना कपीला,
देवी सोण सतलज्ज भीमा सुसीला;
देवी गोम गंगा देवी वोम गंगा,
देवी गुप्त गंगा सूची रूप अंगा। 3

देवी सागर सीप में अमी श्रावे,
देवी पीठ तव कोटि पच्चास पावै;
देवी वेळसा रूप सामंद वाजे,
देवी बादळां रूप गैणांग गाजै। 4

देवी मंगळा रूप तू ज्वाळमाळा,
देवी कंठळा रूप तूं मेघ काळा;
देवी अन्नलं रूप आकास भम्मे,
देवी मानवां रूप मृतलोक रम्मे। 5

देवी पन्नगां रूप पाताळ पेसे,
देवी देवता रूप तूं स्रग्ग देसे;
देवी प्रम्म रे रूप पिंड पिंड पीणी,
देवी सून रे रूप ब्रह्मांड लीणी। 6

देवी आतमा रूप काया चलावे,
देवी काया रे रूप आतम खिलावे;
देवी रूप वासन्त रे वन्न राजे,
देवी आग रे रूप तूं वन्न दाझे। 7

देवी वेद रै रूप तूं ब्रह्म वांणी,
देवी जोग रै रूप मच्छंद्र जांणी;
देवी दान रे रूप बळराव दीधी,
देवी सत्त रे रूप हरचंद सीधी। 8

देवी ब्रह्म तूं विस्नू अज रूद्र रांणी,
देवी वांण तूं खांण तूं भूत प्रांणी;
देवी मन्न तूं पवन तूं मोख माया,
देवी क्रम्म तूं ध्रम्म तूं जीव काया। 9

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

रामगंगा=राम रा चरण पखारण रै कारण रामगंगा। त्रिवेणी=प्रयाग (गंगा-जमुना-सरस्वती रौ संगम-थळ), ताप रूद्धा=त्रयताप नैं मिटावण वाळी। धम्मला=दमण गंगा। मही=माही नदी। संगा=साथै। सारजू=सरयू नदी (अयोध्या में)। सदा नीरा=बारहमास बैवण वाळी। भीमा=महान, भीमकाय नदी। सुसीला=सील नैं धारयोड़ी, कंवारी नदी। गोम=पाताळ गंगा। वोम=आकास, व्योम। सूची=पवित्र, निरमळ। अलंबे=आसरौ देवण वाळी, आश्रयरूपा। सरी सिद्धा=श्री (सरी) लोकमाता (सिद्धा)। स्त्रिस्थली=हरिद्वार, प्रयाग, काशी। अमीश्रावे=स्वाति नखत री इमरत-बूंद। वाजे=हिलोरा लेवणा। दीधी=देवणो, दानरूप। सीधी=सिद्धि रै रूप सिद्ध करणौ। गैणांग गाजे=बादळां री गड़गड़ाट। मंगळा=अगन। वांण=वाणी। कंठळा=बीजळी। खांण=चार योनियां। अन्नलं=अनल पंछी। भूत प्राणी=पंचभूत अर प्राणवायु। रम्मे=रमण करणौ। मोखमाया=माया, मोक्ष। प्रम्म=परतात्मा। पीठ=क्षेत्र, भूखेत्र। पिंड पिंड पीणी=प्रत्येक सरीर में रैवण वाळी। कोटि पचास=पचास करोड़ योजन भूमि। सून=शून्य, निराकार। लीणी=लीन हौ, आपरी ई सत्ता है। वासंत=बसंत। राजे=सोभायमान। दाझे=बळणौ, दहन। आग=दावानळ। आतम खिलावे=सरीर रूप में आतमा नैं आणंद देवण वाळी। काया चलावे=सरीर रौ निर्वहन करण वाळी।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ईसरदास बारठ रौ जलम कद होयौ—

   (अ) वि. सं. 1214 (ब) वि. सं. 1595

   (स) वि. सं. 1667 (द) वि. सं. 1415

   ( )

2. ईसरदास बारठ री जलमभोम रौ नांव है—

   (अ) जामनगर (ब) जूनागढ

   (स) भादरेस (द) बीकानेर

   ( )

3. ईसरदास री रचनावां में वीर रस री रचना है—

   (अ) हालां-झालां रा कुंडळिया (ब) गुण आगम

   (स) देवियांण (द) हरिरस

   ( )

4. ईसरदास बारठ नैं 'क्रोड़पसाव' दियौ—

   (अ) हरराज भाटी (ब) मुहणोत नैणसी

   (स) आसानंद बारठ (द) रावळ जाम

   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. टाबरपणा में ईसरदास जी रौ पाळण-पोसण कुण अर क्यूं कर्‌यौ ?
2. देवियांण में किणरौ वरणन होयौ है ?

3. ईसरदास रौ मन उदास अर बैरागी क्यूं होयौ ?
4. ईसरदास नैं अध्यात्म अर धारमिक रचनावां री सीख किणसूं मिळी ?
5. जामनगर रौ रावळ ईसरदास बारठ माथै राजी क्यूं होयौ ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. आसोजी ईसरदासजी नैं द्वारका क्यूं लेयग्या, इणसूं उणां रै जीवण में कांई बदळाव आयौ ?
2. ईसरदास रै जलम नैं लेयनै कथीज्यौ दूहौ लिखौ।
3. ईसरदास री भक्ति रचनावां मांय सूं किणी चार रा नांव लिखौ।
4. ईसरदासजी नैं जामनगर रावळ सूं जागीर में मिळ्या गांवां रा नांव लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ईसरदास रै जीवण री सामान्य ओळखाण करावौ।
2. ईसरदासजी री 'देवियांण' रौ सांगोपांग वरणाव आपरै सबदां में करौ।
3. ईसरदासजी री रचनपा 'देवियांण' में देवी रै रूप री विविधता में अेकता रौ जिकौ वरणाव होयौ है, दाखला देयनै विरोळ करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ—

1. देवी नाम भागीरथी नाम गंगा,
   देवी गंडकी गोगरा रामगंगा;
   देवी सर्सती जम्मना सरी सिद्धा,
   देवी त्रिवेणी त्रिस्थली ताप रुद्धा।

2. देवी सागर सीप में अमी श्रावे,
   देवी पीठ तव कोटि पच्चास पावै;
   देवी वेळसा रूप सामंद वाजे,
   देवी बादळां रूप गैणांग गाजै।

3. देवी पन्नगां रूप पाताळ पेसे,
   देवी देवता रूप तूं स्रग्ग देसे;
   देवी प्रम्म रे रूप पिंड पिंड पीणी,
   देवी सून रे रूप ब्रह्मांड लीणी।

4. देवी ब्रह्म तूं विस्नू अज रूद्र रांणी,
   देवी वांण तूं खांण तूं भूत प्रांणी;
   देवी मन्न तूं पवन तूं मोख माया,
   देवी क्रम्म तूं ध्रम्म तूं जीव काया।

❑रासौ-काव्य

राम रासौ

माधवदास दधवाड़िया

कवि परिचै

मारवाड़ परगना रै रैण ठिकाणां रा अचलदास रायमलोत रा कामदार अर पछै बळूंदा रा चांदा वीरमोत रा राजकवि (पोळपात) रैया चूंडा दधवाड़िया रै घरै वि. सं. 1615 रै लगैटगै माधवदास दधवाड़िया रौ जलम होयौ। राम रासौ जैड़ा महाकाव्य री रचना कर आप कवि-कुळ नै अंजस दियौ। वीरता अर भक्तिपरक इण महाकाव्य री रचना सूं रीझ नै जोधपुर महाराजा सूरजसिंह अपरनाम सूरसिंह कवि माधवदास दधवाड़िया नैं वि. सं. 1654 री फागण सुद बीज नैं सोजत परगना रौ नापावास गांव देयनै आघमान दियौ। जोधपुर राज्य री बही रै मुजब महाराजा सूरसिंहजी माधवदास दधवाड़िया नैं मेड़ता परगना रौ जारोड़ा बैणां नांव रौ गांव ई इनायत करियौ। आपरी दूजी छोटी रचना 'गज-मोख निसांणी' ई भक्ति-रचना रै रूप में घणी चावी है। भक्तिकालीन कवियां में राम रासौ रा रचयिता माधवदास दधवाड़िया री बडाई में बीकानेर महाराजा पृथ्वीराज राठौड़ रौ कैयोड़ौ औ दूहौ कवि रा व्यक्तित्व नैं उजागर करै—

चूंडै चत्रभुज सेवियौ, ततफळ लागौ तास।
चारण जीवौ चार जुग, मरौ न माधवदास।।

(ईस अरदास रै फळसरूप चूंडा रै घरै माधवदास जलमियौ। हे माधवदास, थूं जुगां-जुगां तांई जीवतौ रह, थारी सिरजण खिमता सूं औ जस अमर व्है जावै।)

माधवदास दधवाड़िया री आपरै इस्टदेव रै वास्तै पूरी सरधा, निस्काम भक्ति, अटूट विस्वास, अटळ आस्था रै कारण आपरै जीवण में केई चमत्कारी घटनावां घटी। आं घटनावां रा दाखला 'रामरासौ' रा संपादक शुभकरण देवल इण ग्रंथ री भूमिका में दिया है, जका बांचणजोग है। श्री देवल 'राम रासौ' रै संपादन साथै कविकुळ सूं संबंधित केई दूजी जाणकारियां कराई है। अरथ, भाव अर काव्य-सौष्ठव साथै इण महाकाव्य नैं पाठकां सारू सरल बणावण रौ अबखौ काम पूरौ कर जातीय रिण अर पितृरिण सूं उरिण होया है। माधवदास दधवाड़िया रा वंसज होवण रौ प्रमाण 'राम रासौ' री भूमिका लिखनै आप दियौ है। आपरी लेखणी नैं घणा रंग।

पाठ परिचै

माधवदास दधवाड़िया रचित 'राम रासौ' मूळ रूप सूं अेक भक्ति परक महाकाव्य है। राजस्थानी साहित्य में रासौपरक काव्य री आपरी जबरी परंपरा रैयी है। 'रासौ' काव्य में वीर वरणन करयौ जावै या औ मानीजै कै 'रासौ' वीरकाव्य ई होवै। आदिकाल सूं ई अठै रास, रासु, रासउ अर रासौपरक रचनावां री परंपरा रैयी है, जिणरौ खास अरथ रसपरक रचना ई लगायौ जाय सकै। जूनी जैन रचना भरतेश्वर बाहुबलि रास रै पछै अनेक रासपरक जैन रचनावां में रेवगिरि रास, जीवदया रास, आबू रास, तेजसार रास आद रा नांव गिणाया जाय सकै, जिणां में सांत रस रै साथै उपदेसां अर वरणन री प्रधानता रैयी है। देस-काळ अर थितियां मुजब वीरता इण संस्कृति में इत्ती घुळगी-इत्ती रळगी कै कोई पण इणसूं टळ'र नीं निकळ्यौ। अठै रा कवियां भक्ति रै साथै वीरता, सिणगार रै साथै वीरता,

प्रेमाख्यानां रै साथै वीरता रौ वरणन कर इण बात नैं सिद्ध करदी कै राजस्थानी संस्कृति बहुरंगी है अर वीरता उणरी असली ओळखाण है। वीरता रै पाण सगळा रंग उणनै मिळिया है। राम रासौ में ई भक्ति रै साथै वीरता रौ वरणाव पुरजोर होयौ है। ज्यूं वेलिकार पृथ्वीराज राठौड़ सिणगार ग्रंथ गूंथ'र वेलि में कृष्ण-सिसुपाळ जुद्ध में वीर रस रौ वरणन करियां बिना नीं रैया, उणीज भांत राम-रावण जुद्ध में वीर रस रौ सांगोपांग वरणन 'राम रासौ' में होयौ है। संपादक इणरी छंद संख्या 1600 मानी है। इणमें अनेक छंदां रौ प्रयोग करीज्यौ है, जिणमें दूहा, सोरठा, पद्धरी, रसावळा, झूलणा, मोतीदाम, गाहा, कवित्त, चौपाई, बिअक्खरी छंदां रा नांव गिणाया जाय सकै।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस ज्यूं इणमें ई बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किस्किंधाकांड, सुंदरकांड अर लंकाकांड रै पछै उत्तरकांड है, उणी भांत पूरा सात अध्यायां में पूरी रामायण राम रासौ रै नांव सूं लिखीजी है। राजस्थानी भासा रै रामकाव्य री आपरी इधकाई है। इण काव्य रै वरणन में बात कैवण रौ आपरौ न्यारौ ढब, केई सिल्पगत अर रूपगत विसेसतावां देखीजै। राम रा रूप वरणन में जिकी ओपमावां कवि दी है, वै साव निकेवळी। राम रौ विसाल अर मोटौ लिलाड़ तीनूं लोकां रा स्वामी होवण रौ परिचै देवै। भौहां जाणै कामदेव रौ तण्योड़ौ धनुस, सरीर हाथी जैड़ौ पुस्ट, कान कामदेव री सवारी मछली जैड़ा रूपाळा, कांधा शिवजी रै वाहन नंदी जैड़ा बळवान, हीरकणां ज्यूं दीपता अर बुगलां री डार जैड़ा धोळा अर बिरळा दांत, धनुस रा निचला भाग या सिरा तांई पूगण वाळा विलक्षण लांबा हाथ आद ओपमावां कित्ती मौलिक लागै। राम रासौ में तुलसीदास जी कृत मानस री चौपाई 'ढोल गंवार सूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी' रौ लोप कर कवि सामाजिक समानता रा भाव उजागर करै।

'राम रासौ' भक्तिकाव्य है। इणमें भक्ति रै भावां री प्रधानता है। आज रै जुग में ई राम जैड़ा व्यक्तित्व, जीवण-आदर्शां, जीवण-मूल्यां री समाज में घणी जरूरत है। मिटता मानवी मूल्यां रै इण जुग में विग्यान ज्यूं-ज्यूं आगै बधियौ, मिनख लारै होवतौ गयौ। अबै वौ अेक कळपुरजौ बणनै रैयग्यौ है। मिनखपणा नैं राखण वास्तै इण काव्य नैं पढावण री घणी दरकार है। पारिवारिक साख नैं सवाई कर आपरौ जीवण देस-समाज अर परोपकार में लगावण वाळा, जीवण में अबखायां सूं लड़'र आगै बधण वाळा, त्याग, समरपण, सहजता, हेत-अपणायत री मिठास वाळा अेक सार्वभौमिक पात्र री आज रै जुग में घणी जरूरत है। उण पात्र रा चरित्र नैं पढ'र छात्र अवस ई वांरा गुणां नैं अंगेजैला। इणीज विस्वास साथै 'राम रासौ' महाकाव्य रै अंस री बानगी इण पाठ में राखीजी है।

'राम रासौ' रै इण अंस में उण बगत रौ वरणन है जद कैकयी राजा दशरथ सूं दोय वरदानां में पैलौ राम नैं चवदै बरस रौ बनवास अर दूजौ भरत नैं राज देवणौ मांगै तद राजा दशरथ रघुवंसियां री रीत मुजब 'प्राण जाय पर वचन न जाई' रै कारण कैकयी रै वाद आगै हार जावै पण राम जैड़ा वाल्हा सपूत नैं बनवास भेजण री बात सूं अथाग सोग रा समदर में डूब जावै। प्रसंग उण सूं आगै रौ है कै दशरथ री इण दसा नैं देख मंत्री सुमंत्रजी राम नैं बुलावण आवै अर कैवै कै आपनैं राजा दशरथजी याद करै। उणी बगत राजतिलक खातर होवण वाळा जप, यज्ञ आद रै पछै गुरु वसिष्ठ नै दक्षिणा में दस हजार गायां श्रीराम दी अर रूपाळा मदमस्त हाथी माथै बिराजनै राम-लक्ष्मण दोनूं भाई राजा दशरथ कनै जायनै प्रणाम करया। राम नैं देखतां ई भावी दुख रौ सोच नै संवेदना रै साथै राजा दशरथ राम रौ लाड करयौ, पछै बांथां में भरनै रोवण लागा। कैकयी री सगळी करतूत बताई कै वा किण तरै म्हारै साथै छळ करनै म्हनैं वचनां में बांध्यौ अर अबै थारै वास्तै चवदा बरसां रौ बनवास अर दूजौ भरत नैं राज देवणौ मांगियौ है। श्रीराम पिता दशरथ नैं धीरज देवै, समझावै अर आपरै वास्तै सौभाग्य री बात मानै। वै कैवै कै सतवादियां सारू वचन तौ भाटै अर लोह माथै खेंच्योड़ी लकीर ज्यूं अमिट होवणी चाईजै। हे पिताजी! आप दुखी मत होवौ, म्हैं आपरै वचन परवाणै वन में जाय सरीर नैं तपाऊंला। अरथात सगळी विपदावां (सियाळौ, उन्हाळौ, बिरखा में पड़ण वाळौ सी, लूवां, ओळा) नैं झेलूंला अर सुखां रौ त्याग करूंला। बिचाळै ई कैकयी राम री बातां री हांमळ भरै अर कैवै कै पिता री आग्या मानण वाळौ पुत्र ई साचै अरथां में पुत्र बाजै। श्रीराम कैकयी नैं भरोसौ दिरावतां कैवै कै हे माता! आपरौ

जायोड़ौ भरत अयोध्या रौ राज करैला अर म्हैं वन में रैयनै तीन लोक रा राज-सुख नैं भोगूंला, जिणमें माता-पिता री आग्या रौ पाळण अर छोटै भाई भरत रै प्रति हेत रौ भाव है।

इणरै पछै माता कौशल्या नैं समझावतां राम कैवै कै हे माता! महाराज त्रिया-चरित्र नैं समझ नीं सक्या अर कैकयी री बातां में आयग्या तौ ई कांई होयौ, वै आपरा पति अर म्हारा पिता है। उणां री निबळाई (विसयासक्ति, स्त्री पेटै प्रेम रै वसीभूत होवणौ) दूजां साम्हीं प्रगट नीं करता थकां उणां नैं पूजनीक अर आदरजोग ई मानणौ म्हारौ फरज है। माता गरभ धारण कर पुत्र नैं जलम देवण सूं लेयनै मोटौ होवण तांई उणरौ पाळण-पोसण करण रै कारण सरब पूज्य है। माता री ठौड़ ऊंची है अर उणरी आग्या ई पुत्र नैं मानणी चाईजै। राम अठै आपरी बात नैं मजबूत करण सारू परसुराम रौ दाखलौ ई देवै जिकौ पिता री आग्या सूं माता 'रेणुका' नैं मार दी ही अर पिता सूं मिळण वाळा वरदान अर आसीस सूं पाछी जींवती ई कर दी ही। अठीनै लक्ष्मण सेसनाग रा अवतार है, उणां नै रीस आवणी सुभाविक है। वै आपरौ सामधरम निभावतां कैवै कै म्हैं म्हारा स्वामी राम री भलाई वास्तै भरत अर अयोध्या तौ कांई, तीनूं लोकां नैं मिटावण री खिमता राखूं। पण राम आपरै भाई लक्ष्मण नैं नीठ सांत करै, उणां रै साहस, वीरता अर सामधरम री बडाई करै। आगै राम कैवै कै म्हैं सपनै में ई पिता री आग्या नैं नीं टाळ सकूं अर अयोध्या रै राज रौ भोग नीं कर सकूं।

कवि कैवै कै इण भांत राम माता कौशल्या सूं आसीस ली। माता सूं विदा लेवतां लक्ष्मण ई राजसुख नैं छोड साथै चालण वास्तै राम रै साम्हीं देखण लागै। राम छोटा भाई री अपणायत अर सामधरमी आगै लाचार हा, सो माता सुमित्रा री आग्या लेवण वास्तै भेजिया। माता सुमित्रा लक्ष्मण नैं साथै ले जावण री अरदास राम सूं करै तौ राम लक्ष्मण री रिछ्या रौ भरोसौ माता नैं देवै। माता सुमित्रा लक्ष्मण नैं घणी भोळावण देवै कै हरमेस माता-पिता जाणनै सीता-राम री आग्या रौ पाळण करजै। सीता नैं म्हारै ज्यूं अरथात माता ज्यूं आदर दीजै अर दशरथ जैड़ा राघव (राम) नैं जाणजै। जठै सीता-राम रैवै उठै ई अयोध्या रौ राज अर सुख है। सीता-राम री सेवा लारली केई-केई पीढियां नैं तारण रौ काम करैला, जिणरौ फळ लक्ष्मण थनैं लेवणौ है। माता सुमित्रा लक्ष्मण नैं करतव्य रौ पाठ पढावै।

कवि कैवै कै सीता जद सादा वेस में राम नैं देखै तौ अचूंभौ करै अर पूछै कै आपरै साथै तौ अबार भांत-भांत रा गाजा-बाजा, विरुदावली गावणिया बंदीजन, छत्र-चंवर, साथै आपरा साईनां सखा होवणा चाईजै, जिका हाथियां-घोड़ां माथै बैठा छैल-छबीला लाड-कोड करता आवै, पण औ दरस नीं देखनै म्हनैं वैम है कै अवस ई राजतिलक में कीं विघन पड़ग्यौ है। श्रीराम सीता नैं सगळी बात समझावै अर वन में साथै नीं चालण री सीख देवै। माता री सेवा रौ भार सूंपणी चावै। कांकड़ रा डरावणा जिनावरां अर अबखायां नैं बतायनै सीता नैं अयोध्या में रैवण रौ कैवै, पण सीता आपरा पडूत्तरां में कैवै कै राम आपरै साथै म्हनैं कांई डर है अर जठै आप हौ उठैई म्हारै वास्तै सातूं सुख है। सीता रा द्रिढ निस्चै आगै राम नैं साथै चालण री हामळ भरणी पड़ै। इण भांत सीता, राम अर लक्ष्मण बनवास सारू व्हीर होवै। माता कौशल्या राम नैं सीता अर लक्ष्मण री रिछ्या करण वास्तै भोळावण देवै। श्रीराम माता कौशल्या नैं भरोसौ दिरावै कै सीता म्हारी जोड़ायत है, अरधांगनी है अर लक्ष्मण जीमणौ हाथ है। अरथात जीवण रौ अभिन्न अंग। म्हैं प्राण-प्रण सूं आं री रिछ्या करूंला। पिता री आग्या रौ पाळण, धरम री थरपणा, अत्याचार रौ अंत कर पूरण संतोस सुख नैं धारण कर सीता अर लक्ष्मण रै साथै राजी-खुसी पाछौ अयोध्या आवूंला।

जटायु प्रसंग : मिनख रौ पसु-पंखेरुवां साथै आद जुगाद सूं संबंध रैयौ है। पंखेरुवां में ई संवेदना होवै। वै आपरौ धरम निभावण में कदैई-कदैई मिनखां सूं आगै निकळ जावै। जटायु रा प्रसंग में उणीज मानवी संवेदना नैं मांसाहारी डरावणौ जीव विडरूप जटायु रै मिस महाकाव्यकार उकेरणी चावै। रावण जद सीता रौ हरण कर रथ में बैठायनै ले जावै तौ सीता रौ विलाप सुण जटायु उणनैं ढाबणी चावै। दुस्ट रावण नैं कायरता रा वचन कैवै कै वौ इत्तौ बळवान होयनै अेकली जाण सीता रौ हरण करयौ है। राम नैं ललकारणौ हौ। रावण उणनैं कैवै कै अरे मूरख! दूजां रै वास्तै म्हारै हाथां सूं क्यूं मरणौ तेवड़्यौ है। परोपकार अर कर्तव्य री ओळखाण करावतौ जटायु आपरी चूंच अर पंजां

सूं रावण रै सरीर में घाव करै। रावण अेकर तौ घायल होयनै रथ नैं थांभै पण अंत में रावण रा बळ आगै बूढा जटायु नैं हारणौ पड़ै। रावण तलवार सूं उणरी पांख्यां बाढ देवै तौ वौ धरती माथै जाय पड़ै। ठौड़-ठौड़ तलवार रा घावां सूं घायल जटायु पड़्यौ है। वौ सीता नैं पुत्री सीता कैवै। दशरथ सूं आपरी मित्रता री ओळखाण करावतां पिता ज्यूं सीता री रिछ्या करणी चावै पण कर नीं सकै। अठीनै राम अर लक्ष्मण सीता नैं सोधता-सोधता आवै अर मारग में रथ रा टुकड़ां साथै पांख्यां, चूंच आद कट्योड़ा पड़्या देखै अर जटायु नैं देखनै उणनैं आपरी गोद में लेय उणरी देही माथै हाथ फेरै। जटायु राम नैं कैवै कै म्हैं आपनैं मूंढौ कीकर दिखावूं। म्हारै देखतां रावण सीता नैं लेयग्यौ अर म्हैं उणनैं छोडाय नीं सक्यौ। जटायु में कर्तव्य निभावण रा गुण है तौ वीर जित्तौ दरप ई। उणनैं इण बात री आत्मग्लानि है कै वौ सीता नैं रावण सूं नीं छुडाय सक्यौ।

जटायु रा धरमजुद्ध सूं राम घणा राजी होया। जटायु नैं पितृसखा, पितानुज, वीर सिरोमणी जैड़ा सबदां सूं आदर दियौ। इण भांत श्रीराम जटायु रौ उद्धार कर्‌यौ। अंत समय में भगवान राम रा कर-कमलां रौ परस पायनै गिद्धराज मुगती रौ मारग लियौ। गिद्धराज जटायु रौ त्याग, समरपण भाव मिनखां नैं सीख देवै तौ श्रीराम रौ जटायु रै वास्तै पिता बराबर सम्मान जीव समानता, जीवदया अर राम रा आदर्शां अर जीवण-मूल्यां रौ पाठ पढावै।

राम रासौ

अयोध्या-कांड

छंद बिअखरी

कहै सुमित्र दरिसंण काजा। रांम पधारौ त्रेड़ै राजा।।1।।
तांम रांम जप होम धांम तस। दीवी वसिष्ट धेन सहंसदस।। 2।।
चढिया आंणि हसती चौदंती। पहूंता रांम लषंमण नरपती।। 3।।
दसरथ धांम तांम रघुनंदन। वेगि पधारि कियौ पग वंदन।। 4।।
देखि रांम दसरथ सु दुःखित। मेल्हि धाह लागी गलि मुखित।। 5।।
इणि राखव कैकई अभागी। मो सौं छळ करि वाचा मांगी।। 6।।
पैनो राघव वनि पठावौ। भरथ राज अभिषेक करावौ।। 7।।
अहित पिता जणि करौ अवग्या। अहं बंधु लै राज अजोध्या।। 8।।
राजा सुंणै पयंपै राघव। ताइ वडाई वंसि नहीं तव।। 9।।
मुखि भाखियौ सु क्यूं मेटिजै। पाथरि लौह रेख पेखीजै।।10।।
पिता सति वाचा नै पाळौं। जळ वंनि सीत अंग तन जाळौं।।11।।
पिता हुकंमि मैं त्यागौं प्राणा। राजपाट सुंदर सुख रांणा।।12।।
सुणौं राम कैकई संपेखै। सोई पुत्र जो पिता संतोखै।।13।।
थापै राज अजोध्या सुत थारौ। है मां त्रिभवण राज हमारौ।।14।।
सुखनिधि राघव वन संग्रहिया। राजा मुरछगत होइ रहिया।।15।।

××

त्रियाजीत पंणि प्रिया तुम्हारा। मदनांजित तोय पिता हमारा।।16।।
पिता सति वाचा पाळीजै। माता वाच तो काइ मेटीजै।।17।।
उदर मांझ दस मास अधारै। वळै वरस दस पोषी वधारै।।18।।
पिता हुकंमि रेणका पहारै। माता परसरांमि मां मारै।।19।।
भणै लखमंण हितु भंणीजै। माता भ्रित पिता सु मुणिजे।।20।।
भ्रित मो ऊभै लखमंण भाखै। राघव रौ टीलौ कुंण राखै।।21।।
सहित अजोध्या भरथ संघारौं। मुर ही भंवण कहै तौ मारौं।।22।।
मैं जांणौं तो पौरिष लषमंण। तू अवतार सेस संहसफण।।23।।
राघव कहै त्रिहूं भवंणां रण। तो सौं कुंण मंडै दसरथ तण।।24।।
मैं किम पिता हुकुंमि मैटीजै। लाख करै तोई राज न लीजै।।25।।

××

माता सीख रघुपति मांगै। तांम लषमंण राज तियागै।।26।।
कहै सुमित्रा आग्या कीजै। लषमंण बंधव साथै लीजै।।27।।
प्रांण हीतै मौनौं बहु प्यारा। निमष न मेल्हो लषमण न्यारा।।28।।
कहै सुमित्रा राम सेव करि। अनंत कोटि कुळ लषमंण उघरि।।29।।
लषमंण सीता मौंने लेखै। दरसथ सरिसा राघव देखै।।30।।
सरिखौ वंन अजोध्या संपति। रहैतां जांणै संगि रघुपति।।31।।
पुत्र उभै मां लगा पाए। सीता धांम श्रीराम सिधाए।।32।।
सीता सुवर विलोकी सुज। धरै न सीसि छत्र चम्मर धज।।33।।
सर वाजित्र न वंदिण साथी। हैमर रथ हसम न हाथी।।34।।

××

मोनौं वंनि मेल्हंण मा त्रेही। छळियौ दसरथ भरत सनेही।।35।।
सीता इहे सीख संभरीजै। कौसल्या री श्रेव करीजै।।36।।
भरता सौं यम सीता भाखै। पलक न जीऊं दरसंण पाखै।।37।।
वदै रांम वंनि सिंघ र वारण। दैति नाग राखिस दुःख दारण।।38।।
सकल सदुःख यंद्र पदवी सुख। मोनूं तहां जहां श्रीवर मुख।।39।।
सीता हेक मनि देखै संगि। सती पहुंचि कहीयौ श्री रंगि।।40।।

××

भणै कौसल्या रांम संभरीजै। रिख्या सीत लषमंण करीजै।।41।।
मो सीता अरधंग्या माता। भुजा दाछिणी लषमंण भ्राता।।42।।
सीता लषमंण सहित सजोध्या। अहं आइ हें बहुत अजोध्या।।43।।

जटायु प्रसंग

सोरठा (दूहा)

अळगौ जाय रथ आंणि। सीता वैसांणी सती।
प्रभु वाकारि न पांणि। चोरी हरि घरि चालियौ।।1।।
ग्रीध औळखी गडूरि[1] (गरूड़[2]), सीता क्रोसंती सती।
उडै जटायु अडू रि। रथ लंकेसर रोकियौ।।2।।
रथ ग्रधराज म रोकि। जांवण दे रांमंण जपै।
ले मेल्हिसि जंमलोकि। मूरिख कांय परकाजि मरै।।3।।
रामंण दसरथ राय। मीत सखा नित माहरौ।
जनक सुता किम जाय। व्रिध हौं ग्रीध ऊभै वधु।।4।।
जुध दहकंध जटायु। चंच नखां पंख चापटां।
रथ भागौ पंख राय। छत्र धजा घोड़ा सहित।।5।।
साचवि आवध सूर। भिड़ि दसमुख वीसे भुजे।
चंच पांखां कीय चूर। गोडवियौ राकस गिरध।।6।।
ग्रीध वडौ गजगाह। कीधौ वहि दहकंध सौं।
सजि कंध रथ सीताह। गौ मारगि गयणां गिरै।।7।।

××

चंचा चूर थियांह। पड़िया दळ तुंदळ पगां।
पांखां पींजरीयांह। अंत वेळा आया अनंत।।8।।
रुळतै वाखर रंगि। गोद लियौ राघव गिरध।
जीतौ तैं रंण जंगि। आखिसि हौं दसरथ अनुंज।।9।।
मुख जिंणि देखौ मोर। सास थकै लंकेसवर।
जोवणवंत सजोर। व्रध मो वधि लेगौ वधू।।10।।
रीझे ग्रीध रघुराय। सूरां निधि दसरथ सखा।
जंण वैकुंठ जटाय। पहुंचायौ वैकुंठ पति।।11।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

काजा=वास्तै, कारण। त्रेड़ै=बुलावै। तांम=उणीज बगत। धांम=महल। संहसदस=दस हजार। आंणि=आया, आयनै। वेगि=जल्दी, उणीज टैम, अविलंब। धाट्ट=बांग देयनै रोवणौ। लागी गळि=गळै लगाया। वाचा=वचन। पैनौ=पैलौ। पठावौ=भेजौ। पयंपै=कैवै, कैवणौ। पाथरि, लोह=पत्थर अर लोह री लकीर, द्रिढ निस्चै। पेखीजै=रैवणौ चाईजै, देखणौ चाईजै, कहीजै। संपेखै=कैवै (समझावण रा भाव सूं)। संग्रहिया=बहीर होया। मदनांजित=आसक्त स्त्री रै वस में। पंणि=पण, परंतु। पोखी=पाळ–पोखनै बडौ करणौ। त्रियजीत=स्त्री री बातां में आयोड़ौ, उणरै वस में होयोड़ौ। रेणका=रिसी जमदग्नि री जोड़ायत अर परसुराम री माता, सती नारी। भणै=कैवै। मुणिजै=मानीजै।

ऊभै=म्हारै होवता थकां। टीलौ=राजतिलक। भवंण=त्रिभुवन, तीनूं लोकां नैं मिटावण री बात। पोरिष=बळ, पौरुष, साहस, वीरता। सेस सहसफण=सेसनाग, सहस्र फणां वाळौ सांप। सीख=विदा, जावण सारू आग्या। मोनौं=म्हनैं, मनै। हीतौ=सूं। निमष=क्षण, अेक पलक ई। अनंत कोटि कुळ=करोड़ां पीढियां। उधरि=उद्धार होवै। सीता मौनै लेखै=सीता नैं म्हारै बराबर देखजै, मतळब माता ज्यूं। सरिसा=सरीखा, तुल्या, ज्यूं। सुवर=श्रेष्ठ वर। सर=अवसर। वाजिग=बाघ, बाजा। वदिण=बिरुदावली गावण वाळा। हेमर रथ=सज्योड़ौ रथ। साथी=बरोबर री उमर वाळा सखा। भरता=पति। सौं=सूं। यम=इण भांत, इण तरै। भाखै=कैवै। पाखै=अभाव में, दरसण बिना। वारण=हाथी, भयानक डरावणा जानवर। दैति=दैत्य। राखिस=रागस, राक्षस। दारण=दारुण। यंद्र पदवी सुख=इन्द्रलोक जैड़ौ या सातूं सुख। संभरीजै=सुणौ। भणै=कैवै। रिख्या=रिछ्या, रक्षा। सजोध्या=वचन पाळणा करनै सुख-संतोस रै साथै। वैसांणी=बैठाई। आंणि=लेयनै। वाकारि=ललकारियौ। पांणी=मरजादा, लज्जा होवती तौ। ओळखी=पिछाण ली। गडू रि (गरूर)= स्वाभिमानी सती नारी। अडू रि=निरभीक। जपै=कैवै। मेल्हिसि=भेज देवूंला। परकाजि=परायां वास्तै। मीत सखा=गैरा मित्र। ब्रिध=मित्रता रौ विरद नीं लजाऊं। पंखराय=महाबळी जटायु, गिद्धराज। साचवि=कृत संकळपित देखनै। गोडवियौ=धरासायी। गजगाह=महाग्रीव जटायु। कीधौ वहि=प्रहार करियौ। गयणांगिरै=आकास मारग सूं। दळ तुंदळ=आपस में व्हिया संघर्ष सूं, प्रहार सूं। पांखां पींजरीयांह=पींज्योड़ी रूई जैड़ी पांख्यां, बिखर्‌योड़ी पांख्यां। वेळा=बगत, समै। जिणि=मत। सूरा निधि=वीर सिरोमणी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'राम रासौ' रा रचनाकार है—

   (अ) राव रणमल्ल (ब) ईसरदास

   (स) चांदा वीरमोत (द) माधवदास दधवाड़िया

   ( )

2. 'राम रासौ' रौ काव्य-रूप है—

   (अ) चम्पु काव्य (ब) महाकाव्य

   (स) खंड काव्य (द) काव्य-गीत

   ( )

3. माधवदास दधवाड़िया नैं नापावास गांव री जागीर दी—

   (अ) अचलदास रायमलोत (ब)महाराजा मानसिंह

   (स) जोधपुर महाराजा सूरसिंह (द) आं मांय सूं कोई नीं

   ( )

4. 'राम रासौ' में वरणन रौ विसय है—

   (अ) राम अर रावण रौ जुद्ध (ब) कैकयी री करतूत रौ वरणन

   (स) भरत अर राम रौ मिळाप (द) राम रौ आवगौ जीवण-चरित्र

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. माधवदास दधवाड़िया रै पिता रौ नांव कांई हौ ?
2. माधोदास दधवाड़िया रा इस्टदेव कुण हा ?
3. लक्ष्मण री माता रौ नांव कांई हौ ?
4. 'जटायु' सूं आप कांई समझौ ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'राम रासौ' में महाकाव्य री विसेसता सारू कोई तीन रौ वरणन करौ।
2. श्रीराम कित्ता बरसां वास्तै बनवास गिया अर क्यूं ?
3. बनवास में राम रै साथै कुण-कुण गिया, उणां रौ राम सूं कांई संबंध हौ ?
4. 'जटायु' किणरी रिछ्या करणी चावै अर क्यूं ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'राम रासौ' अेक महाकाव्य है। इणरी काव्यगत विसेसतावां रौ वरणन करौ।
2. आज रा जुग में 'राम रासौ' महाकाव्य री प्रासंगिकता दाखलां समेत बतावौ।
3. पाठ में आया 'राम रासौ' रै काव्यांस रौ भाव आपरै सबदां में लिखतां इणरी विसेसतावां नैं उकेरौ।
4. ''जटायु प्रसंग में आयौ वरणन मानवी संवेदनावां नैं जगावण वाळौ है।'' इण कथन नै पुख्ता करण सारू प्रसंग री विरोळ करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. माता सीख रघुपति मांगै। तांम लषमंण राज तियागै।।
   कहै सुमित्रा आग्या कीजै। लषमंण बंधव साथै लीजै।।
2. भरता सौं यम सीता भाखै। पलक न जीऊं दरसंण पाखै।।
   वदै रांम वंनि सिंघ र वारण। दैति नाग राखिस दुःख दारण।।
3. रथ ग्रधराज म रोकि। जांवण दे रांमंण जपै।
   ले मेल्हिसि जंमलोकि। मूरिख कांय परकाजि मरै।।
4. मुख जिंणि देखौ मोर। सास थकै लंकेसवर।
   जोवणवंत सजोर। व्रध मो वधि लेग ौ वधू।।

❑डिंगळ गीत

आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर

बांकीदास आसिया

कवि परिचै

कविराज बांकीदास आसिया रौ जलम वि. सं. 1828 में मारवाड़ रियासत (जोधपुर) रै भांडियावास गांव में होयौ। आप डिंगळ रा चावा-ठावा कवि अर जोधपुर महाराजा मानसिंह रा क्रिपापात्र हा। बांकीदास बहुभासाविद् अर इतियास रा लूंठा जाणकार हा। संस्कृत, डिंगळ, पिंगळ, प्राकृत, अपभ्रंस, फारसी, ब्रज, व्याकरण अर ज्योतिष रा आधिकारिक विद्वान रै रूप में इणां री घणी ख्याति रैयी। बांकीदास महाराजा मानसिंह (जोधपुर) रा क्रिपापात्र तो हा ई, साथै ई राजकवि अर काव्य-गुरु हा। महाराजा उणां नैं महाकवि रै साथै कविराजा रै विरद सूं नवाजिया हा।

इणां रा रचियोड़ा लगै-टगै चाळीस ग्रंथ अर सैकड़ूं डिंगळ गीत मिळै। इणां री भासा प्रौढ़, मंज्योड़ी अर सरस-सहज होवणै रै साथै घणी असरदार है। इणां नैं अलंकारां रौ ई गैरौ ग्यान हौ। डिंगळ रा सिरै रचनाकार बांकीदास रा रच्योड़ा ग्रंथां मांय सूर छत्तीसी, सींह छत्तीसी, वीर विनोद, धवळ पच्चीसी, दातार बावनी, नीति मंजरी, सुपह छत्तीसी, कृपण दर्पण, मोहमर्दन, कुकवि बत्तीसी, गजलक्ष्मी झमाळ, नखशिख, संतोष बावनी, सुजस छत्तीसी, कायर बावनी, कृपण पच्चीसी अर वचन विवेक पच्चीसी आद ग्रंथ घणा चावा है। आं ग्रंथां रै टाळ भुरजाळ भूषण, गंगालहरी, मान जसो मंडण अर बांकीदास री ख्यात घणा उल्लेखजोग ग्रंथ है। इणां रा रच्योड़ा डिंगळ गीत साहित्य अर इतिहास री दीठ सूं सिरै है। अै वि. स. 1890 मांय दिवंगत हुया।

पाठ परिचै

इण संकलन में बांकीदास रौ अेक डिंगळ गीत सामल करीज्यौ है, जिकौ उणां री अंग्रेज विरोधी भावना नैं प्रगट करै। कवि गीत में खरी-खरी बतावतौ कैवै कै अंगरेज आज आपां रै मुलक ऊपर आय रैया है, जिणां नैं रोकण रा जतन करीजणा चाईजै। आपां रा बडेरा जिका धरती रै खातर मर मिट्या पण आपरी धरती दूजां रै हाथां नीं जावण दी। जिका अंगरेजां सूं मोरचा लिया, साम्हीं पग रोपिया, उणां नैं इण गीत में बिड़दाईज्या है। गीत में देस-प्रेम (धरती-प्रेम) री सांगोपांग वंदना करीजी है। कैवण रौ मतळब औ कै राजस्थानी साहित्य जगत में बांकीदासजी अेक लूठां कवि है जिका देस में सब सूं पहला आजादी री अलख जगावण सारू आपरी आवाज बुलंद करी— 'आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर'। इण महान कवि री देस री आजादी सारू अै ओळियां आम जनता में नूंवौ जोस भरण रौ काम करै।

देस माथै अंगरेजी राज रा बधता दबदबा अर अंगरेजां री 'फूट न्हाखौ अर राज करौ' री खोटी नीत सूं देसी राजावां अंगरेजी सत्ता नैं अंगेजण लागग्या अर अेस-आराम करणौ सरू कर दियौ। आं सगळी बातां सूं सावचेत करतां कवि औ गीत लिख्यौ। इणमें जातीय अेकता री बात ई कवि करी है। देस-रिछ्या रौ भार जनता रै कांधै राखतां कविराज बांकीदास आसिया सगळां नैं चेतावै, चावै हिन्दू व्हौ कै मुसळमान, वीरता किणी री बपौती कोनी।

आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर

आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहस लीधा खैंचि उरां।
धणिया मरै न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा।।1।।

फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खळां-डळां।
खंवां खांच चूड़ै खांवद रै, उणहिज चूड़ै गई यळा।।2।।

छत्रपतियां लागी नंह छांणत, गढपतियां धर परी गुमी।
बळ नंह कियौ बापड़ा बोतां, जोतां-जोतां गई जमी।।3।।

दुय चत्रमास बाजियौ दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस।
पूगौ नहीं चाकरी पकड़ी, दीधौ नहीं मरैठौ देस।।4।।

बाजियौ भलौ भरतपुर वाळौ, गाजै गजर धजर नभ गोम।
पहिलां सिर साहब रौ पड़ियौ, भड़ ऊभै नंह दीधौ बोम।।5।।

महि जातां चींचातां महिला, अै दुय मरण तणां अवसांण।
राखौ रे किहिंक रजपूती, मरद हिन्दू की मुस्सलमांण।।6।।

पुरजोधांण उदैपुर जैपुर, पहु थांरा खूटा परियांण।
आंकै गी आवसी आंकै, बांकै आसल किया बखांण।।7।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

इंगरेज=अंग्रेज (ब्रिटिस कंपनी)। खांवद=खसम, धणी। मरैठौ=मराठा। भड़=जोधा। यळा=इळा, धरती। दुय=दो, दोय। दोयण=सत्रु। महि=धरती। पुरजोधांण=जोधपुर। बांकै=बांकीदास। बखांण=विरुद, बिड़द, सरावणा।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. बांकीदास रौ जलम किण गांव में होयौ?

   (अ) आलनियावास (ब) भांडियावास

   (स) बीनावास (द) चेलावास

   ( )

2. बांकीदास किण रा क्रिपापात्र हा?

   (अ) महाराजा अजीतसिंह (ब) महाराजा विजयसिंह

   (स) महाराजा मानसिंह (द) महाराजा जसवंत सिंह

   ( )

1. कवि मुलक रै ऊपर किण रै आवण री बात करै ?

(अ) रंगरेज (ब) चंगेज

(स) मृगराज (द) अंगरेज

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. बांकीदास रै रच्यौड़ै किणी दो ग्रंथां रा नांव लिखौ।
2. 'कवि मरण तणां अवसाण किणनै बतायौ है ?
3. बांकीदास रौ जलम चारण समाज री किण साखा में हुयौ ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि भरतपुर वाळां री तारीफ किण भांत करी है ?
2. बांकीदास रै मुजब अंगरेजां री नीत कैड़ी ही ?
3. कवि 'आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर' गीत में किणरी तारीफ अर क्यूं कीनी ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. अंगरेज हुकूमत सूं चेतावणी देवतौ कवि कांई कैवणौ चावै ? समझावौ।
2. बांकीदास री साहित्य-साधना उजागर करौ।
3. अंगरेज विरोधी गीत 'आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर' रौ सार लिखौ ?

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहस लीधा खैंचि उरां।
   धणिया मरै न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा।।
2. बाजियौ भलौ भरतपुर वाळौ, गाजै गजर धजर नभ गोम।
   पहिलां सिर साहब रौ पड़ियौ, भड़ ऊभै नंह दीधौ बोम।।
3. पुरजोधांण उदैपुर जैपुर, पहु थांरा खूटा परियांण।
   आंकै गी आवसी आंकै, बांकै आसल किया बखांण।।

❑अध्यात्म-पद

आतम-संबोध

श्रीमद् जयाचार्य

कवि परिचै

तेरापंथ धरमसंघ रा चौथा आचार्य श्रीमद् जयाचार्य राजस्थानी साहित्य रा ऊजळा नखत हा। लारला दोय सौ बरसां रा सिरै रचनाकारां नैं देखां तौ उणमें जयाचार्य रौ नांव पैली पांत में आवै। आप गद्य अर पद्य, दोनूं विधावां में समरूप सिरजण करयौ। आपरौ सगळौ साहित्य साढी तीन लाख पद्यां रौ है। आज पैली औ देखण में अर सुणण में नीं आवै कै अेक कवि रा इत्ता पद्य है। आपरै श्रीमुख में सुरसती रौ वासौ हो, जिकौ बोलता वा रचना बण जावती। आप आशु कवि हा।

श्रीमद् जयाचार्य रौ जलम जोधपुर संभाग रै रोयट गांव में वि. सं. 1860 री आसोज सुदी चवदस नैं होयौ। आपरा पिता रौ नांव आईदान जी अर माता रौ नांव कल्लू बाई हो। आप ओसवाळां री 'गोलछा' साखा में जलम्या। आपरै जलम रौ नांव जीतमल हो। आपसूं पैलां दोय बेटा कल्लू बाई री कूख सूं जलम्या। 1863 में अचाणचक घर-परिवार माथै आई विपदां सूं होळै-होळै पूरै परिवार में ई वैराग रौ भाव जागण लागग्यौ अर सताजोग जैन मुनि रा मारग-दरसण सूं 1869 वि. सं. में घर रा पांचूं ई सदस्य जैन दीक्षा अंगीकार करली अर साधु बणग्या। बालक जीतमल, जिकौ आगै चालनै श्रीमद् जयाचार्य रै नांव सूं ख्यातनांव होयौ, दीक्षा री बगत फकत नौ बरसां रौ हो। मुनि हेमराजजी आपरा शिक्षा-गुरु हा। आपरै ग्यान री जोत में ठौड़-ठौड़ चौमासौ करतां बारह बरसां तांई श्रीमद् जयाचार्य आगम ग्रंथां रौ गैराई सूं अध्ययन करयौ। अनुशासन, निमता अर खिमता रै पाण आपरै साहित्य री नींव पक्की बणती गई। जलम सूं जिकौ काव्य-कुशळता रौ गुण हो, वौ चावौ होयौ अर दीक्षा रै दोय बरसां पछै फकत 11 बरसां री ऊमर में 'संतगुणमाळा' नांव री पैली रचना लिखी। छोटी ऊमर पण मन नैं काबू कर बांधणौ, निष्ठा अर समरपण भाव जैड़ा गुण आपनैं गुरु हेमराजजी सूं विरासत में मिल्या हा। आपरा ऊंचा आचार-विचार अर बुद्धि री खिमता रै पाण आपरा दीक्षा-गुरु आचार्य ऋषिराय, धरमसंघ रै नेम मुजब आपनैं अग्रणी अवस्था पछै युवाचार्य अवस्था में खुद रा उत्तराधिकारी बणाया। ऋषिरायजी रै सुरगवास पछै वि. सं. 1909 में माघ री पून्यू नैं आप आचार्य री गादी बिराज्या। आचार्य रै रूप में आप तीस बरसां तांई तेरापंथ धरमसंघ री सेवा करी। संघ नैं घणौ मजबूत बणायौ। आपरै सेवाकाळ रौ बगत इण धरमसंघ रौ सुवरणकाळ हो, जिणमें इणरौ च्यारूं खूंटां विगसाव होयौ। आप आपरै धरमसंघ री जूनी अर नूंवी परंपरा रा समन्वयक बण्या। जयाचार्यजी सिरजणधरमी अर साहित्यप्रेमी हा। आपरै बगत में साहित्य री घणी अंवेर राखीजी। आप आपरै धरमसंघ में अनुशासन अर व्यवस्था सुधार रा केई नेम-कायदा बणायनै प्रशासकीय कुशळता रौ परिचै दियौ।

श्रीमद् जयाचार्य राजस्थानी रै मांय अेक नूंवी गीत-विधा री सरूआत करी जिकी 'टहुका' नांव सूं चावी होयी। आप उण बगत तेरापंथ धरमसंघ में साम्यवादी विचारां री नींव राखी जद देस में समाजवाद कठैई नैड़ौ-आगौ ई कोनी हो। जीवण रा 77 बरस पूरा कर वि. सं. 1938 री भादवा बदी बारस रै दिन सिंझ्या री बगत आप परलोकधाम सिधारग्या। आपरौ व्यक्तित्व घणौ प्रभावी हो— खठरा, पण छरहरौ डील, नेन्हा-नेन्हा हाथ-पग, सांवळौ रंग, मोटौ लिलाड़, दीपतौ उणियारौ, हियै रा ऊजळा, दृढ संकल्पी, बुद्धिबळ री खिमता अर समाजवादी चिंतन-साधना रा सजग अर सावचेत पौरैदार हा।

आप राजस्थानी रा वीर रसावतार सूरजमल्ल मीसण री जोड़ रा आशु कवि हा। आपरौ साहित्य विविधरूपा हो। आप राजस्थानी रा सिरमौर सिरजणकार रै रूप में जाणीजै। आप मौलिक सिरजण रै साथै अनुवाद रौ काम ई घणोई करयौ। प्राकृत भासा रा जैन आगमां रौ राजस्थानी उल्थौ करयौ। प्रबंध-काव्य, जीवण-चरित्र, भक्ति-काव्य, संस्मरण, कथाकोश, जोड़, इतिहास इत्याद री राजस्थानी रचनावां लिखी। आप अठारै बरस री ऊमर में प्राकृत रौ सबसूं गूढ-गंभीर अरथ वाळौ आगमग्रंथ 'पन्नवणा' री राजस्थानी पद्य टीका करनै तेरापंथ में राजस्थानी रा संत ग्यानेश्वर बणग्या, जिण भांत कै महाराष्ट्र रा संत ग्यानेश्वर सोळा बरस री ऊमर में 'गीता' री ग्यानेश्वरी टीका लिखी ही। आप उणीज परंपरा नैं आगै बधायनै राजस्थानी रा बेजोड़ संतकवि बणग्या।

पाठ परिचै

राजस्थानी भासा रौ जैन-काव्य विविध अर विसाल है। राजस्थानी साहित्य रा आदिकाळ सूं ई जैन रचनाकारां रौ घणौ योगदान रैयौ। आपरै धरम नैं आधार बणायनै आखौ जैन-काव्य जैनाचार्यां, तीर्थंकरां, बलदेवां, वासुदेवां, जैन मुनियां, सतियां अर धार्मिक शासकां सूं संबंधित कथा-काव्य, चरित-काव्य, उत्सव-काव्य, नीति-उपदेस अर स्तुति-काव्य रै रूप में मिळै। जैन रचनाकार आपरै लेखन री न्यारी सैली में रचनावां रौ सिरजण करयौ। आदिकाळ सूं लेयनै आधुनिक-काळ तांई जैन-सैली रौ अखूट साहित्य भंडार न्यारी-न्यारी विधावां अर काव्य-रूपां में लाधै। आं रूपां में—विवाहलौ, धमाळ, फागु, संधि, धवळ, हींयाळी, सलोक, ढाळ, चौढाळियौ, रसावळा, बारहमासा अर केई संख्यापरक काव्यरूप आं रचनावां में देख्या जाय सकै।

श्रीमद् जायाचार्य सरल, सहज राजस्थानी भासा रा सबदां नैं परोटतां अैड़ी रचनावां लिखी कै जन-साधारण रै हियै ढूक सकै। इण पाठ में आतम-संबोध रै रूप में आपरी रचना रा कीं पद लिरीज्या है, जिणमें जप-तप, आत्म-कल्पना, मन-बुद्धि री थिरता, धीरता, समता भाव, भलाई, शांति, सास्वत सुख अर केई औगुणां में— रीस, निंदा, ईसकौ, कटुसबद आद री बात करतां आत्मचिंतन सूं खुद नैं जाणणौ, आपरी खामियां नैं देखणौ, चोखी सीख मानणी अर धरम री मरजाद में रैवणौ, धरम रौ पाळण करणौ आद आं पदां रै रूप में जीवण रौ सार है।

आतम-संबोध

जीता! जनम सुधार, तप जप कर तन ताइयै।
छिन मांहि तन छार, दिन थोड़ा में देखजै।।1।।
जीता! निज दुख जोय, कुण कुण कष्टज भोगव्या।
अब दिल में अवलोय, ज्यूं सुख लहिये शासता।। 2।।
स्नेह-राग संताप, जीता! निश्चय जाणजै।
समभावे चित्त थाप, आप सुख-दुख बहुला अख्या।। 3।।
स्तुति जस और प्रशंस, हिवड़ै सुण नवि हरखिये।
अवगुण द्वेष न अंस, सुण तूं जय! निज सीखड़ी।। 4।।
क्रोध-अगन उपसंत, खिम्या चित्त धारै खरी।
धीर गंभीर धरंत, कठिन वचन नवि काढियै।। 5।।
जय! सागर सम जाण, महिमागर मुनिवर सही।
अखिल परम्पर आण, अल्प दिवस में अचल सुख।। 6।।

वेरी मान बिखेर, (जय) नरमाई गुण नीपजै।
हिवड़ै पर गुण हेर, निज ओगुण सुण निद मा।। 7।।
जय निज-आदि सुजोय, विविध पणै तूं दुख लह्यो।
अल्प-कठिन अवलोय, थोपै तूं किण कारणै?।। 8।।
जय ! खिम्या वर टोप, वचन-समिति वख्तर प्रष्ट।
अधिक गुणागार ओप, आतम गढ आराधिये।। 9।।
भू सम जय ! गंभीर, निष्पकम्प मन्दर-गिरी।
हेरे निज गुण हीर, ध्यान सुधारस ध्यायनै।।10।।
धर धन्नो चित्त धीर, अल्प काळ आराधिये।
तूं कर धर तप-तीर, सखरी सुण 'जय' सीखड़ी।।11।।
उळझ्यो काळ अनाद, अंतर 'जय' गुण ओळखो।
प्रवर प्रशांत प्रसाद, धर खिम्या वर खांत सूं।।12।।
चतुराई चित्त चिंत, सुध निज कारज साधिये।
मत कर बीजो मिंत, आतम मिंत जय ! अचल कर।।13।।
जय ! अंतिम जगदीस, कुण-कुण तप अप खार किया।
धरम खिम्या जगदीस, अष्ट न तप आदर सकै।।14।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ताइये=दुख देवणौ, सतावणौ। अवलोय=देखणौ। शासता=सास्वत, हरमेस रैवण वाळा। समभावे=सुख अर दुख में अेक समान रैवणौ, सगळां रै वास्तै समता रा भाव। उपसंत=उपजावणौ, उत्पन्न होवणौ। खिम्या=क्षमा करणौ, माफ करणौ। अखिल=पूरौ, आखौ, संपूर्ण। विखेर=बिगाड़णौ, मान मिटावणौ, खंडित करणौ। हेर=तलास, खोज। बख्तर=कवच। आराधिये=ध्यान देवणौ, पूजा-उपासना। ओळखौ=पिछाणौ, जाणौ। अघ=पाप, नीच करम।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा रौ जैन-साहित्य है—
   (अ) अबखौ अर दोरौ (ब) सरल अर सहज
   (स) विविध अर विसाल (द) गैरौ अर गूढ

( )

2. जैन रचनाकार किण सैली में रचनावां करी?
   (अ) जैन-सैली में (ब) डिंगळ-सैली में
   (स) पिंगळ-सैली में (द) लौकिक-सैली में

( )

3. घणकरा जैन कवियां रा विसय रैया है ?

(अ) वीरता अर सिणगार (ब) बात बणाव अर चमत्कार

(स) धरम-नीति अर उपदेश (द) तीनां मांय सूं कोई नीं

( )

4. जयाचार्य किण पंथ रा हा ?

(अ) तेरापंथ (ब) दादू पंथ

(स) लालदासी पंथ (द) गूदड़ पंथ

( )

5. जयाचार्य दीक्षा री बगत हा—

(अ) 12 बरसां रा (ब) 9 बरसां रा

(स) 13 बरसां रा (द) 7 बरसां रा

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जयाचार्य रौ बाळपणै रौ नांव कांई हो ?
2. जयाचार्य रौ जलम कद अर कठै होयौ ?
3. जयाचार्य रा माता-पिता रौ नांव लिखौ।
4. जयाचार्य रा शिक्षा-गुरु कुण हा ?
5. जयाचार्य री लिखी किणी अेक रचना रौ नांव लिखौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जयाचार्य किणरी जोड़ रा अर कैड़ा कवि हा ?
2. जयाचार्य में कांई-कांई गुण हा ?
3. आचार्य बणियां पछै जयाचार्य कांई-कांई काम करया ?
4. जयाचार्य रौ बारलौ व्यक्तित्व कैड़ौ हो ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी साहित्य में जैन साहित्य रा योगदान नैं समझावौ।
2. जयाचार्य रै व्यक्तित्व अर कर्तृत्व रौ वरणन करौ।
3. जयाचार्य रै जीवण सूं कांई सीख मिळै ? समझावौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. जीता ! जनम सुधार, तप जप कर तन ताइये।
   छिन मांहि तन छार, दिन थोड़ा में देखजै।।

2. स्नेह-राग संताप, जीता! निश्चय जाणजै।
   समभावे चित्त थाप, आप सुख-दुख बहुला अख्या।।

3. क्रोध-अगन उपसंत, खिम्या चित्त धारै खरी।
   धीर गंभीर धरंत, कठिन वचन नवि काढिये।।

❑पद

भक्ति रा पद

भक्त कवयित्री समान बाई

कवयित्री परिचै

साहित्य-समाज में 'मत्स्य री मीरां' रै नांव सूं आपरी ओळखाण राखण वाळी भक्त कवयित्री समान बाई रौ जलम वि. सं. 1882 में होयौ। समान बाई राजस्थानी रा चावा कवि अर विद्वान रामनाथ कविया री लाडेसर धीव हा। रामनाथ कविया रौ खास ठिकाणौ सीकर जिलै रौ नरसिंघपुरा गांव हो। आपरा परिवार नैं सीकर नरेस बळवंतसिंघ सूं तिजारा में 'सियाळी' गांव री जागीर मिळ्योड़ी ही। सियाळी में इज समान बाई रौ जलम होयौ। बळवंतसिंघ रै पछै विजयसिंघ गादी माथै बैठा। वै सियाळी गांव री जागीर जबत करली अर बदळा में सटावट गांव दियौ, जठै आज ई समान बाई रै पीहर वाळां रा वंसज बसै। बाळपणै सूं ई समान बाई नैं आपरा परिवार में लाड, अपणायत अर विस्वास मिळ्यौ जिणसूं उणां में आतमविस्वास रौ बळ हरमेस बण्यौ रैयौ। बाळपणै में मिळ्योड़ा हेत, अपणायत सूं सरोबार वांरौ पूरौ जीवण सहज अर सरल रूप सूं चालतौ रैयौ। 13 बरस री छोटी उमर में ई आपरौ ब्यांव अलवर जिलै रा माहुंद गांव में ठा. रामदयालजी साथै होयौ। ठा. रामदयालजी चावा कवि उम्मेदारामजी रा पड़पोता हा। अठै कैवण रौ अरथ औ ईज है कै समान बाई नैं काव्य सिरजण रौ गुण आपरै पिता सूं बीजरूप में मिळ्यौ, वौ पतिकुळ में अंकुरित होयनै हरियै धान रै रूप में ऊग्यौ। बगत रै साथै धान पाक्यौ, जिणरौ लाटौ लाटीज्यौ उणां री अमोलक रचनावां रै पाण अर साहित्य समाज रा पाठक उणरौ रस लेवै।

ब्यांव रै पछै ई समान बाई आपरा पति साम्हीं भरोसै रै साथै आ बात राखी कै वै इण नासवान देही नैं भगवत-भजन, साधना अर उपासना में लगावणी चावै। पति रामदयालजी वांरी मरजी रौ सम्मान करता थकां हामळ भरी। धरम रुखाळण वाळी, प्रभु-भजन में लीन रैवण वाळी जोड़ायत समान बाई सूं वै आपरौ भाग सरायौ। समान बाई रै कोई संतान कोनी ही। कुळ या वंस चलावण वास्तै आप आपरै परिवार सूं ई गंगासिंघ नै खोळै लियौ। समान बाई रौ आखौ जीवण तीरथ, वरत अर दान-पुन्न में बीत्यौ। अेक किंवदंती है कै समान बाई वृन्दावन गया उठै श्रीरंगजी रा मिंदर में कृष्ण रा सैंनरूप दरसण आपनैं होया। उणरै पछै आंख्यां में कृष्ण री उणीज मूरत नैं बसायनै वै आंख्यां रै पाटौ बांध लियौ। फेर वां निजरां सूं संसार नीं देख्यौ। वि. सं. 1942 री सावणी अमावस रै दिन आपरी देह परम गति पूगी जठै तांई आप वौ कौल निभायौ।

समान बाई री रचनावां राजस्थानी साहित्य जगत में निकेवळी पिछाण बणावै। आप मुक्तक काव्य रै रूप में केई गीत लिख्या, जिणमें ईस महिमा, श्रीकृष्णोपमा, उपमा श्रीराधिका, विनय रा पद अर कृष्ण लीला रा स्फुट पदां री बानगी सरावण जोग है। वै बन्ना-बन्नी नैं राम अर सीता रा प्रतीक मान नै ब्यांव रा गीत लिख्या जिकां नै 'सौळा' कैवै। अै गीत घणा चावा है। ब्यांव रै मंगळ मौकै अै गीत घणै चाव सूं गाईजै। वै 'पति सतक' री रचना कर पति नैं परमेसर जित्तौ आघमान दियौ अर पत्नी धरम सूं उरिण होवण रौ जतन कर्‌यौ।

समान बाई राम अर कृष्ण दोनूं रा पद लिख्या। श्रीकृष्ण आपरा इस्टदेव है। इण वास्तै कृष्ण री लीलावां में वांरौ मन घणौ रम्यौ। आपरै पदां में अंतस-अरदास है। माधुरी भाव, दास्य, सखा अर सरणागति रौ भाव वांरै पदां री विसेसता है। कवयित्री रौ मूळ भाव भक्ति रौ रैयौ है। काव्य-सिरजण री खिमता वांनै जलमघूंटी साथै मिळी।

सवैया, पद्धरी, कवित्त जैड़ा छंदां में वांरी रचनावां री बानगी देखीजै जिकौ उणां रै सास्त्रीय-ग्यान नैं उजागर करै। कवयित्री रै जीवण में किणी वस्तु रौ अभाव कोनी हौ। पीहर अर सासरै में आपनैं पूरी सुख-सुविधावां मिली। अेक उक्ति याद आयगी कै 'जे सुख में सिमरण करै तो दुख काहे को होय', सुख सूं गृहस्थ में रैवता थकां भक्ति अर वैराग रौ भाव अर साधना अवस ई आपरै पूरबलै भव रा संस्कारां रौ फळ हो।

समान बाई सारू 'मत्स्य री मीरां' रौ जिकौ भाव बण्यौ उणनैं लेयनै ई कीं बात करणी चावूंला। मीरां बाई री पिछाण मुलकां चावी है। पण समान बाई नैं मीरां रै जीवण साथै जोड़ां तौ केई बातां में समानता दीखै। दोनूं कृष्ण भक्त कवयित्रियां ही। सामंती समाज सूं दोनां रौ जुड़ाव रैयौ। घर में रैवता थकां दोनां नैं भणण-पढण रौ अवसर मिळ्यौ। आपरै इस्टदेव सूं अलौकिक प्रेम अर भक्ति रा रंग में रंगीजनै दोनूं ई गृहस्थ जीवण रौ त्याग कर्‌यौ। दोनूं कवयित्रियां रा पद गेयता रा गुणां रै कारण आज ई केई राग-रागिनियां में चाव सूं गाईजै। जीवण रौ बगत अर थितियां भलांई कांई रैयी होवौ, पण दोनूं में जलम सूं ई भक्ति रा संस्कार हा। समान बाई रै जीवण अर काव्य रचनावां नैं लेयनै केई आलेख छप्योड़ा है, पण आपरै काव्य सिरजण री सगळी सामग्री री अंवेर करनै उणनै पोथी-रूप देवण रौ अंजस जोग काम डॉ. मंजुला बारठ कर्‌यौ। 'भक्तिमति समान बाई : जीवन अर काव्य' पोथी सूं कीं टाळवां पद इण पाठ में लिरीज्या है।

पाठ परिचै

कवयित्री समान बाई रा पदां में विसय-विविधता निजर आवै। आपरा इस्टदेव रौ जलम, जलम री टैम होवण वाळा उच्छब अर मात-पिता रौ राजीपौ, उणां रा लाड-कोड, सार-संभाळ रौ रूपाळौ चित्रण आप कर्‌यौ। माता जसोदा रौ लाड-लडावण रौ, आपरै लाल नैं सुख देवण रौ, पाळण-पोसण रौ निराळौ रूप समान बाई रै पदां में मिळै। कृष्ण नैं पोढावण रा जाझा जतन माता जसोदा करै। पिलंग, बिछावणा, ऊपर ओढण री साल सब इधकाई लियोड़ा है। नींद में वांरै पैस्योड़ौ मुगट अर झुगलिया सूं अबखाई नीं होवै, इण वास्तै वांनै खोलनै अळगा मेलै तौ घुळमी आंख्यां में काजळ स्यात सुख देवण वाळौ व्है। सूत्योड़ा टाबर माथै मायड़ नैं घणौ सनेव-हेत आया करै, इण वास्तै आपरी निजर सूं बचावण खातर ई काजळ सारणौ नीं भूलै। सूत्योड़ा लाल माथै ई सनेव बिरखा करती माता जसोदा थेपड़ नै लोरी गावै (हालरिया हुलरावै)। शुकदेव मुनि, शारदा अर शिवजी माता जसोदा रै भाग री बडाई करै। जिण छवि रा दरसण वास्तै देवता ई तरसै, समान बाई खुद आपरा भाग सरावै। अंतस री निजरां सूं आप भगवान रै बाळरूप रा दरसणां रौ लाभ लियौ। 'पोढावणौ' सबद आदर सूचक है। पण कोई मां टाबर वास्तै इण सबद रौ प्रयोग नीं करै। कवयित्री रा इस्टदेव कृष्ण अठै माता री गोद सूं पलंग माथै सोवै तौ समान बाई 'पोढण' सबद काम में लेवै। 'पिलंग' सबद ई म्हारी जाण में 'पालणो' री तुलना में व्यापकता रौ सूचक है। औ इज कारण कै आप पोढण वास्तै 'पालणा' री नीं 'पिलंग' री बात करै। बाळरूप वरणाव में तौ 'पालणो' ई आवणौ चाईजै पण श्रीरंगजी री मूरत सूं निजरांमेळौ करण वाळी कवयित्री वांरै विराट रूप, व्यापकता, बडा होवण रै कारण पिलंग माथै पोढावण रौ वरणन करै।

भगत अर भगवान रौ मिळाप अलौकिक है। प्रियतम रूप में भगवान श्रीकृष्ण रौ पधारणौ अर रात ढळियां पछै पोढणौ। वै काची नींद सूं जाग नीं जावै, क्यूंकै परभात होवतां ई च्यारूंमेर पंछियां रौ चैंचाट, बिलोवणा रा झरड़ाटा, गवाळियां रा हाका, गायां अर बाछड़ां रौ रम्भावणौ अर गुजरणियां रै पगां री झांझर रा झीणा-झीणा सुर सुणीजणा सरू व्है जावै। कवयित्री रा प्रियतम मोहन चिमक नै उठ नीं जावै, वांरी नींद ओझक नीं जावै, इण सारू कित्ता-कित्ता जतन कवयित्री करै कै जाणै परभात रा सगळा कारज ई ढब जावै, अगुणौ बारणौ जड़ देवै नै पड़दौ ताण देवै, जिणसूं सूरज रै तेज रौ पळकौ ई नीं पड़ै। आथूणौ बारणौ खोलावै जिणसूं हवा आवती रैवै। सेवकां नैं कैवै कै ऊपर अटारी माथै जायनै पंछियां नैं उडावता रैवौ। सब पौरैदारां नैं सावचेत करदौ कै कोई बारै सूं मांयनै नीं आवै। परभात री नींद गैरी अर मीठी होया करै, उणरौ सुख श्रीकृष्ण नैं मिळै, इण वास्तै अर परभात री बेळा सांत भाव सूं पोढ्योड़ा

भगवान रा दरसण आपनैं होवता रैवै, इण कारणै समान बाई परभात रा उण बगत नैं जाणै बांधणौ चावै। नींद री अचेतन अवस्था में अेक चेतन झांकी रा दरसण पद री विसेसता है।

सगळी गोपियां माथै आपरै निरमळ अर निस्छळ प्रेम री बिरखा करण वाळा कृष्ण नैं चन्द्रावळी नांव री अेक सखी, जिणरौ कृष्ण रै वास्तै प्रेम इधकौ ई हौ, वा सखी ओळबा देवती कैवै कै म्हैं इतरी भोळी कोनी सांवरिया। कृष्ण! थूं दूजां सूं हंस-हसं नै बोलै अर म्हारै कनै आवतां ई दांतां आंगळी लाग जावै। किणी रै थूं अगड़ (गळै रौ गैणौ) घड़ावै अर म्हारै सूं बोलता नैं ई जोर आवै। उणां सारू लायोड़ी सगळी भेंट पाछी साम्हीं मेलती कैवै कै ल्यौ, जावौ किणी दूजी सखी री ई झोळियां भरौ। जावौ थांनै कित्ती बार (16 बार) कैय दियौ कै अबै मांयनै मत आवौ। आ सगळी लड़ाई हाव-भाव सूं निजरां आवै। श्रीकृष्ण, चंद्रावळी रै ओळमां रै सभाव पड़्योड़ा है। चंद्रावळी ई क्यूं, राधा, रुकमण, सत्यभामा अर ब्रज री गोपियां जिकी उणां रै दरसण नैं तरसती। निजरां सूं कृष्ण ओझळ नीं व्है जावै, इण वास्तै वांनै मनावती अर पाछी रूस जावती। कृष्ण री अेक मुळक माथै ई पाछी राजी व्है जावती। अठै औ ओळमो फगत चंद्रावळी रौ कृष्ण रै वास्तै अछेह प्रेम रौ प्रतीक है। 'अगड़' अठै 'हियै रौ हार' मतलब घणौ वाल्हौ हो सकै।

श्याम रै आयां बिना गोपियां नैं आवड़ै ई तो कोनी। वा इज चंद्रावळी जिकी 16 बार बरजनै घर में नीं आवण देवै, वा ईज पाछी मनवारां करनै बुलावै। पिलंग माथै बैठायनै पान री मीठी मनवार करै अर जिण बैरण जीभ सूं वा कृष्ण नैं ताना दिया उणनैं बाळण री, माथै लूण भुरकावण री बात करै। कृष्ण जिकौ सगळां रौ प्राणाधार है, सगळां रौ वाल्हौ है, उणरै प्रेम माथै तौ सगळां रौ बरोबरी रौ हक है, पछै मिळण नै घरै आवतां ई वा जिकी राड़ करी, उणरौ पिछतावौ करै। वौ राड़ रौ बगत अैळौ ई गियौ कै कृष्ण सूं मीठी बंतळ नीं व्ही। पण अबै चंद्रावळी आपरी बातां सूं कृष्ण नैं राजी कर लिया। रीस, आमनौ अर मनावणौ, राजीपौ, अै प्रेम रा न्यारा-न्यारा रूप है। कृष्ण री अछेही प्रीत रा सजीव चित्राम मांड नै कवयित्री समान बाई आपरौ जीवण संवारै। चंद्रावळी में कवयित्री रौ खुद रौ आतमभाव ई निजर आवै।

गोपियां रै साथै कवयित्री री ई आ मनसा है कै कृष्ण रा दरसण अर वांरौ साथ हरमेस मिळै। आपरै इस्टदेव री बाट जोवती कित्ती आकळ-बाकळ है वांरी दसा। जीव तड़पै, मन डरै, लोकलाज आडी आवै। प्रकृति उणां री उडीक नैं अर तिरस नैं बधावै। चौमासै री रुत में विजोग री पीड़ सवाई होयनै तड़पावै। औ बगत कीकर बीतैला? घणा दिन ई कोनी, 'परसूं' रौ उल्लेख पद में व्हियौ है। दो दिन रौ बिछोह ई भक्त रै वास्तै, प्रेमीजण वास्तै इत्तौ दोरौ व्है, जिणरौ सांतरौ अर मरम परसी वरणन कवयित्री करै। उड'र जावणी चावै, पण उडण वास्तै पांख्यां चाईजै। रितु वरणन— मेह रौ बूठणौ, काळी कांठळ मेह चढणौ, मोर, पपैयां, डेडरियां अर बरसाती जीवां रौ बोलणौ, बाग-बगीचा में फूलां रौ सरस होवणौ, अै सिणगार वरणन रा उद्दीपन रूप है। विजोग में अै सगळी थितियां दुख देवण वाळी अर चिड़ावण वाळी लागै। फूल रही बैरण सरसूं' अर 'खड़ी तरसूं' में नारीगत ईसका रा भाव ई दीखै। पण अै सब लोक-व्यवहार री बातां है; काव्य री बानगी है। समान बाई आपरै स्याम नैं पुकार करै कै आपरा दरसण बिना तरसूं हूं। दरसणां री व्रिस्णा अर चावना है।

दास्य भाव रौ औ पद, जिणमें भक्त कवयित्री री अरदास रौ ढंग कितरौ इधकौ है। खुद नैं औगुणां री जाज बतावै अर औगुणां नैं गुण में बदळण री अरदास करै। 'जाज' बतावण लारै भाव औ है कै भगवान तौ भवसागर पार करावण वाळा है, इण पुकार सूं दासी री औगुण रूपी नाव नै ई पार लगाय लेवैला। दूजौ पद सरणागति रै भाव रौ है कै आप नाथां रा नाथ हौ, म्हनैं भूलजौ मत अर भोळावण कांई देवै कै राधा, रुकमण, सत्यभामा, कुबजा ज्यूं म्हनैं ई राखजौ। कित्तौ गैरौ भाव है इणमें। राधा अर कृष्ण तौ अभेद है। दोनूं अेक ई है। रुकमण, सत्यभामा कृष्ण री पटराणियां है अर कुबजा दासी है। पैली प्रेमभक्ति अर पछै अधिकार अर उणरै पछै लारै जावतां 'कुबजां ज्यूं संग लीजो जी'। हर रूप अर दसा में समान बाई कृष्ण रै चरणां में सरणौ चावै। 'निरंजन' रूप में निरगुण भाव बण जावै।

सातवौं पद पुकार रौ है, जिणमें भगवान रा बिरद याद दिरावतां कवयित्री सरणौ चावै। हे जगत रा ईस! ज्यूं पूतना नैं माता जसोदा री गति दी, गज रौ उद्धार करयौ, गरुड़ नैं छोड'र आप पाळा ई दौड़नै उणरी रिछ्या करी, भक्त प्रह्लाद री रिछ्या वास्तै नरसिंघ रूप धरयौ अर आप खम्भा मांयनै प्रगट होया। ध्रुव नैं तारियौ, उणनैं अखंड राज दियौ। कवयित्री कैवै कै म्हारै में इत्ती सामरथ कोनी अर मति ई कोनी कै आपरा गुण गाय सकूं, पण आपरौ विरद है कै सरणै आयोड़ां नैं सरणौ देवौ। हे सांवरिया! म्हैं ई आपरी सरण में आई हूं।

आठवां पद में कवयित्री रौ भाव जीवण-दरसण सूं जुड़्योड़ौ है। संकट भलांई काया रौ होवौ या भौतिक सुखां रौ अभाव। दुख में भगवान नैं ई याद करीजै। आध्यात्मिकता रै साथै कवयित्री भगवान सूं केई सवालां रा पड़ूत्तर मांगै। समान बाई कैवै कै जीव तौ अविनासी ब्रह्म ई है। जीव ब्रह्म है तौ पाप-पुन्न, जलम-मरण, आगोतर अर पूरबला भव रा जंजाळ उणरै साथै क्यूं जोड़्या? तुळसीदासजी मानस में केई मानस रोगां रौ वरणाव करै, उणमें दूजां रै सुख सूं दुखी होवणौ ई अेक मानस-रोग है। हत्या करणी, संत नैं सतावणौ, परायौ धन खोसणौ, अै सब पाप-करम बताईज्या है। अै पाप पूरबला जलम में करयोड़ा होवै तौई आगोतर में भुगतणा पड़ै। किण देह रा दंड किणनैं भुगतणा पड़ै? औ कांई आपरौ न्याव? आप तौ भक्ता नैं दुख नीं देवौ, वांनै नीं सतावौ, पण औ म्हैं नीं कैवूं, सगळौ जगत कैवै। म्हैं तौ कदैई आपरा गुण नीं गाया होवूंला, इण वास्तै आप भुगतावौ या दुख देवोला तौ म्हैं सहन करूंला, म्हैं तौ तांबौ हूं, सोनौ कोनी जिकौ तपावण सूं सवायौ चमकै। उपालंभ, ओळबौ है, जिणमें व्यंग्य है। आप है तौ सोळवौ सोनौ, इण कारण डोढा बोलां सूं भगवान नैं सावचेत करै। कवयित्री हरि नैं सावचेत करतां कैवै कै अैड़ी भूल फेर मत करजौ, इणमें तौ आप ई ठगीजोला! आपरी भक्ति रौ दान मिळै वा पात्रता म्हारै में कोनी, पण म्हैं वौ पात्र बणण री पूरी खेचळ करूंला। समभाव सूं दुख नै ई सुख मान नै भोगूंला, अैड़ी भावना भगत री बणै तौ भगवान नैं आपरा नियम बदळणा पड़ै। ईस भगती में विध-विध भाव अर विसय आपरै काव्य री विसेसता है। अेक-अेक पद अर गीत न्यारी खिमता लियोड़ा निजर आवै।

भक्ति रा पद

(1)

जसोदा राणी लाला कूं पौढावै।। टेक।।
रतन जड़ित को पलंग ढळावै, ऊपर वस्त्र बिछावै।
जरी बाफता को धरै गींदवो, कुसुम सुगंध लगावै।
ताज झुगलिया खोल धरे है, अंजन दृगन लगावै।
ले गोदी पौढाय स्याम को, ऊपर साल उढावै।
पलंग पास बैठी बड़ भागण, हालरिया हुलरावै।
सो छवि सुक सारद सिव निरखै, 'समनी' भाग सरावै।

(2)

जा दासी ग्वाला नै कीज्यो, बाछ्या गाय मिलावै री।। टेक।।
बांद्योड़ो बाछ्यो बोलैगो, मोहन ओझक जागै री।
अब तो रैन रही बस थोड़ी, टुक-इक लोयण लागै री।

धीरै बोलो, धीरै चालो, जनि झांझर झाणकाओ री।
अब जनि दही बिलोवो कोई, न परभाती गावो री।
पूरब द्वार पै परदा करदो, लेवो खोल पछियारै री।
चहुं ओरन पंछी न बोले, कोई बैठो जाय अटारी री।
पहरायत चौकस सब करद्यो, भरि नींद पिया सब सोवै री।
'समनी' कूं स्याम प्रभात समै, हरि को दरसण फिर होवै री।

(3)

सांवरिया म्हे कांई ऐसा भोळा जी।। टेक।।
हंसि हंसि प्रीति करत औरन सूं, म्हासूं बोलत मोळा जी।
बींनै तो थे अगड़ घड़ावो, म्हां सूं मीठा न बोला जी।
हमां धरिगा सो लेय पधारो, वींका ही भरज्यो झोळा जी।
बार रहो भीतर जनि आवो, बरज दिया बर सोळा जी।
प्रेम की राड़ निजर में ही जाणै, नाहिं बहैं छै गोळा जी।
'समनी' के स्याम हंसे सुनि के, चन्द्रावलि के रोळा जी।

(4)

घर आवो जी स्याम भलांई सूं।। टेक।।
बैठो पलंग पान मुख लीजै, राजी करूं अब कांई सूं।
जाळू जीभ लूंण भरूं यामें, राड़ि करी आतांई सूं।
तुम सूं कौन और मोहि प्यारो, जीवन म्हांको थांई सूं।
'समनी' के स्याम रिझाय लियो है, चन्द्रावलि बातां ई सूं।

(5)

हरि कैहर गये परसूं परसूं, कब आवेगी बैरन परसूं।। टेक।।
मन चाहत है उड जाय मिलूं पर, उड्यो न जाय बिना पर सूं।
घन घोर घटा बिजळी चमके, मेह कहे बरसूं बरसूं।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल बोल मधुर सुर सूं।
फूल रहे बाग बगीचा ही फूल्यां, फूल रही बैरण सरसूं।
ऐसी न करूं, कुण लाज डरूं, आंगन बीच खड़ी तरसूं।
कहत 'समान' सुणो ब्रजनंदन, हरि दरसन बिन मैं तरसूं।

(6)

सांवरा थांका दासी नै कदे तो याद कीज्यो जी।। टेर।।
मैं औगुण की झाज सांवरा, (म्हारा) औगुण गुण कर लीज्यो जी।
मैं अनाथ तुम नाथ जगत के, भूल बिसर मत दीज्यो जी।
राधा, रुकमणि अरु सतभामा, कुबजा ज्यों संग लीज्यो जी।
कहत 'समान' सुणो जी निरंजन, (म्हारो)चित्त चरणां में लीज्यो जी।

(7)

हेलो म्हारो सुणज्यो जी जगदीश,
जगतपति जग रखवाळा रै मुरली वाळा रै।। टेक।।
प्रथम पूतना मारण कारण, कुच रै विष लपटायो रै।
उनको जसमत की गत दीनी, सुरग पठाई रै।
गज अर ग्राह लड़ै जळ भीतर, लड़त-लड़त गज हार्‌यो रै।
गज की बेर पयादेहि धाये, गरुड़ बिसार्‌यो रै।
खंभ फाड़ नरसिंग रूप धार्‌यो, हिरणाकुश रिपु मार्‌यो रै।
उनको सुत प्रहलाद उबार्‌यो, धूजी तार्‌यो रै।
मैं मति हीन कछु नहीं लायक, कौन भांति गुण गाऊं रै।
कहै 'समान' सुणो सांवरिया, शरण आऊं रै।

(8)

नाथ क्यों एतो कष्ट सहायो, वाको कारण मैं नहीं पायो।। टेक।।
जीव ब्रह्म सम वेद बतावत, पाप पुण्य क्यों ल्यायो।
जो ओ जीव ब्रह्म ही होतो, क्यों जंजाळ लगायो।
कंठ किसी को मैं नहीं काट्यो, ना कोई संत सतायो।
पर सुख देख दुःख नहीं मान्यो, पर धन खोस न खायो।
सो पूरबला पाप कह्या छै, तुम नहीं न्याय चलायो।
बीं देही तो कर्म किया छा, ईनैं क्यूं भुगतायो।
जगत कहै हरि भगत न तावै, मैं तोको कब गायो।
सोनो व्है तो भदै सवायो, तामो वृथा तपायो।
कहत 'समान' सह्यो हरि मैं तो, जो तुमने भुगतायो।
ऐसी भूल फेर मत कीज्यो, यह तो अकल ठगायो।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

पौढावै=सोवाणै। जड़ित=बण्योड़ौ। जरी बाफता=कलावत रौ काम, आरी–तारी रौ काम। अंजन=काजळ, सुरमौ। दृगन=आंख्यां। बड भागण=मोटा भाग वाळी। हालरिया=टाबर, लाल। हुलरावै=थपकी देवणौ, लोरी रै साथै। ओझक=चिमकनै उठणौ। टुक इक=अेक पल भरी। लोयण=लोचण, आंख्यां। रैण=रात। झांझर=पायल, घूंघरा वाळी। जनि=मत, बरजणै रै रूप में। पछियारै=लारै या आथूणौ। अटारी=मकान रै ऊपरलौ भाग। अगड़=गळै रौ भारी गैणौ। धरिंगा=धरणौ, मेलणौ। वींका=उण रा, वीं रा। बरज दिया=मना करयौ। बर सोळा=सोळा बार, केई बार। रोळा=हाका। गोळा=हाथापाई, बारूद। बहै छै=चालै। जाळूं=बाळूं, जळाऊं। लूण=नमक। राड़ि=झगड़ौ, लड़ाई। दादुर=मेढक, डेडरिया। पर=पांख। बैरण=दुस्मण, सत्रु। औगुण=अवगुण। बिसर मत=भूलौ मत। जसमत=जसोदा, यसोदा। गत=गति (मुगती, मोक्ष)। ग्राह=अजगर। बेर=बारी। पयादेहि धाये=पाळा दौड़िया, उभराणा भाज्या। बिसार्‌यौ=भूलग्या, छोडनै। धूजी तार्‌यौ=ध्रुव भक्त नैं तिरायौ। खोस=माडाणी लेवणौ, खोसणौ। जंजाळ=माया मोह। पूरबला=पूरब जलम रा, पैलड़ा। भुगतायौ=दुख देवणौ। तावै=सतावणौ, दुख देवणौ। तामौ=तांबौ, अेक धातु। वृथा=बिरथा, अैळौ, बिना काम। भदै सवायौ=घणौ होवै, चमक बधै। सह्यो=सहन करयौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. समान बाई रै पिता रौ नांव हो—

   (अ) जोरावर सिंह (ब) जसनाथ कविया

   (स) रामनाथ कविया (द) गंगासिंह

   ( )

2. समान बाई रौ जलम होयौ—

   (अ) नरसिंघपुरा में। (ब) सियाळी में।

   (स) सटावट में। (द) सीकर में।

   ( )

3. समान बाई रै जलम रौ बगत हो—

   (अ) वि. सं. 1995 (ब) वि. सं. 1857

   (स) वि. सं. 1460 (द) वि. सं. 1882

   ( )

4. ब्यांव री बगत समान बाई री उमर ही—

   (अ) 15 बरस (ब) 13 बरस

   (स) 18 बरस (द) इण मांय सूं अेक ई नीं।

   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. समान बाई रै जीवण री तुलना किण भक्त कवयित्री सूं करी जावै ?
2. समान बाई रौ सुरगवास कद होयौ ? बरस अर तिथि लिखौ।
3. समान बाई आपरी आंख्यां माथै पाटी क्यूं बांधी ?
4. 'मत्स्य री मीरां' बाजण वाळी भक्त कवयित्री रौ नांव कांई हौ ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. समान बाई री रचनावां रौ मूळ विसय कांई हौ ?
2. समान बाई री रचनावां रौ कोई अेक पद लिखौ।
3. भक्त कवयित्री समान बाई रौ जीवण किण कामां में बीत्यौ ?
4. ''सोनौ व्है तो भदै सवायो, तामो वृथा तपायो।'' इण ओळी रौ भाव लिखौ।
5. ''पर-धन खोस न खायो।'' कवयित्री किणनैं अर क्यूं कैवै ?

लेख रूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. भक्त कवयित्री समान बाई रौ जीवण-परिचै लिखौ।
2. समान बाई री रचनावां रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।
3. ''समान बाई नैं 'मत्स्य री मीरां' रै नांव सूं जिकी पिछाण मिळी, उणरौ कारण भक्ति-काव्य सिरजण रैयौ।'' इण कथन माथै आपरा विचार लिखौ।
4. भक्त कवयित्री समान बाई री भक्ति किण भांत री ही। भक्ति-भावना नैं प्रगट करण वाळा पदां रौ भाव लिखौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. जसोदा राणी लाला कूं पौढावै।। टेक।।
   रतन जड़ित को पलंग ढळावै, ऊपर वस्त्र बिछावै।
   जरी बाफता को धरै गींदवो, कुसुम सुगंध लगावै।

2. धीरै बोलो, धीरै चालो, जनि झांझर झाणकाओ री।
   अब जनि दही बिलोवो कोई, न परभाती गावो री।
   पूरब द्वार पै परदा करदो, लेवो खोल पछियारै री।
   चहुं ओरन पंछी न बोले, कोई बैठो जाय अटारी री।

3. सांवरिया म्हे कांई ऐसा भोळा जी।। टेक।।
   हंसि हंसि प्रीति करत औरन सूं, म्हासूं बोलत मोळा जी।
   बींनै तो थे अगड़ घड़ावो, म्हां सूं मीठा न बोला जी।
   हमां धरिगा सो लेय पधारो, वींका ही भरज्यो झोळा जी।

4. गज अर ग्राह लड़ै जळ भीतर, लड़त-लड़त गज हार्‌यो रै।
   गज की बेर पयादेहि धाये, गरुड़ बिसार्‌यो रै।
   खंभ फाड़ नरसिंग रूप धार्‌यो, हिरणाकुश रिपु मार्‌यो रै।
   उनको सुत प्रहलाद उबार्‌यो, धूजी तार्‌यो रै।।

❑डिंगळ-छंद

तमाखू री ताड़ना

ऊमरदान लाळस

कवि परिचै

ऊमरदान लाळस रै पिता रौ नांव बख्सीराम लाळस हौ। इणां रै बाळपणै मांय ई माता-पिता रौ सुरगवास होयग्यौ हो। गांव मांय जमीन-जायदाद रै झगड़ा-टंटा सूं काया होयनै अै रामस्नेही संतां रा कंठीबंध शिष्य होयनै जोधपुर आयग्या अर खेड़ापा शाखा रै रामद्वारै में रैवण लागग्या। जोधपुर में रैवता थकां अै दरबार स्कूल मांय चौथी कक्षा तांई पढाई करी। इणरै पछै अै कवि गणेशपुरी रै कनै डिंगळ अर पिंगळ काव्य री शिक्षा ग्रहण करी। दरबार स्कूल रै शिक्षक पं. नर्बदाप्रसाद भार्गव सूं अंगरेजी भासा सीखी।

जोधपुर रै पं. देवराजजी रै पिता सूं अै ज्योतिष अर संस्कृत रौ लूंठौ ग्यान ई हासल करयौ। मोट्यारपणै मांय अै अेक कानी स्वामी दयानंद सरस्वती रै आर्य समाज रै वैदिक सिद्धांतां रै साथै पाखंड-खंडन रा अकाट्य तरक सुण्या, तो दूजै कानी बेमन साधु बण्योड़ा केई लोगां नैं नजीक सूं देखण रौ मौकौ मिळ्यौ, जिका चादर री ओट में आदर पावण रै साथै व्यभिचार में रळियोड़ा हा। सो अै साधु-वेस नैं तिलांजळी देय दीवी अर गिरस्थ बणग्या। पछै जोधपुर राज्य रै घोड़ां रै रिसाळै मांय नौकर होयग्या। अै दयानंद सरस्वती रै संपर्क में ई रैया अर वांसूं घणा सबळा प्रभावित होया। इणां री प्रतिभा, काव्य-सगती अर वाणी-कला सूं हर कोई प्रभावित होया। इणां री रचनावां पैली बार वि. सं. 1964 में 'ऊमर-काव्य' नांव सूं पोथी रूप में प्रकासित होयी। परोपकारी, साहसी, सत्यवक्ता अर निष्कपट होवण सूं आंरौ व्यक्तित्व घणौ प्रभावशाली हो। वि. सं. 1960 फागण सुदी तेरस नैं कंठबेल री बीमारी सूं आंरौ सुरगवास होयग्यौ।

पाठ परिचै

कुंडळिया अर छप्पय छंदां रै जरियै 'तमाखू री ताड़ना' मांय कवि तमाखू रै साथै-साथै अमल नैं ई बुरौ बतायौ है। विसन तौ कोई ई क्यूं नीं होवै। खोटौ ई होवै। तमाखू खावणिया अर पीवणिया अर अमल लेवणियां रा कांई भूंडा हवाल होवै— इणरौ चित्राम इण काव्य मांय हे। कवि तमाखू पीवणियां नैं कायर पुरुस बताया है। उणां री समाज मांय कांई इज्जत रैय जावै, इणरौ साचौ वरणाव करयौ है। काव्य रै आखिर में कवि कैवै कै अबै तौ जाग जावौ, जीवण रूपी हीरौ हाथ लाग्योड़ौ है, औ मत गमावौ, क्यूंकै फेर पाछौ मिळण वाळौ नीं है। कैवण रौ मतळब औ है कै इण मिनखाजूण में किणी भांत रौ नसौ-पतौ नीं करणौ चाईजै।

तमाखू री ताड़ना

छप्पय

समज तमाखू सूगली, कुत्तो न खावै काग।
ऊंट टाट खावै न आ, अपणो जाण अभाग।
अपणो जाण अभाग, गजब नहिं खाय गधेड़ो।
शूकर भूंडी समज, निपट निकळै नहिं नैड़ो।
बुरा पशु बच जाय, अहरनिस खाय न आखू।
बडा सोच री बात, तिका नर खाय तमाखू।।1।।

तारत रो निज तनय, नारदो ओर सनाती।
मार अमोलक मित्र, सदा उलटी संगाती।
पाद तणों परधांन, गाद रो सांप्रत गोटो।
असुभ चले को अनुग, मूत रो भाई मोटो।
हिया सूं भीड़ होको हमें, राज भलांई राख लो।
आप सूं अरज इतरी अवस, चुपके पाणी चाख लो।।2।।

भरियो भरियो भणें, प्रथम आरम्भ पहिचांणों।
झाड़ो झाड़ो जपे, जुगत आखर में जांणों।
चुगल सुरन्दर चाव री, टहल नारी घरटूंटी।
मोरो माथो मेल, फेर हिरदै री फूटी।
राम सूं विमुख रोवण रसा, धूम्रपांन मुख में धरै।
तूं देख सिकल होके तणी, क्यूंरि अकल हांणी करै।।3।।

कुंडळिया

पिये तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल।
सालै निस दिन समझणां, चालै चाल कुचाल।
चाल खोटी चलै चूकग्या नर चतुर।
अहह सोचै न अति दुर्व्यसन दुसह उर।
टुळक आखू अकल घरो घर टीवणां।
पुरस कापुरस जे तमाखू पीवणां।।4।।

होको लेतां हाथ में चेतो गयो चुळाय।
पड़ै धमाधम पदमणां अधमाधम अकुळाय।
उरड़ अकुळाय आघा पड़ै आय अत।
पड़ावै माजनूं लाजनूं खो अपत।
रीछ लै तमाखू दाम दै रोकड़ा।
हकंड भूंडा लगै हाथ में होकड़ा।।5।।

होको लेतां हाथ में चेतो गयो चुळाय।
पड़ै धमाधम पदमणां अधमाधम अकुळाय।
उरड़ अकुळाय आघा पड़ै आय अत।
पड़ावै माजनूं लाजनूं खो अपत।
रीछ लै तमाखू दाम दै रोकड़ा।
हकंड भूंडा लगै हाथ में होकड़ा।।6।।

छप्पय

सूळी देवै सहज, देय दै फांसी देखो।
मिरघी लकवै मांहि, उभय अंतर अवरेखो।
जान्हौ डैरू जोय, बिगत दुख भेद बतावो।
आधासीसी आंख, जुवर कुण सूळ जतावो।
ब्राह्मण गाय हित्य विषै , नीच ऊंच निरखो नमण।
तिम अमल तमाखू तोल लो, कुण घटतो बढतो कमण।।7।।

जेर हवालै जांण, चढावै गद्धै चोड़ै।
बेड़ी लीनां बहै, खास पग धरदै खोड़ै।
बरणैं दोढीवंद्य, देत इक देस निकाळो।
बूडो पाणी बीच, बिसन सूं काया बाळो।
खाणनै पीण आघा खिसक, लागा लपक लकूंदरा।
इम अमल तमाखू है उभै, एकण बिल रा ऊंदरा।।7।।

अमल लियां तन अजक, भाल धरणी भिड़ जासी।
होको पीनां हाय, सहस गुण मन सिड़ जासी।
अमल लियां सूं उदक, एक पीढी मुख आगै।
होको दै निज हाथ, सात पीढी जळ सागै।
नहिं सही जाय जद व्है निडर, कही जाय मोटी कथा।
बय बखत अमोलक व्है वृथा, विमळ हिये खोटी व्यथा।।8।।

तीन लोक को मोल, जाय तन सुकवि जगावै।
हीरो लागो हाथ, पुनरभव फेर न पावै।
ठाला भूला ठोठ, कुबध नहिं छोडै काल्हा।
पुण्य गया परवार, व्यसन जद लागा वाल्हा।
बिन राम भजन खोवै बखत, उलझ अमल होकां अठै।
इक सास अंतपुळ में अहह, कोड़ि महोर मिलणी कठै।।9।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सूगली=गंदी, हेय। टाट=बकरी। शूकर=सूअर। तिका=जिका। कापुरस=कायर, कपूत। सापुरस=सज्जन। माजनौ=प्रतिस्ठा, इज्जत। उरड़=आवेग सूं। अमल=अफीम। आफळै=संघर्षरत, जूझणौ। ढोर=पासु। ढोळै=दुरबळ पसु, जका खुद नीं उठै सकै, बेसकै पड़णौ। नासेटू=किणी री तलास में फिरणियौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ऊमरदान लाळस रै पिताजी रौ नांव कांई हौ—
   (अ) ईसरराम (ब) बख्सीराम
   (स) जसराज (द) तीरथराज
   ( )

2. ऊमरदान जोधपुर में रैवता थकां किण स्कूल सूं शिक्षा प्राप्त करी—
   (अ) चौपासणी स्कूल (ब) उम्मेद स्कूल
   (स) दरबार स्कूल (द) एलगिन स्कूल
   ( )

3. ऊमरदान तमाखू पीवणियां नैं कैड़ो पुरुस बतायौ है—
   (अ) कायर (ब) प्रेमी
   (स) बुद्धिमान (द) वीर
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. ऊमरदान डिंगळ अर पिंगळ काव्य री शिक्षा किणसूं प्राप्त करी ?
2. 'तमाखू री ताड़ना' में कवि किण छंदां रै पाण तमाखू विसन नैं बुरौ बतायौ है ?
3. तमाखू पीवणियां री समाज में कांई इज्जत रैवै ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. ऊमरदान लाळस रै पारिवारिक जीवण रौ परिचै देवौ।
2. कवि रै मुजब कुणसा जानवर तमाखू नैं सूगली समझ नीं खावै ?
3. ऊमरदान लाळस कुणसै संप्रदाय रै संतां रा कंठीबंध चेला बण्या अर बाद में कांई सीख मिळी ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि तमाखू अर अमल रा कांई-कांई औगुण बताया है ? खुलासौ करौ।
2. ऊमरदान रै व्यक्तित्व अर कृतित्व नैं उजागर करौ।
3. ''तमाखू री ताड़ना मांय राजस्थानी रै वैण सगाई अलंकार रौ ओपतौ प्रयोग कथ्य री महत्ता अर सोभा बधावण रौ सामरथ राखै।'' कथन नैं दाखलां समेत पुख्ता करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. समज तमाखू सूगली, कुत्तो न खावै काग।
ऊंट टाट खावै न आ, अपणो जाण अभाग।
अपणो जाण अभाग, गजब नहिं खाय गधेड़ो।
शूकर भूंडी समज, निपट निकळै नहिं नैड़ो।

2. पिये तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल।
सालै निस दिन समझणां, चालै चाल कुचाल।
चाल खोटी चलै चूकग्या नर चतुर।
अहह सोचै न अति दुर्व्यसन दुसह उर।

3. अमल लियां तन अजक, भाल धरणी भिड़ जासी।
होको पीनां हाय, सहस गुण मन सिड़ जासी।
अमल लियां सूं उदक, एक पीढी मुख आगै।
होको दै निज हाथ, सात पीढी जळ सागै।

4. तीन लोक को मोल, जाय तन सुकवि जगावै।
हीरो लागो हाथ, पुनरभव फेर न पावै।
ठाला भूला ठोठ, कुबध नहिं छोडै काल्हा।
पुण्य गया परवार, व्यसन जद लागा वाल्हा।

❑कविता

सपनौ आयौ

हीरालाल शास्त्री

कवि परिचै

हीरालाल शास्त्री रौ जलम 24 नवंबर, 1899 में जोबनेर में होयौ। आप प्रगतिसील काव्यधारा रा कवि मानीजै। आजादी रै बगत लोगां में आपरी कविता रै सायरै अर आपरै ओजपूरण सुर सूं आजादी री अलख जगायी। गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' अर भैरूलाल 'काळाबादळ' रै साथै जनवादी सुर में सुर मिलायनै लोकगीतां री धुन माथै कविता बणायनै देस में आजादी री चेतना नैं चेतन करी। आम जन खातर आप काव्य, गीत, कविता री सिरजणा करी। हीरालाल शास्त्री प्रगतिसील धारा रा साचै अरथां में जनकवि हा। जन-जागरण सारू राजस्थानी कविता अर गीत रौ स्हारौ लेयनै आप जन-जन में देसप्रेम अर बळिदान री भावना भरी अर समाज रै विकास सारू सांगोपांग प्रयास करयौ। जद जनता गुलामी री बेड़्यां में कसमसीजै ही अर जंग रा ढोल बाजण री वेळा घणी नैड़ी ही उण वेळा लोगां में आतम-बळिदान री भावनावां भरण वाळी कवितावां आप लिखी। आप वनस्थली विद्यापीठ री स्थापना करी। 28 दिसंबर, 1974 में आपरौ सुरगवास होयग्यौ।

पाठ परिचै

'सपनौ आयौ' कविता प्रगतिसील अर मार्क्सवादी विचारधारा री पांत री सखरी रचना है, जिणमें जनवादी सुर निगै आवै। धरती माथै कवि मोटौ बदळाव चावै, जिणमें पूंजीवाद अर सोसण रौ नास होवै अर निबळां रौ समानता साथै राज होवै। कवि रौ सुपणौ सामाजिक, आरथिक अर राजनीतिक बदळाव रौ प्रतीक है। औ सुपणौ ऊपर सूं दीखण में जित्तौ सांत लखावै, बित्तौ ई मांय सूं गरीबी, भूख, सोसण, असमानता सूं उपज्योड़ौ असंतोस अर रीस है। कवि रौ ध्येय है कै भेदभाव रौ अंत होवणौ इज चाईजै। कवि रौ मन बदळाव खातर घणौ अधीर है। उणरौ अवचेतन मन भी आम आदमी री पीड़ सूं दुखी है। सुपणां में भी आ इज पीड़ निगै आवै। विचारां रै भतूळियै मन रै आंगणै सुपणा रै पाण काळी-पीळी आंधी उठै अर आ आंधी विरोध अर रीस रौ इज प्रमाण है जठै आम जन में आमूळचूळ बदळाव री भावना है। जळ अर थळ रौ अेक होवणौ असमानता रौ नास है अर मोटी क्रांति रौ प्रतीक है। भूमि रौ संपटपाट होवणौ पूंजीवाद रौ नास अर आम आदमी रै मजबूती रौ पड़बिंब है। पहाड़ां रौ टूट जमीं में मिळणौ, जळ-थळ अेक होवणौ, टीबा अर नदी रौ बदळाव, ऊंचै रौ नीचै उतरणौ, निबळां रौ मजबूत होवणौ, खजाना खाली होवणा अर गरीब रौ पेट भरणौ सगळा विचार अेक नूंवै जुग री कल्पना करै, जठै गरीब रौ पेट भर्‌योड़ौ है, उणरी झूंपड़ी म्हैल ज्यूं होवै अर जठै भेद अर सोसण नै समाज में ठौड़ नीं है। कवि रौ विस्वास है कै अेक दिन म्हारौ औ सुपणौ अवस साच होसी। कुल मिळायनै 'सुपणौ आयौ' कविता घणी असरदार, ओजपूरण, सीधी अर बदळाव रै मिजाज री है।

सपनौ आयौ

सपनौ आयौ अेक घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
काळी-पीळी आंधी उठी
चाल्यौ सूंट घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
थळ को होग्यौ जळ, थळ जळ को
संपट पाट घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
डूंगर टूट जमीं में मिळग्या
देख्यौ ख्याल घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
चौरस भोम में डूंगर बणग्या
माया जाळ घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
टीबा ऊठ नदी बै लागी
फैल्यौ पाट घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
नदियां सूख'र टीबा बणग्या
बेढब भूड घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
ऊंचा छा सो नीचा उतर्‌या
निचलौ ठाठ घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
टणका छा सो निमळा होयग्या
निमळा राज घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
म्हैलां की तो टपरी बणगी
टपरी म्हैल घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
तोसाखाना खाली होग्या
खाली पेट भर्‌यौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
म्हांकौ सपनौ साचौ होसी
समझौ भेद घणौ जबरौ रे
सपनौ आयौ।
⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

घणौ=बहोत, ज्यादा। जबरौ=जोरदार। डूंगर=परबत। भोम=भूमि। टीबा=टीला, धोरा। म्हैलां=महलां। साचौ=सच्चौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. हीरालाल शास्त्री किण भासा रा कवि मानीजै?

(अ) परंपरावादी विचारधारा रा (ब) सिणगारिक विचारधारा रा

(स) प्रगतिशील विचारधारा रा (द) वीरतापरक विचारधारा रा

( )

2. लोकधुनां री मारफत कवितावां करण वाळा कवि है—

(अ) हीरालाल शास्त्री (ब) शंकरदान सामौर

(स) गिरधारीसिंह पड़िहार (द) अस्तअलीखां मलकांण

( )

3. 'सपनौ आयौ' कविता री मारफत कवि कांई कल्पना करी है?

(अ) राजतंत्र कायम रैवण री (ब) लोकराज आवण री

(स) राजावां रै दीरघ जीवण री (द) पूंजीपतियां रै सासन री

( )

4. 'चाल्यौ सूंट घणौ जबरौ रे।' इण ओळी रौ भाव है—

(अ) क्रांति (ब) शांति

(स) भ्रांति (द) विश्रांति

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सपनौ आयौ' कविता किण कवि री रचना है?
2. 'सपनौ आयौ' कविता में कवि किणरी कल्पना करै?
3. 'टणका' अर 'निमळा' सबदां रौ अरथ बतावौ?
4. आजादी री लड़ाई रै समै क्रांति रौ माध्यम कांई हौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सपनौ आयौ' कविता रौ भाव-सौंदर्य बतावौ।
2. कवि लोकधुनां री मारफत कविता क्यूं करता?
3. आजादी रै आंदोलन रै समै कविता में फूटरापौ अर सिणगार क्यूं नीं है?
4. 'संपट पाट घणौ जबरौ रे', इण ओळी रौ आसय बतावौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सपनौ आयौ' कविता रौ भाव दाखला देयनै समझावौ।
2. ''सपनौ आयौ कविता प्रगतिशील धारा री जनवादी कविता है।'' इण कथन नैं कविता रै माध्यम सूं सिद्ध करौ।
3. 'सपनौ आयौ' कविता रै माध्यम सूं कवि लोगां नैं कांई संदेस देवणौ चावै ? समझावौ।

नीचै दिरीज्या काव्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. सपनौ आयौ अेक घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।
   काळी-पीळी आंधी उठी
   चाल्यौ सूंट घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।

2. टीबा ऊठ नदी बै लागी
   फैल्यौ पाट घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।
   नदियां सूख'र टीबा बणग्या
   बेढब भूड घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।

3. टणका छा सो निमळा होयग्या
   निमळा राज घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।
   म्हैलां की तो टपरी बणगी
   टपरी म्हैल घणौ जबरौ रे
   सपनौ आयौ।

❑कविता

मरण-पंथ रा पंथी

सुमनेश जोशी

कवि परिचै

सुमनेश जोशी रौ जलम जोधपुर में होयौ। आप डील-डौल सूं सैंठा, काम-काज में मैनती, लगन रा पक्का अर कलम रा धणी हा। सरीर मुजब ई मन ई मोटौ हौ आपरौ। देसी राज्यां री राजनीतिक क्रांति में आपरै त्याग अर बळिदान री चरचावां घणी चावी है। देस रै वास्तै साची प्रीत रै कारण वै राज री नौकरी छोड-छिटकायनै आंदोलनकारियां रै भेळा भिळग्या। संवेदनसील होवण रै कारण वै घर-परिवार सूं बेसी देसहित में आपरै करतव्य रौ पाळण करयौ। जोशी आपरै गीतां अ रचनावां सूं क्रांतिकारियां में जोस जगायौ, उणां नै चेताया। क्रांति रा गीत लिखणा कवि रौ करम हौ। सामंती जुलमां सूं आंती आयोड़ा मिनखां नैं उबारण वास्तै लेखणी रौ जोर लांठौ हौ। आपरा गीत आजादी सारू लड़णिया सिपायां खातर जीवण-जड़ी हा। जणा-जणा रा मूंडा माथै उणां रै गीतां रा बोल, उणरा भाव सूं जाग्योड़ौ ओज हौ। अै गीत क्रांति री लपटां में 'बळती में पूळा' रौ काम करयौ। आजादी रै पछै ई कवि आपरी कलम हेटी नीं न्हाखी। उणीज ओज अर जोस सूं नूंवै उछाह साथै नव-निरमाण रा गीत लिख्या। आपरौ गीत संग्रै राजस्थान सरकार रै सार्वजनिक संपर्क कार्यालय सूं छपियौ हौ। केई अबखायां अर मानसिक चिंतावां रै पछै ई सुमनेशजी में आस-विस्वास, हिम्मत, मरदानी गाडां-गाडां भरयोड़ी ही। आपरा गीतां में अै सगळी विसेसतावां है। सेनानियां रै इतिहास रौ अेक मोटौ ग्रंथ ई आप छापियौ। इणरै ओळावै मायड़भोम रा वां सपूतां नैं स्रद्धांजळी दी।

पाठ परिचै

'मरण-पंथ रा पंथी' क्रांतिकारी कवि सुमनेश जोशी री रचना है। इण रचना में कवि रै सुभाव मुजब त्याग अर बळिदान री बात प्रतीकां रै ओळावै कहीजी है। अेक बीज आपरौ आपौ मेटै जद अणगिण रूंख ऊगै। बादळ खुद नैं मिटावै जद बिरखा बूठै। दीवौ बळनै उजास रौ पसराव करै। झरणौ परबतां सूं नीचै आवै जठै तांई ई उणरौ रूप रैवै पछै वौ नदी-नाळां रौ रूप लेय लेवै। कवि कैवै कै औ मानखौ बीज सूं ऊग्योड़ा रूंखां नैं, दिवलै रा उजास नैं, बिरखा अर बैंवता झरणां नैं देखै, उणरै लारै जिकौ त्याग है उणनैं अर आपौ मेटण री बात कुण देखै? आ तौ उणां री नियति है। घणा रंग वां धरती रा जायोड़ां नैं, जिका खुद मिट'र समाज अर देस नैं कीं देयनै जावै। त्याग अर बळिदान देवणिया जस री बाट नीं जावै। उणां रा जस गीत गाईजै कै नीं। वांनै कोई याद करै कै भलांई नीं करै। आपरौ फरज, करतव्य समझनै वै करम करै। इण माटी रा सपूतां में अर प्रकृति रा कण-कण में त्याग अर समरपण रा भाव है। अेक रौ विणास अर दूजै रौ सिरजण, आ प्रकृति री रीत है। कर्मठता, त्याग, बळिदान, समरपण री सीख इणसूं मिळै तौ नव-सिरजण री प्रेरणा ई आं प्रतीकां सूं मिळै। सहज अर सरल सबदां में कवि आपरै अंतस रा भावां नैं उकेरिया है। 'मरण-पंथ रा पंथी' मतळब जिका म्रित्यु रै मारग आगीवाण होयनै चालै अर समाज नैं नूंवी दिसा देवै।

देस री आजादी में कितरा मायड़ भोम रा सपूत बीज बण आपरौ बळिदान दियौ। बदळै में आजादी रूपी हरियल रूंख री छिंया आपां नैं सूंपी। आजादी रूपी महल नैं ऊभौ करण खातर कित्ताक अचळेसर नींव नीचै दबिया होवैला, कांई उणां रा बळिदान नैं आपां याद करां? खुद नैं मिटावण वाळा वै सपूत, वै स्वतंत्रता सेनानी जस रा भूखा कोनी हा। कवि इण गीत सूं वां स्वतंत्रता सेनानियां रै त्याग अर बळिदान नैं याद करै।

मरण-पंथ रा पंथी

माटी में मिल गया बीज जद,
ऊग्या रूंख हजारा
आपौ मेट, मिट्यौ जद बादळ,
फूटी जळ री धारा

दिवलो जळ-बळ मिल्यौ खाक में,
कर्‌यौ जोत उजाळौ
मरण बांध कूद्यौ सिखरां सूं,
वौ झरणौ मतवाळौ

वौ झरणौ मतवाळौ—
उण रौ मरण-पंथ कुण देखै
जग तौ प्रीत करै ज्योती सूं,
बळणौ करमां लेखै

बीज गया पाताळ,
धरण सूं ऊंचा तरवर छाया
नीवां में गड गया—
उणां रा गीत न कोई गाया

कोई गावै गीत, न गावै,
उणनैं कद अभिलासा
मरण-पंथ रा पंथी तौ बस,
करम करण रा प्यासा

धिन-धिन वै धरती रा जाया,
जो निज आपौ मेट
नयौ रूप आकार धरा नैं,
जो कर जावै भेट

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ऊग्या=ऊगणौ, उदय होवणौ। आपौ=असित्व। मेट=मिटायनै। फूटी=बरसी। खाक=समाप्त, मिटणौ। सिखरां=ऊंचा परबत सूं। मतवाळौ=अहम वाळौ, मद वाळौ, गीरबै सूं भर्‌योड़ौ। बळणौ=दीयै रौ जगणौ, बाती री लौ लागणी। तरवर=रूंख, बिरछ। अभिलासा=चावना, मनसा, इच्छा। गड गया=दबग्या, माटी रै नीचै दबणौ। धिन-धिन=धन्य-धन्य, लखदाद। नयौ रूप=नव सिरजण, नूंवौ निरमाण।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. कवि सुमनेश जोशी किण भांत रा मिनख हा—

   (अ) डील-डौल, कलम नै काम सूं महाप्राण। (ब) सांस लेवण में अल्पप्राण।

   (स) डील-डौल सूं मोटा मतवाळा। (द) इण मांय सूं अेक ई नीं।

   ( )

2. सुमनेश जी रैवासी हा—

   (अ) बीकानेर (ब) जैसलमेर

   (स) पूगळ (द) जोधपुर

   ( )

3. ''धिन-धिन वै धरती रा जाया'', इणमें 'धरती रा जाया' है—

   (अ) बादळ, बीज, माटी। (ब) मायड़ भोम रा सपूत।

   (स) नदी, नाळा, झरणा। (द) अचर अर चर जगत।

   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. सुमनेश जोशी किण भांत रा गीत लिख्या?
2. कवि सुमनेश जोशी नौकरी छोड'र कांई काम कर्‌यौ?
3. 'मरण-पंथ रा पंथी' कुण हा?
4. बादळ आपरौ आपौ मेटनै कांई बरसावै?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. रूंख ऊगण रै लारै कवि किणरौ किण भांत त्याग बतावै?
2. कवि सुमनेश जोशी रै व्यक्तित्व री चार विसेसतावां बतावौ।
3. कवि री रचनावां रौ संग्रै कठै सूं छपियौ अर गीतां रा भाव कांई हा?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. कवि सुमनेश जोशी रै व्यक्तित्व अर कृतित्व ऊपर लेख लिखौ।
2. 'मरण-पंथ रा पंथी' कविता रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।

3. कवि सुमनेश जोशी री दीठ में मरण-पंथ रा पंथी किण मारग चालै अर औ अंवळौ मारग समाज नैं कांई देवै ? आपरै विचारां सूं खुलासौ करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ—

1. माटी में मिल गया बीज जद, ऊग्या रूंख हजारा
   आपौ मेट, मिट्यौ जद बादळ, फूटी जळ री धारा
2. कोई गावै गीत, न गावै, उणनैं कद अभिलासा
   मरण-पंथ रा पंथी तौ बस, करम करण रा प्यासा
3. धिन-धिन वै धरती रा जाया, जो निज आपौ मेट
   नयौ रूप आकार धरा नैं, जो कर जावै भेट

❑कविता

लिछमी

रेवतदान चारण

कवि परिचै

राजस्थानी कविता सूं जन-जागरण रा भाव विकसित करण वाळा आधुनिक रचनाकारां मांय कवि रेवतदान चारण री खास भूमिका है। कवि रौ जलम जोधपुर जिलै रै मथाणिया गांव में सन् 1924 नै होयौ। परम्परागत चारण-सैली री जूनी-डिंगळ कविता री जागां कवि रेवतदान, जनचेतना रै काव्य री सिरजणा करी। 'चेत मानखा', 'धरती रा गीत' अर 'उछाळौ' कवि री चरचित काव्य-पोथ्यां है। आप केंद्रीय साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत रेवतदान आपरी कवितावां अर गीतां रै पाण सोसण, अत्याचार अर अन्याव रै खिलाफ जन-जागरण रा भावां नैं जगावण रौ सरावण जोग प्रयास करयौ। 'इंकलाब री आंधी', 'लिछमी' अर 'माटी थनैं बोलणौ पड़सी' कवितावां इण दीठ सूं आपरी खास ओळखाण करावण वाळी कवितावां है। भाव, भासा अर कथ्य असरदार अर हिरदै में जोस अर उछाह रा भाव भरण री सामरथ राखै। आप राजस्थानी भासा री मान्यता सारू ई समरपित हा, पण मान्यता री आ टीस मन में ई रैयगी। 17 जून, 1997 नै जोधपुर में आपरौ सुरगवास होयग्यौ।

पाठ परिचै

रेवतदान चारण सोसण मुगत समाज री थापना रा हिमायती हा। करसा अर मजदूरां रै दुख-दरद सूं जुड़नै समाज सापेक्ष सामाजिक क्रांति री बात करी। आपरी रचना 'लिछमी' मांय काळ सूं बाथेड़ौ करता करसा अर मजूर करड़ी मैणत रै उपरांत लिछमी रै नीं तूठण री व्यथा कथीजी है। कवि लिखै कै जिकौ करसौ मैणत करनै अबखायां रौ सामनौ कर लिछमी नैं पाळी-पोसी वा इतरी गुणचोर है कै धनवानां रै घरै जाय बैठी। कवि कैवै कै हे लिछमी! इण तरै कळपता प्राणां नैं अधमरया छोडनै मत जा अर जे जावणौ इज है तौ आं अधमरिया प्राणां नैं खतम करनै जा। जे विधाता रै चितेरा हाथां सूं थारौ सिरजण होयौ है तौ मजूर आपरी मैणत सूं थारौ सिणगार करयौ है। आपरै रगत सूं थारै मैंदी लगाई है। आपरै घर-घर री जोत बुझायनै फगत थारी जोत करी है। पण हे लिछमी, दिवाळी रै दिन मजूरां रै अैसानां रौ मोल चुकायां बिना ई वांरी सगळी आसावां माथै पाणी फेर थूं धनवानां री हवेल्यां जा चढी। थूं हरमेस भला अर भोळा लोगां नैं ठगती आयी है। 'धान खावै मांटी रौ, गीत गावै बींरै रा' पण अबै थनै अै गीत नीं गावण देवांला। जे थूं नीं मानी अर जावण रौ कैयौ तौ थारी जीभ डांम देवांला, आंख फोड़ देवांला। सेठां रै घरै जावण री तेवड़ैला तौ थारा हाथ हथकड़्यां सूं अर पग बेड़्यां सूं जकड़ देवांला, अठै तांई कै थनैं पांगळी भी कर सकां हां। हे लिछमी! दीपमाळा रै लारै थारी हिरदै री काळख साफ निगै आवै। हे लिछमी! थारी चूंदड़ी रा झपेटा सूं इण भोळा ढाळा करसै री आसावां रूपी दीवट नैं बुझायनै मत जा।

लिछमी

ओढ्यां जा चीर गरीबां रा, धनिकां रौ हियौ रिझाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

हळ बीज्यौ सींच्यौ लोही सूं, तिल-तिल करसौ छीज्यौ हौ
ऊंनै बळबळतै तावड़ियै, कळकळतौ ऊभौ सीझ्यौ हौ
कुण जांणै कितरा दुख झेल्या, मर खपनै कीनी रखवाळी
कांटां-भुट्टां में दिन काढ्यां, फूलां ज्यूं लिछमी नै पाळी
पण बण-ठण चढगी गढ-कोटां, नखराळी छिण में छोड साथ
जद पूछ्यौ कारण जावण रौ, हंस मारी बैरण अेक लात
अधमरिया प्रांण मती तड़फा, सूळी पर सेज चढाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

जे घड़ी विधाता रूपाळी, सिणगार दियौ है मजदूरां
रखड़ी बाजूबंद तीमणियौ, गळहार दियौ है मजदूरां
लोही में बोटी बांट-बांट, जिण मेंहदी हाथ लगाई ही
फूलां ज्यूं कंवळा टाबरिया, चरणां में भेंट चढाई ही
घर री बू-बेठ्यां बिलखी, पण लिछमी थनै सजाई ही
इक थारी जोत जगावण नै, घर-घर री जोत बुझाई ही
पण अैन दिवाळी रै दिन बैरण, सांम्ही छाती पग धरती
ठुमकै सूं चढी हवेली में, मन मरजी रा मटका करती
जे लाज बेचणी तेवड़ली, तौ पूरौ मोल चुकाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

इतरा दिन ठगती रैई है, थूं भोळी बण छळ जाती ही
खाती ही रोटी मांटी री, पण गीत वींरै रा गाती ही
जे हमें जाण रौ नाम लियौ, तौ जीभ डांम दी जावैला
जे निजर उठी महलां कांनी, तौ आंख फोड़ दी जावैला
जे हाथ उठायौ हाकै नै, नागौरी गहणौ जड़ दांला
जे पग धर दीनां सेठां घर, तौ पगां पांगळी कर दांला
महलां गढ-कोटां-बंगळां रा, वै सपना हमें भुलाती जा
चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै, अै लिछमी दीप बुझाती जा!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

चीर=ओढणी, चूनड़ी। हियौ=मन। रिझाती=राजी करती। झपेटौ=फटकारौ। बीज्यौ=बोयौ, तोप्यौ। लोही=रगत, खून। छीज्यौ=दुख पायौ। गढ–कोटां=म्हैल–माळियां। तड़फा=तकलीफ देवणौ। रूपाळी=फूठरी, सुंदर। कंवळा=कोमल। बिलखी=अभावग्रस्त। तेवड़ली=धारली, निस्चै कर लियौ। छळ=धोखौ। मांटी=घरधणी, मोट्यार। डांम=सळाख नैं गरम करनै सरीर रै चेपणी, डील नैं दागणौ। हाकौ=जोर सूं दकालणौ। पांगळी=दिव्यांग, पगां सूं लाचार।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. रेवतदान चारण किण काव्यधारा रा कवि है ?
   (अ) छायावादी (ब) कलावादी
   (स) राष्टवादी (द) प्रगतिवादी
   ( )

2. रेवतदान चारण रौ जलम कठै होयौ ?
   (अ) मथाणिया (जोधपुर) (ब) देशनोक (बीकानेर)
   (स) कोठारिया (उदयपुर) (द) हरमाड़ा (जयपुर)
   ( )

3. कवि रै मुजब लिछमी किणरौ हियौ रीझावै ?
   (अ) किसानां रौ (ब) मजूरां रौ
   (स) धनिकां रौ (द) राजावां रौ
   ( )

4. 'चुंदड़ी रौ अेक झपेटौ दै', अठै झपेटौ सूं कांई अरथ है ?
   (अ) झटकौ (ब) फटकारौ
   (स) लटकौ (द) लैरकौ
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. मर–खप नै लिछमी री रुखाळी कुण करै ?
2. लिछमी नैं कुण सिणगारै ?
3. लिछमी नैं पांगळी करण री बात कवि उणरै कठै जावण रै कारण करै ?
4. रेवतदान चारण री एक कविता पोथी रौ नांव बतावौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि रेवतदान चारण रौ संखेप में परिचै लिखौ।
2. रेवतदान चारण आपरी कवितावां रै पाण किणरै खिलाफ जन–जागरण रा भावां नैं जगावण रौ प्रयास करयौ ?
3. 'लिछमी' कविता में कवि री कांई अरदास है ?
4. लिछमी कविता री कोई दो ओळ्यां लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''लिछमी कविता प्रगतिसील काव्यधारा री सांवठी रचना है।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ।
2. रेवतदान चारण री 'लिछमी' कविता रै भावां रौ फूठरापौ दाखला देयनै उजागर करौ।
3. 'लिछमी' कविता रै पाण कवि कांई कैवणौ चावै ? आपरै सबदां में समझावौ।
4. 'लिछमी' कविता री सिल्पगत विसेसतावां दाखला देयनै उजागर करौ।

नीचै दिरीज्या काव्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. कुण जांणै कितरा दुख झेल्या, मर खपनै कीनी रखवाळी
   कांटां-भुट्टां में दिन काढ्यां, फूलां ज्यूं लिछमी नै पाळी
   पण बण-ठण चढगी गढ-कोटां, नखराळी छिण में छोड साथ
   जद पूछ्यौ कारण जावण रौ, हंस मारी बैरण अेक लात

2. जे घड़ी विधाता रूपाळी, सिणगार दियौ है मजदूरां
   रखड़ी बाजूबंद तीमणियौ, गळहार दियौ है मजदूरां
   लोही में बोटी बांट-बांट, जिण मेंहदी हाथ लगाई ही
   फूलां ज्यूं कंवळा टाबरिया, चरणां में भेंट चढाई ही

3. इतरा दिन ठगती रैई है, थूं भोळी बण छळ जाती ही
   खाती ही रोटी मांटी री, पण गीत वींरै रा गाती ही
   जे हमें जाण रौ नाम लियौ, तौ जीभ डांम दी जावैला
   जे निजर उठी महलां कांनी, तौ आंख फोड़ दी जावैला

❑कविता

कतनी बार मरूं / काजळी तीज

रघुराजसिंह हाड़ा

कवि परिचै

रघुराजसिंह हाड़ा रौ जलम 31 मार्च, 1933 में राजस्थान रै अेक छोटै-सै गांव चमलासा (खानपुर-झालावाड़) में होयौ। आपरी शिक्षा अेम.अे., बी.अेड. तांई होयी। आप नूंवी धारा रा कवि मानीजै। आपरा गीत, कविता सामाजिक अर सांस्कृतिक परंपरा रा सबळ पारखी रैया है। आपरी गिणती राजस्थान रै मंच रा कवियां में होवै। सिणगार, प्रेम, राजस्थान री प्रकृति रौ सुरंगौ चित्रण, अठै री संस्कृति, रीत-रिवाज रौ निभाव, देसहित अर उणरी रक्षा री ललकार आपरै काव्य रौ प्राण है। मिनख-मानखै रै संघर्ष अर अबखायां, हिवड़ै नैं परसण वाळी मारमिक वेदना आपरै काव्य में रचै-बसै। हाड़ाजी रौ काव्य सामाजिक सरोकार रौ काव्य है। राजस्थानी गीत-कविता री मिठास देस रै खूणै-खूणै पुगावण रौ जस आपरै नांव है। आपरी प्रमुख काव्य-कृतियां में 'अणबांच्या आखर', 'घूघरा', 'हरबोला', 'फूल केसूला फूल', 'क्यूं म्हां पढां', 'म्हारौ गांव' अर 'भूतपट्टी छै' आद सामल है। आप हिंदी में केई रचनावां लिखी है। 'गीत-गद्य' (गद्य-काव्य) अर 'रंग अर सौरभ' आपरी संपादित कृतियां है। राजस्थान रै माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अर विश्वविद्यालयां रै पाठ्यक्रम में आपरी रचनावां सामल है। आकासवाणी अर दूरदरसण सूं आपरै काव्यपाठ रौ प्रसारण लगोलग होवतौ रैवै। लारलै 45 बरसां सूं साक्षरता आंदोलण सूं आपरौ गैरौ जुड़ाव रैयौ है। आप साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रै राजस्थानी परामर्श मंडळ अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर री कार्यकारिणी में ई सदस्य रैया है।

आपनैं राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर कानी सूं 'विशिष्ट साहित्यकार सम्मान', जनवादी लेखक संघ, कोटा कानी सूं 'ठाडा राही' स्मृति पुरस्कार, जिला प्रशासन, झालावाड़ सूं 'साहित्य सम्मान' मिळ चुक्या है।

पाठ परिचै

'कतनी बार मरूं' कविता आपरै कविता-संग्रै 'फूल केसूला फूल' सूं लिरीजी है। इण कविता में जग री पग-पग माथै निज स्वारथ अर छळ-कपट री नीत रौ खुलासौ करीज्यौ है। मिनख जमारै में जलम लेयनै मिनख नीं होवण री पीड़ पण इण कविता में है। कवि मिजळा मिनखां री स्वारथ-नीत अर दिखावटीपणै रौ दाखलौ देता बतावै कै हर जलम में इण नीत रै कारण दुख अर पीड़ा रै सिवाय कीं नीं मिळै। लोगां री अपणायत झूठी अर खोटी है। अपणायत रा रिस्ता-नाता निजू लाभ वास्तै थोथा है। छळ अर फरेब जग में घणौ है। मिनख री जूण केसूलै फूल दांई दिखावटी अर गुणबायरी है। कवि जग रौ मनोवैग्यानिक अर सांतरौ चित्राम इण कविता में मांड्यौ है।

कवि रघुराज सिंह हाड़ा री दूजी कविता 'काजळी तीज' वांरी काव्यकृति 'अणबांच्या आखर' सूं सामल करीजी है। सन् 1962 रै भारत-चीन जुद्ध रै प्रसंग नैं लेयनै राजस्थान रै सगळै भूखेतर में चाव सूं मानीजण वाळै तिंवार 'काजळी तीज' रै मारफत अठै री वीर नारी रै वीर भावां नैं कवि सबदां रै सांचै चोखा ढाळ्या है। निजू सुख आगै देस माथै बैरी रौ संकट घणौ मोटौ। वीर धण आपरै फौजी धणी नैं इण तीज माथै सीमा माथै मोरचौ संभाळण रौ संदेसौ अर अरदास करै। वा आपरै सायब नैं वां वीरां रै मारग चालण री बात कैवै, जका धण रौ चूड़ौ नीं लजावै। तिंवार रै ओळावै कवि री वाणी नारी रै मुख सूं देस रक्षा सारू संदेसौ देवै।

कतनी बार मरूं

कतनी बार मरूं, म्हूं कतनी बार मरूं?
उगता सूरज ज्यूं उठ, पाछी कतनी बार मरूं?

जद जनमूं जद बा ही पीड़ा,
वै का वै नरकां का कीड़ा,
ऊही ढोबौ बोझ दंना को कुण पै भार धरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

या चौफेरूं फीकी हांसी,
झूठा अपणापण की फांसी,
सैं संझ्या चमनी को बझबौ, कतनी बार मरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

दौड़ा-दौड़ मचाता सावा,
मंदरा-मंदरा तपता आवा,
काची मटकी बेच ठगोरी, कितना बार मरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

जे मांगै मीठी मनव्हारां,
नैणां मद की धारा,
बेसोरम बण-बण केसूलौ, कतनी बार मरूं?
म्हूं कतनी बार मरूं?

काजळी तीज

भोळी बाईसा का प्यारा बीर, तीज पै मत आज्यौ।
खण लिया छै काजळी तीज, तीज पै मत आज्यौ,
सायब मत आज्यौ।

म्हनैं याद छै हंदळोटा घलग्या
गीतां का बांध बलम खुलग्या
उर उळझी सतरंग डोर
पणघटां लटका कर रिया मोर
मिटी नैए पण माता की पीड़

खींचरयौ उत्तर में कोई चीर,
हिंवाळौ खाली करवाज्यौ, सायब मत आज्यौ।

धरती नैं चीर धानी ओढ्यौ
मेहो म्हारा आंगण ई धोग्यौ
म्हूं सुणरी मेघ मल्हार
हाय! पण दमना सब सणगार
चाटरयौ हरियाळी बारूद
माय को मती लजाज्यौ दूध,
स्वाग को चुड़लौ उजळाज्यौ, सायब मत आज्यौ।

गजरा में याद हथकड़्यां की
बींदी में ठेस बरद्दड़्यां की
केई हंस-हंस जीके हेज
छोडग्या जनवासा की सेज
खुगाळी में फांसी की याद
हे म्हारा भगतसिंह आजाद,
शहीदां की गेल्यां जाज्यौ, सायब मत आज्यौ।

आजादी का सरदार सजग
सीमां का पहरादार अडग
नभ नीड़ै परबत शिखरां पै
म्हारा कंवळ बरफ की डगरां पै
म्हनैं छोड्या सारा चैन
गैल में बैठी बछा'र नैन,
पाग को मान बचा लाज्यौ, सायब मत आज्यौ।
भोळी बाईसा का प्यारा बीर, तीज पै मत आज्यौ।
खण लिया छै काजळी तीज, तीज पै मत आज्यौ,
सायब मत आज्यौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ढोबौ=ढोणौ। बझबौ=बुझणौ, निंदीजणौ। बेसोरम=गंधहीण, सोरमविहूणौ। केसूलौ फूल=केसरिया पण गंधहीण फूल, रोहिड़ै रौ फूल। चौफेरूं=च्यारूं पासी। मनव्हारां=मनवारां। खण=प्रण, प्रतिग्या। साहब=पिव, धणी। उर=काळजौ, हिवड़ौ। चीर=वस्त्र, ओढणौ। हिंवाळौ=हेमाळौ, हिमालय। मल्हार=संगीत री अेक बिरखा-राग। सणगार=शृंगार। स्वाग=सुहाग। चुड़ला=सुहाग रौ चूड़ौ। गेल्यां=मारग, रस्तै। कंवळ=कमल, सीस कुंवर। अडग=अडिग। जाज्यौ=जावौ। सावा=ब्यांव आद रौ सावौ। आवा=माटी रा भांडा नैं पकावण सारू आंच।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'कतनी बार मरूं' कविता किण कविता-संग्रै सूं लिरीजी है ?

(अ) हरबोला (ब) घूघरा

(स) म्हारौ गांव (द) फूल केसूला फूल

( )

2. 'काजळी तीज' कविता किण कविता-पोथी सूं लिरीजी है ?

(अ) अणबांच्या आखर (ब) क्यूं म्हां पढां

(स) रंग अर सौरम (द) गद्य-गीत

( )

3. 'काजळी तीज' कविता किण रस री रचना है ?

(अ) वीर (ब) वात्सल्य

(स) हास्य (द) सिणगार

( )

4. रघुराजसिंह हाड़ा रौ जलम कद होयौ ?

(अ) 21 नवंबर 1943 (ब) 25 अप्रेल 1933

(स) 31 मार्च 1933 (द) 25 दिसंबर 1943

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रघुराजसिंह हाड़ा री दो काव्य-कृतियां रा नांव बतावौ।
2. 'काजळी तीज' कविता में कुणसौ देस भारत माथै आक्रमण करै ?
3. देस री हरियाळी कुण चाट रैयौ है ?
4. कवि जगत रौ किसौ सुभाव बतायौ है ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'कतनी बार मरूं' कविता री सीख कांई संदेस देवै ?
2. 'केसूला फूल' रै पाण कवि कांई कैवणौ चावै ?
3. 'काजळी तीज' कविता देस रै मोट्यारां नैं कांई संदेसौ देवै ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'कतनी बार मरूं' कविता रौ मूळ भाव लिखौ।
2. रघुराजसिंह हाड़ा री काव्य-सैली री विसेसतावां दाखला देयनै बतावौ।
3. 'काजळी तीज' कविता रै मांय कवि रै मूळ भाव नैं आज रै संदर्भ में समझावौ।

नीचै दिरीज्या काव्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. दौड़ा-दौड़ मचाता सावा,
   मंदरा-मंदरा तपता आवा,
   काची मटकी बेच ठगोरी, कितना बार मरूं?
   म्हूं कतनी बार मरूं?

2. गजरा में याद हथकड़्यां की
   बींदी में ठेस बरद्दड़्यां की
   केई हंस-हंस जीके हेज
   छोडग्या जनवासा की सेज
   खुगाळी में फांसी की याद
   हे म्हारा भगतसिंह आजाद,
   शहीदां की गेल्यां जाज्यौ, सायब मत आज्यौ।

❑कविता

भासा सूं अरदास / ओळबौ

चंद्रप्रकाश देवल

कवि परिचै

आधुनिक राजस्थानी कविता रा ख्यातनांव कवि चंद्रप्रकाश देवल रौ जलम 14 अगस्त, 1949 नै उदयपुर जिलै रै गोटीपा गांव में होयौ। टाबरपणै सूं ई सिरजण में आपरी रुचि रैयी। 'पागी', 'कावड़', 'मारग', 'तोपनामा', 'राग-विजोग', 'झुरावौ', 'उडीक पुरांण' अर 'तीजौ अयन' आपरा चरचित कविता-संग्रै है। कविता रचण रै सागै आपरौ संपादन-कौसल ई सरावण जोग है। श्री देवल 'वंश भास्कर' रौ नौ भागां में बेजोड़ संपादन करयौ। फ्योदोर दोस्तोयेवस्की रै उपन्यास 'क्राइम एंड पनिशमेंट' अर सैम्युअल बैकेट रै नाटक 'वेटिंग फोर गोडो', कविता पोथ्यां 'अकाल में सारस' (हिंदी) 'जटायु' (गुजराती), 'कहीं नहीं वहीं' (हिन्दी), 'शब्देर आकाश' अर 'श्री राधा' (उड़िया), 'न धुप्पे ना छांवै' (पंजाबी), 'जाते दुरई जाई' (बांग्ला) समेत केई पोथ्यां रौ राजस्थानी में उल्थौ करयौ। आप साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रै राजस्थानी परामर्श मंडळ रा संयोजक रैया।

कवि चंद्रप्रकाश देवल नैं भारत सरकार 'पद्मश्री' अलंकरण सूं सम्मानित करयौ। साहित्य अकादेमी, दिल्ली रौ 'राजस्थानी पुरस्कार' अर 'राजस्थानी अनुवाद पुरस्कार', राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर रौ 'मीरां पुरस्कार', राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रौ 'सूर्यमल्ल मीसण शिखर पुरस्कार', राजस्थानी अकादमी, दिल्ली रौ 'लखोटिया पुरस्कार' अर के. के. बिड़ला फाउंडेशन रौ 'बिहारी पुरस्कार' ई आपनै मिळ्यौ।

पाठ परिचै

कवि चंद्रप्रकाश देवल री पोथी 'तोपनामा' मांय मिनख री आवगी जीवाजूण रौ म्यानौ परगळाई सूं निजर पसार देखीजै। नूंवी दीठ, नूंवी सोच, इधका बिंब साथै कैवण री कूंत साव निकेवळी लखावै। पोथी री सगळी कवितावां अेक सूं अेक सवाई अर अरथबोध में पूरसल संवेदना जगावण वाळी, भावां रा सागर में ऊंडै तळ तांई गोता लगावण वास्तै पाठकां नैं बांधण वाळी है। आं सजोरी कवितावां मांय सूं दो कवितावां इण पाठ में राखीजी है— *'भासा सूं अरदास'* अर *'ओळबौ'*।

आं दोनूं कवितावां रौ आधार अेक पण भाव न्यारा है। आखर रा रूप, भेद अर उणरै मांयली तासीर नैं समझण वाळा कवि चंद्रप्रकाश देवल लिखै कै केई आखर औगणगारा, केई बादीला, नखराळा, खुरदरा अर सुंवांळा होवै। केई आकरा तौ केई अंटाळा। आखरां में इत्तौ भेद! बात कैवण रौ आपौ-आपरौ न्यारौ-न्यारौ ढाळौ व्है सकै। कैवत है कै बोली में विस अर इमरत दोनूं व्है। आपरै वास्तै गुणचोर वाळा बोल औगणगारा, बात नीं मानण वाळा बादीला, जिणां में मान-मनवार, संयोग सिणगार रौ वरणाव व्है वै नखराळा अर वियोग सिणगार में पीड़ देवण वाळा कै चुभण वाळा बोल खुरदरा व्है सकै। मन नैं सुख अर संतोख देवण वाळी बातां रौ वरणाव सुवांळा आखरां में व्है सकै। करड़ौ साच, जिणमें रीस है, किणी रौ वाचौ या प्रण है, वै आकरा आखर हिया नैं बींधण वाळा, केई ताना वाळा डोढा बोल व्यंग्य बाण, जिकां नैं मिनख जीवै जठै लग नीं भूलै। कवि नैं आपरी भासा सूं हेत अर अपणास है, इण कारण वै

आं सगळा बोलां नैं आपरा अंतस में राख उणां रौ माण राखै। कवि आपरी भासा रा सगळा आखरां सूं झोळी भर भासा नैं सिमरथ करणी चावै। कवि रै अंतस में साचै अरथां में भासा री चीरफाड़ करनै मरम जाणण वाळौ अेक भासा वैग्यानिक बैठौ है, जिकौ रोहिड़ा रा फूलां में सुगंध भरण री खिमता राखै। सबदां रा कारीगर कवि गुणबायरा अर फिजूल सबदां नैं ई अरथवान बणावण री उडीक में है। आप भासा सूं अरदास करै कै दया करनै म्हारा अधूरा अंतस में वास तौ कर। बिना भासा रै मिनख जाणै आधौ अधूरौ है। भासा ऊंकार रौ रूप अर ऊंकार ब्रह्म है। ब्रह्म ई जीव है तौ भासा नैं अंगेजियां अर केवटियां इज मुगती है।

दूजी कविता *'ओळबौ'* में कवि आपरी पैलड़ी पीढी नैं ओळबौ देवै, जिकां मायड़ भासा री अंवेर नीं करी, उणरी रिछ्या नीं करी। कवि मुजब औ इज कारण रैयौ है कै मायड़ भासा री जिकी ठौड़ होवणी चाईजती, वा आज कोनी। कवि रा बोल काळजै लागै जैड़ा है। सांस अर बोली रौ गैरौ सगपण है। सांस रै साथै ई बोली रा बोल निकळै। मायड़ भासा नैं बोलतां जिण सुख रौ लखाव होवणौ चाईजै, उण ठौड़ अेक दुख होवै। मां रा परस सूं डील में गिलगिली अर हियौ हुलसै पण उणरी ठौड़ अेक सूळ चुभनै नासूर रौ रूप लेय लेवै— वा पीड़, वौ दरद सैन कोनी करीजै। कवि आपरी देह रै कजी लागण री बात करै कै रोग में टसकणौ अर पांगळौ व्हियां पछै ठिरड़ीजणौ तौ सोरौ पण बिना आपरा बोलां रै, भासा रै जीवणौ घणौ दोरौ। कवि कैवै कै म्हैं लाख कोसिस करूं, रोवूं-कळपूं पण उणां बडेरां नैं ओळबौ ई किणमें देवू, क्यूंकै म्हारै कनै उणां री भासा कोनी रैयी। बात कैवण री आंट कवि चंद्रप्रकाश देवल री काव्य-खिमता नैं दरसावै। बिना आपरी मायड़ भासा रै मिनख मेहण्यां देवै। उकळतौ तेल बाळै ज्यूं वै बोल काळजौ बाळै। पन्ना धाय वाळौ जमानौ अबै कोनी। दूजी भासा नैं जींवती राखण वास्तै, सिमरथ करण वास्तै म्हारी मायड़ भासा आपौ गमाय दियौ। आज आछां अर साचां रौ जमानौ कोनी। सामधरमियां री पूछ कोनी, भलौ करणवाळा मूरख गिणीजै। आपरी भासा नैं नूंवै सीगै सूं अंवेरण री खेचळ आं दोनूं कवितावां में सुभट निजर आवै। 'अरदास' अर 'ओळबौ' कैवण रा न्यारा रूप, पण जनमानस जिण रूप में समझ सकै, उणनैं आपरौ आपौ निजर आवैला। भासा जीवण रै वास्तै, विचारां रै प्रगटीजण वास्तै, खुद नैं खुद री ओळखाण करावण वास्तै कित्ती जरूरी है। उणरी रुखाळी कीकर व्है सकै? कवि री अरदास, भासा रै वास्तै आपरौ हेज अर मिटती भासा रै वास्तै जिकी पीड़ है वा हरेक मानवी री पीड़ होवणी चाईजै। मायड़ भासा बिना कैड़ी ओळखाण अर कैड़ौ जीवण? कवितावां री अेक-अेक ओळी मरम परसी है। वा ऊंडी पीड़ अंतस में चेतना जगावती दीखै।

भासा सूं अरदास

जाणूं घणौ ई म्हैं
व्है केई सबद
अणूता ओगणगारा
केई व्है वां सूं न्यारा
केई बादीला
केई नखराळा
केई खुरदरा
केई सुंवांळा
केई अणूता आकरा
हियौ तोड़ लै अैड़ा अंटाळा
म्हारी आंख्यां री सौगन

झेलूंला अेकूका नै आपरी पलकां री झोळी
जिणसूं अरथवांन व्है म्हारी बोली।
व्है केई गुणबायरा-फिजूल
रंग राता रोहिड़ा रा फूल
व्है तौ व्है अैड़ी तासीर वाळा
पण आवण रा मता सूं
अेकर म्हारी कांनी मूंडौ तौ करै!
उडीकतौ थारी दयावती
ऊभौ थारै कोळै
म्हारी भासा!
अेकर तौ रैवास कर
म्हारै ई अधवीठै अंतस
म्हैं पूरण व्है जावूं
मरयां मुगातर पावूं।

ओळबौ

म्हारी पांसळी
थारै हेज री सूळ खुबै, मां
अर गिलगिली री ठौड़
अेक पीळा जरद, दरद रौ पसराव
म्हैं परसेवै घांण।
बोलूं तौ किण आसरै
बडाउवां भासा गुमाय दी।
लेहणौ छोडग्या व्हैता तौ थुड़तौ दिन-रात
बणती आफळ उतार देवतौ
मांदौ छोडग्या व्हैता
तौ ई टसक-टसक जीव लेवतौ
छोड जावता पांगळौ
तौ ठिरड़ आपरौ गात, हर जठै पूग जावतौ।
कांन देय साबूत, बोल गुमायगा
दीसता-दासता फूठरा नै दागल कैवायग्या।
अबै वांनै डाडतौ
घणी ई आफळ करूं
पण ओळबौ नीं दिरीजै
आज चलण री भासा वै समझैला कोनी

अर म्हारै पाखती वांरी भासा रही कोनी।
मेहण्यां ई मेहण्यां सुणीजै
चारूं दिस
ताता तेल री छांट ज्यूं उफसावै काळजौ फाला।
आपरौ पूत मराय
जांणै धाय-मां जीवायौ परायौ वंस
अैड़ा जीव आज रै जमारै
लाख सांमखोर पण गिणीजै काला!
⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ओगणगारा =औगुणां वाळा, अवगुणां रा घर। क वरग, च वरग, ट वरग, त अर प वरग बिलटी रा आखरां रा मेळ सूं बोलीजै पण कहीजै वै स्पर्श आखर (स्वर रौ औगण) क्रतघन।

बादीला =आपरौ स्वभाव या बात नैं पकड़ण वाळा (जिद्दी)। वरण या आखरां रै उच्चारण री न्यारी-न्यारी ठौड़ है— कंठ दंती, ओष्ठ, तालव्य, मूर्धन्य, उच्चारण स्थान नीं बदळै, इण रूप में बादीला।

नखराळा =भाव-भंगिमा वाळा। हरेक वरग रा लारला तीन आखर (ग घ ड़....) अंतस्थ है, जिणमें उच्चारण री बगत झणकार होवै अर भाव-भंगिमा, हाव-भाव वाळा सबदां सूं ई मन री वीणा रा तार झणझणाट करै।

खुरदरा =दरदरा, कीं चुभणवाळा। श, ष, स, ह रै उच्चारण सूं कंठ में खाज-सी आवै, गुदगुदी होवै, इण रूप में खुरदरा आखर।

सुंवांळा =नरम, कंवळा, मनभावणा। हरेक वरग रा दूजा आखर रै सिवाय सारा आखर अंतस्थ अत्यप्राण है, जिण में मिनख री संचित ऊर्जा खरच नीं होवै अर्थात आराम देवण वाळा आखर।

आकरा =करड़ा, खारा। हरेक वरग रौ पैलौ-दूजौ आखर अर श, ष, ह अै अघोस या आकरा आखर गिणीजै, जिणां रै उच्चारण में खरखराट होवै।

अंटाळा =व्यंग्योक्ति वाळा या कैवण रै न्यारै ढंग ढाळै वाळा। अनुनासिक वरणां नैं अठै अंटाळा कैय सकां, जिणमें सांस नैं नाक सूं निकाळणी पड़ै। उच्चारण रै बगत आपरी न्यारी आंट वाळा।

रोहिड़ै रा फूल=रूपाळा पण गुणहीण, देखावू। तासीर=आदत, प्रवृत्ति। दयावती=करुणा, दया, मेहरबानी। कोळै ऊभौ=बारणै रै कंवळै कनै खड़्यौ। अधवींठै=अधूरौ, अपूरण। मुगातर=मुगती, मोक्ष। पांसळी=पसळियां। सूळ=कांटौ, बडौ कांटौ। पीळौ जरद= पीळौपट्ट, मवाद वाळौ नासूर, जूनौ घाव। परसेवै घांण=पीसना सूं लथपथ। बडाउवां=बडेरा, पूर्वज। गुमायदी=गवां दी, खोय दी। लेहणौ=करजौ। थुड़तौ=आफळतौ, कोसिस करतौ। ठिरड़तौ=घसीटतौ। गात=सरीर, डील। मांदौ=बिमार। पांगळौ=पगां सूं लाचार। दागल=दागदार, कळंकित। डाडतौ=जोर सूं रोवतौ, अरड़ावतौ। मेहण्यां=ताना, मेहणां। ओळबौ=सिकायत, उपालंभ। उफसावै=फुलावै। फाला=फोड़ा, पाणी सूं भरयोड़ौ दुखणियौ। धाय मां=मां टाळ दूध चूंघावण वाळी, पाळपोख करण वाळी। सांमखोर=स्वामिभक्त, देसभक्त।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'भासा सूं अरदास' कविता कवि चंद्रप्रकाश देवल री कविता-पोथी सूं लिरीजी है—

   (अ) पागी (ब) कावड़

   (स) तोपनामा (द) तीजौ अयन

   ( )

2. 'ओळबौ' कविता में कवि किणनैं ओळबौ दियौ है ?

   (अ) धाय-मां नैं (ब) भासा नैं

   (स) कविता नैं (द) बडेरां नैं

   ( )

3. चंद्रप्रकाश देवल नैं भारत सरकार सूं सम्मान मिळ्यौ—

   (अ) पद्म भूषण (ब) पद्मश्री

   (स) राजस्थान-रत्न (द) भारत-रत्न

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि चंद्रप्रकाश देवल रौ जलम कद अर कठै होयौ ?
2. चंद्रप्रकाश देवल री दोय पोथ्यां रा नांव लिखौ।
3. चंद्रप्रकाश देवल आपरी कविता में किणसूं अरदास करै अर क्यूं ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि चंद्रप्रकाश देवल आपरी कविता में किण तरै रै सबदां री बात करै ?
2. चंद्रप्रकाश देवल किण-किण रचनावां रा राजस्थानी उल्था कर्‍या ? नांव लिखौ।
3. 'ओळबौ' कविता में कवि पन्ना धाय री बात क्यूं करै ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि चंद्रप्रकाश देवल रै जीवण-परिचै अर सिरजण री साख रौ दाखला देयनै वरणाव करौ।
2. आपरी मायड़ भासा सारू कवि चंद्रप्रकाश देवल रै मन में कांई पीड़ है ? दाखलां समेत समझावौ।
3. 'भासा सूं अरदास' कविता रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।

नीचै दिरीज्या काव्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. जाणूं घणौ ई म्हैं
   व्है केई सबद
   अणूता ओगणगारा
   केई व्है वां सूं न्यारा

केई बादीला
केई नखराळा
केई खुरदरा
केई सुंवांळा
केई अणूता आकरा
हियौ तोड़ लै अैड़ा अंटाळा

2. उडीकतौ थारी दयावती
ऊभौ थारै कोळै
म्हारी भासा!
अेकर तौ रैवास कर
म्हारै ई अधवीठै अंतस
म्हैं पूरण व्है जावूं
मरयां मुगातर पावूं।

3. बोलूं तौ किण आसरै
बडाउवां भासा गुमाय दी।
लेहणौ छोडग्या व्हैता तौ थुड़तौ दिन-रात
बणती आफळ उतार देवतौ
मांदौ छोडग्या व्हैता
तौ ई टसक-टसक जीव लेवतौ
छोड जावता पांगळौ
तौ ठिरड़ आपरौ गात, हर जठै पूग जावतौ।
कांन देय साबूत, बोल गुमायगा
दीसता-दासता फूठरा नै दागल कैवायग्या।

❑कविता

टूटी ओदणिये / अेक वाटली आटा नु हगु

डॉ. ज्योतिपुंज

कवि परिचै

डॉ. ज्योतिपुंज (जयप्रकाश पंड्या) रौ जलम 28 सितंबर, 1952 नै डूंगरपुर जिलै रै टामटिया गांव मांय होयौ। आपरा पिता स्व. घनश्याम शर्मा स्वतंत्रता सेनानी हा। भणाई में आप संस्कृत, इतिहास अर राजस्थानी में अेम.अे. करी। अेम.अे. राजस्थानी में स्वर्ण पदक विजेता पण रैया। आप बी.अेड., पत्रकारिता मांय स्नातकोत्तर डिप्लोमौ, साहित्य-रत्न अर पीअेच.डी. ई करी। अेक बरस अध्यापन रौ काम करयां पछै 1977 सूं आकाशवाणी मांय प्रसारण अधिशाषी, 1987 सूं 1991 तांई भारत सरकार रा क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी (प्रतिनियुक्ति) अर 1991 सूं सेवानिवृत्ति तांई आकाशवाणी मांय कार्यक्रम अधिशाषी रै पद माथै काम करयौ। अबार आप स्वतंत्र लेखन करै।

आपरी पैली राजस्थानी कविता पोथी 'चन्नण ना छांटा' घणी चावी हुयी। 'बोल डूंगरी ढब ढबुक' कविता संग्रै माथै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रौ सूर्यमल्ल मीसण सिखर पुरस्कार (1993) अर आपरा नाटक 'कंकू कबंध' माथै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ पुरस्कार (2000) मिळ्यौ। आपनैं महाराणा मेवाड़ फाउंडेसन रौ 'महाराणा कुंभा अवार्ड' अर 'संबोधन' मासिक पत्रिका रौ 'निरंजन नाथ आचार्य पुरस्कार' पण मिळ चुक्या है। आप राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर री कार्यसमिति अर साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली री सलाहकार-समिति रा सदस्य रैय चुक्या है। आप दिखणादै राजस्थान रै आदिवासी अंचल (वागड़) री भासा-साहित्य अर संस्कृति री खूब सेवा करी अर राजस्थानी आंदोलन मांय सक्रिय भूमिका अदा करी है। आपरी राजस्थानी अर हिंदी मांय मोकळी पोथ्यां छप चुकी है। गद्य अर पद्य दोनूं विधावां में सिरजण रै साथै-साथै आप अनुवाद पेटै ई सांतरौ काम करयौ है। आप उदैपुर री चावी साहित्यिक संस्था 'युगधारा' अर उणरी साखा 'राजस्थानी जाजम' री थरपणा करण वाळा साहित्यकार है।

पाठ परिचै

बोलियां किणी भासा री सिमरिधी री निसाणी होया करै। बीजा सबदां मांय कैय सकां कै बोलियां रौ समूह ई भासा होवै। अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, ब्रज, बांगरू, खड़ी, कन्नौजी, बुंदेली, मैथिली आद बोलियां हिंदी रौ रुतबौ बधावै तौ मेवाती, मेवाड़ी, मालवी, मारवाड़ी, हाड़ोती, ढूंढाड़ी अर वागड़ी राजस्थानी नैं राती-माती करै। डूंगरपुर, बांसवाड़ा अनै उदैपुर जिलै रै वागड़ खेत्र री बोली वागड़ी। डॉ. ज्योतिपुंज वागड़ी बोली री महक सूं राजस्थानी साहित्य नैं रातौ-मातौ करणवाळा कवि है। आंरी कवितावां में वागड़ अंचल री ठेठ सबदावळी रा ठाठ देख्या जाय सकै। आं कवितावां रै मारफत पढेसरी वागड़ अंचल में प्रचलित 'वागड़ी' बोली अर उणरै साहित्य री बानगी देख सकैला।

'टूटी ओदणिये' सिरैनांव री पैली कविता में कवि आदिवासी जनजीवण रौ जीवंत वरणन करयौ है। अेक मिनख री दुखदेणी दिनचर्या अर उणरै मांयली दोघाचींती नैं कवि घणै मरमपरसी ढंग सूं प्रगट कीनी है। सूरज वीं रै घर रौ छप्पर फाड़नै च्यानणौ न्हाखै। दूजी कानी वौ टूटी खाट री अदावण बांधतौ-बांधतौ घबरावण लागै, क्यूंकै पैलै दिन आथण कोई बेईमान हवा जोरां सूं उणनैं खाटली माथै पटक गी अर अदावण टूटगी। वौ बार-बार बांधै अर फेर वौ ई हाल। वौ कैवै— रोज चढती रात रा पास वाळै बाड़ै मांय ऊग्यै मोगरै री कळियां उघड़वा लागै अर उणरी

मस्तानी सुगंध बाड़ माथै चढनै म्हनै झालौ देवै अर म्हैं डरतौ-डरतौ धीरै-सीक थोड़ौ किंवाड़ उघाडूं, जाऊं, पाछौ आवूं अर हिम्मत करनै बाड़ माथै चढनै फूल तोड़वा इज लागूं कै कूकड़ौ बोल जावै अर म्हैं धीरै-सीक छानै-छानै टूटी अदावण वाळी खाटली मांय डूब ज्याऊं अर फाटी धोती ओढनै सोय जावूं।

इण कविता मांय टूटी अदावण मेहनतकस मिनख री बदहाली रौ, तौ सूरज नूंवै जुग रै नूंवै ग्यान रौ अर मोगरै री महक खुसियां रौ प्रतीक है। कवि रौ आसय है कै सूरज रौ प्रकास अर मोगरै री महक मेहनतकस मिनख रै पांती नीं आवै। खून-पसीनौ बहावण रै उपरांत ई उणरै पांती तौ टूटी अदावण वाळी खाटली इज आवै। वौ सोसकां री बेईमानी रौ इतरौ सिकार है कै रोजी-रोटी रै जुगाड़ में पचतो रैवै, पण उणरी खाटली री अदावण ढीली री ढीली रैय जावै।

दूजी कविता *'अेक वाटली आटा नु हगु'* सिरैनांव सूं है। अेक मंगतै रै मारफत कवि अठै भूख नैं बखाणी है। कवि री संवेदना कठै-कठै जायनै ठैरै, इणरौ उथळौ इण कविता सूं सोध्यौ जाय सकै। कवि अठै आपणै देस री सांस्कृतिक मरजादावां नैं, संस्कृति री अंतरधारावां नैं अर सामाजिक जागरण नैं आपरै पेट सूं जोड़ता थकां विकसित करण रौ जतन कर्‌यौ है। रोज दिनुगै भींत माथै टंग्योड़ौ तंबूरौ उतरै अर आपरी बदनसीबी रौ गान घर-घर करै अर बजावण वाळै नैं दिरवा देवै आंतड़ियां री खुराक अेक बाटकी आटौ। कबीर रा निर्गुणी भजन सगुणा जावै अर गावणवाळै रै गळै अर सुणन वाळै रै कानां मांय दोनां जणां रै बीच बंधवाय जावै अेक बाटकी आटै रौ रिस्तौ। कवि कैवै कै बजार री भीड़ नीं आवै इणरै बहकावै मांय अर भीड़ रा मुखौटा धरती माथै जगां सोधवा मांय आंधा, बोळा अर गूंगा होयग्या है अर पग सूजनै किणी भविस री जलम-पत्रिकावां बणा रैया है। तद तंबूरौ कैवै कै अबार औ जीवण बिजळी रौ पंखो, कै बिजळी रौ रेडियौ, टेलिविजन कै चक्की बणग्यौ है। कोई पारकै करंट सूं जुड़्योड़ौ, बटण दबावै तौ चालू अर अेक बटण दब जावै तौ बंद। अेक बाटकी आटौ कै पांच पइसां रौ सवाल है।

आ कविता दुनिया में बधती यांत्रिकता अर खूटती रागात्मकता कानी सानी करै। तम्बूरै रौ गान जिकौ हरेक मिनख सूं दिलां रौ रिस्तौ जोड़तौ, आज फगत अेक बाटकी आटौ मांगण रौ संज मात्र रैयग्यौ है। इण दीठ सूं लोग आंधा, बोळा अर गूंगा होयग्या है। लोगां रै चैरां री ठौड़ मुखौटा उग आया है। प्रगति री दिसा में बधता पग सूजग्या है। अैड़ै में भविस कैड़ोक होवैलौ, आ बात सांप्रत दीख रैयी है। तंबूरै री पीड़ है कै दिलां रा तार बिखरग्या। जीवण किणी परायै तारां सूं अर इंसानी संबंध फगत पईसै सूं जुड़ग्या है।

टूटी ओदणिये

हूरज मारै घर ना
थापणा फोड़ी
मएं एरं नाकवा मांड्यौ है
नै मुं ?
मुं मारै अंदारा अवा मएं
खाटला नी टूटी ओदणिये
बांदतौ-बांदतौ
घबरावा मांड्यौ हूं
केम के कालै हांज नी
बईमान हवा
जोराइये मनै दाबी नै
खाटला ऊपर नाकी गई

नै ओदणिये तुड़ी गई
अबे मुं फिरी बांदु
त'फिरी कुणेक.... ?
दाड़ी सड़ती रातरै
पाय वारा वाड़ा मएं
उग्या मोगरा री करियै
उगड़वा मांडै
नै एनी मस्तानी सुगंध
लोड़ मातै सड़ी
ऊपरवाड़ी करी
मनै ईसारौ करे
नै मुं
बीतौ-बीतौ
धीऽऽऽरै रई नै
कमाड़ उगाड़ूं / थुड़ोक
जऊं / पासौ आवूं
पासौ जऊं
हिम्मत करी
लोड़ मातै सड़ी
फुलू तुड़वास् जऊं / कै
कूकड़ू बोली जाए
नै मुं पासौ
धीऽऽऽरै रई नै
सानै-सानै
टूटी ओदणिये वारा
खाटला मएं
गदी जऊं नै
फाटी धोती ओड़ी नै
हुई जऊं।

अेक वाटली आटा नु हगु

रोज हवारै
भेत मातै टंगेलौ तंबूरौ उतरै
नै एना बदनसीबी नु गान
घेरै-घेरै करै
नै बजाड़वा वारा नै
अलावौ दै, आंतड़ियं नी खौराक
अेक वाटली आटौ।

कबीर नं निर्गुणी भजन
सगुणाई जएं गावा वारा नै गरा मएं
हाम्बरवा वारा ना कान मएं
नै बे नै बेसै
बंदाई जाय अेक वाटली आटा नौ रिस्तौ।
बजारी भीड़
नती आवती एना बकाब्वा मएं
भीड़ न मुडं
धरती मातै जगा हौदवा मएं
बांदर बैरं नै बोबडं थई ग्यं हैं
नै पोग हूंजी नै
कइयाक भविष्य नी
जन्मपत्रिए बणावीरया है
तोय तंबूरौ कैय कै—
''अवै त'आ जीवणी
विजरी नौ बैजणौ
के विजरी नौ रेडियौ, टेलीविजन
कै सक्की बणीग्यू है
कौणेक पारका करंट मएं
जोडायलु
बटन दबाते त'सालू
नै अेक बटण दबी जाय
त'बंद....
अेक वाटली आटौ
कै पांस पइसं नौ सवाल।''

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ओदणिये=दावण, अदवायण, खाट रै पगाणै कानी री जेवड़ी। हूरज=सूरज। मारे=म्हारै। ना=रा। थापणा=छप्पर, केलू, खपरेल। फोड़ी=फाड़नै। मएं=मांय। एरं=प्रकास। नाकवा मांड्यो=नाखवा लाग्यो। ने=अनै। मुं=म्हूं, म्हैं। अंदारा=अंधारा। अवा=कोठड़ियै। खाटला=मांचली। नी=री। बांदतौ=बांधतौ। मांड्यौ=लाग्यौ। केम के=क्यूंकै। हांज=सांझ। जोराइये=जबरदस्ती, माडाणी, धिंगाणै। दाबी नै=दबायनै। फिरी=भळै। त'फिरी=तौ भळै। कुणेक=कोई आयनै। दाड़ी=डैली, रोजीना। सड़ती=चढती। रातरे=रात नै। पाय वारा=पास वाळा। वाड़ा मएं=बाड़ै मांय। करिये=कळियां। उगड़वा मांडै=उघड़वा लागै। एनी=इणरी। लोड़=बाड़। मातै=माथै। सड़ी=चढी, चढनै। ऊपरवाड़ी करी=अतिक्रमण करै, ऊपर सूं होयनै घर रै मांय कानी आवै। मनै ईसारौ करै=म्हनै झालौ देवै। बीतौ=भयतौ, घबरावतौ। धीऽऽऽरे रई नै=चुप रैयनै। कमाड़=किवाड़। उगाडूं=उघाडूं। थुड़ोक=थोड़ौक। जऊं=जाऊं। पासौ=पाछौ। तुड़वा=तोड़वा सारू। सानै–सानै=छानै–छानै। वारा=वाळा। गदी जऊं=गड़ जाऊं, डूब जाऊं। ओड़ी नै=ओढनै। हुई जऊं=सोय जाऊं। वाटली=बाटकी। नु=रो। हगु=सगौ, संबंध, सगपण, रिस्तौ। हवारै=संवारै, परभातै। भेत=भींत। टंगेलौ=टंग्योड़ौ।

तंबूरौ=अेक भांत रौ बाजौ। एना=इणरी, आपरी। घेरै-घेरै=घर-घर। अलावौ दै=दिलवाय देवै। आंतड़ियं नी खौराक=आंतड़ियां री खुराक। नं=रा। सगुणाई जएं=सगुण होय जावै। गरा=गळा। हाम्बरवा=साम्भळवा, सुणवा। बे नै=दोनां रै। बेसै=बीचै, बीचाळै। बंदाई जाय=बंधवाय जावै। नती आवती=नहीं आवै, कोनी आवै। बकाब्बा मएं=बहकावै मांय। मुडं=मुखौटा। हौदवा=सोधवा, खोजवा, ढूंढवा। बांदर=आंधा। बैरं=बहरा। बोबडं=बबड़ी, गूंगा। थई ग्यं=होयग्या। पोग=पग। हूंजी नै=सूजनै। कइयाक=किणी। जन्मपत्रिए=जलम पत्रिकावां। बणावीर्या=बणाय रैया। अवे त'आ जीवणी=अब तो ओ जीवण। विजरी=बिजळी। बैजणो=बीजणो, पंखो। कै=या। सक्की=चक्की। कौणेक=कोई अेक। पारका=पराया। जोड़ायलु=जुड़्योड़ौ। सालू=चालू।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. डॉ. ज्योतिपुंज री राजस्थानी में पैली पोथी है—
   (अ) बोल डूंगरी ढब ढबूक (ब) कंकू कबंध
   (स) चन्नण ना छांटा (द) टगलै-टगलै विज्ञान
   ( )

2. डॉ. ज्योतिपुंज राजस्थानी री जिण बोली में लिखै, वा है—
   (अ) मालवी (ब) हाड़ोती
   (स) मेवाती (द) वागड़ी
   ( )

3. 'टूटी ओदणिये' कविता में टूटी अदावण प्रतीक है—
   (अ) गरीबी रौ (ब) ग्यान रौ
   (स) मेहनत रौ (द) बदहाली रौ
   ( )

4. आज रै मिनख रा संबंध जुड़ग्या है—
   (अ) बिजळी रै तार सूं (ब) पईसां सूं
   (स) दिलां सूं (द) परिवार सूं
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. डॉ. ज्योतिपुंज रौ जलम कठै होयौ?
2. डॉ. ज्योतिपुंज नैं कुणसी पोथी माथै साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिळ्यौ?
3. 'टूटी ओदणिये' कविता मांय कवि किण जीवण रो जीवंत वरणन कीधौ है?
4. 'अेक वाटली आटा नु हगु' कविता मांय कवि किणरै मारफत भूख नैं बखाणी है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा री खास-खास बोलियां कुण-कुणसी है?
2. 'वागड़ी' किण खेत्र री बोली है?
3. कविता रौ नायक खाटली री टूटी ओदणिये बांदतौ-बांदतौ घबरावा क्यूं लाग्यौ है?
4. 'टूटी ओदणिये' कविता रौ नायक फूल तोड़वा जावै तौ कांई होय जावै?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''डॉ. ज्योतिपुंज री कवितावां में वागड़ अंचल री ठेठ सबदावळी रा ठाठ देख्या जाय सकै।'' पठित कवितावां रै आधार माथै खुलासौ करौ।
2. 'टूटी ओदणिये' कविता री भाव-संवेदना आपरै सबदां में लिखौ।
3. 'अेक वाटली आटा नु हगु' कविता में कवि कांई संदेस देवणो चावै? खुलासौ करौ।
4. भाव अर कला पख री दीठ सूं डॉ. ज्योतिपुंज री काव्य कला री परख करौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंग समेत व्याख्या करौ।

1. दाड़ी सड़ती रातरै
   पाय वारा वाड़ा मएं
   उग्या मोगरा री करियै
   उगड़वा मांडै
   नै एनी मस्तानी सुगंध
   लोड़ मातै सड़ी
   ऊपरवाड़ी करी
   मनै ईसारौ करे
   नै मुं
   बीतौ-बीतौ
   धीऽऽऽरै रई नै
   कमाड़ उगाडूं / थुड़ोक
   जऊं / पासौ आवूं
   पासौ जऊं

2. तोय तंबूरौ कैय कै—
   ''अवै त'आ जीवणी
   विजरी नौ बैजणौ
   के विजरी नौ रेडियौ, टेलीविजन
   कै सक्की बणीग्यू है
   कौणेक पारका करंट मएं
   जोडायलु
   बटन दबाते त'सालू
   नै अेक बटण दबी जाय
   'त'बंद....
   अेक वाटली आटौ
   कै पांस पइसं नौ सवाल।''

परिशिष्ट

❑राजस्थानी साहित्य रौ इतिहास

❑काव्य री परिभासा, तत्त्व, भेद, प्रयोजन
अर राजस्थानी छंद-अलंकार

❑राजस्थानी निबंध-लेखण

❑साहित्य-इतिहास

राजस्थानी साहित्य रौ इतिहास

विक्रम री नवीं सताब्दी सूं आपरौ आपौ लियां मरुभासा रै रूप में चावी राजस्थानी री पिछाण मुलकां चावी है। राजस्थानी भासा आपरी उत्पत्ति रै बगत सूं ई विद्वानां रै विचारां मुजब चालती आई है। इणरी उत्पत्ति नैं लेयनै भासाविद् अेक मत कोनी। अपभ्रंस रा 27 भेदां मांय सूं तीन अपभ्रंसां रौ चलण घणौ रैयौ— 1. सौरसेनी अपभ्रंस, 2. मरुगुर्जरी अर 3. नागर अपभ्रंस। राजस्थानी वास्तै ई अै तीन विचार चालै। केई मरुगुर्जरी अपभ्रंस सूं तौ केई नागर अपभ्रंस अर केई सौरसेनी सूं इणरी उत्पत्ति मानै। पण घणकरा विद्वान सौरसेनी सूं राजस्थानी री उत्पत्ति मानै, जिणरौ पसराव भूखेत्र घणौ हौ। आं विद्वानां मांय डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. अेल.पी. तैस्सीतोरी अर रिचार्ड पिसल रा नांव गिणाया जाय सकै। राजस्थानी इतरी सिमरध भासा है अर इणरौ साहित्य-भंडार इतरौ अथाग है कै कालक्रम री दीठ सूं उणरी कूंत करणौ घणौ दौरौ काम है। विद्वानां रौ काम ई चिंतन अर कूंत रौ है। इण रा इतिहास नैं लेयनै ई न्यारा-न्यारा बगत में बांधण री तजबीज घणा ई भासाविद् करी। राजस्थानी साहित्य रै इतिहास नैं लेयनै डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पद्मश्री सीताराम लाळस, डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया अर अनेकूं विद्वानां काल-विभाजन करियौ। सगळा आपौ-आपरी दीठ सूं रचनावां नैं आदि, मध्य अर आधुनिक काल में बांट्यौ है। कालक्रम साहित्य रै इतिहास रौ नेम है। इणनैं न्यारा-न्यारा खंडां में बांटण सूं रचनावां री कूंत करणी सौरौ काम व्है जावै। इण वास्तै साहित्य-मीमांसक सगळी भासावां रा साहित्य नैं इणीज भांत विगतवार बांटता आया है। इतिहास री दीठ सूं जद किणी रचना री बात करां तौ उणमें उण बगत री थितियां मेळ खावै कै नीं, अै सब बातां ई विचार रा विसय होवै। साहित्य अर इतिहास रौ मणिकांचन जोग बणै। साहित्य अर इतिहास में किणी रचना रौ बगत बित्तौ मोल नीं राखै जित्तौ उणरै साहित्यिक सरूप अर विसय-वस्तु रौ मोल होवै। डॉ. पुरुषोत्तम मेनारिया री पोथी 'राजस्थानी साहित्य का इतिहास' में साहित्य रौ बगत इण भांत राखीज्यौ है—

सरू पैलड़ौ काल	—	वि. सं. 835 सूं 1240 तांई
वीरगाथा काल	—	वि. सं. 1241 सूं 1584 तांई
भक्ति काल	—	वि. सं. 1585 सूं 1913 तांई
आधुनिक काल	—	वि. सं. 1914 सूं लगोतार

आ बात तौ आपां आछी तरियां जाणां हां कै साहित्य में समाज री सगळी थितियां रौ वरणन होवै। देस, काल, थिति रै बूतै ई साहित्य रचीजै। साहित्य में देस अर समाज री दसा अर दिसा दोनूं निजर आवै। राजस्थानी भासा रै सरुआती बगत में देस मांय असमानता, आपसी ईसका, बैर, सामाजिक विसंगतियां, विडरूपता, धारमिक मत-मतांतर, विदेसी हमलावरां सूं काठौ तळीज्योड़ौ मानखौ आपरै धरम रुखाळां री बाट जोवतौ हो। मुसळमान हमलावरां रै साथै ई चारण कवियां रै उत्थान रौ औ बगत हो। चारण कवियां अपभ्रंस री निवृत्तिमूलक सांत-रस री काव्यधारा नैं प्रवृत्तिमूलक राजस्थानी रौ रूप दियौ। वीर साहित्य री रचना कर चारण कवि अठै रा वीरां में ओज भर्‌यौ। अठै रा वीर विजयश्री या वीरगति दो ई बात समझता। जुद्धां री इण भोम माथै पग-पग थरमापोली जैड़ा जुद्ध लड़ीज्या तौ लियोनिडाज जैड़ा जुद्ध-वीर घर-घर जलम्या। राजस्थानी काव्य में वीरोचित भावां रौ जबरौ वरणन मिळै। वीरगति पूग्योड़ा वीरां रौ सुरग री अपछरावां वरण करण नै आवै। अैड़ा पारलौकिक सुखां री अभिव्यंजना वीरकाव्य में करीजी है। राजस्थानी साहित्य रै विविध सरूपां नैं आपां नीचै मंड्योड़ा बिंदुवां सूं समझ सकां, जिणरी तालिका आगलै पानै पर दिरीजी है—

1. कालगत सरूप, 2. काव्यशास्त्रीय सरूप 3. सैलीगत सरूप 4. प्रवृत्तिमूलक अध्ययन 5. साहित्यिक सरूप।

1. कालगत सरूप

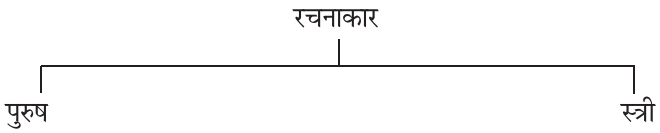

2. काव्यसास्त्रीय सरूप

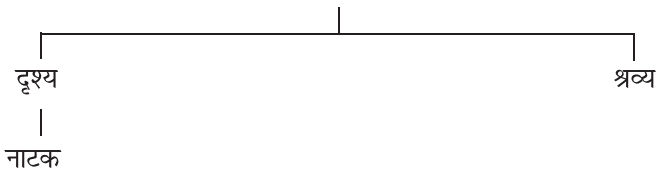

3. सैलीगत सरूप

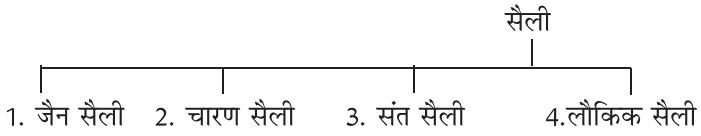

4. प्रवृत्तिमूलक अध्ययन

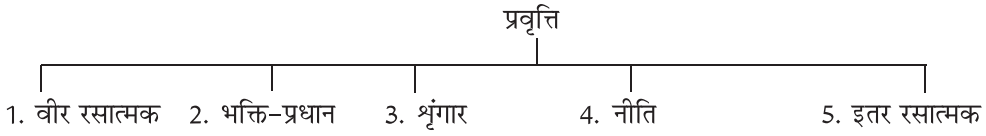

5. साहित्यिक सरूप

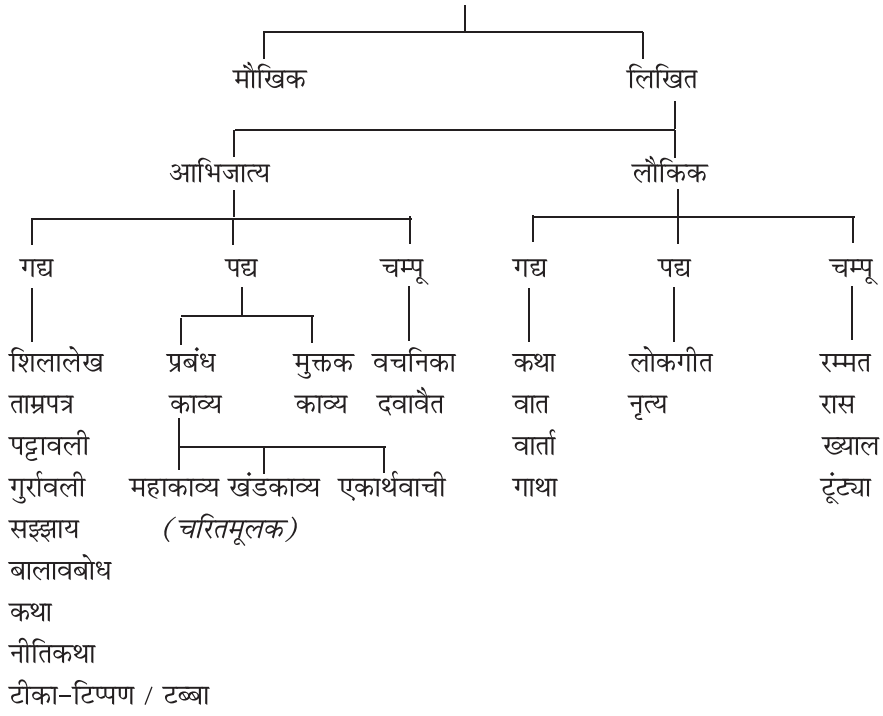

औ बगत राजपूत सासकां रै बधापा रौ ई मानीजै। राजपूत सासकां रा राजदरबारां में अठै रौ साहित्य हरमेस पोखीजतौ रैयौ। राजपूत काल में अठै राजकवियां री अेक लूंठी परंपरा रैयी। राजस्थानी काव्य में वीरता, भक्ति अर सिणगार री रचनावां रौ बरोबर रचाव होयौ। आ बात न्यारी है कै कदैई वीर रस री रचनावां घणी रचीजी तौ कदैई भक्ति रस या सांत रस री। राजस्थानी साहित्य रा सरुआती बगत में जैन रचनाकारां रौ घणौ सैयोग रैयौ। इणमें आचार्य हेमचन्द्र री व्याकरण सूं जुड़्योड़ी रचना, कवि स्वयंभू कृत 'पउम चरिउ' अर 'रिट्ठणेमि चरिउ' जैड़ी रचनावां में रामकथा नैं आधार बणायौ तौ दूजी रचना में 'हरिवंस पुराण' है। स्वयंभू री छंदसास्त्र री रचना ई साम्हीं आवै।

महाकवि पुष्पदंत 'महापुराण' री रचना करी, जिणमें त्रेसठ महापुरुसां रै चरित्र रौ वरणन मिळै। 'णायकुमार चरिउ' में नागकुमार संबंधी काव्य है। 'जसहर चरिउ' में यशोधरा रै चरित्र रौ वरणन है। कवि योगीन्दु जैन साधु हा। आपरी रचनावां में 'परमात्म प्रकास' अर 'योगसार' दूहां में रचित काव्य है। आचार्य हरिभद्र सूरि जैन धरम अपणायौ, जदकै वै जलम सूं बामण हा। आप अनेक ग्रंथां री रचना करी, जिणमें 'ललित विस्तार', 'धूर्ताख्यान', 'संबोधन प्रकरण' अर 'जसहर चरिउ' खास है।

हेमचन्द्र सूरि री काव्य-प्रतिभा रै कारण गुजरात नरेस सिद्धराज जयसिंघ सोलंकी घणौ मान दियौ अर इणां रै पछै ई आपरौ आव-आदर राजनरेसां में बधतौ गियौ। आप सिद्धराज री प्रेरणा सूं 'सिद्ध-हेम व्याकरण' री रचना करी। 'अभिधान चिंतामणि', 'काव्यानुशासन', 'छंदानुशासन', 'देसी नाममाळा', 'धातु पारायण', 'योगशास्त्र', 'शब्दानुशासन' जैड़ा नामी ग्रंथां री रचना कर राजस्थानी नैं सिमरथ करी। राजस्थानी रौ पैलड़ौ साहित्य जिण माथै अपभ्रंस रौ पूरौ असर निजर आवै, उणमें जैन साधुवां, यतियां रा लिख्योड़ा चरित काव्य, कथा काव्य, उत्सव काव्य, नीति उपदेस अर स्तुतिपरक काव्य मिळै।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया आपरी पोथी 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' में 50 नैड़ा जैन रचनाकारां रा नांव गिणाया है, जिका राजस्थानी रै प्राचीन काल रै साहित्य री साख ऊजाळी। 13वीं सदी रा केई जैन रचनाकारां अर वांरी रचनावां में विजयसेन सूरि रौ 'रेंवतगिरि रास', पल्हण कृत 'आबूरास', जिनभद्र सूरि कृत 'वस्तुपाल' अर 'तेजपाल प्रबंधावली' जैड़ा अलेखूं नांव अर रचनावां गिणाई जाय सकै। बारहमासा काव्य परंपरा में 'नेमिनाथ बारहमासा' पैली रचना बताई जावै। जैन रचनाकारां में नेमिनाथ अर राजमति रा चरित्र नैं लेयनै मोकळौ काव्य रचीज्यौ है। जैन कवि आपरी रचनावां में वस्तु, घटना, व्यक्ति, विसय री पूरी जाणकारी देवता। विवरणात्मक, भासा री सबळाई, काव्यरूपां री विविधता— रास, रासौ, रासउ, चरिउ, चरित, धमाल, फागु, उत्सव, चउपई जैड़ा नांव आपरी रचनावां में जोड़ नै उणनैं न्यारी निकेवळी बणावण रौ जतन करता। जूना गद्य रा दाखला, गद्य रूपां री बानगी ई आं रचनावां री विसेसतावां रैयी। अैतिहासिकता रा सैनाण, लोकभासा रौ प्रयोग, उपदेसात्मकता अर नैतिक आचरण री सीख आपरी रचनावां में सुभट निगै आवै। 1241 सूं 1584 रौ बगत राजस्थानी साहित्य में वीरगाथा काल रै नांव सूं जाणीजै। जुग बदळाव रै साथै ई साहित्य री दिसा बदळै। इण जुग में पृथ्वीराज चौहान अर मोहम्मद गौरी रै बिचाळै तराइन रौ अंतिम जुद्ध अर उणमें गौरी री जीत होयी। इणसूं जनमानस में प्रबळ वीर भावना जागी। राजस्थान धरमजुद्धां रौ केंद्र रैयौ। जनमानस में अै भाव हा कै राजपूत सासक अर वीर सेनानायक ई वांनै आं थितियां सूं उबार सकै। राजस्थानी कवियां ई वीरां में वीरता जगावण वास्तै वीर रस रौ सिरजण करयौ। इण जुग में केई जैन अर संत कवियां ई वीर रसात्मक रचनावां लिखी। भक्ति अर सिणगार रै साथै ई वीरता आपरौ बागौ पैर साम्हीं आई।

राजस्थानी साहित्य रा वीरगाथा काल में पैला कवि सालिभद्र सूरि होया, जिकां 1241 में 'भरतेश्वर बाहुबलि रास' काव्य री रचना कर रास परंपरा में वीर रस रै वरणन री सरुआत करी। इणीज काल रा दूजा कवियां में सारंगधर कृत 'हमीर रासौ', 'हमीर काव्य', बारूजी सोदा रा वीर रसात्मक 'गीत-छंद', श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छंद' इणी बगत री नामी रचनावां है। 'रणमल्ल छंद' में ईडर रा राजा राव रणमल्ल अर पाटण रा सूबेदार मुजफ्फरसाह रै बिचाळै होया जुद्ध रौ सजीव चित्राम कवि मांड्यौ है। औ अैतिहासिक वीर काव्य अर चरित काव्य

ई है। शिवदास गाडण री 'वचनिका अचलदास खीची री' स्वतंत्रता री प्रतीक रूप रचना है। इणमें वीर राजपूतां रै साथै वीरांगनावां ई आपरै कर्तव्य रौ पाळण करण में लारै नीं रैवै। समाज रा दोनूं ई वरगां (नारी-पुरुस) में देसप्रेम अर स्वतंत्रता री गाढी मनसा अर वीरता रौ दरप, तेज दुस्मण रै साथै जूझ अर आत्मोत्सर्ग रौ जबरौ वरणन होयौ है। बादर ढाढी 'वीरमायण' में आपरै आश्रयदाता दला जोईया अर वीरमजी रै बिचाळै होयोड़ा जुद्ध रौ जबरौ वरणन करयौ है। पदमनाभ कृत 'कान्हड़दे प्रबंध' में जालौर रा सासक सोनगरा चौहान कान्हड़दे अर अलाउद्दीन रै जुद्ध रौ वरणन है। आ मोटी रचना चार खंडां में मिळै। कान्हड़दे केई बरसां तांई जुद्ध कर वीरगति पाई। कान्हड़दे रौ बेटौ वीरमदे ई पिता रै साथै जुद्ध करयौ, उणरौ वरणाव ई इणमें मिळै।

महाकवि चंद बरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासौ' डिंगळ सैली री नामी वीर रसात्मक रचना है। इण रै रचनाकाल नैं लेयनै विद्वान अेक मत कोनी है। इत्तौ अवस है कै औ अेक महाकाव्य री ओळी में आवै जैड़ौ मोटौ ग्रंथ है। वीरगाथा काल में अनेक कवि अर कृतियां रा नांव गिणाया जाय सकै। राजस्थानी रै प्राचीन काल में 'वीसलदेव रासौ' नरपति नाल्ह कृत अेक चावी रचना है। 'ढोला-मारू रा दूहा', 'जेठवा-ऊजळी रा सोरठा' अर केई प्रेमाख्यान ई इण बगत री चावी रचनावां है। 'ढोला-मारू रा दूहा' अेक जूनी लोकगाथा या लोककाव्य रौ रूप है। इणरौ रचनाकार कोई कवि कल्लोल नैं बतावै तौ केई कुशललाभ नैं बतावै। 'वीसलदेव रास' ई अेक प्रेमाख्यान इज है। इणमें अजमेर रा सासक वीसलदेव चौहान अर भोज परमार री बेटी राजमती री कथा रौ वरणाव है। राजमती रौ विरह वरणन, ढोला-मारू रा दूहा री नायिका मारवणी रै विरह सूं कम कोनी। आदिकाल में जैन सैली, चारण सैली रै साथै लोकसैली री रचनावां रौ चलण ई रैयौ। अै रचनावां लोकसैली रा नामी उदाहरण है।

भक्तिकाल (मध्यकाल)

लगोलग जुद्धां सूं जूझतौ मानखौ अबै उण अदीठ सक्ति री सत्ता नैं मानण लागग्यौ हो। देस में विदेसी हमलावरां रौ डर तौ हो इज, पण मांयली कळै ई दिनोदिन बधण लागगी ही। राजा तौ आप-आपरै राज री सीमावां बधावण में लाग्योड़ा हा। केई पथभ्रस्ट सासक मुगलां री अधीनता अंगेजली। धरम बदळण वास्तै जन समाज माथै पूरौ दबाव हो। इण बगत में केई संत संप्रदाय, साधु, जैन मतावलंबी अर भक्तकवि सगुण अर निरगुण भक्ति रै रूप में रचनावां कर जनमानस नैं धीरज बंधायौ, उणमें आस्था अर विस्वास जगायौ कै परमात्मा सब देखै। वौ अबखी वेळा में आपां री सहाय करैला।

इण भक्तिकाल रा कवियां में भक्त सिरोमणी मीरां बाई नैं कुण नीं जाणै। आपरा कृष्ण-भक्ति रा पद तो जन-जन रा कंठहार रैयोड़ा है। आप पदावली, गीतगोविंद टीका, नरसीजी रौ मायरौ, सत्यभामाजी नूं रूसणूं आद रचनावां रौ सिरजण करयौ। कवि दुरसा आढा 'विरुद छिहत्तरी', 'किरतार बावनी', 'राउश्री सुरताण रा कवित्त' जैड़ी रचनावां रची। इणां में आश्रयदातावां रै गुण-जस रौ बखाण करण रै साथै दुखां सूं कळकळीजतै मानखै री अबखायां नैं ई उजागर करीजी है। आप महाराणा प्रताप री वीरता रा दूहा ई लिख्या, जिका घणा चावा है। अकबर रै दरबार में रैवता थकां आप उणां रै खास दुस्मीं महाराणा प्रताप री वीरता रौ काव्य लिख्यौ। आ राजस्थानी कवियां री मोटी विसेसता रैयी है कै वै जिकौ ई लिख्यौ, साच लिख्यौ। आपरै आश्रयदाता री बात दाय आई तौ उणरौ जस गायौ अर वै कीं चूक करी तौ अै कवि वीसर काव्य रै रूप में आपरै राजावां नैं भांडतां अर भूंडतां ई जेज नीं करी। निडरता रै साथै न्याय री बात हरमेस मांडी। कदैई रिछ्या करण वास्तै तौ कदैई उणां नैं अधिकार दिरावण वास्तै तौ कदैई उणां रै साहस नैं बधावण वास्तै कवि कलम अर किरपाण दोनूं सूं साहित्य रै इतिहास री साख उजाळी है।

भक्तिकाल रा कवियां में ईसरदास बारठ रौ नांव सिरैपांत में आवै। औ इज कारण है कै वांनै 'ईसरा सो परमेसरा' रै विरुद सूं बखाण्यौ जावै। आप 'हरिरस' जैड़ौ भक्तिकाव्य समाज नैं सूंप्यौ। 'गुण भागवत', 'गुण आगम', 'देवियांण', 'गुण वैराट' आद आपरी दूजी महताऊ भक्ति रचनावां है।

पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि क्रिसन-रुकमणी री', 'ठाकुरजी रा दूहा', 'गंगाजी रा दूहा', 'दसम भागवत रा दूहा', 'वसदे रावउत', 'दसरथ रावउत' जैड़ी भक्ति रचनावां साम्हीं आवै।

सायांजी झूला कृत कृष्णभक्ति काव्य री 'नागदमण' घणी चावी रचना है। इणमें कृष्ण रै साथै काळिया नाग रै जुद्ध रौ वरणाव कवि रै काव्य-कौसल नैं उजागर करण वाळौ है। आपरी दूजी रचनावां में 'रुकमणी हरण' अर 'रुकमणी मंगळ' ई चावी रैयी है।

भक्तिकाल या मध्यकाल रा कवि अर वांरी कृतियां में वीरभाण रतनू रौ 'राजरूपक', हमीरदान रतनू कृत 'हमीर नाममाळा', 'लखपत पिंगळ', 'पिंगळ प्रकास', 'जदुवंस वंसावली', 'ब्रह्मांड पुराण', 'जोतिस जड़ाव', 'भागवत दरपण', 'भरतरी सतक' अर 'महाभारत रौ अनुवाद' (छोटौ अर बडौ) खास है। इणी भांत करणीदान कविया रौ 'सूरज प्रकास', 'विड़द सिणगार' अर कवि मंछाराम कृत 'रघुनाथ रूपक गीतां रौ' छंदसास्त्रीय ग्रंथ है।

कृपाराम खिड़िया री रचनावां 'छंद चाळकनेची' अर 'राजिया रा दूहा' ई घणी चावी रचनावां है। रामदान लाळस कृत 'भीम प्रकास' अर 'करणी रूपक', किसना आढा कृत 'भीमविलास', 'रघुवरजस प्रकास' अर माधोदास दधवाड़िया री रचना 'राम रासौ' अर 'गजमोख' ई इण काल री महताऊ रचनावां मानीजै।

इण भांत राजस्थानी साहित्य रै मध्यकाल रै कवियां रा नांव गिणावां जित्ता ई थोड़ा है। इण काल में अलेखूं रचनाकार साहित्य भंडार नैं भरण रौ लूंठौ काम करयौ। मध्यकाल राजस्थानी भासा रौ सुवरण-काल मानीजै, इणमें भक्ति रचनावां रै साथै वीरता अर सिणगार री महताऊ रचनावां रौ ई सिरजण होयौ। भक्तकवियां री लेखनी ई वीरता रौ वरणन करण में लारै नीं रैयी। भक्तकवि ईसरदास बारठ री 'हाला-झाला रा कुंडळिया' वीर रस री लोकचावी रचना है। कवि रै मांय जित्ता भक्ति रा गुण हा, उणसूं कीं बेसी वीर भावां नैं उकेलण री कला ही।

राजस्थानी कवियां नैं वीर-काव्य रचण रौ गुण जाणै जलम सूं मिळ्यौ व्है, अैड़ौ लखावै। पृथ्वीराज राठौड़ केई भक्ति रचनावां रै साथै 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' रचना करी जिकौ सिणगार रौ काव्य मानीजै। कवि वेलि में इण बात री हामळ ई भरै— 'स्री वरणन पहिले कीजिए गूंथिए जेणि स्रिंगार ग्रंथ'। रुकमणी री वय-संधि औस्था रौ नामी वरणन वेलि में होयौ है। उणरै साथै ई कवि राठौड़ री मोटी मनसा आ रैयी कै आपरा इस्ट रौ वै कीकर सुमिरण करै, तौ भक्ति री भावना इणरै मूळ में रैयी। रुकमणी हरण री बगत कृष्ण, रुकमी अर सिसुपाळ रै साथै होयै जुद्ध रौ ई जबरौ वरणन वेलिकार करै। केई रूपक बांधतां, अलंकारां री छटा रै साथै वेलि में सिणगार, भक्ति अर वीरता तीनूं रसां री त्रिवेणी रा दरसण होवै।

कैवण रौ मतळब औ कै अैड़ौ कोई कवि कोनी जिकौ भक्ति रै साथै वीरता रौ काव्य नीं रचियौ व्है। औ कवियां रौ सुभाव है। प्रकृति है, उणनैं छोड नीं सकै। मध्यकाल में अेकला हमीरदान रतनू री रचनावां माथै बात करां तौ विविध विसयक सोध-ग्रंथ लिख्या जाय सकै। आप छंदसास्त्रीय रचनावां, जसोगान री रचनावां, भक्तिपरक रचनावां, जोतिस री रचनावां रै साथै अनुवाद री जिकी सरुआत करी वा अंजस जोग है। साहित्य रा भूखेत्र में न्यारा-न्यारा काव्यरूपां अर विसय री विविधता साथै लिखणिया अैड़ा केई कवि अर साहित्यकार राजस्थानी में निजर आवै। मध्यकाल में काव्य री तीनूं सैलियां— जैन सैली, चारण सैली अर लौकिक सैली में सिरजण होयौ।

जैन रचनावां में ज्यूं बारहमासा, फागु, रासउ, चउपई, धमाल, ढाळ, चौढाळियउ जैड़ा काव्य रूप रचीज्या, उणीज भांत चारण सैली में रासौ, रूपक, विलास, प्रकास, चरित, वेल, रसावळा, झूलणा, नीसाणी, झमाल, कुंडळिया, कवित्त, दूहा अर छंदां रै नांव माथै अनेक काव्यरूपां में अखूट राजस्थानी रचनावां साम्हीं आवै।

लौकिक सैली री बात आवै तौ मध्यकाल में भक्ति आंदोलन रौ अैड़ौ रूप निगै आवै जिणमें केई संत संप्रदायां री महताऊ भूमिका पण रैयी। दादू पंथ रा प्रवर्तक संत दादूदयालजी, संत रज्जबजी, संत लालदासजी, संत मावजी, चरणदासजी, सिद्ध जसनाथजी अर रामस्नेही संप्रदाय में अनेक संत होया जिणां में रामचरण दास, हरिराम दास,

दयालदास, संत दरियावजी आद नामी है। बिश्नोई संप्रदाय रा प्रवर्तक संत जांभोजी ई आपरा सबद अर वाणियां सूं लोककल्याण रौ काम करयौ। इण बगत में केई जैन साधु-संत ई आपरी रचनावां लोकसैली में लिखनै जनता में भक्ति जगावण रौ काम करयौ। संतां री 'मंगळ-विवाहलो', 'भक्तमाळ', 'परिचयी', 'वाणियां', 'साखी', 'सबद' अर 'सिलोका' जैड़ी रचनावां राजस्थानी साहित्य भंडार नैं भरण रौ अंजस जोग काम करयौ। लोकभासा में आपरी बात कैवणी, नैतिक आचरण, सगुण अर निरगुण भक्ति रा नेम-धरम अर ईस्वर रै वास्तै आस्था अर विस्वास आं संतां री रचनावां रौ मूळ ध्येय रैयौ। जीव दया, परोपकार, पर्यावरण जैड़ा विसय ई आंरी रचनावां रा रैया। जित्तौ लूंठौ साहित्य चारण अर जैन सैली में लाधै बित्तौ इज सरावण जोग साहित्य संत कवियां रौ है। उणां रा भक्ति पदां में जीवण रौ सार निजर आवै। लोक सैली में भक्ति री निस्छळ अर निरमळ गंग-तरंगां में मानखै रा सगळा पाप धुप जावै। भवसागर पार करण वाळौ जहाज है— संत-काव्य।

इण भांत मध्यकाळ में सूरां, सापुरुसां अर सतियां री वीर वसुंधरा रै कारण अलेखूं कवियां री लेखणी रै बळ वीर, सिणगार, नीति अर भक्ति रौ साहित्य रचीज्यौ, तौ संत संप्रदाय ई धरम री जड़ नैं हरी करी। इणरै साथै ई लोक-साहित्य आपरी सगळी विधावां रै साथै पांगरयौ। लोक-साहित्य तौ लोक रौ साहित्य है। वौ लोक रै साथै ई जलम्यौ अर तर-तर बधतौ गियौ पण अबार तांई रौ लोक-साहित्य मौखिक सरूप में हो, अबै धींरै-धींरै सबदां में जड़ीज नै वौ आपरै सबळ रूप में साम्हीं आय रैयौ है। औ लोक-साहित्य पोथ्यां में अंवेरीजण लाग्यौ अर पांगरतां ई अेक हरियल रूंख ज्यूं फळ्यौ अर फूल्यौ। भासाई दीठ सूं राजस्थानी अपभ्रंस सूं न्यारी होवती गई। 16वीं सदी रै पछै तौ वा गुजराती सूं ई न्यारी होयनै अेक स्वतंत्र भासा रै रूप में निजर आवण लागी ही, अबै आ भासा आपरै बाळपणै रा संगी-साथियां नैं छोड-छिटकाय राती-माती निजर आवण लागी ही।

मध्यकालीन गद्य

राजस्थानी रौ पद्य-साहित्य जित्तौ सिमरथ है, गद्य-साहित्य ई उत्तौ इज सिमरथ अर रातौ-मातौ है। राजस्थानी में प्राचीन गद्य रूप में विविध विसयक गद्य मिळै। जूनै राजस्थानी गद्य नैं विसय री दीठ सूं पांच भागां मांय बांटीज्यौ है—

धारमिक गद्य मांय टीका, टब्बा, टीप्पण, बालावबोध, पट्टावली अर गुर्रावली आवै। कोई भी धार्मिक ग्रंथ नैं समझण खातर उणमें कथावां दी जावती, उणां री विरोळ मूळ पाठ रै हेठै या अलग सूं देवता, वांनै टीका कैवता। उणीज भांत टब्बा मूळ पाठ रै हासियै माथै लिखीजता। टाबरां नैं बोध करावण सारू, वांनै धरम अर सदाचार री सीख 'बालावबोध' सूं दिरीजती। जातक कथावां रै रूप में इणरौ मैतव रैयौ है। इणमें सं. 1411 में खरतरगच्छ रा तरुणप्रभ सूरि रौ 'षडावश्यक बालावबोध' सब सूं जूनौ मान्यौ जावै। इणी भांत गुरु-चेलै री परम्परा नै निभावण सारू गुरु रै पछै चेलै नै पाट (गादी) माथै बैठायौ जावतौ, उणरै इतिहास, गुरु अर चेलै रै परिचै नै इण विधा में परोट्यौ जावतौ, उणनैं गुर्रावली कैवता। जैन परम्परा मांय वंशावली रौ दूजौ रूप गुर्रावली रौ रैयौ है। केई ओक्तिक ग्रंथ, कथा-ग्रंथ ई इण काल में लाधै।

अैतिहासिक गद्य मांय वात, ख्यात, वचनिका, दवावैत, विगत, वंसावली जैड़ी गद्य विधावां आवै। 'वात' न्यारा-न्यारा विसयां नै लेय'र रचीजी है। आधुनिक जुग री कहाणी परंपरा री जड़ां जूनी वातां में गैरी गडियोड़ी है। अै वातां अैतिहासिक, अर्द्ध अैतिहासिक, धारमिक, नीति प्रधान अर जीवण रै हरेक प्रसंग सूं जुड़्योड़ी होवती। 'ख्यात' नै चरित्र ग्रंथ अथवा उर्दू-फारसी रै 'नामा' या 'आइन' रै नैड़ौ मान्यौ जाय सकै। ख्यात में घटना वरणन, चरित्र वरणन रै सागै अैतिहासिक तथ्यां नै भी महत्त्व दिरीज्यौ है। इण में सिसोदियां री ख्यात, मुहणोत नैणसी री ख्यात, महाराजा मानसिंह री ख्यात, जोधपुर री ख्यात, उमरावां री ख्यात, बांकीदास री ख्यात सिरै ओळी में आवै। 'विगत' रै मांय अेक इज ठौड़, घटनावां, मिनखां अथवा जातियां रौ विगतवार वरणन करियौ जावै। इणमें मारवाड़ रा परगनां री विगत, मेवाड़ रा भाखरां री विगत, कछवाहा सेखावतां री विगत आद आवै। अेक इज परिवार कै जाति

रौ जद अेक वंस-बिरछ रूप में पीढी-दर-पीढी रौ गद्यात्मक वरणन करियौ जावै तौ वा रचना वंसावळी रै नांव सूं ओळखीजै। राठौड़ां री वंसावळी, महारावळ री वंसावळी, झालां री वंसावळी, राठौड़ राजावां री वंसावळी, राजपूतां री वंसावळी आद।

हकीकत सूं अरथ जथारथ रौ वरणन होवै। इणरौ उद्देस्य कोई घटना या खास बात री जाणकारी देवणी होवै। इणमें मनसब री हकीकत, हाडां री हकीकत, पातसाह औरंगजेब री हकीकत उल्लेखजोग है। इणीज भांत '**हाल**' में भी हकीकत रै दांई कोई खास घटना रौ ब्यौरौ दिरीजै। 'सांखला दहियां सूं जांगळू लियौ तेरौ हाल' इण रीत री अेक खास रचना है। 'वचनिका' सबद संस्कृत रै 'वचन' सबद सूं बणियौ है। गद्य-पद्य मिश्रित रचना जिणनैं संस्कृत में चम्पू काव्य भी कैयौ जावै। इणमें अचलदास खीची री वचनिका, वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासौत री, जिन समुद्र सूरि री वचनिका, माताजी री वचनिका आद आवै। 'दवावैत' सबद री व्युत्पत्ति अरबी भासा रा सबद 'वैत' सूं मानी जावै। दवावैत में उर्दू अर फारसी रा सबद घणा मिळै। राजस्थानी भासा री सैं सूं जूनी दवावैत 'नरसिंहदास गौड़ री दवावैत' मानीजै। इणरै पछै 'महाराजा अजीतसिंह री दवावैत', 'असमाल देवड़ा री दवावैत', 'महाराजा लखपत री दवावैत' चावी रैयी।

जूना राजस्थानी गद्य में अेक रूप **कलात्मक गद्य** रौ ई रैयौ। इणनैं मन-बिलमाव रौ गद्य ई कैवै। कथा-वारतावां में प्रेम, वीरता, भक्ति अर हास-परिहास रौ रूप ई देखीजै। गद्य रै साथै रूपाळौ पद्य, तौ केई ठौड़ वरणन प्रधान गद्य में ओपमावां री झड़ी लगाय देवै। खीची गंगेव निंबावत रौ दोपहरौ में निंबावत सरदार रै दोपारां रै भोजन रौ सजीव अर सरब ओपमा सरूप वरणन है, तौ 'राजा राउत रौ बात बणाव' में कुंवर रौ रूप वरणन, सिकार वरणन रा दाखला पढण जोग है। राजस्थानी कलात्मक गद्य जित्तौ रूपाळौ, पढण में असरदार लागै, तौ कठै-कठैई इणमें लोकरंजण ई जुड़्योड़ौ होवै। अैड़ी रचनावां में पृथ्वीराज वाग्विलास, माणिक्य सुंदर सूरि कुतुहलम, सभाशृंगार, मुत्कलानुप्रास है। आं रै मांय अनेक विसयां रौ सरवांग पूरण मनोरम वरणन मिळै। बिरखा, सटरितु, बारहमासा रै रसवती वरणन रै साथै नगर वरणन ई होवै।

अभिलेखीय गद्य रै मांय सिलालेख, ताड़पत्र, भोजपत्र, ताम्रपत्र या दूजा धातुपत्रां माथै खुद्योड़ौ गद्य आवै। इण तरै मिळण वाळौ साहित्य राजाज्ञावां, आदेसां, फरमाण, दान-पत्र, सम्मान-पत्र, पट्टा अर परवानां रै रूप में मिळै। जूना गद्य में अभिलेखां रौ गद्य घणौ महताऊ है। विविध विसयक गद्य मांय आयुर्वेद, जोतिस, व्याकरण जैड़ा अलग-अलग विसयां सूं जुड़िया ग्रंथ जैन अर जैनेतर सैली में मिळै। इणां में जोतिस, वैद्यक, व्याकरण विसयक गद्य मिळै। जोतिस में पंचांग, भौगोलिक जाणकारियां, जलमपत्रियां आद ई महताऊ ठौड़ राखै। इण तरै प्राचीन अर मध्यकालीन राजस्थानी गद्य रौ संसार घणौ लांठौ है। मध्यकाल में राजस्थानी भासा में बत्तौ अर असरदार गद्य रौ सिरजण होयौ। नांव अर रूप न्यारा-न्यारा रैवता थकां ई कदैई रूपगत अेकता तौ कदैई विसयगत अेकता रै कारण आपस में फूल री पांखड़ियां ज्यूं जुड़्योड़ी अै विधावां राजस्थानी साहित्य में आपरी सौरम बिखेरी। जूनै राजस्थानी गद्य री आपरी अलायदी ओळख है, जिकी दूजी भासावां रा साहित्य में स्यात ई लाधै। इणरै साहित्य भंडार सूं कित्ता-कित्ता ग्रंथ-रत्नां नै परोटतां इतिहासकारां राजस्थान प्रदेस रै इतिहास रौ रूप संवारियौ अर राजस्थानी साहित्य आं विधावां रै कारण आपरौ आपौ थापियौ।

आधुनिक काल

इण काल में दोय न्यारी थितियां में न्यारी काव्य-धारावां अर न्यारा विचारां नै बळ मिळ्यौ। आजादी सूं पैली रौ काल अर आजादी रै पछै रौ काल। दोनूं बगत चेतना जगावण वाळा हा, पण विसय न्यारा हा। मोटै रूप सूं औ काव्य-चेतना रौ जुग हौ। इण काल में देस माथै अंग्रेजी हकुमत, उणरा अत्याचारां अर अन्यावां सूं मानखौ दुखी हौ। 'फूट घालौ अर राज करौ' वाळी दोगली नीत नैं अपणायनै गोरां केई रियासतां माथै हक जमाय लियौ। केई राजा तौ

अंग्रेजां रै हाथ रा रमतिया हा। केई राजा, सामंत, अंग्रेजां साथै राजीपा रौ सौदौ कर बैठा हा। इण जुग में ई देसप्रेमियां अर स्वाधीनता नैं पूजण वाळां रौ घाटौ कोनी हौ। राजस्थानी कवि आथूणी हवा साथै उठता काळा धूंवां सूं अणजाण कोनी हा; गोरी सरकार रै काळा मन नैं वै चोखी तरियां जाणता हा। अबै राजावां नैं विरुदावण री दरकार कोनी ही। कवियां परंपरागत काव्य री लीक छोडनै अंग्रेजी सत्ता रै विरोध में काव्य करण लागा। अंग्रेजां री खोटी नीतियां अर वांरा कानून आगै तळ-तळीजतै मानखै नै न्याव दिरावण वास्तै आं कवियां री कलम चाली। देस में जनजागरण, देसप्रेम, वीरता अर स्वतंत्रता रौ पाठ पढावण वाळा इण जुग रा पैला कवि सूरजमल मीसण होया। वीर रसावतार रै रूप में चावा इण कवि री 'वीर सतसई' रौ अेक-अेक दूहौ देसभक्ति अर स्वतंत्रता री सीख देवै, तौ कायरां-उर छैलका करै जैड़ा। रामनाथ कविया 'द्रोपदी-विनय' रै मिस नारी रै विद्रोही रूप नैं दरसायो। शंकरदान सामौर रा गोळी हंदा गीतां में अंग्रेजां नैं झूंपड़ियां रा धाड़ायती बताईज्या तौ केसरीसिंह बारठ, हिंगळाजदान कविया, माणिक्यलाल वर्मा, विजयसिंह पथिक जैड़ा कवियां अंग्रेजी सत्ता रौ खुलासौ करतां जनचेतना जगाई अर जनता में आजादी रौ सुर भर्‌यौ।

जनकवि ऊमरदान लाळस प्रगतिशील काव्यधारा री सरूआत करी। समाज नैं सांस्कृतिक अर सामाजिक उत्थान सारू चेतायौ। धरम रै नांव माथै होवण वाळा पाखंडां रौ खुलासौ करतां समाज-सुधारक अर जनकवि रौ काम सार्‌यौ।

राजस्थान रा कवि हरमेस थाकल मिनखां रौ साथ दियौ, रियासतां रा सामंतां, जागीरदारां, ठाकरां रा हेठवाळिया करसां अर मजदूरां रौ साथ देवता समाज रा आं ठेकैदारां नैं आडै हाथां लिया। जोसीला सबदां में वांनै फटकारण रौ काम गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' जैड़ा जनकवि ई कर सकै। समाज रा हेठला तबकां रौ साथ देवणिया कवियां में रेवतदान चारण, उदयराज उज्ज्वळ, हीरालाल शास्त्री अर जयनारायण व्यास जैड़ा कवि आगै आया। देसप्रेम, अेकता, अधिकारां वास्तै सावचेत करणौ, अशिक्षा नैं मेटणी, काम-धंधा अर मैनत री जै बोलावतां वरगभेद अर नारी जागरण री बात आंरी रचनावां में करीजी।

गांधीजी री अगवाई में देस री आजादी खातर जिकी लड़ाई छिड़ी, अठै रौ साहित्यकार ई उणसूं अळगौ अर अछूतौ नीं रैयौ। गांधीजी रै सत्य, अहिंसा, न्याय अर वांरा आदर्शां नैं लेयनै साहित्यकारां बोहळौ काव्य लिख्यौ। साथै ई राजनीतिक आंदोलन, समाज-सुधार, अछूतोद्धार, सामाजिक अेकता, कुटीर उद्योगां रै साथै गांधीवादी विचारां सूं ओतप्रोत कवियां अठै रामराज्य री कल्पना ई करी। आं सगळां विसयां नैं लेयनै राजस्थानी में सैकड़ां रचनावां लिखीजी।

साहित्यिक दीठ सूं आधुनिक जुग में केई नूंवी चिंतन धारावां रौ जलम होयौ। देस री आजादी पछै नूंवी काव्य चेतना री सरुआत होयी। प्रकृति संचेतनापरक काव्य में पकृति रौ मानवीकरण करीज्यौ। प्रकृति साथै मिनख रौ आद-जुगाद संबंध रैयौ है। मानखै रै हिरदै में लुक्योड़ी भावनावां प्रकृति रै कोमल-कठोर अर रूप-विडरूप रै मिस प्रगट करीजी है। प्रकृति-काव्य कै छायावादी-काव्य री अठै लूंठी परंपरा रैयी। इण काल रा कवियां में- चंद्रसिंह बिरकाळी (बादळी, लू), नारायणसिंह भाटी (सांझ), नानूराम संस्कर्ता (कळायण, दसदेव), गजानन वर्मा (सोनो निपजै रेत में), कन्हैयालाल सेठिया (मींझर), कल्याणसिंह राजावत (परभाती), रेवतदान चारण (बिरखा-बीनणी), सुमेरसिंह शेखावत अर डॉ. मनोहर शर्मा आद रा नांव गिणाया जाय सकै।

प्रबंध-काव्यां रै साथै मुक्तक कविता रौ भी जोर रैयौ। प्रबंध-काव्य में रामायण, महाभारत, उपनिषद् अर पौराणिक विसयां नै आधार बणायनै धारमिक प्रबंध-काव्य लिखीज्या, तौ अैतिहासिक, अर्द्धअैतिहासिक, लोक-काव्य अर कल्पनाऊ प्रबंध-काव्यां रौ सिरजण ई अठै होयौ। अमृतलाल माथुर री 'गीत रामायण', मेघराज मुकुल री 'सैनाणी', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कुंजा', 'अमरफळ', 'पंछी', 'मरवण', महावीर प्रसाद जोशी री 'बिंदराबन', 'द्वारका', 'मथरा', 'अंतरधान', श्रीमंत कुमार व्यास री 'रामदूत', सत्यप्रकाश जोशी री 'राधा', सत्यनारायण

'अमन' प्रभाकर री 'सीसदान', गिरधारीसिंह पड़िहार कृत 'मानखौ', करणीदान बारठ री 'शकुंतला' इत्याद प्रबंध-काव्यां रै रूप में मोटी अर लांबी काव्य-रचनावां लिखण री अठै लूंठी परंपरा रैयी है।

आधुनिक-जुग रा कवियां में कन्हैयालाल सेठिया री कविता में नूंवा बिंब-विधान साथै जीवण-दरसण रा भाव है। देस अर समाज रा बदळता रंग-रूप, ढब, जीवणगत, मानवी भावनावां रा सैंस रूप परगट करण में आधुनिक कवियां री लांबी पांत है, जिणमें तेजसिंह जोधा, मणि मधुकर, ओंकारश्री, पारस अरोड़ा, गोरधनसिंह शेखावत, भगवतीलाल व्यास, मोहम्मद सदीक, गजानन वर्मा, बुद्धिप्रकाश पारीक, गणपतिचंद्र भंडारी, किशोर कल्पनाकांत, कल्याण सिंह राजावत, सुमनेस जोशी, सत्यप्रकाश जोशी, रघुराजसिंह हाडा, प्रेमजी प्रेम, सीताराम महर्षि, कानदान कल्पित जैड़ा अलेखूं कवियां आधुनिक कविता में नूंवा भावबोध, बिंब-विधान, प्रतीकां नैं लेयनै राजस्थानी कविता में नूंवा प्रयोग करया। धोरां वाळा देस नैं जगावण वास्तै कदैई मनुज देपावत नैं आगै आवणौ पड़्यौ तौ कदैई 'मानखै' री ऊंडी नींव राखण नैं गिरधारी सिंह पड़िहार जैड़ा सादगी वाळा कवि नैं मुखरित होवणौ पड़्यौ। श्रीमंत कुमार व्यास नैं आपरी बात द्रोपदी, मीरां, मांडवी अर कैकयी रै ओळावै कैवणी पड़ी।

आधुनिक राजस्थानी कविता नैं दूजी भासा री कवितावां रै सैंजोड़ लावण नै, उणरी कूंत करण वास्तै कविता में नूंवा-नूंवा रूप उकेरीजता रैया। बगत रै परवाण कवियां समाज री विडरूपता माथै रोस करता भांत-भांत सूं भावां री अभिव्यक्ति दी है। आं कवियां में मोहन आलोक, चंद्रप्रकाश देवल, सत्येन जोशी, हरमन चौहान, अस्तअलीखां मलकांण, पुरुषोत्तम छंगाणी, वीरेन्द्र लखावत, सत्यदेव संवितेन्द्र, श्याम महर्षि, सांवर दइया, नंद भारद्वाज, मीठेस निरमोही, आईदानसिंह भाटी, चैनसिंह परिहार, जुगल परिहार, ज्योतिपुंज, कुंदन माली, अर्जुनदेव चारण, शिवराज छंगाणी, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, चेतन स्वामी, बद्रीदान गाडण, हरीश भादाणी, बी. अेल. माली 'अशांत', मालचंद तिवाड़ी, लक्ष्मणदान कविया, रामस्वरूप किसान, मुकुट मणिराज, दलपत परिहार, वासु आचार्य, ओम पुरोहित 'कागद', शंकरसिंह राजपुरोहित, शिवराज भारतीय, नीरज दइया, अशोक जोशी 'क्रांत', गिरधरदान रतनू दासोड़ी इत्याद आज तांई रा राजस्थानी कवि इण आधुनिक जुग में आवै।

आधुनिक कविता में प्रकृति चेतनापरक काव्य, प्रगतिशील काव्य, छायावादी काव्य, प्रतीकात्मक सैली रौ काव्य, नुंवै भावबोध अर जुगबोध रौ काव्य लिखीज्यौ। पारम्परिक काव्य रै साथै नूंवी कविता रौ बानौ पैराय कवियां जीवण रा सगळा प्रसंगां सूं जुड़्योड़ी रचनावां लिखी, आथूणै साहित्य में होवण वाळा नूंवा प्रयोगां रौ असर मायड़ भासा माथै ई पड़ियौ, दूजी भासावां रै देखा-देखी उणां सूं सीख लेयनै राजस्थानी कवियां ई नूंवा-नूंवा काव्य रूपां नैं परोटण रा जतन करया, आपरी बात नैं कैवण री न्यारी आंट राखणिया कवियां में नारायणसिंह भाटी, तेजसिंह जोधा, पारस अरोड़ा, चन्द्रप्रकास देवल, मालचंद तिवाड़ी, अर्जुनदेव चारण रा नांव गिणाया जाय सकै, जिणां री कवितावां में चिंतन री नूंवी रीत निजर आवै।

राजस्थानी **गजल** प्रीत री कसक, मैफिलां री गायकी नैं छोडनै आम आदमी रै जीवण री गजल बणगी। आज री व्यवस्था रै खिलाफ बगावत रा तीखा तेवर रौ अंदाज अर व्यंग्य रौ मारक सुर आं गजलां में जबरौ दीखै। गजलकारां में सत्येन जोशी, नवल जोशी, रामेश्वरदयाल श्रीमाळी, श्यामसुंदर भारती, भागीरथ सिंह भाग्य, जुगल परिहार, राजेन्द्र स्वर्णकार, सत्यदेव 'संवितेन्द्र' आद आवै। **डांखळा** पांच ओळी वाळौ वरणिक छंद है। अंग्रेजी रै लिमरिक छंद री बुणगट नैं अपणायनै राजस्थानी कवियां इणमें रचना रची। आपरी भासा नैं सिरमथ बणावण खातर दूजी भासावां रा छंदां नैं अपणाय आज रा कवियां भांत-भांतीला मनबिलमाऊ विसयां माथै 'डांखळा' लिखिया। राजस्थानी में हास्य-व्यंग्य आंरौ खास विसय रैयौ है। मोहन आलोक, विद्यासागर, श्यामसुंदर भारती, बजरंग सारस्वत 'गंगाशहरी' रा डांखळा घणा सराईज्या। शिव पारीक री पोथी 'गळै में अटक्यौ डांखळौ' नाम सूं सांम्ही आवै। डांखळौ चुटकलानुमा काव्य रौ रूप है। आज री नूंवी चिंतन सैली अर सबदां री पकड़ आं डांखळां में निजर आवै।

काव्य-रूपां री इण जातरा में राजस्थानी कवियां जापानी छंद '**हाइकू**' में ई आपरी हथौटी कसण रा जतन करै। भारत सूं चीन अर जापान में गयोड़ा बौद्ध धरम रा अनुयायी धरम उपदेस अर सीख री बात नैं थोड़ाक सबदां में कैवता। इण रचना-बंध नैं 'हाइकू' नांव दिरीज्यौ, जिणरी जड़ां भारतीय साहित्य सूं ई सींचीजी है। ध्यान, गैरा चिंतन सूं मन रा झीणा विचारां नैं कम सबदां में कैवण री कला रौ नांव 'हाइकू'। फगत (17) सतरा आखरां रौ नैनौ-सोक वरणिक छंद है- हाइकू। इणमें भासा अर भावां री सूक्ष्मता है। सांवर दइया, लक्ष्मीनारायण रंगा, नीरज दइया, भंवरलाल भ्रमर, सुमन बिस्सा, घनश्याम नाथ कच्छावा जैड़ा कवियां 'हाइकू' में आपरा विचार राख्या है। **सोनेट** राजस्थानी कविता आज री दौड़ में लारै नीं रैय जावै, इणरी पूरी खेचळ अठा रौ कवि करतौ रैवै। वाणी रौ वर तौ मां सुरसत रा इण लाडलां नैं मिळ्योड़ौ है ई। 14 (चवदै) ओळी रा इण छंद में जीवण री जथारथ थितियां अर घटनावां रौ वरणाव, आपरै च्यारूंमेर रै वातावरण रौ सांच अर आपरै हियै रा निजू संबंधां री बात नैं घणा मरम परसी सबदां में कथीजण री कळा राजस्थानी कवि मोहन आलोक री थाती है। 'सौ सोनेट' नांव री इण पोथी में 102 सोनेट छंद है। न्यारा-न्यारा विसयां में सबदां री कळा अर भावां री परगळाई है। अंग्रेजी छंद नैं अपणाय आपरै हियै री बात उकेरण में राजस्थानी लारै नीं रैया। पढती बगत ई कठैई अबखायी नीं लखावै कै इण छंद री पकड़ में राजस्थानी कवियां कीं खामी राखी होवै। इणरै पछै **बीजीकावां** ई राजस्थानी में रचीजी, जिणमें साव थोड़ाक सबदां में सार री बात कैवणी होवै। हिंदी री 'क्षणिकावां' ज्यूं जीवण रा आम-फेम प्रतीकां अर बिम्बां नैं नूंवा, अबोट आखरां नै अरथ देवती, सचोट तीखी व्यंग्य भरयोड़ी, थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता राखण वाळी अै 'बीजीकावां' जीव जगत रा न्यारा-न्यारा रूपां नै उकेरती निजर आवै। लक्ष्मीनारायण रंगा री बीजीकावां सरावण जोग है। ओम पुरोहित 'कागद' री 'कुचरणी' में अरथावूं कुचरण्यां रौ मापौ ई कोनी। दौलतराम डोटासरा रा '**टुणकला**' ई जूना ओखाणां ज्यूं अरथावै जिणमें सार बात कहीजी है। राजस्थानी में भासाई सबदां रौ औ साव नूंवौ प्रयोग है।

इण भांत आधुनिक राजस्थानी काव्य साहित्य में काव्य रा नूंवा रूपां रौ प्रयोग ई साहित्य भंडार नैं सिमरथ करैला अर इण भासा री कूंत करण में आज रा अै काव्य-रूप आपरी सैनरूपता रौ म्यानौ देवैला। आधुनिकता री दौड़ में आगै बधता साहित्य रा पग मंडणा आपरी मंजिल लग पूगैला।

राजस्थानी साहित्य में नारी लेखण री बात करां तौ केई सोध-प्रबंध त्यार होय जावै। मध्यकाल री मीरां सूं जीवण री सीख लेयनै अलेखूं महिला रचनाकार साम्हीं आवै। सगुण-निरगुण भगती रा सुरां नैं आपरा पदां में अंवेरती दया बाई, सहजो बाई, गवरी देवी, स्वरूपां बाई, राणा बाई, इणां सूं ई पैली सोढी नाथी अर रसिक बिहारी रा नांव भक्तिमती कवयित्रियां में आवै, तौ पतिव्रत धरम, तीज- तिंवार, देसप्रेम अर प्रकृति रा मोवणा चितराम ई भगती नीति रै साथै निजर आवै। आं मांय दीप कुंवरी, उमादेवी जैड़ी रचनाकार साम्हीं आई।

आज नारी सामाजिक विडरूपता, अबखायां नैं आपरी रचनावां पेटै उकेरै। सामाजिकता रै ढांचा में दोवड़ी विचारधारा में पीसीजती नारी आज आपरी लेखणी सूं उण असमानता नैं नकारै। जथारथ वरणन में नारी लेखण आपरी व्यथा री कथा कैवै। 'धर मजलां धर कूचां' रै साथै नूंवी सोच, मानवी-संघर्ष, मिनखपणा री दीठ रौ लेखौ करती आपरी दिसा में चाल रैयौ है। डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ 'कैक्ट्स मांय तुळसी' काव्य संकलन सामाजिक विसंगतियां नैं उकेरै। डॉ. सावित्री डागा, संतोष मायामोहन, डॉ. कमला जैन, वंदना शर्मा, डॉ. अरुणा शर्मा, प्रतिभा व्यास, सुमन बिस्सा, कविता किरण, मोनिका गौड़, राजेश दुलारी सांदू, कमला कमसिन, डॉ. प्रकाश अमरावत, डॉ. शारदा कृष्ण, किरण राजपुरोहित 'नितिला', रीना मेनारिया, ऋतुप्रिया, छैल कंवर चारण, डॉ. लीला मोदी आद अनेक महिला रचनाकारां री काव्य प्रतिभा गीत, कविता, गजल अर छंदां रै रूप में साम्हीं आवै। आज समाज रूपी रथ रौ दूजोड़ौ पहियौ ई लेखणी री धुरी बणाय साथै संभग्यौ है। नूंवी चेतना रै संचार संचरियौ अर अबै समाज नैं आगै बधण सूं कुण रोक सकैला। राजस्थानी साहित्य रा रूंखड़ां नैं हरियल करणियां डाळियां, पानड़ा, कूंपळ, फूल अर फळां रै रूप में आपरी न्यारी ठौड़ फाबतां सिरजणहारां री साख भरूं तौ म्हारौ सौभाग है। बाल-साहित्य में ई

राजस्थानी लेखन लारै कोनी। टाबरां रै वास्तै हेत-अपणायत अर शिक्षाप्रद कवितावां री बानगी इणमें देखीजै।

आं मांय सूं केई कवि परंपरागत काव्य लिखै, तौ केई जथारथवादी काव्य रै नैड़ा ढूकै। केई पकृति रा प्रेमी इण रा कण-कण नैं आखरां ढाळै, रूंखां री महिमा गावै, तौ केई मैणत रा नारा देवै। केई संस्कृति री रूपाळी छिब तीज-तिंवारा में देखनै उणरा गीत गावै तौ केई नूंवा भाव-बोध साथै अनाम कविता, मिनी कविता नैं सिरजै। मानवी भावनावां साथै जुड़ नै झीणी संवेदना नैं कविता रा सुर बणावै, तौ केई समाज री दसा अर दिसा माथै छीजतौ निजर आवै। कोई विरलौ कविता नैं साचै संचै ढाळै, तौ केई फकत नांव खातर च्यार ओळ्यां मांड नै कवि बण जावणौ चावै। कीं होवौ, आधुनिक राजस्थानी कविता री थिर जातरा करता आगै बधता आं कवियां री कोरणी मंड्या आखरां में आधुनिक भावबोध, नवजीवण अर नूंवै भावबोध, कथ्य, रचाव, विचार, भासा, बिंब अर सिल्प सरावण जोग अर आपरी निकेवळी पिछाण बणावण जोग है।

इण भांत आधुनिक काव्य री खास प्रवृत्तियां में जथारथवादी काव्य, प्रगतिशील काव्य, नवजीवण रौ काव्य, नव भावबोध रौ काव्य, हास्य-व्यंग्यात्मक काव्य, प्रकृतिवादी काव्य, नूंवां बिम्ब अर प्रतीक विधान में लिखीज्यौ तौ परम्परागत काव्य में भक्ति, नीति, प्रकृति, वीरता, सिणगार रौ काव्य ई बरोबर लिखीजतौ रैयौ। गिरधरदान रतनू दासोड़ी जैड़ा कवियां रै पाण डिंगळ रौ डमरू छंदां री छौळां रै पाण आपरौ नाद गुंजावै, तौ छंदमुक्त कवितावां ई आधुनिक राजस्थानी साहित्य में मोकळायत में रचीजण लागी है।

आधुनिक राजस्थानी गद्य

आधुनिक राजस्थानी गद्य री सरुआत वीर रसावतार कवि सूर्यमल्ल मीसण रा लिख्योड़ा कागदां (पत्रां) सूं मानीजै। आप राजनीतिक चेतना अर कर्तव्य पुकार सूं सराबोर पत्र लिखनै देसी राजावां नैं भेज्या। वां कागदां री भासा में नूंवै गद्य रा अैनाण लाधै। आधुनिक गद्य में अै कागद नींव रा मजबूत भाटा बण गद्य रूपी महल नैं ऊभौ करण में पैलौ सैयोग करै। आधुनिक राजस्थानी में ई दूजी भासावां रै ज्यूं गद्य री विविध विधावां में सिरजण होवण लाग्यौ। इण बगत में घणकरा प्रवासी राजस्थानी आपरी मायड़ भासा रौ मान बधायौ। इणमें शिवचंद्र भरतिया अेक अैड़ौ नांव है जिका कहाणी, उपन्यास, नाटक जैड़ी विधावां री सरुआत राजस्थानी में करी। उण पछै तौ राजस्थानी मांय उपन्यास, कहाणी, नाटक, निबंध, अेकांकी, रेखाचित्राम, संस्मरण, बाल-साहित्य जैड़ी विधावां दीठाव में आई। अठै राजस्थानी री आं विधावां री कीं जाणकारी टाबरां नैं करावणी चावूं।

राजस्थानी मांय पैलौ **उपन्यास** 'कनक-सुंदर' मान्यौ जावै। सन् 1903 में शिवचन्द्र भरतिया इण उपन्यास में उण बगत री बुरायां रै निवारण खातर सुधारवादी दीठ राखी है। उपन्यासकार इण मांय बालब्यावं, दायजौ, अनमेळ ब्याव आद नै पाठकां सांम्ही ल्यावण रौ जतन करियौ है। राजस्थानी रौ दूजौ उपन्यास श्रीनारायण अग्रवाळ रौ 'चम्पा' है जिणमें समाज-सुधार री भावना राखीजी है। इण पछै श्रीलाल नथमल जोशी रा 'आभै पटकी', 'अेक बीनणी दो बीन' अर 'धोरां रौ धोरी' उपन्यास पाठकां साम्हीं आया। अन्नाराम सुदामा रौ 'मैकती काया मुळकती धरती', 'मेवै रा रूंख?', 'आंधी अर आस्था', 'डंकीजता मानवी', 'घर संसार', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र रा 'हूं गोरी किण पीव री', 'जोग संजोग' अर विजयदान देथा रा 'तीडौ राव', 'मां रौ बदळौ' अर 'आठ राजकंवर' जैड़ा लोक उपन्यास साम्हीं आया।

नूंवै जुग मांय नूंवा विसयां नैं लेयनै उपन्यास साम्हीं आया। बी. एल. माली 'अशांत' रा च्यार उपन्यास 'मिनख रा खोज', 'बैजू', 'अबोली' अर 'बुरीगार निजर' साम्हीं आया। मालचन्द तिवाड़ी रौ 'भोळावण', छत्रपति सिंह रौ 'तिरसंकू', पारस अरोड़ा रौ 'खुलती गांठां', दीनदयाल कुंदन रौ 'गुंवारपाठौ', सत्येन जोशी रौ 'कंवळपूजा', भूरसिंह राठौड़ रौ 'राती घाटी', रामनिवास शर्मा रौ 'काळ भैरवी', करणीदान बारहठ रौ 'मंत्री री बेटी', अब्दुल वहीद कमल रौ 'घराणौ' सूं आगै बधेपौ कर उपन्यास साहित्य मांय नूंवा रचाव होया। इण विधा माथै नूंवा लिखारा

भी आपरी कलम सवाई करी, जिणमें सुरेन्द्र अंचल रौ 'सुपना रौ सायबौ', ओमदत्त जोशी रौ 'पाणी पीजै छाण, देवकिशन राजपुरोहित रा 'सूरज', 'कपूत', 'कळंक', 'धाड़वी', 'दातार', देवदास रांकावत रा 'मुळकती मौत कळपती काया', 'धरती रौ सुरग', 'गांव! थारै नांव', 'होम करतां हाथ बळै', नवनीत पाण्डे रौ 'माटी जूण', 'दूजौ छैड़ौ', मधु आचार्य 'आशावादी' रा 'गवाड़', 'अवधूत' अर 'आडा-तिरछा लोग', रामेसर गोदारा रौ 'टूण्डौ मूण्डी' आद साम्हीं आवै। इक्कीसवैं सईकै में इण विधा माथै लगोलग काम हुय भी रैयौ है। आज इण विधा नैं परोटण री घणी दरकार है।

कहाणी राजस्थानी साहित्य रै नूंवै जुग री देन है। 'बात' परंपरा सूं अळगी हट नै राजस्थानी कहाणी आपरी नूंवी सरुआत करी। बीसवीं सदी सूं कहाणी विधा पेटै काम होवण लाग्यौ। नूंवा विसयां अर सिल्प नैं लेयनै कहाणीकार पाठकां साम्हीं पोथ्यां लाया। 1904 में आधुनिक राजस्थानी री पैली कहाणी कलकत्तै सूं निकळण वाळी हिंदी री मासिक पत्रिका 'वैश्योपकारक' में शिवचन्द्र भरतिया री 'विश्रांत प्रवासी' मानीजै। इणरै पछै गुलाबचन्द नागौरी री 'बडी तीज', 'बेटी की बिकरी' अर 'बहू की खरीदी', शिवनारायण तोसनीवाल री 'विद्यापरं दैवतम्', 'स्त्री शिक्षा को ओनामो', ब्रजलाल बियाणी री 'रामायण' अर भगवती प्रसाद दारूका री 'अेक मारवाड़ी की घटना' अर 'अेक मारवाड़ी की बात' छपी। अै कहाणियां उण बगत रै राजस्थानी समाज री सामाजिक बुरायां नैं उजागर करै, इण सारू आं में सुधारवादी सुर दिखै। अै कहाणीकार राजस्थानी समाज मांय रची-पची सामाजिक अबखायां कानी पाठकां रौ ध्यान खींचण री कोसिस करी। अै कहाणियां जूनी राजस्थानी बातां सूं घणी न्यारी ही। न तो इणां में कोई अलौकिक पात्र हा अर न ई कोई अलौकिक घटनावां। इणमें किणी भांत रा राजा-राणी या राजकंवर जैड़ा पात्र नीं हा, आं में फगत जथारथ नैं उजागर करीज्यौ हो। इण कारण कैय सकां कै आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरुआत प्रवासी राजस्थानी कहाणीकारां करी।

आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरुआत मुरलीधर व्यास वि. सं. 2012 (1955) में आपरै कहाणी-संग्रै 'बरसगांठ' सूं करी। आधुनिक राजस्थानी कहाणी परंपरा मांय दो धारावां देखी जाय सकै। अेक धारा तौ सुधारवादी सोच लियां दीखै तौ दूजी धारा मांय तत्कालीन सामाजिक जीवण मांय आवता बदळाव अर वां बदळावां रै कारण जीवण-मूल्यां माथै पड़तै प्रभाव नैं प्रकट करणै री कोसीस करीजी। राजस्थानी रा आधुनिक कहाणीकार भाव अर सिल्प दोनूं स्तर माथै कहाणियां नैं मांजण लाग्या। इणां मांय अन्नाराम सुदामा, मूलचन्द प्राणेश, बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोशी, नृसिंह राजपुरोहित, डॉ. मनोहर शर्मा, राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रौ नांव सिरै ओळ में आवै। आं कहाणियां में 'भूरी', 'कल्गि महातम' (बैजनाथ पंवार), 'बोल म्हारी मछली', 'उतर भीखा म्हारी बारी', 'भारत भाग्य विधाता' (नृसिंह राजपुरोहित), 'माटी री हांडी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'आंधै नैं आंख्यां' (अन्नाराम सुदामा) आवै। लोककथावां री सैली मांय राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विजयदान देथा, डॉ. मनोहर शर्मा, नानूराम संस्कर्ता आद रचनाकारां लोक संस्कृति अर लोकचेतना नैं लेयनै कहाणियां लिखी।

राजस्थानी कहाणी आपरी जात्रा मांय आज तांई केई पांवडा भरिया है। न्यारा-न्यारा विसयां नैं लेयनै कहाणीकारां आपरी कथा-कृतियां पाठकां साम्हीं राखी। इणां में नानूराम संस्कर्ता री 'ग्योही', नृसिंह राजपुरोहित री 'रातवासौ', 'अमर चूनड़ी', 'मऊ चाली माळवै', 'प्रभातियौ तारौ', 'अधूरा सुपना', मूलचन्द प्राणेश री 'उकळता आंतरा : सीळा सांस' अर 'चस्मदीठ गवाह', बैजनाथ पंवार री 'लाडेसर', 'नैणां खूट्यौ नीर', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कन्यादान', अन्नाराम सुदामा री 'आंधै नैं आंख्यां', श्रीलाल नथमल जोशी री 'परण्योड़ी कंवारी', 'मैंधी, कनीर अर गुलाब', सांवर दइया री 'असवाड़ै-पसवाड़ै', 'धरती कद तांई घूमैली', 'अेक दुनिया म्हारी', भंवरलाल 'भ्रमर' री 'तकादो', 'सातूं सुख', दामोदर प्रसाद शर्मा री 'प्रेतात्मा री पीड़', 'रामेश्वर दयाल श्रीमाळी री 'सळवटां', बी.अेल. माली अशांत री 'किली किली कटकौ', 'राई-राई रेत', मनोहर सिंह राठौड़ री 'रोसनी रा जीव', 'खिड़की', 'गढ रौ दरवाजौ', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र री 'समंद अर थार', मदन सैनी री 'फुरसत', 'भोळी बातां', मालचन्द तिवाड़ी री

'धड़ंद', 'सैलिब्रेसन', मीठेस निरमोही री 'अमावस, अेकम अर चांद', चैनसिंह परिहार री 'चरकास', रामस्वरूप किसान री 'हाडाखोड़ी', 'तीखी धार', 'बारीक बात', सत्यनारायण सोनी री 'घमसाण', 'धान कथावां', भरत ओळा री 'जीव री जात', 'सैक्टर नं. 5', 'भूत कथावां', डॉ. मदन केवलिया री 'काळी कांठळ', बुलाकी शर्मा री 'हिलोरो', 'साच नै आंच', कमल रंगा री 'सीप्यां अर मोती', रामेसर गोदारा री 'मुकनो मेघवाळ' अर 'वीरे तूं लाहौर वेखण आई', मनोज स्वामी री 'कियां' अर 'इमदाद', मधु आचार्य 'आशावादी' री 'ऊग्यौ चांद ढळ्यौ जद सूरज', 'आंख्यां मांय सुपना', डॉ. मदन गोपाल लढ़ा री 'च्यानण पख' अर राजेन्द्र जोशी री 'अगाड़ी' साम्हीं आयी। राजस्थानी कहाणी री इण जात्रा मांय लुगायां भी आपरी कलम सवाई करी है। आं महिला रचनाकारां मांय डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत री 'हियै रा हरफ', माधुरी मधु री 'केसरिया बालम', 'तिड़कण लाग्या बांस', कुसुम मेघवाळ री 'अमंगळी छाया', मंजू सारस्वत री 'उजास' आद कथाकृतियां रा नांव इण कहाणी-जात्रा मांय उल्लेखजोग है। आं रै टाळ सुखदा कच्छवाह, चांदकौर जोशी, पुष्पलता कश्यप, बसंती पंवार, रीना मेनारिया, अनुश्री राठौड़ आद ई मोकळी कहाणियां लिखनै राजस्थानी कथा-साहित्य रौ भंडार भरयौ है।

राजस्थानी गद्य विधावां में **निबंध** री महताऊ ठौड़ है। आधुनिक जुग में न्यारा-न्यारा विसयां माथै निबंध लिखीज्या है। निबंध विचार नैं, भावां नैं अर विसय नैं चोखी तरियां बांधण रौ काम करै। राजस्थानी मांय निबंधां रौ पैलड़ौ सरूप 'मारवाड़ी भास्कर' अर 'मारवाड़ी' जैड़ा पत्रां में प्रकासित होवण वाळा लेखां में देखण नै मिळै। ब्रजलाल बियाणी रा निबंध 'मोगराकली', 'गुलाबकली', बड़ी फजर रौ दीवौ आद ललित निबंध 'पंचराज' में प्रकासित होया। इण पछै तौ केई निबंध साम्हीं आवै। आगीवांण, ओळमों, जलमभोम, मरुवाणी आद पत्र-पत्रिकावां मांय निबंध प्रकासित होया। आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा चावा निबंध-संग्रहां मांय 'संस्कृति री सोरम' (डॉ. शक्तिदान कविया) 'राजस्थानी संस्कृति रा चित्राम', 'धर कोसां धर मजलां', 'अर्जुण आळी आंख' (जहूरखां मेहर), 'मणिमाळ' अर 'रस कळस' (डॉ. कल्याणसिंह शेखावत), 'भल लूआं बाजौ कित्ती' अर 'लोक रौ उजास' (डॉ. किरण नाहटा), 'पांवडा, पड़ाव अर मंजल', 'सोहम चमकत तारा' (बी.एल. माली 'अशांत'), 'बळिहारी उण देसड़ै' अर 'बुगचौ' (मूळदान देपावत), 'डीगा डूंगर धोळिया' अर 'परख सिरजण' (डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा), 'नाक री करामात' (बुद्धिप्रकाश पारीक), 'प्रीत रा पंछी' (अस्तअली खां मलकांण), 'अणभूत दीठ' (नरपतसिंह सिंघवी), 'सोनलिया ओळखांण' (माणक तिवाड़ी 'बंधु'), 'इतिहास रौ साच' (डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा), 'सुरनर तो कथता भला' अर 'सूरज कदै बिसूंजै कोनी' (सूर्यशंकर पारीक), 'इंदरधनख' (डॉ. चेतन स्वामी), 'सिरजण री साख' (डॉ. मदन सैनी), 'कवि, कविता अर घरआळी' (बुलाकी शर्मा), 'सुण अरजुण' (शंकरसिंह राजपुरोहित), 'मरुधर री मठोठ' अर 'जळ ऊंडा थळ ऊजळा' (गिरधरदान रतनू दासोड़ी), 'काव्यशास्त्र री ओळखाण' (गौरीशंकर प्रजापत) अर 'कीरत रा बखाण' (डॉ. नमामीशंकर आचार्य) आद खास है।

राजस्थानी मांय **नाट्य परंपरा** घणी जूनी है। लोकनाट्य रै स्हारै सूं मन-बिलमाऊ भणाई अर ग्यान बधावण रौ काम होवतौ। इण लोकनाट्य में ख्याल, स्वांग, रम्मत, रासलीला, फड़, टूंट्या आद लोकचावा है। आधुनिक राजस्थानी नाटकां री सरुआत शिववचन्द्र भरतिया सूं मानी जावै। वांरौ पैलौ नाटक 'केसर विलास' सन् 1900 में प्रकासित होयौ। इण परंपरा में दूजा नाटकां रौ लेखन अर प्रकासन अलग-अलग रचनाकारां द्वारा करीज्यौ।

जद बात आपां राजस्थानी नाटकां री विसय-वस्तु री करां तौ सरुआती नाटक सामाजिक धरातळ सूं जुड़िया लखावै। आं नाटकां मांय रचनाकार सामाजिक अबखायां नै सांम्ही लावण रौ जतन करियौ। 'केसर विलास' मांय बदळाव रा सुर दिखै। मारवाड़ी समाज री रीति-कुरीतियां रौ वरणाव इण नाटक में घणौ ई हुयौ है। भरतियाजी रा दूजा नाटक 'फाटका जंजाळ' अर 'बुढापै री सगाई' सांम्ही आवै। इण पछै भगवती प्रसाद दारूका रा 'बालविवाह', 'वृद्धविवाह', 'सीठणा सुधार', गुलाबचंद नागौरी रा 'मारवाड़ी मौसर' अर 'सगाई-जंजाळ', बालकृष्ण लाहोटी रौ 'कन्याबिक्री' अर नारायणदास सारड़ा रौ 'बाल ब्याव को फोर्स' आद नाटक सामाजिक अबखायां नैं लेयनै रचीज्या।

इणरै पछै केई नाटककार न्यारा-न्यारा विसयां नैं लेयनै नाटक लिख्या। श्रीनारायण अग्रवाळ रा 'कलियुगी कृष्ण रुकमणी नाटक', 'अकल बडी क भैंस', 'महाभारत को श्रीगणेश', 'विद्याउदय नाटक', सूर्यकरण पारीक रौ 'बोळावण', श्रीनाथ मोदी रौ 'गोमा जाट', गिरधारी लाल व्यास रौ 'प्रणवीर प्रताप', डॉ. नारायण विष्णु जोशी रौ 'जागीरदार', बालकृष्ण लाहोटी रौ 'कन्या बिकरी', मदनमोहन सिद्ध रौ 'जयपुर की ज्योणार', आज्ञाचंद्र भंडारी रौ 'पन्नाधाय', भरत व्यास रौ 'ढोला मरवण', 'रंगीलौ मारवाड़', यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' रौ 'तास रौ घर', बद्रीप्रसाद पंचोली रौ 'पाणी पैली पाळ', फूलचन्द्र रौ 'बिकाऊ टोरड़ौ', सत्येन जोशी रौ 'मुगती बंधण', अर्जुनदेव चारण रा 'दो नाटक आज रा', 'धरमजुद्ध', 'मुगती गाथा', 'जमलीला', 'जेठवा ऊजळी', 'बोल म्हारी मछली इत्तौ पांणी', 'सत्याग्रह', डॉ. ज्योतिपुंज रौ 'कंकू कबंध', लक्ष्मीनारायण रंगा रा 'बहूरूपियौ' अर 'पूर्णमिदम्' आद नाटकां रौ सिरजण होयौ।

नाट्यसास्त्र री चावी विधा है— **अेकांकी**। इणरौ चलन पैली पिछमी देसां में रैयौ, पछै भारत में भी आ विधा घणी चावी होयी। राजस्थानी री पैली अेकांकी शोभाचंद जम्मड़ री 'वृद्ध विवाह विदूषण' मानी जावै। नाटक मांय कथावस्तु मोटी होवै, पात्रां री संख्या बेसी होवै जदकै अेकांकी इण सूं छोटी होया करै। संस्कृत में इणनैं रूपक मान्यौ गयौ है। इणमें कथाक्रम, पात्रां री संख्या अर धेय सरूप मोटौ नीं होवै। अभिनेयता में भी बगत कमती ही लागै, इण कारण इणनै अेकांकी कैवै। श्रीनाथ मोदी री अेकांकी 'गांव सुधार या गोमा जाट' अर सूर्यकरण पारीक री 'बोळावण' सरुआती दौर री मानी जावै। इणरै पछै 'सामधरमा माजी' (लक्ष्मीकुमारी चूंडावत), 'देस रै वास्तै' (आज्ञाचंद भंडारी), 'जय जलमभोम (धनंजय वर्मा), 'डाक्टर रौ ब्याव' (डॉ. गोविन्दलाल माथुर), 'तोप रौ लाइसेंस' (दामोदर प्रसाद शर्मा), 'रगत अेक मिनख रौ' (सुरेन्द्र अंचल), 'मिनख' (हनुमान पारीक), 'छोरी फेल कियां हुई बैनजी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'कफन' (नागराज शर्मा) अर 'खाग्या बाळणजोगा' (जयंत निर्वाण) जैड़ी अेकांकियां मांय विसयां री विविधता देखण नै मिळै अर वांरै कारण अै आपरै पाठक रै हियै तांई पूगै।

साहित्यकार आपरी कलम सूं जद सबद चितराम उकेर नै आपरी भावनावां पाठकां साम्हीं परगटै, उणनैं **रेखाचितराम** केईजै। जिकौ काम अेक चितेरो आपरी तुलिका अर रंग रै स्सारै सूं करै वौ इज काम साहित्यकार आपरी कलम अर सबदां सूं करै। रेखाचितराम नैं अंग्रेजी में 'स्केच' कैयौ जावै। रचनाकाल विगत री दीठ सूं राजस्थानी में रेखाचितराम रचीजण री परंपरा सन् 1946-47 रै लगैटगै होयी। भंवरलाल नाहटा रौ 'लाभू काकौ' इण विधा री पैली रचना मानीजै। आजादी पछै इण विधा माथै सांतरौ काम होयौ है। इणरै पछै 'जूना जीवता चितराम' (मुरलीधर व्यास), 'सबड़का' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'बानगी' (भंवरलाल नाहटा), 'उणियारा', 'ओळखाण', 'मिनखां री माया' (शिवराज छंगाणी), 'अटारवां' (ब्रजनारायण पुरोहित), 'बारखड़ी' (वेद व्यास), 'यादां रा चितराम' (डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत), 'उणियारा ओळूं तणा' (अस्तअली खां मलकांण) आद रेखाचितरामां री फूठरी परंपरा साम्हीं आयी। ओळूं रै आधार माथै जद रचनाकार आपरी भावनावां अर विचारां नैं सहजता सूं पाठकां साम्हीं राखै, तौ उणनैं **संस्मरण** रौ नांव देईजै। संस्मरणां रौ आधार मिनख, घटना, जात्रा आद होय सकै। डॉ. नेमनारायण जोशी रौ 'ओळूं री अखियातां', डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ 'ओळूं री आरसी', मनोहर सिंह राठौड़ रौ 'यादां रौ झरोखौ', अन्नाराम सुदामा रौ 'आंगण सूं अर्नाकुलम' अर 'दूर दिसावर' जैड़ा संस्मरण सिरै है।

'रिपोर्ट' रौ विकसित रूप **रिपोर्ताज** साहित्यिक विधा रौ रूप लियौ। कम सूं कम सबदां मांय विवरौ मांडणौ रिपोर्ताज री सफळता मानीज्यौ है। राजस्थानी साहित्य मांय रिपोर्ताज विनोद सोमानी हंस रौ 'अेक दिन आपरौ', कुशलकरण रौ 'आवौ हथाई करां', रामनिवास रौ 'तीन बयान', पुरुषोत्तम छंगाणी रौ 'हाथ करींदौ दिल रौ दरियाव', माधव शर्मा रौ 'बजार पट्टै', 'चौड़ै जेब पट्टै', मुरलीधर शर्मा रौ 'नगर मगरै रौ', 'अजबघर मनड़ै रौ' आद आवै। इणां रै अलावा विनोद सोमानी 'हंस', कुशलकरण अर श्रीगोपाल ई कीं 'रिपोर्ताज' लिख्या है।

जीवनी अर **आतमकथा** रै खेतर मांय राजस्थानी रचनाकारां री कलम सुस्त रैयी। 'जीवनी' अर 'आतमकथा' जैड़ी रचनावां घणी कोनी आयी। 'आपणा बापूजी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'शिवचन्द्र भरतिया' (डॉ. किरण नाहटा), 'देस रा गौरव', 'भारत रा निरमाता' (दीनदयाल ओझा), 'महावीर री ओळखाण' (शान्ता भानावत), 'महापुरसां री जीवणियां' (गोविन्द लाल माथुर), 'भगवान महावीर' (डॉ. नृसिंह राजपुरोहित) जैड़ी रचनावां सांम्ही आयी है। मनोज कुमार स्वामी री आतमकथा 'खेचळ अर खेचळ' आतमकथा रै लेखै नूंवी पहल कैयी जाय सकै।

राजस्थानी मांय टाबरां सारू भी गद्य-साहित्य रौ सिरजण होयौ है। आज इण सारू घणौ ई काम होय रैयौ है। इण पेटै बात करां तौ राजस्थानी **बाल-साहित्य** री स्थिति ठीकठाक मान सकां। विजयदान देथा री 'बातां री फुलवाड़ी' (भाग-2) में टाबरां सारू पसु-पंखेरुवां री रोचक कथावां है। इणी भांत राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत री 'टाबरां री बातां', 'हुंकारौ दो सा', अन्नाराम सुदामा रौ बाल-उपन्यास 'गांव रौ गौरव', यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र, रौ बाल नाटक 'राजा सेखचिल्ली', करणीदान बारहठ री रचना 'झिंडियौ', बी. एल. माली 'अशांत' रा बाल उपन्यास 'बिलाणियौ दादौ' अर 'दूधिया दांत', मनोहर सिंह राठौड़ री कृति 'म्हारी पोथी', दीनदयाल शर्मा री कृति 'बाळपणै री बातां', 'संखेसर रा सींग', सुरेन्द्रसिंह शेखावत री बाल कथाकृति 'साची सीख', जयंत निर्वाण री बाल अेकांकी 'खाग्या बाळणजोगा', जेबा रशीद री 'मीठी बातां', डॉ. नीरज दइया री 'जादू रौ पेन', कृष्ण कुमार 'आशु' री 'माटी रौ मोल', शिवराज भारतीय री 'रंग रंगीलौ म्हारौ देस' अर 'मुरधर आई बिरखा राणी', हरीश बी. शर्मा रौ बाल नाटक 'सतोळियौ', मदन गोपाल लढ़ा री 'सपनै री सीख', दुलाराम सहारण री 'क्रिकेट रौ कोड', रामजीलाल घोड़ेला रौ 'जादू रौ चिराग', मनोज स्वामी री 'तातड़ै रा आंसू', कृष्ण कुमार बांदर री 'झगड़ बिलोवणौ खाटी छा', राजूराम बिजारणियां री 'कुचमादी टाबर' अर डॉ. गौरीशंकर कुलचन्द्र री बालकथा कृति 'पछतावौ' आद कृतियां राजस्थानी बाल-साहित्य नैं रातौ-मातौ करयौ है। इणरै अलावा केई पत्र-पत्रिकावां मांय इण पेटै सिरजण लगोलग हो रैयौ है।

राजस्थानी में **गद्यकाव्य** (गद्यगीत) ई लिखीज्या है। जिण काव्य रौ बारलौ सरूप तौ गद्य जैड़ौ होवै पण भावां में काव्य रौ रस आवै। इणमें आलंकारिक, चमत्कारी भासा रौ प्रयोग करीजै वौ गद्यगीत कहीजै। दरसन, अध्यात्म अर जीव-जगत रा विसयां नैं अंवेरतौ 'गद्य-काव्य' राजस्थानी में ई रातौ-मातौ होय रैयौ है। जूना कलात्मक गद्य री ओळ रा गद्य-गीत, जिणां में भावां री सबळता, संगीत री लय, वक्रोक्ति अर ध्वनि-संकेत (ध्वन्यात्मकता) जैड़ी विसेसतावां इणां में होवै। ठा. रामसिंघ तंवर, विद्याधर शास्त्री, मुरलीधर व्यास अर कुं. चन्द्रसिंह रा नांव गिणावण जोग है, जिकै गद्य-गीतां री रचना करी। राजस्थानी में कीं गद्य-काव्य संग्रह ई प्रकासित होया है, जिणां में डॉ. मनोहर शर्मा रौ 'सोनलभींग', कन्हैयालाल सेठिया रौ 'गळगचिया', गोविंद अग्रवाल रौ 'नुकती-दाणा' अर विक्रमसिंह चौहान रौ 'आतम दीठ' विसेस रूप सूं गिणाया जाय सकै।

राजस्थानी में भारतीय भासावां री रचनावां रौ **उल्थौ (अनुसिरजण)** ई मोकळौ होयौ है। सरुपोत में 'श्रीमद्भगवत गीता', उमर खैय्याम री 'रुबाइयां', कालिदास रै 'मेघदूत', रवीन्द्रनाथ टैगोर री 'गीतांजळी' अर वांरी दूजी पोथ्यां रौ ई राजस्थानी में उल्था करीज्या। भारतीय अर विदेसी भासावां री केई कृतियां रौ राजस्थानी में उल्थौ करण रौ जस चंद्रप्रकास देवल नैं जावै। वै फ्योदोर दोस्तोयेवस्की रै उपन्यास 'क्राइम एंड पनिशमेंट' अर सैम्युअल बैकेट रै नाटक 'वेटिंग फोर गोडो' रै अलावा आठ भारतीय भासावां रै पुरस्कृत कविता-संग्रहां रौ ई राजस्थानी में उल्थौ कर चुक्या है। इणां सूं पैलां राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, किशोर कल्पनाकांत, रावत सारस्वत, पारस अरोड़ा, पं. गिरधरलाल शर्मा, डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, पं. गिरधारीलाल व्यास, नृसिंह राजपुरोहित, डॉ. मनोहर शर्मा, डॉ. नारायणसिंह भाटी, डॉ. वेंकट शर्मा, डॉ. रामप्रसाद दाधीच, डॉ. मनोहर प्रभाकर, ओंकारश्री आद विद्वान लेखक राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां में केई महताऊ रचनावां रौ राजस्थानी उल्थौ करयौ। राजस्थानी उल्था रौ सै

सूं बेसी काम साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं होयौ है। साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत कृतियां रौ राजस्थानी उल्थौ करण वाळा में डॉ. सत्यनारायण स्वामी, रामनरेश सोनी, जेठमल मारू, अर्जुनसिंह शेखावत, उपेन्द्र अणु, मनोहरसिंह राठौड़, रामस्वरूप किसान, आईदानसिंह भाटी, श्याम महर्षि, डॉ. मदन सैनी, शंकरसिंह राजपुरोहित, कमल रंगा, कैलाश मंडेला, दुलाराम सहारण, डॉ. नीरज दइया, पूर्ण शर्मा 'पूरण', चेतन स्वामी, मालचंद तिवाड़ी, जितेन्द्र सोनी, रवि पुरोहित, संजय पुरोहित, डॉ. शारदा कृष्ण, मोनिका गौड़, डॉ. कृष्णा जाखड़, डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा आद रा नांव लिखण जोग है।

राजस्थानी गद्य रौ विगसाव बगत सारू होवतौ रैयौ है। इण बगत गद्य लेखन री परंपरा सांतरी रैयी है। जूनै साहित्य मांय बात अर ख्यात साहित्य मांय खूब लिखीज्यौ है। आजादी रै पछै राजस्थानी साहित्य लेखन में लगोलग इधकाई अर बधेपौ होवतौ रैयौ। जूना बगत सूं लेय'र आज लग नित नूंवा विसयगत, रूपगत बदळाव साथै विकसाव रै मारग बैवती साहित्य-जातरा बधती निजर आवै।

⌘⌘

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया राजस्थानी साहित्य रै वीरगाथा काल रौ बगत मानियौ—
   (अ) वि. सं. 835 सूं 1240 (ब) वि. सं. 1241 सूं 1584
   (स) वि. सं. 1585 सूं 1913 (द) वि. सं. 1614 सूं 1857
   ( )

2. 'कान्हड़दे प्रबंध' रा रचणहार कुण है?
   (अ) श्रीधर व्यास (ब) शिवदास गाडण
   (स) पदमनाभ (द) वीरभाण रतनू
   ( )

3. आं मांय सूं कुणसी कविता-पोथी ईसरदास बारठ री कोनी—
   (अ) नागदमण (ब) देवियांण
   (स) हाला-झाला रा कुंडळिया (द) हरिरस
   ( )

4. कवि मंछाराम छंद-सास्त्र रौ कुणसौ ग्रंथ लिख्यौ?
   (अ) कवि मत मंडण (ब) रघुवरजस प्रकास
   (स) छंदां री छौळ (द) रघुनाथ रूपक गीतां रौ
   ( )

5. फागु, धमाल, रासउ अर ढाळ किण सैली री रचनावां है?
   (अ) चारण सैली (ब) लौकिक सैली
   (स) जैन सैली (द) सामान्य गुणधर्मी सैली
   ( )

6. 'विरुद छिहत्तरी' अर 'किरतार बावनी' रा रचेता कुण है ?
   (अ) दुरसा आढा (ब) बांकीदास आसिया
   (स) रामनाथ कविया (द) पृथ्वीराज राठौड़
   ( )

7. आधुनिक काल रा सगळां सूं पैलड़ा कवि मानीजै—
   (अ) शंकरदान सामौर (ब) सूर्यमल्ल मीसण
   (स) ऊमरदान लाळस (द) नारायणसिंह भाटी
   ( )

8. आं मांय सूं कुणसी पोथी शिवचंद्र भरतिया री कोनी ?
   (अ) फाटका जंजाळ (ब) केसर विलास
   (स) कनक-सुंदर (द) चम्पा
   ( )

9. 'सांझ' कविता-पोथी रा कवि कुण है ?
   (अ) नारायणसिंह भाटी (ब) कन्हैयालाल सेठिया
   (स) सत्यप्रकाश जोशी (द) चन्द्रसिंह बिरकाळी
   ( )

10. 'धर कोसां धर मजलां' निबंध-संग्रै रा निबंधकार है—
   (अ) मूळदान देपावत (ब) डॉ. किरण नाहटा
   (स) जहूरखां मेहर (द) सूर्यशंकर पारीक
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा री उत्पत्त किसी अपभ्रंस सूं मानी जावै ?
2. राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रै कालक्रम नैं कित्तै भागां में बांटीज्यौ है ?
3. आदिकालीन जैन सैली री दो रचनावां अर वांरै रचनाकारां रा नांव लिखौ।
4. मध्यकाल रै अैतिहासिक गद्य री चार विधावां रा नांव लिखौ।
5. ईसरदास बारठ री दो भक्ति-भाव री रचनावां बतावौ।
6. सायांजी झूला री कृष्णभक्ति धारा री दो पोथ्यां कुणसी है ?
7. प्रगतिशील काव्यधारा रै तीन कवियां रा नांव बतावौ।
8. आधुनिक राजस्थानी साहित्य री पैलड़ी कहाणी अर उणरै रचनाकार रौ नांव लिखौ।
9. भगवती प्रसाद दारूका रै लिख्योड़ा नाटकां रा नांव बतावौ।
10. आधुनिक काल री च्यार गद्य विधावां रा नांव लिखौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी साहित्य रै वीरगाथा काल री विसेसतावां बतावौ।
2. वीरगाथा काल रै दो जैन कवियां अर वांरी रचनावां रा नांव लिखौ।

3. डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया राजस्थानी साहित्य रौ काल-विभाजण किण भांत कर्‍यौ है ?
4. राजस्थानी में प्रेमाख्यान परंपरा री रचनावां री ओळखाण करावौ।
5. भक्तिकाल री खास-खास रचनावां रा नांव लिखौ।
6. पृथ्वीराज राठौड़ विरचित 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' विसेसतावां बतावौ।
7. आधुनिक काल री प्रकृतिपरक रचनावां री ओळखाण करावौ।
8. राजस्थानी गद्य-काव्य री च्यार पोथ्यां अर वांरै रचनाकारां रा नांव लिखौ।
9. 'डांखळा' अर 'हाइकू' रौ परिचै करावौ।
10. रेखाचितराम अर संस्मरण में कांई फरक है ? बतावौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा री उत्पत्त अर विकसाव माथै अेक लेख लिखौ।
2. आदिकाल री खास रचनावां अर वांरै रचनाकारां रौ परिचै दिरावौ।
3. ''राजस्थानी साहित्य रौ मध्यकाल साचै अरथां में भक्तिकाल है।'' इण कथन नैं पुख्ता करण सारू आपरा विचार प्रगट करौ।
4. भक्तिकाल रै खास रचनाकारां रौ परिचै देवता थकां वांरी रचनावां री विसेसतावां बतावौ।
5. राजस्थानी रै आधुनिक साहित्य री कहाणी विधा माथै अेक आलेख लिखौ।
6. आधुनिक काल री प्रमुख विधावां माथै आपरा विचार प्रगट करौ।
7. राजस्थानी नाटकां री उत्पत्त अर विकसाव री विरोळ करौ।

❑काव्य-सास्त्र

काव्य री परिभासा, तत्त्व, भेद, प्रयोजन अर राजस्थानी छंद-अलंकार

पाठ परिचै

इण पाठ में काव्य री परिभासा, उणरै तत्त्वां, भेदां, प्रयोजनां रै सागै छंद अर अलंकार सास्त्र री चरचा करांला। इण चरचा सूं पैलां औ जाणणौ जरूरी है कै काव्य रौ अरथ कांई है? काव्य मांय दो पख रैवै— अेक तौ अनुभूति या भावपख अर दूजौ अभिव्यक्ति या कलापख। जदपि दोनूं पखां रौ आप-आपरौ महत्त्व है अर दोनूं ई अेक-दूजै सूं संबंधित है, फेरूं ई घणौ महत्त्व भावपख नैं ई दिरीजै। रस नैं काव्य री आतमा मानण वाळा आचार्य भावपख नैं अर कला-पख नैं थापन करण वाळा आचार्य अभिव्यक्ति नैं महत्त्व प्रदान करै। आपां रै अठै भावपख माथै कीं बेसी बळ दिरीज्यौ है। भारत अर पाश्चात्य विद्वानां कानी सूं काव्य नैं लेयनै करीजी परिभासावां सूं औ विसय औरूं स्पस्ट होवैला।

काव्य रा तत्त्वां रै मुजब पाश्चात्य देसां मांय कल्पना-तत्त्व नैं खास आसरौ मिळ्यौ है। इणरी वजै आ है कै पाश्चात्य समीक्षा-सास्त्र रा आदू आचार्य अरस्तू कला नैं अनुकरण मानी है, जदकै आपां रै अठै रा आदू आचार्य भरतमुनि रस अर भावां नैं ई प्रधानता दीवी है। सार री बात आ है कै भारतीय मनोवृत्ति कीं मांयली बेसी है अर पाश्चात्य में बारली माथै बेसी बळ है। इणरौ मतळब औ नीं है कै पाश्चात्य देसां मांय मांयलै पख री उपेक्षा है। दरअसल काव्य रौ मूळ तत्त्व तौ रागात्मक या भावात्मक ई है, पण उणरै साथै पाश्चात्य देसां मांय कल्पना-तत्त्व, बुद्धितत्त्व अर शैली-तत्त्व नैं ई मान्यौ गयौ है।

काव्य अर साहित्य में कांई फरक है— इण बात नै जाणणौ जरूरी है। 'साहित्य' सबद आपरै व्यापक अरथ में सारै वाङ्मय रौ द्योतक है। मतळब औ कै वाणी रौ जित्तौ ई प्रसार है, वौ सब साहित्य रै त्हैत है। इण अरथ में विग्यापन अर सूचना-पत्र तकात साहित्य मांय आय जावै। पण संकुचित अरथ में तौ साहित्य रौ काव्य सूं ई अभिप्रेत होवै— काव्य मांय गद्य अर पद्य दोनूं ई आवै। 'काव्य' सबद कविता रौ पर्याय नीं है, जिकी कै पद्य री बोधक है। उल्लेखजोग औ है कै पद्यबद्ध होवण सूं इज कोई रचना कविता या काव्य नीं बण जावै, पद्य तौ कविता रौ आकार मात्र कैईज सकै, उणरी आतमा तौ रस मांय ई होवै। इणी वास्तै आचार्य विश्वनाथ काव्य री परिभाषा दीवी— 'वाक्य रसात्मकं काव्यम्' यानी रसयुक्त वाक्य काव्य है। काव्य-सास्त्र रा आचार्यां काव्य रचण रा केई प्रयोजन ई बताया है, जिणां री विस्तार सूं चरचा इण पाठ में करीजी है।

इणी भांत छंद-सास्त्र री पारिभासिक रूप सूं न्यारी-न्यारी व्याख्या करीजी है। छंदां रौ जूनौ रूप सायद वेदां री रिचावां मांय अर लौकिक रूप में लोक री जुगां चावी विधा लोकगीतां में निजर आवै। लोकगीतां री भलांई सास्त्रीय परिभासा कोनी, पण लय, सुर, ताल, यति अर गति रै बिना अै गाईजै ई कोनी। काव्य-सास्त्र रै मुजब वरण, मात्रा, यति, गति, लय, सुर, तुकबंदी रौ विचार करनै जिकी सबद-रचना करी जावै उणनैं छंद कैवै। छंद तय करयोड़ा वरणां अर मात्रावां में रच्योड़ी अेक पद्य रचना है। इणरी व्युत्पत्ति संस्कृत रा छद् धातु सूं मानीजै। इणरौ अरथ आवृत्त करणौ, रक्षित अर राजी करणौ होवै। डिंगळ गीत छंद राजस्थानी छंद-सास्त्र री इधकाई है। इणरी मठोठ न्यारी-निकेवळी है अर इण रा केई भेद-उपभेद है। डिंगळ छंदां री छटा सूं छंद-सास्त्र घणौ सिमरध होयौ है।

राजसभावां में राजकवियां री विरुदावळी रा छंद, जुद्ध रा मैदान में वीरां री हूंस जगावण खातर वीरता रा छंद अर कीरत रा बखाण कै पछै जस-अपजस नैं उजागर करण वाळा छंदां सूं राजस्थानी काव्य भरयोड़ौ है। स्तुतिपरक

रचना ई छंद कहीजै। स्तुति आपरै इस्ट देवता री होवौ चायै आपरै आश्रयदातावां री, जिणमें उण रा विरद याद करीजै, छंदां री ओळी में आवै।

'राव जैतसी रौ छंद', 'रणमल्ल छंद', 'माताजी रा छंद', 'गोरखनाथजी रौ छंद', 'पाबूजी रौ छंद' आद रचनावां में नायक रै चरित्र रौ पुरजोर वरणाव होयौ है। 'पद्य' अर 'छंद' अेक अरथ में ई लिरीजै। छंद रौ अेक दूजौ अरथ बांधणौ (बंधन) ई होवै। छंदां रै नियमां में बंधनै कविता नैं ठैराव, वेग, राग अर फूठरापौ मिळै। नदी जिण भांत आपरै दोय किनारां में बंधियोड़ी वेग रै साथै तौ कदैई उतरती-चढती, मंथर गति सूं तय मारग माथै निरबंध बैवती समदर में रळ जावै, उणीज भांत छंद कविता में रम जावै।

काव्य री परिभासावां

काव्य री परिभासा अर अरथ सारू भारतीय अर पाश्चात्य विद्वानां आप-आपरा विचार प्रगट करया है। ऊपरी तौर सूं देखां तौ अै काव्य सारू अलग-अलग विचार लखावै, पण सगळा विचारां रौ मेळ इज काव्य रौ साचौ रूप है। काव्य रै रूप अर अरथ री विविध पखां सूं विरोळ इणरौ सखरौ रूप प्रगट करै। आं विद्वानां री आप-आपरै मतां मुजब काव्य री परिभासावां इण भांत है—

संस्कृति रै विद्वानां मुजब

''साहित्य रौ मतलब सबद अर अरथ रौ सहभाव होवै।''

—आचार्य भामह

''साहित्य उणनैं कैवै जिण मांय मंगळमयी अरथ री पदावली सामल होवै।''

—आचार्य दंडी

''जिण मांय सबद गुणालंकार सूं संस्कारित होवै अर फूठरापै रा बीज-तत्त्व सागै होवै।''

—आचार्य वामन

''जिण मांय रस होवै, वौ साहित्य है।''

—पं. विश्वनाथ

हिन्दी रा विद्वानां मुजब

''ग्यान-राशि रौ संचित कोश ई साहित्य है।''

—पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी

''साहित्य जीवण री आलोचना है.... उण मांय जीवण री व्याख्या अर आलोचना होवणी चाईजै।''

—मुंशी प्रेमचंद

आथूणा विद्वानां रै मुजब

''काव्य सूं मतलब वौ अनुकरणात्मक पद्य है जिणरौ मूळ काम शिक्षा अर आणंद देवणौ है।''

—सिडनी

''काव्य कल्पना अर भावां री भासा है।''

—हैजालिट

आं परिभासावां रै आधार माथै आपां कैय सकां हां कै साहित्य अर काव्य अेक सिक्कै रा इज दो पहलू है। मतलब कै दोनूं लगैटगै अेक इज है। जिण मांय सबद अर अरथ रौ सांतरौ मेळ, फूठरापौ, अलंकार, रस, ग्यान, आणंद, शिक्षा, जीवण री आलोचना अर कल्पना आद तत्त्वां रौ मेळ होवै, उणनैं काव्य मानीजै। औ काव्य मनोरंजन अर आणंद सागै ग्यान देवै।

काव्य रा तत्त्व

काव्य रा दो पख मानीजै— 1. भाव-पख अर 2. कला-पख। भाव-पख में अनुभूतियां आवै तौ कला-पख में अनुभूतियां नैं प्रगट करण वाळी भासा अर सैली आवै। दोनां री आप-आपरी महताऊ ठौड़ है।

आं दोनां में काव्य रा तत्त्वां रौ सांतरौ मेळ मिळै। मनोवैग्यानिकां मिनख रै मनोभावां नैं तीन भागां में बांट्या है— 1. भावना, 2. ग्यान अर 3. संकल्प।

पाश्चात्य विद्वानां काव्य री विरोळ करनै इण रा चार तत्त्व साम्हीं राख्या है— 1. भाव, 2. कल्पना, 3. बुद्धि (विचार) अर 4. सैली। आं री विगत इण भांत है।

1. **भाव-तत्त्व** : 'भावां बिना किसौ भव'। भाव, विभाव अर स्थायी भाव —अै भावां री दसावां है। आं सूं उवाचित होयनै इज काव्य में रस रौ चरम निगै आवै। भाव रौ मूळ रस है अर रस काव्य री आत्मा रै रूप में स्वीकारीजै।

2. **कल्पना-तत्त्व** : कल्पना री पांख बिना साहित्य रौ विस्तार अर ऊंची-गैरी उडाण कठै? कल्पना तत्त्व रै सायरै इज काव्य कूंकूं पगलिया करै।

3. **बुद्धि-तत्त्व** : भाव ग्यान बिना अडोळा। बिना ईंधन री गाडी। सगळै जगत, व्यवहार, सास्त्र अर काव्य रौ मूळ तत्त्व है— विचार (बुद्धि)। भावां रै विकार नैं साफ करण रौ काम बुद्धि-तत्त्व इज करै।

4. **सैली-तत्त्व** : भावां री घड़त अर बणगट सैली रै सायरै होवै। भावां नैं नूंवी, ऊजळी अर आकर्षक दीठ देवण रौ काम सैली तत्त्व करै। भाव अर सैली अेक दूजै रा पूरक है, जिका खीर-खांड ज्यूं मिळनै काव्य री मिठास नैं पुरसै।

काव्य रा भेद

काव्य रै भेदां बाबत चरचा करतां आ बात ध्यान में राखणी जरूरी है कै इण संबंध में भारतीय परंपरा अर पाश्चात्य परंपरा में फरक है। भारतीय परंपरा में काव्य रौ विभाजन केई आधारां माथै करीज्यौ है। पैलौ आधार इंद्रियां सूं संबंध राखै। जिकौ काव्य अभिनीत होयनै देख्यौ जावै, वौ 'दृश्य काव्य' है अर जिकौ कानां सूं सुण्यौ जावै, वौ 'श्रव्य काव्य' बाजै जदपि वौ पढियौ ई जावै।

दृश्य काव्य

दृश्य काव्य रौ आणंद जनसाधारण ई लेय सकै, इण वास्तै इणनैं 'पांचवौं वेद' कैयौ गयौ है। दृश्य काव्य में देखण वाळै नैं कल्पना माथै घणौ जोर नीं देवणौ पड़ै। उण मांय भूत ई वरतमान री दांई घटित होवता दिखाई देवै। इणमें जठै देखणियां री कल्पना माथै कम जोर पड़ै, बठै ई रचणहार री कल्पना माथै बेसी भार रैवै, क्यूंकै उणनैं प्रस्तुति री सारी बातां रौ ध्यान राखणौ पड़ै।

श्रव्य काव्य

श्रव्य काव्य पठित समाज सारू होवै। इणमें पढणिया अर सुणणिया रौ सीधौ संबंध रैवै। इणमें सबद इज मानसिक चितराम उपस्थित करै, सो इणमें ग्राहक कल्पना रौ बेसी काम पड़ै। इण काव्य में वरणन अर प्राक्कथन री प्रधानता रैवै। बियां कथोपकथन ई रैवै, पण अलबत कम।

दृश्य काव्य रा भेद

आकार रै आधार माथै दृश्य काव्य रा नाटक, रूपक, नाटिका, भाण, प्रहसन आद 10 भेद करीज्या है। इणां री विस्तार सूं जाणकारी आचार्य राजशेखर रै 'दशरूपक' नांव रै ग्रंथ में दिरीजी है।

श्रव्य काव्य रा भेद

श्रव्य काव्य तीन तरै रा होवै— 1. पद्य, 2. गद्य, अर 3. चंपू।

पद्य श्रव्य काव्य मांय संगीत अर छंद री प्रधानता रैवै। बियां आजकाल पद्य में नियम अर नाप-तोल रौ उत्तौ मान नीं रैयौ, जित्तौ सुणण री सुखदता रौ। सो आजकाल छंद विहूण पद्य रौ ज्यादा चलण है। पद्य मांय गद्य री तुलना में भाव रौ प्राधान्य रैवै। बंध रै आधार माथै 'मुक्तक' अर 'प्रबंध' दो विभाग पद्य रा करीजै।

मुक्तक काव्य रा छंद अपणै आप में पूरा हुवै, वै अेक दूजै सूं संबंध नीं राखै। सो मुक्तक में अेक-अेक छंद री साज-संवार माथै बेसी ध्यान दिरीजै। मुक्तक काव्य रा आकार री दीठ सूं दो भेद हुवै— अेक पाठ्य अर दूजौ गेय, जिणनैं 'प्रगीत' ई कैयौ जावै। गेय मांय पाठ्य री तुलना में वैयक्तिकता, भावात्मकता अर आत्मनिवेदन रो पख बेसी रैवै।

प्रबंध काव्य में तारतम्य होवै अर पूर्वापर संबंध रैवै। इणमें वरणन, प्राक्कथन, पारस्परिक संबंध अर सामूहिक प्रभाव री प्रधानता रैवै। जीवण री अनेकरूपता अर अेकपक्षता रै आधार माथै प्रबंध काव्य रा दो भेद करीजिया है— 1. महाकाव्य, अर 2. खंडकाव्य। महाकाव्य मांय अेक तै आकार रै अलावा विसय री महानता अर उदात्तता रैवै। महाकाव्य सारू कीं नियम ई होवै जिणां रै पाळन सूं 'महाकाव्य' बाजै। आकार में वौ आठ सरगां सूं कम नीं होवणौ चाईजै।

खंड काव्य में जीवण रै अेक ई पहलू या अेक ई घटना नैं महत्त्व दियौ जावै।

गद्य

गद्य विविध रूपां में लिख्यौ जावै, सो इणरा अनेक भेद है। गद्य री बियां अठै प्राचीन परंपरा रैयी है, पण पाश्चात्य परंपरा रै कारण केई नूंवा रूप अंगेजिया है। गद्य रा अै विभिन्न रूप विसय, आकार, सैली इत्याद रै कारण साम्हीं आया है, जिका विधावां रै रूप में जाणीजै। आज गद्य री केई विधावां प्रचलित है, जिंया कै उपन्यास, कहाणी, निबंध, व्यंग्य, लेख, आलेख, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आतमकथा, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र इत्याद।

इण भांत काव्य यानी कै साहित्य मानव समाज सूं अभिन्न जुड़्यौ थकौ है अर आपरै विविध रूपां सूं मानव नैं संतोष-संबळ देय रैयौ है।

काव्य रा प्रयोजन

काव्य री रचना क्यूं करीजै? आखिर काव्य री रचना रै लारै प्रयोजन कांई है? साहित्य रा आचार्यां काव्य रा भिन्न-भिन्न प्रयोजन मानै। आचार्य मम्मट आपरै ग्रंथ 'काव्यप्रकाश' मांय विस्तार सूं साहित्य रा प्रयोजन बताया है— ''काव्य जस सारू, धन सारू, वैवार जाणण सारू, अनिस्ट रै निवारण सारू, आणंद सारू अर उपदेस सारू होवै।'' इणां में सूं जस, धन अर अनिस्ट निवारण कवि सारू प्रयोजन होवै अर बाकी रा प्रयोजन पाठकां सारू होवै।

जस सारू : जस या कीरत मिनखमात्र री कमजोरी होया करै। बियां जस अेक प्रधान प्रेरक सगती होवै अर कवि ई काव्य-रचना अमूमन जस सारू ई करिया करै।

धन सारू : काव्य रै भौतिक प्रलोभनां में सैं सूं बेसी धन है। साहित्य रै इतिहास माथै निजर न्हाखां तौ असंख्य अैड़ा उदाहरण मिळ जावैला, जिका दरसावै कै काव्य रै कारण कवियां नैं धन हासल होयौ। बियां सगळा ई कवि धन रै लोभ सूं प्रेरित नीं होवै।

वैवार जाणण सारू : काव्य सूं लोक-वैवार रौ ग्यान पाठकां नैं तौ होवै इज है, पण रचणहार नैं ई होवै क्यूंकै लिखण सूं पैलां वौ आपरै ग्यान नैं पक्कौ कर लेवै। जियां कै किणी प्राचीन काव्य सूं उण बगत रै रीत-वैवारां रौ ग्यान होवै।

अनिस्ट निवारण सारू : अनिस्ट निवारण सारू ई काव्य री रचना करीजै, ज्यूं कै आपरै 'बाहु' (भुजा) री पीड़ा रै निवारण सारू गोस्वामी तुलसीदास 'हनुमान बाहुक' काव्य री रचना करी। आजकाल समाज अर देस रै कस्ट-निवारण सारू ई काव्य रचनावां करीजै।

आणंद सारू : काव्य रौ मूळ ध्येय आणंद इज है। काव्य रै आस्वादन सूं जिकौ रस-रूप अर आणंद मिळै, वौ छानौ नीं है। हालांकै औ पाठकां रौ लक्ष्य है क्यूंकै इणसूं उणां नैं आणंद मिळै, फेरूं ई इण मांय वौ अंतस रौ सुख ई सामल है जिण सूं प्रेरित होयनै कवि काव्य रौ सिरजण करै।

उपदेस सारू : काव्य मांय उपदेस होवणौ चाईजै या नीं, इण संबंध में वाद-विवाद होवता रैया है। उपदेस सारू तौ धरम-ग्रंथ होया करै, पछै काव्य मांय उपदेस क्यूं? पण काव्य रै माध्यम सूं जिकौ उपदेस दिरीजै, वौ व्यंजना-प्रधान होयां सूं सरस होया करै। काव्य रौ रस उपदेस रूपी कड़वी औखद नैं ई ग्रहण करण जोग बणाय देवै। जियां बिहारीलाल रै उपदेसपरक अेक दूहै सूं महाराजा जयसिंह माथै जादू रौ-सो असर होयौ। दूहौ इण भांत है—

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यो, आगै कौन हवाल।।

आपरै सुख सारू : गोस्वामी तुलसीदास आपरै काव्य 'रामचरितमानस' नैं 'स्वांत: सुखाय' कैयौ है। इणमें कोई संदेह नीं कै सत्काव्य 'स्वांत: सुखाय' ई लिखियौ जावै, पण इणरौ मतळब औ नीं है कै वौ सुणणियां या पढणियां सारू नीं व्है। काव्य नैं कैवण अर सुणण में सुख मिळै, पण आत्माभिव्यक्ति रौ सुख अभिव्यक्त कर देवण मात्र सूं खतम नीं होय जावै।

राजस्थानी छंद

छंदां रौ मैतव

छंदां रै मांय थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता है। गूढ अर गैरौ अरथ समझावण री खेचळ अै करै। संगीतात्मकता रौ गुण होवण रै कारण सुणण में आछा पण लागै। गेयता रै कारण वातावरण नैं सरस बणावै। आं छंदां रै मिठास में मानखौ घड़ी भर आपरा दुखड़ा भूलनै सुख री घड़ियां चितारै। केई छंद हियै रा कंवळा, मीठा, निरमळ भावां नैं उजागर करण वास्तै बरतीजै। माधुर्य अर प्रसाद गुणां सूं लबालब होयोड़ा आं छंदां री मानखै नैं घणी दरकार आज ई है। क्यूंकै इण आर्थिक अर भौतिक जुग रौ मिनख सांति चावै। इण अपरोगी दुनिया में अपणायत चावै। अेकलौ बैठौ मिनख रेड़ियै, टेपरिकार्डर सूं अैड़ा छंदां नैं सुण'र जीवण री नीरस घड़ियां नैं सरस बणाय सकै।

ओज गुणवाळा वीर छंदां नैं सुणां तौ आज ई उणियारै माथै वीर-भावां रा सैलाण देख्यां बिना नीं रैवां। छंदां में वा ताकत है, बूतौ है कै जिण रस रौ छंद बोलीजै या पढीजै, उठै उणीज तरै रै भावां रौ वातावरण बण जावै। राग-रागनियां रौ आं छंदां सूं गैरौ जुड़ाव है। सोरठ, मांड, मल्हार, राग रा छंद आपरै हेताळू रै हियै में हेत जगावण वाळा है। आं छंदां री महिमा बखाण करां जित्ती ई थोड़ी है।

छंदां रा भेद

छंदां रा केई भेद-उपभेद मानीजै, पण मोटै रूप सूं छंद दोय तरै रा होवै—

1. मात्रिक छंद अर 2. वरणिक छंद।

1. मात्रिक छंद

जिण छंद में मात्रावां री गिणती कर छंद बणाईजै, वौ मात्रिक छंद मानीजै। मात्रावां री गिणती सूं छंदां री ओळ्यां में यति, गति अर लय नैं परोटतां जिकी रचना करीजै, वौ मात्रिक छंद मानीजै। दूहौ, चोपाई, रोला, उल्लाला, छप्पय, गीत, हरिगीतिका आद मात्रिक छंदां रा उदाहरण है।

2. वरणिक छंद

जिणमें वरणां री गिणती रै मुजब यति, गति बरतीजै अर मात्रावां रै आधार माथै काव्य-रचना रौ सिरजण करीजै, उणनैं वरणिक छंद कैवै। भुजंगी, भुजंगप्रयात, त्रोटक, सवैया, कवित्त आद वरणिक छंदां रा उदाहरण है।

आं दोनूं तरै रा छंदां में ई वांरै चरणां री मात्रावां अर वरणां री गिणती मुजब तीन भेद बखाणीज्या है—

1. *सम छंद* : जिणमें छंदां रै चरणां में मात्रावां या वरणां री गिणती बराबर होवै। अेक समान मात्रावां या वरणां री गिणती वाळा छंदां नैं सम छंद कैवै। चौपाई सम छंद है।

2. *विसम छंद* : जिणमें छंदां रै चरणां री मात्रा या वरण न्यारा-न्यारा होवै, अेक समान नीं होवै, वौ विसम छंद है। छप्पय, कुंडळिया विसम छंद है।

3. *अरधसम छंद* : आं छंदां में पैला अर तीजा, दूजा अर चौथा चरणां री मात्रावां या वरणां में समानता होवै। दूहौ अरधसम मात्रिक छंद रौ चावौ उदाहरण है। आं रै टाळ केई गणबद्ध छंद (भगण, मगण), मुक्तक छंद, साधारण छंद, दंडक छंद रै रूप में ई ओळखीजै। जद छंदां री गैराई सूं व्याख्या करां तौ अै रूप ई साम्हीं आवै, पण मूळ में छंदां रा दोय भेद है, वै है मात्रिक छंद अर वरणिक छंद।

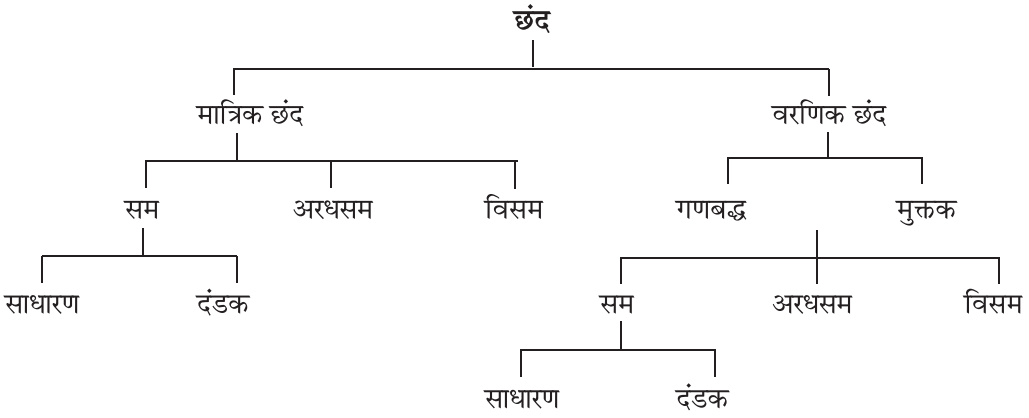

राजस्थानी साहित्य में गीत-छंदां री आपरी न्यारी बानगी देखण नै मिळै। छंद-सास्त्र रा ग्रंथां में गीतां री न्यारी-न्यारी गिणती रा दाखला मिळै। 'रघुनाथ रूपक' में 72 भांत रा गीतां रौ वरणाव मिळै। 'कवि कुळबोध में' 84 अर 'रघुवरजस प्रकास' में 91 गीत-छंदां रा दाखला दियोड़ा है। पाठ्यक्रम सारू तय करयोड़ा कीं छंदां री परिभासा अठै दाखलै समेत दिरीजी है—

1. वेलियो सांणोर

डिंगळ-काव्य में बरतीजण वाळा घणकरा मात्रिक छंदां में 'सांणोर' रा केई भेद अर उपभेद है। छोटा सांणोर रा चार भेदां में वेलियो गीत अेक है। रघुनाथ रूपककार इण रा लक्षण इण भांत बताया है—

चार भेद तिण रा चवै, कवियण बड़ ओकूब।
समझ वेलियो, सोहणो, पुड़द जांगड़ो खूब।।

इणरै सरूप री व्याख्यां इयूं करै—

सोळै कळा विषम पद साजै। सम पद पनरै कळा समाजै।।
धुर अठार मोहरा गुरु लघुधर। कहजै 'मंछ' वेलियो इमकर।।

वेलियो छंद रै विसम पदां में 16 अर सम पदां में 15 मात्रावां व्है। औ तौ छंद रौ सामान्य गुण है। पण कठैई-कठैई इणरै पैलै चरण (पैला द्वाळा में) 18 मात्रावां ई बरतीजै। तुकांत में गुरु-लघु (ऽ।) व्है। पिंगळ-सास्त्र में इणनैं अरधसम मात्रिक छंद कैवै। बीकानेर महाराजा पृथ्वीराज राठौड़ रचित 'वेलि क्रिसन-रुकमणी री' रचना वेलियो छंद में करीजी है। वेलियो छंद रा दाखला—

सरसती कंठि श्री गृहि मुखि सोभा,
भावी मुगति तिकरि भुगति।
उवरि ग्यान हरि भगति आतमा,
जपै वेलि त्यां पै जुगति।।
('वेलि क्रिसन-रुकमणी सूं)

दिल अंतर अेह विचार री दसरथ,
धर पदवी जुवराज सधीर।
सो दैणी विसवा ही वीसै,
राज जोग दीसे रघुवीर।।
('रघुनाथ रूपक' सूं)

गीत छंद त्रबंकड़ो

राजस्थानी रौ औ चावौ छंद है। इणरै विसम चरणां में 16-16 मात्रावां व्है अर दूजा नै चौथा री तुक मिळै। अै त्रबंकड़ो गीत रा लक्षण है। कवि कैवै कै छोटा सांणोर रै ज्यूं विसम पद राख नै (जिणमें 16 मात्रावां होवै) दूजा अर चौथा री तुक मिलावौ। रघुनाथ रूपक में कवि मंछा राम इण भांत वरणाव करै—

चरण विसम सांणोर लघुचा, दुवै चतुर पद मोहरा दाखो।
कहै मंछ कर गीत त्रबंकड़ो, भला जिकण में प्रभु गुण भाखो।।

इण गीत नैं घोड़ादमो ई कैवै। त्रबंकड़ो गीत-छंद रा दाखला इण भांत है—

अंगद मेलियो सद दूत अपंपर, वळ अकलां मजबूत वडाळो।
वप सिणगार धूत खळ बैठो, रचे सभा अदभूत रढाळो।।
मुणै जाय हरि मेले मोनूं, जड! तोनूं आगूंच जतावूं।
सीस नमाय सिया ले साथै, वचसी जदां उपाव बतावूं।।

××

मुगट उतार सुघट दसमुख रा, लेकर उघट धुजाई लंका।
बाल सुतण्ण रचियो विग्रह, आयो राघव कनै असंका।।

कुंडळियो छंद

औ मात्रिक छंद है। औ पैली अेक दूहै अर पछै 24-24 मात्रावां रा चार चरणां में पूरौ व्है, जिका रोळा छंद व्है। औ दूहा अर रोळा छंद रा मेळ सूं बणै। चौथा अर पांचवां पद में सिंहावलोकन व्है। पैला पद रा सरुआती वाळा सबद अंत में ई आवै। रघुनाथ रूपककार कुंडळिया छंद रा लक्षण नीं लिख्या, पण ग्रंथ में जिका कुंडळिया आया, उणां रा लक्षण लिख्या है। उणां झड़उलट, राजवट, सुद्ध अर दोहाळ कुंडळिया रा दाखला देवता थकां इण रा चार रूप बताया है। अठै फगत सुद्ध कुंडळिया रा लक्षण अर दाखलै री बानगी दी जावै—

जीव उधारे जगत रा, किता सुधारै काम।
भार उतारै भूम रो, धणी पधारै धाम।।

धणी पधारै धाम, सुजस खाटे जग सारे।
राज कियो बड रीत, गिणे व्रष सैंस इग्यारे।।
रह्या जित रघुराव, धरम मरजादा धारे।
आप पधारत ओक, अवधपुर जीव उधारे।।
(रघुनाथ रूपक सूं)

किसना आढा कृत 'रघुवरजस प्रकास' में कुंडळिया री व्याख्या इण भांत है—

पहलां दूहो एक पुण, आद अंत तुल जेण।
पलटै धुर पूठा कवित, तव कुंडळियो तेण।।

कुंडळिया रौ दाखलौ—

जपै रसण रघुवर जिकै, अधत्यां कपै अमांण।
जनम मरण सुधरै जिका, जे बडभागी जांण।।
जे बडभागी जांण, लाभ तन पायां लीधौ।
त्यां जिग किया तमाम, कांम सुकृत ज्यां कीधौ।।
वां व्रत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रां हथ।
ज्यां सधिया अठ जोग, त्यां किया कौटक तीरथ।।
धन मात-पिता जिण वसधर, कळुख तिकां दरसण कटै।
कवि किसन कहै धन नर तिकै, रसण रघुवर जपै।।
(रघुवरजस प्रकास सूं)

छप्पय छंद

औ अेक विसम मात्रिक छंद है। रोळा अर उल्लाळा रै मेळ सूं छप्पय बणै। उल्लाळा में कठैई 26 तौ कठैई 28 मात्रावां होवै। छप्पय में आं दोनूं छंदां रौ मेळ होवण रै कारण अठै रोळा अर उल्लाळा रै गुणां बाबत व्याख्या देवणी ठीक रैसी। इणां री सरल परिभासा इण भांत है—

रोळा : औ मात्रिक सम छंद है। इण रा चार चरण होवै अर हरेक में 24-24 मात्रावां होवै। 11 अर 13 माथै यति लागै। रघुनाथ रूपक रै परिशिष्ट में रोळा छंद री व्याख्यां इयूं करीजी है—

रोळा छंद सु नाम नागपति पिंगळ राख्यो।
तुक तुक माहे चतुर कळा चवु विंसति भाख्यो।।
हिक दस पर विस्राम, सरब जण चिंता हरणूं।
भणूं सदा इम सकळ, विमळ कवि कंठाभरणूं।।

उल्लाळा : इण रा विसम चरणां में 15 अर सम चरणां में 13 मात्रावां व्है। इण भांत औ 28 मात्रावां रौ छंद है। किसना आढा उल्लाळा छंद रा पांच भेद बताया है— 1. रस उल्लाळा 2. स्याम उल्लाळा, 3. छप्पय उल्लाळा, 4. वरंग उल्लाळा अर 5. कांम उल्लाळा—

रस उल्लाळा तिथ तेर मत। छवीस सम पद स्यांम।
स्यांमक रस दूहा सहित। मुणतै छप्पय नांम।।
उलटो रस उल्लाळ उण। आख वरंग उल्लाळ।
दाख त्रिदस फिर पंचदस। तुक बिहुंवै पड़ताळ।।

अरथात 15 अर 13 मात्रावां वाळौ रस उल्लाळा, 13-13 मात्रावां वाळौ स्यांम उल्लाळा, 13-11 मात्रावां वाळौ छप्पय उल्लाळा, 13-15 मात्रावां वाळौ वरंग उल्लाळा अर 15-15 मात्रावां वाळौ कांम उल्लाळा कहीजै।

रघुनाथ रूपककार आपरा ग्रंथ में उल्लाळा री व्याख्या इण भांत करै—

उल्लाळा छंद बसु दोय, कळ विरति पंच दस ऊपरा।
धर दोय दोय इक तीन, दुव दोय एक दुव धूपरा।।
कळ तेरह दोहा सम सदा, खट दो-दो इक दोय कर।
ओ नियम छोड़ पिंगळ कहै, आखर पण अेक न उचर।।

रघुनाथ रूपक रै परिशिष्ट में छप्पय री व्याख्या इण भांत करीजी है—

काव्य छंद सारो कह'र, अंत उलाळो आध।
छप्पय नामक छंद जो, गिण प्रस्तार अगाध।।
कोई कोई भाखा कवि करै, रोळा पर उल्लाळ।
तिणनूं पण छप्पय तवै, चंडालिनि आ चाल।।

इण भांत रोळा अर उल्लाळा रै मेळ सूं बणण वाळौ छप्पय छंद बाजै, जिकौ विसम मात्रिक छंद है। इणमें चार पद रोळा अर आखिरी दोय पद उल्लाळा रा होवै। औ अेक दंडक छंद ई है। छप्पय छंद रौ औ दाखलौ, जिणमें हनुमानजी, सरस्वती अर गुरु री वंदना करीजी है—

बंदवीर बजरंग कीसबर मंगळकारी।
समर मात सरसती विमल कविता विसतारी।
सद्गुण प्रणम किसोर सचिव अमरेस सवाई।
करे पिता जिमि कृपा तिकण गुण समझ बताई।
मो मत प्रमांण कवि मंछ कह, सुकवि बांण ग्रंथांण सुण।
रस गाथ गीत पिंगळ रचे, गहर कहूं रघुनाथ गुण।।

अलंकार

संस्कृत साहित्य में अलंकार सबद री व्युत्पत्ति अर काव्य में इणरै प्रयोग माथै विचार करीज्यौ, उणीज भांत राजस्थानी में ई अलंकारां रा प्रयोग नैं अंगेजियौ। अलंकार संप्रदाय रा प्रवर्तक भामह काव्य रा फूठरापा वास्तै अलंकारां रा प्रयोग नैं मानै। इणीज भांत संस्कृत रा दूजा विद्वान ज्यूं कै आचार्य वामन, रुद्रट, मम्मट, दण्डी अर उद्भट ई काव्य में अलंकारां रा महताऊपणा नैं बतावै। काव्य री सोभा बधावण वाळा गुण धरम नैं साहित्य में अलंकार कहीजै। जिण भांत गैंणा-गांठां पैरयोड़ी लुगाई फूठरी लागै, उणरौ रूप सवायौ होवै, उणीज भांत काव्य में सोनै जैड़ा आखरां सूं कविता री बानगी ई रूपाळी लागै, उणमें अेक चमत्कार अर आकर्षण आय जावै। काव्य में अलंकारा रौ प्रयोग करण खातर भासा-विज्ञान रा विद्वानां सबद, ध्वनि, रस अर वरणां रै रूपाळै मेळ सूं काव्य नैं संवारण री जुगत करै। जिण भांत गैणां-गांठा अर पैरवास सूं सामाजिक स्तर अर जातिगत छाप निजर आवै, उणीज भांत काव्य-सास्त्र रा आचार्यां रै विचार में ई काव्य रा अलंकारां री न्यारी-न्यारी परिभासावां दिरीजी है। काव्य में अलंकारां रै प्रयोग बाबत कवि री भूमिका महताऊ होवै। अलंकारां सूं आपरै विचारां, भावां नैं छंद रूपी रीत में ढाळतौ कवि सिरजण नैं कल्पना सूं नूंवौ सरूप देय सकै। भावां नैं किण ढाळै राख सकै, उण असरदार भावां री खिमता अलंकारां सूं आवै। भावां री गैराई, कोरणी सूं परोट्योड़ी झीणी भाव तरंगां, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, प्रतीकां अर नूंवा बिम्बां री जड़ाऊ घड़त सूं कविता नैं सिणगारीजै अर औ काव्य पाठकां नैं घणौ रळियावणौ अर असरदार लागै। राजस्थानी रा रीति ग्रंथां में 'पिंगळ सिरोमणि' में अलंकारां रौ वरणन करीज्यौ है। इणरै टाळ दूजा ग्रंथां में या कोई रचना या काव्य-विसेस रै ओळावै ई अलंकार परंपरा री चरचा नीं रै बरोबर करीजी है।

राजस्थानी रौ निकेवळौ अलंकार 'वैण सगाई' काव्य री सोभा बधावै, लारला सगळा *अरथालंकार* अर *सबदालंकार* संस्कृत साहित्य वाळा ई राजस्थानी में परोटीजै। काव्य में अरथ सूं फूठरापौ अर चमत्कार दीखै तौ अरथालंकार, ज्यूं— उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रांतिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति व्याजस्तुति कहीजै।

जिण काव्य में सबदां नैं सजोरै रूप सूं, सरस या अनोखा रूप सूं परोटण में काव्य-चमत्कार प्रगटीजै तौ उठै सबदालंकार मानीजै। वैण सगाई, अनुप्रास अर उणरा भेद, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति आद सबदालंकारां री पांत में आवै। अठै कीं अलंकारां री परिभासा अर दाखला दिया जावै—

अनुप्रास अलंकार

'काव्यालंकार' में आचार्य भामट्ट लिखै कै अेक रूप रा वरणां रौ विन्यास ई अनुप्रास है। आचार्य उद्‌भट अर दूजा विद्वान अेक जैड़ी उक्ति होवण अर सबदां री नैड़ी-नैड़ी आवृत्ति (अेक सबद रैय-रैयनै या दो बार या दो सूं घणी बार उणीज काव्य में परोटीजै) नैं अनुप्रास कैवै। अनुप्रास रा केई भेद अर उपभेद करीजै—

छेकानुप्रास

इणमें वरण या वरण-समूह दोय बार बरतीजै। इणरौ औ दाखलौ 'हरिरस' सूं लिरीज्यौ है—

महागज ग्राह छुडावण मंत। सनातन पाळक केवळ संत।
मुकंद! तूं आय वसै जिअ मुक्ख। संसार समुद्र तरै वह सुक्ख।

वरणां री आवृत्ति दोय बार होवण सूं औ छेकानुप्रास है। अठै वैण सगाई भी है। वैण सगाई में ई अनुप्रास ज्यूं वरणां रौ मेळ देखीजै।

वृत्त्यानुप्रास

काव्य में कोई वरण या वरण-समूह तीन या उणसूं घणी बार बरतीजै उठै वृत्त्यानुप्रास होवै। दाखला सरूप—

(1)

चारिय वांणिय खांणिय चार। वदै जग जीव विचार विचार।।
लहै नहीं पार कहूं लवलेस। आदेस आदेस आदेस आदेस।।

(2)

नमो ओम रूप नमो ओंकार। नमो अजरामर सेस अधार।
नमो अवतार सकाज अधीस। नमो जगताज नमो जगदीस।।

पैला दाखला में ऊपरली दोय ओळ्यां में छेकानुप्रास अर नीचै वृत्त्यानुप्रास रौ रूपाळौ वरणाव होयौ है।

श्रुत्यानुप्रास

अठै उच्चारण ठौड़ रौ महत्त्व है। अेक ठौड़ सूं उच्चारित वरणां री आवृत्ति होवण नै श्रुत्यानुप्रास कैवै—

नमो वर सीत त्रिभूवण वंद। नमो मधु कीटभ जीत मुकंद।।
नमो विध लाधण मेटण व्याध। सराप भसम्म उतारण साध।।

इण पद में ऊपरली ओळी छेकानुप्रास है। पूरा पद में 'नमो' री आवृत्ति वृत्त्यानुप्रास अर अेक ई उच्चारण ठौड़ वाळा केई वरणां री आवृत्ति होवण सूं श्रुत्यानुप्रास है। अै सगळा वरण अंतस्थ-अल्पप्राण है जिणां रै उच्चारण सूं सांस रौ परमाण सामान्य रैवै। त, द, ध रौ उच्चारण करती टैम जीभ दांतां नैं परस करै।

अंत्यानुप्रास

काव्य में सबदां या चरणां रै आखिर में अंतिम दो सुरां री आवृत्ति होवण सूं अंत्यानुप्रास होवै। इणमें बिचाळै व्यंजन सेति सुरां री आवृत्ति सूं अरथ है। दाखलै सरूप—

नहीं तुव साधक तंत न तंत्र। नहीं तुव जंत्र नहीं तुव मंत्र।।
सुमेर न सेस पहिलोय सोज। हुतोज हुतोज हुतोज हुतोज।।

लाटानुप्रास

काव्य में कोई सबद दो या दो सूं घणी बार आवै अर हरेक बार अरथ तौ अेक पण अन्वय बदळ जावै उठै लाटानुप्रास कहीजै, जियां—

त्रिविध त्रिजग्ग त्रिविक्रम तार। चतुरभुज आतम चेतन सार।।

त्रिविक्रम=तीन लोक रा स्वामी। त्रिजग्ग=सुरगलोक, भूलोक अर पताळलोक। त्रिविध ताप=दैहिक, दैविक, भौतिक। इण भांत अठै लाटानुप्रास होवै।

ध्वन्यानुप्रास

जिण सबदां सूं अेक जैड़ी ध्वनि निकळै अर वांरी आवृत्ति होवै उठै ध्वन्यानुप्रास होवै। अथवा अेक-दोय ध्वन्यां रौ आपस में संबंध बतायौ जावै या अेक रै साथै दूजी ध्वनि जुड़्योड़ी होवै, ज्यूं—

पड़्ड़ पड़्ड़ बूंदां पड़ै, धड़्ड़ धड़्ड़ धर आज।

बूंदां री ध्वनि रै साथै धरती माथै होवण वाळी ध्वनि रौ जोड़ बैठै। दूजा अरथ में अंत्यानुप्रास वाळै दाखलै में ई अेक जैड़ी ध्वनि वाळा सबद है, पण अेक रौ संबंध दूजै साथै इण भांत है कै आप ई हा, आप ई हौ अर आप ई रैवोला।

यमक अलंकार

औ अेक सबदालंकार है। भरतमुनि कैवै कै यमक सबदां रौ अभ्यास है। अेक सबद दोय या दोय सूं घणी बार काव्य में आवै अर हरेक बार उणरौ अरथ दूजौ होवै तौ उठै यमक अलंकार मानीजै। केई बार पूरौ सबद नीं आयनै उणरौ कीं भाग दूजी बार आवै तौ ई उठै यमक ई मानीजै। आचार्य भरतमुनि यमक रा दस भेद बतावै जिका इण भांत है— पादान्त, कांची, समुद्गक, विक्रांत, चक्रवाल, संदष्ट, आम्रेडित, चतुर्त्य, वसित, माला आद। यमक रौ दाखलौ—

(1)

हरिरस हरि रस हेक है, अन रस अनरस आंण।
विण हरिरस हरिभक्ति विण, जनम व्रथा कर जांण।।

इण छंद में 'हरिरस' ईसरदास बारठ रचित काव्य है, जदकै 'हरि रस' प्रभु भक्ति सूं मिलण वाळौ आनंद है। इणी भांत 'अन रस' संसार रा भौतिक सुख या भोग है, तौ 'अनरस' बिना सार रा, सारहीण, अेहळा है। इण भांत अेक सबद रौ दोय बार प्रयोग अर अरथ न्यारौ होवण रै कारण यमक अलंकार है।

(2)

रण कर रज रज नै रंगै, रवि ढकै रज हूंत।
रज जैति धर नह दिये, रज-रज व्है रजपूत।।

इणमें अेक 'रज' माटी रौ कण-कण मतळब पूरी धरती नैं रंगणौ है तौ दूजौ 'रज' खेह, पगां सूं उड नै ऊपर चढण वाळी धूड़, खंख। तीजै सबद 'रज-रज' रौ अरथ है कै क्षत्रिय आपरौ सरीर टुकड़ां-टुकड़ां (बोटी-बोटी) करावै। रजपूत—धरती रौ सपूत या माटी रौ सपूत, इणमें यमक अलंकार रौ नामी प्रयोग होयौ है।

उपमा अलंकार

औ अेक अरथालंकार है। आचार्य भामह उपमा अलंकार वास्तै लिखै—

विरुद्वेनोपमानेन देशकाल क्रियादिभि:।
उपमेयस्य यत्साभ्यं गुणलेशेन सोपमा।।

अरथात केई बार देस, काळ, क्रिया रै आधार माथै विरुद्ध उपमान सूं उपमेय री समानता दीखै, वौ ई उपमा अलंकार है। पण जठै कीं सैंनरूप, सांपरतेक दीखै उठै ई उपमा अलंकार होवै। इण रा वै 32 भेद बताया है, पण मोटै रूप सूं केई विद्वान इण रा दोय भेद ई बतावै— 1. पूरण उपमा अर 2. लुप्त उपमा। केई विद्वान उपमा रा तीन भेद ई बतावै— 1. पूरणोपमा 2. लुप्तोपमा अर 3. मालोपमा।

उपमा रा अै लक्षण है कै दो वस्तुवां में बरोबरी री बात करीजै। दोनूं में अेक जैड़ा गुणां रै कारण अेक नैं दूजै री उपमा दिरीजै। उपमा में समानता रौ औ सामान्य गुण धरम मानियौ जावै।

उपमेय : जिण सूं किणी वस्तु री समानता बताईजै।

उपमान : कोई खास वस्तु जिणरै बराबर उपमेय नैं बतायौ जावै।

वाचक सबद : उपमेय अर उपमान में बराबरी बतावण वाळौ सबद वाचक है।

साधारण धरम : वै गुण या क्रिया जिका उपमेय अर उपमान दोनूं में लाधै, जिणसूं ओपमा दिरीज नै तुलना करीजै।

पूरणोपमा

पूरण उपमा में उपमेय, उपमान, वाचक सबद अर गुण धरम सगळां रौ मेळ होवै। 'वेलि क्रिसन-रुकमणी री' में पूरण उपमा रा केई-केई दाखला मिळै। आपरी निकेवळी ओपमावां साथै काव्य नैं सरजीवण करण वाळा प्रयोग देखीजै—

संग सखी कुळ वेस समाणी, पेखि कळी पदमिणी परि।
राजति राजकुंअरि रायअंगण, उडीयण वीरज अम्ब हरि।।

इणमें सखियां, तारामंडळ, आभौ अर चंद्रमा आद अेक वातावरण री स्रस्टी करै। पदमिणी री बात करतां ई पूरै सरोवर रौ चित्राम साम्हीं आवै। रुकमणी रै मुख नैं चंद्रमा री ओपमा रै साथै कवि आवगै दरसाव नैं सांपरतेक करै।

लुप्तोपमा

इण अलंकार में जैड़ौ कै नांव सूं ठाह लागै कै उपमेय, उपमान, वाचक सबद अर साधारण गुण धरम मांय सूं कठैई अेक, दोय या तीन रौ लोप होवै, उणां रौ लेख नीं होवै उठै लुप्तोपमा अलंकार होवै—

हंस चलण कदळीह जंघ, कटि केहर जिम खीण।
मुख सिसहर, खंजर नयण, कुच श्रीफळ कंठ वीण।।

अठै हंस उपमान, चाल साधारण धरम क्रिया है, कदळीह उपमान, जंघ उपमेय, 'मुख सिसहर' में मुख उपमेय, सिसहर उपमान है, पण पूरा वरणाव में वाचक सबद, गुण धरम रौ लोप होवण सूं लुप्तोपमा अलंकार है। अठै रुकमणी रौ कठैई उल्लेख नीं होयौ। आ उपमा किणरै वास्तै है, खुलासौ नीं होवण सूं लुप्तोपमा है।

मालोपमा

उपमेय रा वरणाव में जठै अेक सूं घणा उपमानां नैं परोटीजै, उणमें उपमेय (जिणनैं उपमा दी जावण वाळी है) रौ इधकारौ अर आकर्षण बधै वा मालोपमा है। ज्यूं—

गति गंगा मति सरसती, सीता सील सुभाव।
महिलां सरबर मारूवी, अवर न दूजी काय।।

इणमें मारवणी रै वास्तै गंगा जैड़ी गति, सरसती जैड़ी मति अर सीता रै समान सील-सुभाव, इत्ता उपमान लागण सूं मालोपमा है।

रूपक अलंकार

औ अेक अरथालंकार है। आचार्य भरतमुनि इणरै वास्तै कैवै कै जद दो वस्तुवां री तुलना नीं करीज नै कीं खास गुणां रै कारण उपमेय अर उपमान में कीं भेद नीं राखनै अेक-दूजा माथै आरोपित करयौ जावै। सरल सबदां में औ कै जठै अेक वस्तु नैं दूजी रौ रूप दे दियौ जावै कै दूजी मान लेवां तद रूपक अलंकार मानीजै। रूपक अलंकार रा ई तीन भेद बताया जावै— 1. सांग रूपक, 2. निरंग रूपक अर 3. परंपरित रूपक।

'मुख सिसहर' औ अभेद रूपक है। इणमें मुख नैं पूरै निस्चै रै साथै सिसहर (चंद्रमा) कैयनै अभेद री थरपणा करीजी है।

रूपक रौ दाखलौ—

वधिया तनि सरवरि वेस वधन्ती, जोबण तणौ तणौ जळ जोर।
कामणि करग सु बाण काम रा, दोर सु वरुण तणा किरि डोर।।

प्रकृति सूं रुकमणी रै जोबन रौ रूपक सरावण जोग है। चंद्रमा नैं देखनै सागर में ज्वार आवै ई है, उणीज सुभाविक रूप सूं जोबण काळ में अंग-प्रत्यंग रौ उभरणौ अर उणरै पेटै आकर्षण होवणौ लाजमी है।

सांग रूपक

उपमेय माथै उपमान रा अंगां समेत आरोप सांग रूपक है। वीर काव्यां में सूरवीरां रा लूंठा करतबां रा रूपक सरावण जोग है—

घोड़ां घर ढालां पटल, भालां थंभ बणाय।
जे ठाकुर भोगै जमीं, ओर किसौ अपणाय।।
पग पग थटिया पहुणां, खागां सहणी खांत।
पीव परूसै पांत में, भूले केम दुभांत।।

राजस्थानी वीर संस्कृति में घोड़ां रूपी घर, ढाल रूपी छात अर भालां रा थंबा बणावण वाळौ ई धरती रौ वरण करण जोग है। जठै दुस्मियां, सत्रुसेना नैं पांवणा कहीजै, खाग रै झाट री मनवार करीजै। अैड़ा सांग रूपक रा दाखला और कठै लाधै।

निरंग रूपक

इण रूपक अलंकार में उपमान रौ उपमेय माथै आरोपण करयौ जावै। दूजा अंगां री बात नीं करीजै—

सखिए ऊगट मांजिणउ, खिजमति करइ अनंत।
मारू तन मंडप रच्यउ, मिलण सुहावा कंत।।

अठै 'तन' में 'मंडप' रौ आरोपण है। दूजा अंग सहायक कोनी, इण वास्तै निरंग रूपक है।

परंपरित रूपक

इणमें दोय रूपक होवै। अेक रूपक रौ कारण दूजा रूपक में देखीजै—

पंथी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पैहचाइ।
धंण कंमलांणी कमदणी, सिसहर ऊगइ आइ।।

अठै मारवणी रा संदेस में वा कैवै कै थारी धण विजोग में कुमुदणी ज्यूं कुम्हळायगी है। हे ढोला, थूं चंद्रमा ज्यूं आयनै उदयमान व्है। चंद्रमा री चांदणी में कुमुदणी खिल्या करै। इणमें दोय रूपक है। मारवणी कुमुदणी है अर ढोलो चंद्रमा है। इणरै साथै चंद्रमा (सिसहर) रै ऊगण सूं कुमुदणी खिलैला, इण रूपक माथै दूजौ रूप आरोपित होवण सूं परंपरित रूपक बणै।

ताद्रूप्य रूपक

उपमेय नैं उपमान रौ दूजौ रूप कैवण सूं उठै ताद्रूप्य रूपक अलंकार कहीजै—

चन्द्रिका सूं झरत मधु, ताप सैंग हर लेत।
प्राण वाल्ही मुख बीजो चांद, रात-दिवस सुख देत।।

वाल्ही रौ मुख बीजौ चांद होवण रै कारण क्यूंकै अेक चांद तौ है इज, इण वास्तै अठै ताद्रूप्य रूपक होवैला।

रूपक रा भेद

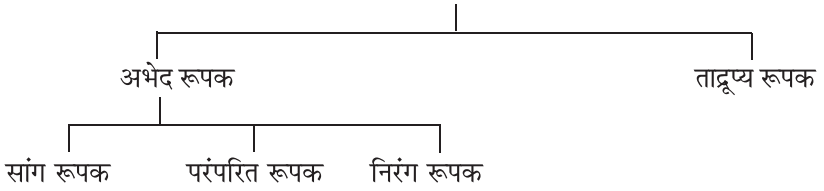

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

समर=याद करणौ, स्मरण। प्रणम=प्रणाम। तिकण=जिका। बाण=वाणी, बोल। गहर=गंभीर, गैराई सूं। सधीर=धीरजवान, धीरप वाळौ। पदवी=पद, ओहदौ। अंतर=बीच। वीसवा वीसै=निस्चै ही, पक्कायत। दीसे=दीखै है, ग्यात होवै। अपंपर=अपरंपार, अपार। धूत=चालाक, धूरत। रढाळौ=रीस वाळौ, बादीलौ। मुणै=कहियौ, कैयौ। जड़=मूरख। आगूंच=पैली, पैलां सूं ई। जदां=जणै। सुघट=मजबूत, उत्तम, नामी। उघट=क्रोध करनै। धुजाई=कंपाय दी। वाल सुतण्ण=अंगद, बालि रौ बेटौ। असंका=निरभय, अडरता। खाटै=अर्जित करणौ, लेवणौ। ब्रष=बरस। सैंस=सहस्र। धारै=धारण करणौ। पधारत=स्वधाम पधारिया, सिधारिया, गया।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. आचार्य मम्मट रै मुजब काव्य रौ मूळ प्रयोजन कांई है?

(अ) आणंद (ब) जस
(स) धन (द) कांता रौ उपदेस

( )

2. काव्य रै किण पख नैं सिरै मान्यौ जाय सकै?

(अ) भाव पख (ब) कला पख
(स) नीति पख (द) कथा पख

( )

3. 'छंद' रौ अरथ है—

(अ) नियमां में बंध्योड़ी काव्य-रचना। (ब) स्तुतिपरक काव्य।

(स) गीत, कविता, दूहा। (द) तुकबंदी वाळी रचना।

( )

4. छंदां रा मोटै रूप सूं भेद किया जावै—

(अ) मात्रिक अर वरणिक छंद। (ब) गद्य अर पद्य।

(स) निरस अर सरस छंद । (द) इण मांय सूं कोई नीं।

( )

5. छंद-सास्त्रीय ग्रंथ रौ नांव है—

(अ) रघुनाथ रूपक (ब) हरिरस

(स) देवियांण (द) रणमल्ल छंद

( )

6. 'रज जैति धर नह दिये, रज-रज व्है रजपूत' में अलंकार है—

(अ) फगत यमक। (ब) फगत अनुप्रास।

(स) यमक, अनुप्रास अर वैण सगाई। (द) वैण सगाई

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. काव्य री परिभाषा लिखौ।
2. काव्य रा कित्ता तत्त्व मानीजै ?
3. विचार तत्त्व बाबत विद्वानां कांई विचार राख्यौ ?
4. काव्य रा भेदां री जाणकारी देवौ।
5. काव्य रौ मूळ प्रयोजन कांई है ?
6. वेलियो छंद किण भांत रौ छंद है ?
7. उपमा अलंकार रा भेद बतावौ।
8. 'मुख सिसहर' औ किणरौ दाखलौ है ?
9. छप्पय में किण दोय छंदां रौ मेळ होवै।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. भाव तत्त्व बाबत आपरा विचार लिखौ।
2. काव्य प्रयोजन सूं आप कांई समझौ ? खुलासौ करौ।
3. काव्य बाबत आचार्य मम्मट रा विचार कांई हा ? समझावौ।
4. काव्य रै खास-खास भेदां रौ खुलासौ करौ ?
5. रूपक अलंकार री परिभासा दाखला समेत लिखौ।
6. यमक री विसेसता दाखला देयनै समझावौ।

7. कुंडळिया छंद रा गुण बतावौ।
8. त्रबंकड़ो किण भांत रौ छंद कहीजै, उणरी विसेसता बतावौ।

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. काव्य प्रयोजना री विगतवार जाणकारी देवौ।
2. काव्य रौ अरथ बतावता थकां उणरै तत्त्वां माथै उजास न्हाखौ।
3. मिनखाजूण में काव्य रै मैतव री विरोळ करौ।
4. अलंकार किणनै कैवै ? अनुप्रास अलंकार नैं भेदोपभेद समेत समझावौ।
5. उपमा अलंकार अर रूपक में आपौ आपरी विसेसतावां रौ वरणाव दाखलां समेत करौ।
6. छंदां रै मैतव नैं उजागर करता थकां किणी दो छंदां री परिभासा दाखलां समेत देवौ।
7. छंदां रा मूळ रूप सूं कित्ता भेद बताया है ? छंदां रा उपभेद समेत वेलिया छंद रौ वरणन करौ।

❑निबंध-लेखण

राजस्थानी निबंध-लेखण

आधुनिक गद्य-साहित्य री विधावां में निबंध लेखण अेक महताऊ विधा है। गद्य रै दूजा रूपां में निबंध लिखणौ अबखौ, आछौ अर कलात्मक मानीजै। इण बाबत हिंदी रा विद्वान लिख्यौ है— 'निबंध गद्य री कसौटी है'। गद्य रौ सांतरौ अर कलात्मक रूप प्रगटै। इण मांय भावां अर विचारां रौ सांतरौ मेळ है। 'सब्दोअर्थो सहभाव साहित्यम्' री बात साची होवै। विचारां अर भावां नैं पाठकां तांई पूगावण रौ लूंठौ माध्यम है— निबंध।

निबंध रौ सबदाऊ अरथ अर परिभासा

निबंध राजस्थानी साहित्य मांय घणौ पुराणौ नीं है। पण इण रा बीज-रूप प्राचीन अर मध्यकालीन राजस्थानी गद्य-साहित्य में देख सकां हां। निबंध सबद अरथात नि:+बंध, किणी विसयवस्तु नैं तै अर आछी भांत सूं बांधणौ। दूजै सबदां में भावां अर विचारां रौ सांतरौ गठण निबंध मानीजै। छोटै अर तै आकार में किणी विसय या वरणाव नैं मौलिकता रै सागै, स्वतंत्र रूप सूं सजीवता सागै लियौ जावै अर जिण मांय भावां अर विचारां री आछी संगती होवै अर लय री खास गति होवै, साचै अरथां में उणनैं ई निबंध मानीजै।

अंगरेजी भासा में निबंध नैं 'ऐस्से' कहीजै, जिण रौ अरथ है— प्रयास, जतन अरथात जिणनैं घणै जतन सूं रचीजै वौ निबंध बाजै।

निबंध रा तत्त्व

निबंध रा मूळ तत्त्वां में भाव, भासा अर सैली नैं सिरै मानीजै।

1. भासा : टकसाळी, व्याकरण रै मुजब, सुद्ध अर पाठक रै मन-मगज नैं परसण वाळी अर बात नैं सावळ कैवण री खिमता राखण वाळी होवणी चाईजै।

2. भाव : भाव देस, समाज अर साहित्य रौ आधार है। निबंध में भाव गैरा, प्रभावसाली, बात नैं सावळ केवटण अर प्रगट करण वाळा सांतरा, ओपता अर विसय रै मुजब होवणा चाईजै।

3. सैली : भाव अर भासा नैं परोटण रौ लेखक रौ निजी तरीकौ। सैल्यां भांत-भांत री पण सैली प्रभावशाली, रोचक-रंजक, पाठक नैं भावां में भीजोवण वाळी अर रळियावणी होवणी चाईजै। मिठास अर रुचि पैदा करण वाळी होवणी चाईजै।

निबंधां रा भेद

मोटै रूप सूं निबंधां नैं आपां दोय रूपां में बांट सकां हां। अेक व्यक्ति प्रधान अर दूजौ विसय प्रधान। इणरै अलावा भी निबंधां रा अनेक भेद है, जियां— सामाजिक, आर्थिक, वैग्यानिक, मनोवैग्यानिक, अैतिहासिक, साहित्यिक, दारसनिक, ललित निबंध आद। मोटै तौर माथै निबंधां रा पांच भेद मानीजै, जिका इण भांत है—

1. विवरण प्रधान निबंध : जीवनी, गाढवाळा कामां, जात्रावां, जुद्ध अर अैतिहासिक घटनावां आद माथै लिखीजण वाळा निबंध विवरण प्रधान निबंध बाजै।

2. वणर्नात्मक निबंध : मौसम रौ मिजाज, तीरथ, मेळा-मगरिया, प्रकृति रा चित्राम, तीज-तिंवार अर नगर सूं जुड़्योड़ा निबंध वर्णनात्मक निबंध मानीजै।

3. संस्मरणात्मक निबंध : डायरी, संस्मरण, रेखाचितराम, जात्रा रौ वरणन, रिपोर्ताज आद निबंध इणमें गिणीजै।

4. भाव प्रधान निबंध : गहरै अैसास, तेज भावां री अभिव्यक्ति, राग तत्त्व, ललित अर निजूपरक वाळा निबंध इण ओळ में आवै।

5. विचार प्रधान निबंध : चिंतन प्रधान, मनोवैग्यानिक दीठ रा, दारसनिक अर अध्यात्म सूं संबंधित, बुद्धि-तत्त्व सूं जुड़्योड़ा विचार प्रधान निबंध बाजै।

निबंध लेखन रा खास अंग

निबंध लेखन री कला नित अभ्यास सूं आवै। इण सारू भाव-भासा अर सैली माथै आछी पकड़ अर सांतरौ मेळ होवणौ चाईजै अर लिखती बगत नीचै लिख्योड़ा अंगां रौ खास ध्यान राखणौ चाईजै।

1. मंडाण (प्रस्तावना) : सिनिमा रै टेलर अर पोस्टर दांई निबंध रौ प्रतिनिधित्व अर महताऊपणौ रोचकता रै सागै प्रस्तावना में प्रगट होवणौ चाईजै। इण मांय निबंध री परिभासा, महताऊपण, पद्य रौ प्रयोग, विवरण अर परिचै आवणौ चाईजै।

2. बीच रौ भाग (प्रसार) : अठै निबंधकार आपरै भावां नैं चतुराई अर ग्यान-कौसल सागै प्रगट करै। विसय री सिरै सूं विरोळ करै। आपरै निजु अनुभव अर विचार नैं सामल करै। निबंधकार री कल्पना, विचारां री खिमता अर लेखन री योग्यता इणी भाग में निजर आवै।

3. उपसंहार (समाहार) : इणमें निबंध रौ निचोड़ जथारथ रै सागै सामल होवणौ चाईजै। मान्यता, विचार, मौलिकता, संभावनावां, भावी आद रौ मेळ करावतां सटीकता रै सागै निबंध रौ सार उपसंहार में प्रगट होवणौ चाईजै।

(1)
देस-निरमाण मांय मोट्यारां री भूमिका

मंडाण

चंगौ मारू घर रयां, तीन अवगुण्ण थाय।
कपड़ा फाटै, रिण बधै, नाम न जाणै काय।।

मोट्यार देस रा करणधार। देस, समाज अर कड़ूंबै री भावी रौ आधार। पण आज देस अर समाज री दसा अर दिसा सोचण जोग है। देस मांय अेकता, सजगपणै, देसहित सारू चेतना, निज करम रौ बोध, नैतिकता, संस्कार आद री कमी लखावै। राजनीति रौ भूंडौ चैरौ अर भस्टवाड़ौ देस अर समाज माथै हावी है। निज हित री भावना देसहित माथै भारी, निज धरम अर करम रै ग्यान रौ तोड़ौ, कोरौ दिखावौ, रूढिवाद अर अंधविस्वास समाज नैं ओक्टोपस दांई जकड़्योड़ौ है। इण दसा मांय मोट्यारां रौ देसहित सारू जिम्मै अर हूंस री मोकळी दरकार है।

आज री मोट्यार पीढी रौ सरूप

समाज अर देस रै बिखराव अर अव्यवस्था नैं सुधारण री जिम्मेदारी मोट्यारां री ई है, पण आज रै जवानां रौ ढंग-ढाळौ कीं हळकौ अर स्तर सूं उतरयोड़ौ है। आज री नूंवी पीढी कुंठा, हतासा, तोड़-भांग री सोच, गैर जिम्मेदार अर वाट्सअप, फेसबुक री आभासी दुनियां में काठी डूब्योड़ी अर खुद तांई सिमट्योड़ी है। समाज रै रीत-रायतै सूं न्यारी आथूणी संस्कृति री हेताळू अर अंगरेजां री खुल्लैपण अर भौंडैपण री रीतियां नैं अंगेजण वाळी पीढी नैं अबै देस अर समाज सारू ई कीं विचार करणौ पड़सी। फैसन, फिल्म अर उघाड़ू संस्कृति में रुचि राखण वाळा मोट्यारां रै मन अर मगज में देस सारू कीं पीड़ा राखण री भी दरकार है।

मोट्यारां रौ फरज

'दुनियां मढौ उण सूं पैली खुद नैं गढौ', आ बात सोळै आना खरी। सावचेती सूं चरित नैं ऊजळौ राखतां आपरै जीवण नैं कीं ऊंचौ उठावणौ पड़सी। खुद में बदळाव अर सुधार सूं देस, समाज अर परिवार में ई बदळाव आसी। अणभण्यौ अर अणगुण्यौ कोरौ-मोरौ ढांडौ अर आधौ, इण सारू भणाई री अलख जगावणी ई जरूरी है। पढ्या-लिख्या रै च्यार आंख्यां। पैलां खुद पढौ-लिखौ, अेक जिम्मेवार नागरिक बणौ, पछै दूजां नैं ई इण सारू आगै लावौ। कोरी नौकरी सारू भणाई फगत अेकलै आदमी रौ विकास है। जिकी भणाई मिनख नैं मिनख बणावै अर देस-समाज सारू टैम आयां खुद नैं सूंपण री सीख देवै, वा साचै अरथां में भणाई है। समाज लारै रैवै तौ आपां कद आगै ?

भणाई रै सागै देस री सांयती अर सुरक्षा रौ जिम्मौ ई मोट्यारां नैं निभाणौ पड़सी। समाज रा कांटा किनारै करण रौ काम ई मोट्यारां रौ है। समाज रौ तानौ-बानौ बण्यौ रैवै, इण सारू सांतरी रीतियां अर संस्कारां नैं परोटणा जरूरी है। सगळै धरमां, वरगां, वरणां रौ सम्मान अर वांरै खातर आछी भावनावां भी देस री अेकता सारू जरूरी है। सगळां सूं जरूरी है— चरित्र। बीखौ मिनख माथै ईज पड़ै अर अबखी वेळा में जिका आपरौ चरित्र नीं खोवै अर नीं दूजां रा खोवण देवै, वै ईज साचै अरथां में देस रौ निरमाण कर सकै। मोट्यारां रौ आछौ चरित्र आछै देस री पिछाण है। देस-निरमाण सारू पैलां चरित्र रौ निरमाण जरूरी है अर इण सारू संस्कार, संगत अर आछौ साहित्य आपां री मदद करै। भूंडै अर कोजै साहित्य नैं जहर रै समान मानौ, उणनैं देस-समाज तांई पूगण सूं रोकणौ चाईजै। चोर-उचक्का, भ्रस्ट अर चरित्रहीण मिजळा मिनखां नैं मोट्यार सजगता सागै संगठित होयनै रोक सकै, अैड़ा उपाव करणा चाईजै। निजू लाभ सारू भूंडी राजनीति रै आंटै में फंसण सूं नूंवी पीढी नैं बचणौ है। आथूणी संस्कृति रै भोगवाद नैं मन-मगज सूं भगावण री अर उण सूं बचण री जरूरत है।

उपसंहार

चरित्र अर मैणत सागै तकनीक अर भणाई रौ सायरौ लेयनै मोट्यार देस नैं ऊंची ठौड़ पूगाय सकै। देस-समाज मांय सुख-सांयती बापर सकै। देस री गाड़ी री धूरी मोट्यार ई है। आं सूं देस नैं घणी आस अर हूंस है। इण वास्तै इण आस अर विस्वास री कसौटी माथै खरौ उतरण रौ प्रयास मोट्यारां नैं करणौ चाईजै। कैयौ है—

गेंद बणा विघनां रा भाखर, होणी री छाती पर खेल
मंजिल चाल्यां ही मिळसी, मोट्यारां देसहित हालो रे।

⌘⌘

(2)

म्हारी व्हाली पोथी

मंडाण

अेक आछी पोथी हजार हळका बेलियां सूं आछी साथण होवै

राजस्थानी भासा रौ उल्लेख विक्रम संवत री नवमी सदी सूं जैन उद्योतन सूरि री 'कुवळयमाळा' में लिखित रूप सूं होयौ है। राजस्थानी साहित्य में गद्य-पद्य री हजारूं-लाखूं पोथ्यां रचीजी अर हरेक पोथी में रचारौ आपरी सगळी काव्यकला अर गद्य लिखण री हटौटी नैं परोटी है अर भावां अर विचारां रौ मधरौ मेळ कर्‌यौ है। कवियां अर लेखकां री अै पोथ्यां राजस्थानी साहित्य री अमोलक धरोहर है। जूण रौ अैड़ौ कोई तत्त्व नीं है, जिण मांय लिखारै नीं लिख्यौ। हरेक विसयां माथै साहित्य री रचनावां मिळै।

'जठै नीं पूगै रवि, बठै पूगै कवि' री कथनी यूं ही नीं घड़ीजी है। कवि री दीठ इण लोक सूं भी परै अलौकिक, भौतिक, अभौतिक ब्रह्मांड रै कण-कण अर खूणै-खूणै रौ बखाण करणौ जाणै। पोथ्यां सूं मोटो अर साचौ मिंत आपां रौ दूजौ कुण होय सकै है ?

म्हारी वाल्ही पोथी

सगळां री आप-आपरी रुचि अर आप-आपरौ रस। किणी नैं कहाणियां अर उपन्यास में रस आवै तौ किणी नें बातां में अर किणी नैं छंदां री छौळ में। कविता अर छंदपरक रचनावां री आपरी न्यारी-निरवाळी मिठास अर मठोठ है। म्हनैं सूर्यमल्ल मीसण री 'वीर सतसई' सबसूं वाल्ही पोथी लागै। म्हनैं ई क्यूं, वीर रस रा सगळा रसिकां नैं आ पोथी घणी दाय आवै। आ राजस्थान री वीर-संस्कृति री साची ओळखाण है। 'वीर सतसई' 1857 री क्रांति रौ पैलौ काव्यगत शंखनाद है। इण सबद-भेरी सूं मायड़ भोम रा सपूतां मांय वीरता रा भाव जाग्या। सात सौ दूहा नीं होवण रै उपरांत ई आ सतसई सूं सवाई मानीजै। वीर रस री सांगोपांग झांकी प्रगट करण वाळौ मानजोग ग्रंथ है। वीर नारी रौ ऊजळौ रूप, जूण नैं देस सारू सूंपण अर कायरता नैं धिक्कारण रा भाव जगावण वाळौ काव्य है। 'दीपै वांरा देस, ज्यांरा साहित जगमगै' अर साहित्य रै आंगणियै वीर सतसई रवि रै उनमान उजास प्रगटै।

वीर सतसई री रचना रौ मूळ

सूर्यमल्ल मीसण राजस्थानी साहित्य में वीर रस रा लूंठा कवि मानीजै अर वांरी 'वीर सतसई' काळजयी रचना होवण रै सागै राजस्थानी रौ गौरव-ग्रंथ मानीजै। वचना सूं बंध्योड़ी कवि री कलम बूंदी नरेश री तलवार री चाल तांई चालती रैयी। अंगरेजां रै विरुद्ध बूंदी नरेश रौ खांडौ अर कवि री कलम सागै-सागै चालण रौ वचन हो। 286 दूहा तांई कवि री कलम जिका वीर भावां नैं उकेरया, वै भावी रचना रौ मूळ बणग्या। वीरां रौ जिकौ बखाण आं दूहां में मिळै, वैड़ौ विश्व रै किणी दूजै साहित्य में नीं मिळै। औ वीर संस्कृति रौ सरावण अर अंजस जोग काव्य है। बूंदी नरेश री तलवार रै रुकण रै सागै ई कवि री वचनां सूं बंध्योड़ी कलम ई रुकगी अर वीर सतसई रा 286 दूहा ई लिखीज सक्या। काव्य रा भावां रौ धरातळ, कवि री मौलिकता अर वीरत्व रौ अद्‌भुत बखाण इणनैं सतसई रै मानकां माथै संख्यात्मक आंकड़ै सूं कम होवण रै उपरांत ई सवायौ थरपै। वीर नारी रै वीर भावां रौ दरसाव देखण जोग है। नारी रौ रूप अबला नीं होयनै सबळा रै रूप में थरपनै कवि नारी-शक्ति में आपरी आस्था प्रगट करी है—

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय।।

वीर सतसई रौ मैतव

आन, बान अर सान लारै प्राण होम करणियां जूझारां री वीर भूमि रौ रुतबौ ऊंचौ करण वाळी आ रचना वीरत्व रौ सांगोपांग चित्रण करै। वीर रस री आधुनिक रचनावां में आ पैलड़ी रचना है। आजादी री लड़ाई मांय परोख रूप सूं धरती-धरम सारू प्राण होम करण रौ अमर सनेसौ देवती आ रचना अठै री 'मरणा नूं मंगळ गिणै' वाळी संस्कृति नैं उजाळै। भाव, भासा अर सैली री दीठ सूं घणी मौजीज रचना मानीजै। आ सूतोड़ा मिनखां में देसहित सारू जागण रौ हलकारौ है। मर्यादा, संस्कृति, परंपरा अर वीर भावां रौ निरूपण इणनैं सबळ बणावै। अलंकारां री ओप, छंदां री छटा, रस रौ दरियाव इण रचना में अनुपम है। भाव अर भासा दोनां रौ धरातळ घणौ ऊंचौ है। वीर रस रै उत्साह रौ संचार सतसई में ऊंचै दरजै रौ है। नमक हलाली सिखावतौ औ काव्य देसहित अर मिनख रै चरित्र नैं उजास देवण वाळौ वीरकाव्य है—

डाकी ठाकर रौ रिजक, ताखां रौ विस अेक।
गहळ मूवां ही ऊतरै, सुणिया वीर अनेक।।

इण काव्यकृति मांय वीर अर सिणगार रस रौ अदीठ, अलबेलौ अर दुरलभ मेळ ई है जिकौ विश्व रै दूजा साहित्य मांय निगै नीं आवै—

करड़ो कुच नूं भाखता, पड़वा हंदी पोळ।
अब फूलां जिम आंग में, सेलां री घमरोळ।।

वीर सतसई रौ असर

वीर भावां सूं लबोलब आ सतसई कायरता नैं नैड़ी ई नीं फटकण देवै। मिनख नैं कायरता अर कर्महीणता सूं बारै काढै। इणरै रचनाकाळ री वेळा मांय अंगरेजां रै खिलाफ कैवणौ तौ दूर सोचणौ ई मोटी बात ही। जद वीरां री तलवार री धार मगसी पड़ै ही उण वेळा आ सतसई जन-जन में वीरत्व रौ संचार करयौ। वीर नारी रै वीर भावां रौ इसौ वरणाव अर दरसाव दूजै किणी ई साहित्य री पोथी मांय निगै नीं आवै। माता, पत्नी, बहन अर भोजाई सगळै रूपां में अेक वीरांगना कायरता नैं धिक्कारै अर धरती अर धरम री रक्षा सारू प्राण तक होम करण रौ अमर संदेसौ देवै—

सहणी सब री हूं सखी, दो उर उलटी दाह।
दूध लजाणो पूत सम, वळय लजाणौ नाह।।

उपसंहार

आधुनिक राजस्थानी रै वीर रस री रचनावां में वीर सतसई सिरमौर मानीजै। भाव-भासा अर मौलिकता री दीठ सूं आ अेक ओपती, राजस्थान री वीर संस्कृति री रुखाळीदार अर असरदार रचना है। कायरता नैं धिक्कारती मायड़ भोम सारू वीरां नैं जगावती देसहित री सिरमौर रचना है— वीर सतसई। अैड़ी रचनावां काळजयी होया करै अर होवणी ई चाईजै। वीर सतसई आजादी रै अलख री पैलड़ी चिणगारी री उत्प्रेरक रचना है। काव्यगत दीठ सूं ई छंद, अलंकार अर रस रौ ओपतौ अर सुभाविक प्रयोग इण मांय होयौ है। वीर सतसई रा वीरत्व भावां रा दूहा जन-जन रै कंठां जुगां लग रमसी अर जनमानस में अखूट रैसी।

⌘⌘

(3)

कन्या भ्रूणहत्या

मंडाण

मायड़ म्हनैं मतना मार
हूं थारौ मान, घर-संसार।

परमात्मा री स्रस्टि में मिनख री घड़त सबसूं वाल्ही। जाणै चितारौ खुद चित्राम होयग्यौ। स्रस्टी री कल्पना अर्द्धनारीश्वर री है। मिनख अर लुगाई अेक दूजै रा पूरक। अेक दूजै रौ भावी आधार अर दोनां री आप-आपरी महताऊ ठौड़, पछै नारी तौ देस, परिवार अर समाज सारू सवाई है। दया, ममता, सहयोग, त्याग, प्रीत, जुड़ाव अर अनेक संस्कारां रौ स्रोत अर उद्गम नारी ईज है। थांरै-म्हारै अर सगळां रै अस्तित्व रौ आधार कोई नारी ई है। स्रस्टी रौ बधापौ नारी करै अर असामाजिक अर अपूरण मिनख नैं पूरण बणावण में नारी रौ योगदान अतुल्य है। पण आज रै बगत में मिनख अर नारी रौ आंतरौ अर ओहदौ कीं भेदगत है। लिंगभेद री मानसिकता पनपी है। छोरी नैं काळजै रौ भार, भाटौ, कळंक रौ बैम, दुरभाग रौ बीज मानण री बीमारू सोच समाज अर परिवार खातर घातक सिद्ध होय रैयी है। कन्या नैं गरभ में ईज मारण रौ पाप चाल रैयौ है। पुरुसवादी पितृसत्तात्मक सोच रौ समाज भावी नैं गरत में न्हाख रैयौ है। कन्या भ्रूणहत्या चिंता रौ विसय है। इण सारू विचार अर उपाव जरूरी है।

कन्या भ्रूणहत्या रा कारण

छोरी जलमतां ई बेटै री भूखवाळा मायत माथौ पीटै अर खुद नैं दुरभागी मान नै कोसै अर पछै छोरी रौ गळौ मोसै, पण औ कठै तांई चालसी ? छोरी नैं छाती रौ भार मानै, उणनैं भणावण अर उणरै ब्यांव नैं मोटी आफत मानै अर अंटी सूं धन जावण रौ भय सतावै। ब्यांव में दायजै रौ दानव टैम सूं पैलां ई मां-बाप नैं सोच में न्हाखै। काळौ मूंढौ होवण रौ बैम आठूं पौर खावै। छोरी परायौ धन मानीजै। वंस बधापै री लाळसा अर छोरी नैं छाती रौ भाटौ मानण रै कारण छोरी जलमतां ई उणरौ घांटौ टूंपण जैड़ा महापाप रौ समाज में चलन-सो होयग्यौ है अर घणकरा तौ गरभ में ईज कन्या भ्रूणहत्या कर न्हाखै। सोनोग्राफी रै सख्त कानून सूं पैली तौ जलम सूं पैलां ई लिंग री जांच हो जावती अर कन्या होयां उणनैं गरभ में ईज मार देवता।

सोनोग्राफी मसीन कन्या भ्रूणहत्या रौ मोटौ हथियार है। इणरै सायरै सूं जलम सूं पैलां ई लिंग रौ परीक्षण होय जावै। इण सूं लिंगानुपात रौ तालमेळ बिगड़ग्यौ है। देस में 2500 कन्या-हत्या हर रोज औसत होय रैयी है। हरियाणा, पंजाब, दिल्ली आद राज्यां में आ दर सबसूं बेसी है। कन्या-हत्या रौ संबंध, गरीबी, अशिक्षा सूं घणौ नीं होयनै स्हैरी अर स्वारथी मध्यमवर्गीय परिवारां अर समाज री बीमार सोच रै कारण है। औ भेद बीमारी रै दांई फैल रैयौ है।

कन्या भ्रूणहत्या रोकण रौ उपाव

भारत सरकार सगळै देस में सोनोग्राफी मसीन सूं लिंग ग्यान परीक्षण पूरण रूप सूं प्रतिबंधित कर दियौ है अर इण सारू 'प्रसव सूं पैली निदान तकनीकी अधिनियम (पी.एन.डी.टी.) 1944' रै त्हैत कठोर दंड रौ विधान ई है। नारी सशक्तीकरण अर स्वावलंबन री केई योजनावा सरकार संचालित करै। छोरयां सारू निशुल्क शिक्षा रौ प्रावधान है। अेकल पुत्री अर दो पुत्री योजनावां चालै। इणरै अलावा केई पुरस्कार अर योजनावां ई बालिका-शिक्षा रै बधापै सारू चालै। बालिकावां नैं ई माईतां री संपत्ति में अधिकार दिरीज्यौ है। भारत रौ संविधान वांनै लिंगभेद नीं करण रौ अधिकार देवै। दायजौ (दहेज) आज दंडनीय अपराध मानीजै। छोरयां रै जलम माथै सरकार वां सारू केई पुरस्कार, प्रोत्साहन राशि अर भावी री सुरक्षा रा इंतजाम करै। छोरी रै जलमण माथै ई अबै थाळी बाजण जैड़ी स्थिति आवण में घणौ टैम नीं है। पैलां सूं लोगां री सोच में बदळाव आयौ है। सरकार रौ करड़ौ कानून अर समाज में चेतना आवण सूं परिस्थितियां में पैली सूं कीं बदळाव है। पण 'अजै लग दिल्ली दूर' है। आज ई अखबार में नाळा, झाड़क्यां अर अकूरड़ी माथै कन्या भ्रूणहत्या रा प्रमाण मिळै।

उपसंहार

जद तांई समाज इण समस्या सूं पूरी तरै नीं ऊबरै अर कन्याभ्रूण हत्या रै सिलसिलै माथै पूरण विराम नीं लागै, उण टैम तांई समाज अर सरकार नैं मिळनै इण सारू उपाव-प्रयास करणा पड़सी। लिंगानुपात री असमानता सूं अनेक सामाजिक समस्यावां पैदा होवै। भावी पीढी सारू घणौ मोटौ संकट अग्यानता सूं पैदा होय रैयौ है। देस रा आज केई अैड़ा राज्य है, जठै छोरयां रौ अनुपात घणौ कम है। इण सूं समाज रौ ढांचौ बिखरै अर केई सामाजिक अर मनोवैग्यानिक संकट खड़ा होवै।

⌘⌘

(4)

राजस्थानी काव्य में पर्यावरण संचेतना

मंडाण

साख संपदा सुख सकळ, बरसौ बरस बधैह।
धन अन जळ मरुधर धरा, कसर न पड़ै कदैह।।

सुख-संपत अर उपज में लगोलग बधोतरी होवै अर मरुधरा मांय धन, अन्न अर जळ री कदैई कमी नीं रैवै। इणी कामना नैं अंतस में बसायनै राजस्थानी कवियां हमेस जुग-चेतना रौ काव्य रचियौ। राजस्थानी साहित्य मांय प्रकृति संचेतनापरक काव्य री लांबी अर ऊजळी परंपरा रैयी है, क्यूंकै प्रकृति अर मिनख रौ जुगादु सगपण रैयौ है। इण वास्तै प्रकृति रा फूठरा, कंवळा अर करड़ा सगळा रूपां रौ वरणाव राजस्थानी कवियां करयौ है।

प्रकृति अर पर्यावरण

प्रकृति रा बदळता रूपां, रितुवां रौ वरणाव, बारहमासा वरणन मांय हरेक महीनै मांय मौसम रै मुजब मिनख री मनगत, आचार-विचार, वैवार सूं ठा पड़ै है आपां रौ जीवण प्रकृति सूं अलायदौ नीं है। हवा-पाणी रै प्रभाव नैं खुद अनुभूत करनै अठै कवियां उणनैं आपरी काव्य-रचनावां में संजोयौ है। मौसम रै परवाण आवण वाळा राग-रंग अर उच्छबां मांय प्राकृतिक सुखां री चिर कामना रै सागै उन्हाळै रै तपतै तावड़ै अर लूआं रा लपरका रौ ई सुआगत करयौ है। बसंत री सगळी सोभा 'लूआं' री भेंट चढाय दी, क्यूंकै उण विणास रै पछै ईज तौ नूंवै सिरजण री बेळा 'बादळी' रौ रूप लेयनै आवैला। इण मरुधरा रा वासी री सगळी आसावां बिरखा सूं जुड़्योड़ी है। जिण भांत अठै री लोक नायिका बिरखा री बूंदां में परदेस में रैवणियै आपरै सुगणै सायबा रौ संदेसौ पढ लेवै, ठीक उणीज भांत वा बायरियै सूं कैवै कै थूं उणीज दिस में चाल जिण कानी म्हारा परदेसी पिवजी बसै है। पसु-पंखेरुवां रै सागै मिनख रा मीठा-मधरा संबंधां नैं दरसावतै पूरसल काव्य रौ सिरजण राजस्थानी मांय होयौ है— मोर, पपैया, कुरजां, कागला, गोडावण, हंस, चकवा-चकवी अर बीजा पंखेरुवां साथै आपरी भावनावां रौ ताळमेळ बिठावती विरहणियां संवेदनावां रौ सागर उंधाय दियौ है। गाय, घोड़ा, ऊंठ, हाथी, सिंघ, वाराह अर हिरणां रै सागै भायलाचार री मानवीय भावनावां रौ उल्लेख काव्य में होयौ है। पसु-पंखेरुवां रै साथै बिरछां रै सरूप, वांरी महिमा, गुण-धरम, रूंखपूजा री परंपरा, लोकजीवण में रूंखां रै मांगळिक विस्वास अर मान्यता, बिरछ लगाईजण रौ लोक माहात्म्य, पौधा लगावण री वैग्यानिक विधियां अर वांरै संरक्षण रा उपाव, प्राणी मात्र सारू रूंखां री उपादेयता अर औषध विग्यान में भांत-भांत रै रूंखां री गुणवत्ता रौ लोक हितकारी बोध राजस्थानी काव्य में होयौ है। रूंख में सगळा देवतावां रै दरसण री महिमा है। रूंख उदार अर परतापी सासक री भांत भूमंडळ री रिछ्या करै।

रूंख विनायक रूप वर, रूंख सारदा रूप।
देवां रा इणमें दरस, भू छाजण बड भूप।।

राजस्थानी संस्कृति में काति रै महीनै रौ मोटौ माहात्म्य है। इण महीनै में तुळसी-पूजा, बैसाख में पीपळ अर नीम, फागण शुक्ला इग्यारस नैं आंवळै री पूजा करणौ उत्तम मानीज्यौ है। अठै लोकदेवता गोगाजी रै प्रतीक रूप मांय खेजड़ी री पूजा करीजै। राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति में रूंख-पूजा री लूंठी अर लांबी परंपरा अठै री वरत-कथावां, धारमिक उच्छबां, तीज-तिंवारां अर गीतां (भजन, हरजस, सामाजिक लोकगीत) में दीठगत होवै। रूंखां रौ आपणै जीवण में इत्तौ इधकौ महत्त्व है कै अै आपां री परंपरा रा प्रतीक बणग्या है, जियां खेजड़ी री हरी डाळी रै संकेत सूं जांन (बरात) आवण री सूचना, जाळकी री डाळी सूं ब्यांव रै मौकै 'तोरण' टांकणौ, मांगळिक अवसरां माथै मूंगधणा (रसोई सारू बरतीजणियौ ईंधन) बधावण अर पूजण री परंपरा, मारग माथै लगायोड़ै रूंखां नैं पंथवारी रै रूप में सींचण अर पूजण री परंपरा पर्यावरण संरक्षण रौ संदेस देवै।

उपसंहार

जीव-जगत री जरूरतां नैं पूरी करण वाळा अै सतजुग रा कळप-बिरछ है, जिका सगळां नैं आसरौ देयनै लोकहित रौ काम करै—

जीव विहग पशु जोयलौ, संत देवता सोय।
अद्री रै उपयोग सूं, हरख मानखे होय।।

औ इज कारण है कै रूंख लगायनै मिनख पितृरिण सूं मुगती पाय जावै अर उणरी भावी पीढियां रौ ई इण सूं कल्याण होवै—

रूंख आदमी रोपनै, पावै जस बड़ पाण।
पितरां भावी पीढियां, करै अेम कल्याण।।

⌘⌘

(5)

जे म्हैं देस रौ प्रधानमंत्री होवतौ

मंडाण

ज्यूं तारा मंडल मांय चांदो ओपै
त्यूं मंत्रिमंडळ मांय प्रधानमंत्री ओपै

हर मिनख रौ मन सुपनां अर आछै भविस सारू कल्पनावां री पांख पसारै। देस नैं अंगरेजां री गुलामी सूं मुगत होयां आज केई दसक बीतग्या अर देस में लोकतंत्र री जड़ां घणी मजबूत होयी है। लोकतंत्र रौ मूळ मतदाता अर मतदाता ईज देस रा विधायक, सांसद, मंत्री अर प्रधानमंत्री बणै अर बणावै। पख-विपख दोनूं देस रै प्रधानमंत्री सारू खेचळ अर भागदौड़ करै। म्हारौ मनड़ौ भी देस रौ प्रधानमंत्री बणण री हूंस अर कल्पना सूं भरयौ है। म्हैं ई लोकसभा रौ चुणाव जीतनै देस रौ प्रधानमंत्री बणणौ चाऊं। कास, इसौ होवतौ तौ कित्तौ आछौ होवतौ। म्हारै मन में देस रौ प्रधानमंत्री बणण अर देस सारू कीं करण री मनसावां घर करयोड़ी है। बियां बहुमत हासिल करयोड़ै राजनीतिक दळ रौ नेता ईज देस रौ प्रधानमंत्री बणै अर लोकतंत्र अर संसदीय सासन प्रणाली मांय प्रधानमंत्री देस सारू घणौ प्रभावशाली अर महताऊ होवै। वौ चावै ज्यूं देस री दिसा तय कर सकै। प्रधानमंत्री चावै तौ देस नैं विश्वगुरु बणा सकै। देस नैं विकास री नूंवी योजनावां अर भावी सोच सागै ऊंची ठौड़ पूगाय सकै।

देस रौ प्रधानमंत्री बणणौ

देस रौ प्रधानमंत्री बणणौ घणै अंजस री बात है। आपरै दळ रै सगळै सांसदां रौ विस्वास अर प्रेम रै सागै समरथन हासिल होयां पछै ई प्रधानमंत्री जैड़ौ गीरबैजोग पद मिळै। जे अैड़ौ होवतौ तौ म्हैं सगळां रौ भरोसौ अर साथ लेयनै आगै बधतौ। मंत्रिमंडळ में सांतरा अर चरित्रवान सांसदां नैं वांरी खिमता मुजब ठौड़ देवतौ अर देस रौ सासन आछै ढंग सूं चलावण रौ प्रयास करतौ। जन री पीड़ावां अर वांरी मनसावां माथै खरा उतरणियां, जिम्मेदार अर मैणती सांसदां नैं सासन रौ काम सूंपतौ, जिका देस री समस्यावां अर विकास रै मारग रै रोड़ै नैं समझण अर वांसूं निपटण री खिमता राखै।

प्रधानमंत्री बण्यां म्हारा कर्तव्य

जे म्हैं देस रौ प्रधानमंत्री होवतौ तौ देसहित सारू जनता री प्राथमिकता नैं ध्यान में राखतां नीचै लिख्या मुजब काम पूरा करण रौ प्रयास करतौ।

1. देस री विदेस नीति नैं असरदार अर भावी देसहित नैं ध्यान में राखनै बणावतौ।
2. देस री रक्षा-सेनावां रै आधुनिकीकरण, तकनीकी अर सबळता सारू रक्षा-बजट बधावतौ।
3. प्रवासी देसवासियां नैं देस खातर योगदान सारू प्रेरित करतौ।
4. विदेसां सूं करजा लेवण री रीत री जग्यां देस रै ईज लोगां नैं आतमनिरभर बणावण सारू योजनाबद्ध काम करतौ।
5. लघु उद्योगां, ग्रामीण उद्योग-धंधां नैं आगै बधावतौ। इण सारू वित्त रौ उचित प्रबंध करतौ। गांव अर स्हैर रा बेरोजगारां नैं उद्योग-धंधा अर रोजगार सूं जोड़तौ।
6. शिक्षा रै स्तर नैं सुधारतौ। भणाई अर गुणाई रौ मेळ करण रौ उपाव करतौ। देस रा गरीबां सारू मुफत भणाई री व्यवस्था करतौ।
7. वैग्यानिक, तकनीकी अर रोजगारपरक शिक्षा सागै व्यावहारिक अर नैतिक शिक्षा माथै जोर देवतौ जकी वैग्यानिक सोच अर संस्कारां सागै आगै बधै-बधावै।
8. देस मांय यातायात री वैवस्था नैं सुचारू करतौ, वांरा नूंवां साधनां नैं बधावण सारू प्रयास करतौ जिका पर्यावरण नैं सागै लेयनै चालै।
9. देस नैं हर्‌यौ-भर्‌यौ करण सारू घणै सूं घणा रूंख लगवावतौ।
10. सगळा धरमां अर वरगां रा लोग भेळप अर भाईचारै सागै रैवै, अैड़ा उपाव करतौ।
11. आतंकवाद, नक्सलवाद अर देस विरोधी तत्त्वां सूं नीति अर पूरी ताकत सागै निपटतौ।
12. भ्रष्टाचार री जड़ां खोदनै लूण न्हाखतौ अर इणनैं जड़ामूळ सूं मिटावण रौ प्रयास करतौ।
13. गरीबी अर बेरोजगारी मिटावण सारू धरातळ री सांतरी योजनावां बणायनै वांनै सख्ती सूं लागू करावतौ।
14. विश्व में भारत री भूमिका अर कद नैं बधावतौ अर विश्व-सांति अर भाईचारै सारू भारत रै पेटै विश्व रा देसां री आस माथै खरौ उतरतौ।

देस सारू विकास रा सोपान

इण भांत प्रधानमंत्री बण्यां म्हैं देस नैं संगठित, वैवस्थित अर सुचारू विकास सारू योजनाबद्ध तरीकै सूं आगै बधावतौ। भारत नैं विश्वशक्ति अर विकसित देस बणावण रा पुरजोर तरीका अपणावतौ। देस री आंतरिक सुरक्षा-सांति अर भेळप नैं पुख्ता करतौ। देस री भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, खगोलीय, वैग्यानिक अर नैतिक प्रगति रा खास उपाव करतौ। नूंवा सोध अर वैग्यानिक आविस्कारां नैं बधावौ देवतौ, जिका प्रकृति अर पर्यावरण नैं परोटता मिनख-मानखै नैं आगै बधावै। आणविक शक्ति रौ बिजळी री उत्पादकता बधावण सारू उपाव करतौ।

⌘⌘